॥ ॐ अर्हं ॥

श्री विपाक सूत्रम्।

(मूळ अने मूळ तथा टीकाना भाषांतर सहित)

भाषांतर कर्ता—शास्त्री जेठालाल हरिभाइ. गुरुणीजी श्री लाभश्रीजीना उपदेशथी.

छपावी प्रसिद्ध करनार—श्री जैन धर्म प्रसारक सभा–भावनगर.

मुद्रकः—शाह गुलाबचंद लल्लुभाइ. आनंद प्रि. प्रेस–भावनगर.

वीर संवत २४५७ विक्रम स. १९८७

अनुक्रमणिका.

प्रस्तावना.

आ अनादि अनंत संसारचक्रमां सर्व जीवो देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नारकी ए चार गतिमां पोतपोताना करेला कर्मने अनुसारे अनादि काळथी परिभ्रमण कर्या करे छे. तेओ ज्यां सुधी सर्व शुभाशुभ कर्मनो सर्वथा क्षय करी केवळज्ञान प्राप्त करी मुक्तिपुरीमां पहोंचता नथी त्यांसुधी निरंतर तेमने भवभ्रमण शरु रहे छे, माटे संसारथी मुक्त थवाने इच्छनार प्राणीए मोक्ष प्राप्त करवा माटे सतत उद्यम करवो जोइए, ए ज आ मनुष्यभव प्राप्त थयानुं फळ छे. ते मोक्षप्राप्तिना उपाय तरीके ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रण ज श्रीवीतरागे प्ररूप्यां छे ते सिवाय बीजा कोइ पण उपायथी मोक्षप्राप्ति कही नथी, ते निर्विवाद छे. श्रीतीर्थंकरोए तीर्थनी स्थापना वखते "उप्पज्जए वा, विगमए वा, धुवए वा" आ त्रिपदीनो उपदेश गणधरोने आपेलो छे, अने ते त्रिपदी उपरथी ज गणधरोए समग्र द्वादशांगी रची छे ते समग्र द्वादशांगी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने ज मोक्षना उपाय तरीके प्रतिपादन करे छे. ते द्वादशांगिना (अने तेनापरथी गणधरोना शिष्यप्रशिष्यादिके रचेला उपांगो, पयन्नाओ, ग्रंथो, प्रकरणो, चरित्रो विगेरेना) मुख्य चार विभाग पाडेला छे—द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, चरणकरणानुयोग अने धर्मकथानुयोग. तेमां आ श्रीविपाकसूत्र नामना अग्यारमा अंगमां कथाओ ज मात्र होवाथी तेनो धर्मकथानुयोगमां समास थइ शके छे.

आ तथा बीजा सर्व अंग, उपांग विगेरे आगमो बाळ, गोपाळ, स्त्री विगेरे सर्वने समान उपकार करवाना हेतुथी पूज्य गणधरोए अर्धमागधी भाषामां रचेला छे. तेमां वर्तमान काळे श्रीवर्धमानस्वामीना तीर्थमां अग्यार गणधरो थया छे,

तेमांथी जूदा जूदा कारणोने लीधे दश गणधरोनी परंपरानो विच्छेद थयो छे, मात्र एक पांचमा गणधर श्रीसुधर्मास्वामीनी ज पाट-परंपरा चाली छे, अने तेमने ज श्रीवर्धमानस्वामीए पोतानी पाटपर स्थापन कर्या छे, चतुर्विध संघनी सोंपण तेमने करी छे. तथा तेमनी रचेली द्वादशांगीनी ज अनुज्ञा आपी छे. तेथी हालना वर्तमान आगमो (अग्यार अंग) ना कर्ता श्रीसुधर्मास्वामी ज छे. तेमणे पोताना मुख्य शिष्य जंबूस्वामीने संबोधीने आगमोनी रचना करी छे एटले के जंबूस्वामीना प्रश्न अने सुधर्मास्वामीना उत्तर–तेमां पण उत्तर आपती वखते प्राये सुधर्मास्वामी कहे छे के–अमुक वखते अमुक गामना अमुक उद्यानमां समवसरेला श्रीमहावीरस्वामी पासे प्रथम गणधर श्रीगौतमस्वामीए प्रश्न कर्या हता, तेना उत्तरमां भगवान श्रीमहावीरस्वामीए आ प्रमाणे उत्तर आप्या हता, आवा प्रकारनी सूत्ररचना स्पष्ट रीते जणावे छे के श्रीगौतमस्वामीए के श्रीसुधर्मास्वामीए कोइपण प्ररूपणा पोते स्वतंत्र (पोतानी ज बुद्धि अनुसार) करी नथी, परंतु " भगवान श्रीमहावीरस्वामीए जे प्रमाणे कह्युं छे ते प्रमाणे ज हुं कहुं छु" एम कहीने गुरुनी परतंत्रता मुख्यपणे सूचवी छे. अने ' आणाए धम्मो '–' गुरुनी आज्ञाथी ज धर्म छे. ' ए वचनने संपूर्ण मान आपवुं एने ज धर्मनुं मुख्य अंग गणेलुं छे.

आ सूत्रना प्रारंभमां श्रीजंबूस्वामी श्रीसुधर्मास्वामीने प्रश्न पूछतां कहे छे के—"हे पूज्य ! भगवान श्रीमहावीरस्वामीए दशमा अंगनो तमे कह्यो ते प्रमाणे अर्थ कह्यो छे, तो पछी भगवान श्रीमहावीरस्वामीए अग्यारमा अंगनो शो अर्थ कह्यो छे ? " तेना उत्तरमां श्रीसुधर्मास्वामी कहे छे के–" हे जंबू ! भगवान श्रीमहावीरस्वामीए विपाकश्रुत नामना अग्यारमा अंगना बे श्रुतस्कंध कह्या छे ते आ प्रमाणे—दुःखविपाक नामनो श्रुतस्कंध अने सुखविपाक नामनो श्रुतस्कंध. " ते सांभळी फरी श्रीजंबूस्वामी प्रश्न

करे छे के—" जो भगवान श्रीमहावीरस्वामीए आ विपाकश्रुत नामना अग्यारमा अंगना बे श्रुतस्कंध कह्या छे, ते आ प्रमाणे—दुःखविपाक नामनो श्रुतस्कंध. अने सुखपिपाक नामनो श्रुतस्कंध, तो हे भगवान ! दुःखविपाक नामना पहेला श्रुतस्कंधना भगवान श्रीमहावीरस्वामीए केटलां अध्ययनो कह्यां छे ? " आ प्रमाणे दरेक सूत्रना प्रारंभमां तथा दरेक अध्ययनना प्रारंभमां श्रीसुधर्मास्वामीए जे जे उत्तर आप्या छे ते ते उत्तरनो प्रथम अनुवाद करी त्यारपछीनो प्रश्न पूछ्यो छे, ते वांचतां पुनरुक्ति दोषनी शंका थाय तथा फरी फरीने तेवा पाठना आलावा व्यर्थ छे एम भासे ते स्वाभाविक छे, परंतु तेवी शंका करवा योग्य नथी. केमके गुरुना के स्वामीना कहेला वचननो अनुवाद करीने (ते प्रमाणे बोलीने) पछी ज बीजो प्रश्न पूछवो ए एक जातनो मोटो विनय छे, अने विनय ज चारित्रनुं मुख्य अंग छे. वळी अनुवाद करवाथी एम पण जणाय छे के गुरुनुं कथन सम्यक् प्रकारे पोते धारी लीधुं छे अने त्यारपछी बीजुं नवुं जाणवा माटे बीजो प्रश्न करे छे. आ पण विनयनुं ज लक्षण छे. तेम ज राजाविगेरे स्वामीए बतावेलुं काम करी रह्या पछी सेवको आवीने स्वामीने कहे छे के—" तमे बतावेलुं अमुक काम अमे कर्युं छे. " आ रीते स्वामीनी आज्ञा पाछी सोंपवी ते पण विनय ज छे. ए रीते सर्वत्र जाणवुं. आ रीते आ अग्यारमा अंगनी शरुआतनी हकीकत छे अने ए ज रीते प्रायः सर्व आगमोनी रचना करेली छे.

आ अग्यारमुं अंग विपाकश्रुत नामनुं छे—तेमां विपाक एटले शुभाशुभ कर्मनो उदय—अनुभव—भोगवटो विगेरे. उदय बे प्रकारनो होय छे. प्रदेश उदय ने विपाक उदय. तेमांथी अहीं विपाक उदयनी ज हकीकत छे. ए उदय विपाक बे प्रकारनो होइ शके छे—अशुभ कर्मनो विपाक अने शुभकर्मनो विपाक. अशुभ कर्मनो विपाक दुःखदायक होवाथी ते दुःखविपाक कहेवाय छे अने शुभकर्मनो विपाक

सुखकारक होवाथी ते सुखविपाक कहेवाय छे. आ अपेक्षाए दुःखविपाक अने सुखविपाक नामना बे श्रुतस्कंधो आ अंगमां आपेला छे. बन्नेमां दश दश अध्ययनो आपेलां छे. तेमनां नामो अनुक्रमणिका उपरथी जाणी शकाशे.

पहेला दुःखविपाकमां मृगापुत्र विगेरे नामनां दश अध्ययनो छे. तेमां ते ते नामना जीवो पूर्वभवमां उग्र पापकर्म उपार्जन करेला होवाथी आ भवमां अति दुःखी थया छे अने अत्यंत विडंबना पूर्वक मरण पामी तिर्यंचमां उत्पन्न थइ पहेली नरके गया छे. त्यारपछी अनुक्रमे तिर्यंचना आंतरा सहित बीजीथी मांडीने सातमी नरकपृथ्वी सुधी जशे. त्यांथी नीकळी जळचर स्थलचर विगेरे पंचेंद्रिय तिर्यंचमां वारंवार उत्पन्न थइ, अनुक्रमे चतुरिंद्रिय, त्रींद्रिय, द्वींद्रियमां अने छेवट पृथ्वीकायथी वनस्पतिकाय पर्यंत एकेंद्रियमां उपजी, पाछा पंचेंद्रिय तिर्यंच थइ, मरण पामी, मनुष्यपणे जन्मी, बोध पामी, दीक्षा ग्रहण करी, स्वर्गे जइ, महाविदेहमां उत्तम कुळमां मनुष्यजन्म पामी, चारित्र ग्रहण करी, मोक्षपदने पामशे. विगेरे सविस्तर हकीकत आपेली छे. तेमां प्रथम अध्ययनमां कांइक सविस्तर हकीकत आपी छे अने बाकीनां नव अध्ययनोमां पहेला अध्ययनोमां कहेली हकीकतनी भलामण करी छे. कारण के दशे जीवोए नरकादि चारे गतिमां परिभ्रमण प्राये समानपणे करेलुं छे.

बीजा श्रुतस्कंधमां सुखविपाकनां पण दश अध्ययनो छे. तेमां पण पहेला अध्ययनमां कांइक विस्तारथी कथा आपीने बाकीनां नवे अध्ययनो भलामण करीने अत्यंत संक्षिप्तपणे लख्यां छे. (दशमा अध्ययनमां कांइक वधारो कर्यो छे,) तेमां पूर्वभवे तीर्थंकर के मुनिने आहारपाणी विगेरेनुं दान करवाथी आ भवे उत्तम कुळमां मनुष्य थया छे. ते ज भवमां श्रीमहावीरस्वामीनी पासे ज प्रतिबोध पामी प्रथम श्रावकव्रत अने पछी अनगारपणुं ग्रहण करी पहेला देवलोकमां गया छे, त्यांथी च्यवी, मनुष्य थइ, चारित्र लइ, देवगतिना आंतरावाळा मनुष्यना भवो करी, एटले त्रीजा, पांचमा, सातमा, नवमा अने अग्यारमा देवलोकमां अने छेवट सर्वार्थसिद्धमां देव थइ, त्यांथी

महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य थइ, चारित्र लइ, सिद्ध थवाना छे.

आ प्रमाणे बन्ने विभागनो सारांश छे ते साद्यंत वांचवाथी स्पष्ट जणाइ आवे छे के-अशुभ कर्म करनार प्राणीओ उत्तरोत्तर चिरकाळ सुधी महादुःखदायी दुर्गतिने पामे छे अने छेवट अशुभ कर्मनो दुःखरूप विपाक भोगव्या पछी सद्गुरुनो योग थवाथी धर्म पामी सद्गतिना भाजन थाय छे. अने सुपात्रदान करवाथी प्राणी उत्तरोत्तर देव ने मनुष्य गतिमां सुखनी श्रेणि भोगवी छेवट पांचमी गति (मोक्ष)ने पामे छे. विगेरे उपदेशक हकीकत आ ग्रंथमां सारी रीते आपी छे. उपरांत पापी जीवोने मळती पापनी सामग्री अने पुण्यशाळी जीवोने मळती पुण्यनी सामग्री अने तेनो आबेहुब चितार आ ग्रंथमां विस्तारथी आप्यो छे.

पापी जीवोना करेलां पापना वृत्तांत अने तेने त्यार पछीना मनुष्यना भवमां प्राप्त थएलां दुःखनां वृत्तांत वांचतां हृदय कमकमे छे, जोके नरकना दुःख पासे तो ते हीसाबमां नथी. आवा वृत्तांत वांच्या छतां पण जे जीव पाप करतो न अटके ते अवश्य बहुलकर्मी अने दीर्घ ससारी होवानो संभव छे. वळी मुनिदाननो महाप्रभाव जाणी एवी रीते सुपात्र दान देवानो उत्साह न थाय तेवा जीवो पण परित्तसंसारी न होवानी खात्री थाय छे.

आ सूत्र छापतां प्रथम सूत्रनो मूळपाठ आपी ते पछी मूळनो अर्थ टीकाने आधारे अने कोइ ठेकाणे टवाने आधारे पण लखवामां आव्यो छे. तथा टीकामां मूळ उपरांत जेटलो पाठ के अर्थ आपवामां आव्यो छे ते पण साथे साथे ज अथवा जूदो पाडीने लखवामां आव्यो छे. मूळनी साथे मेळवीने वांचनार सामान्य अभ्यासीनी अनुकूळता साचववा माटे शब्दार्थ उपर वधारे लक्ष्य राखवामां आव्युं छे, तोपण कोइ कोइ ठेकाणे भाषानी सरलता साचववानी पण काळजी राखी छे. कोइ कोइ ठेकाणे मूळना कठण शब्दो ज लखी तेना संस्कृत शब्दो लखवा पूर्वक शब्दार्थ अने भावार्थ लख्या छे. अमुक शब्दोना शब्दार्थ अने

भावार्थ एक वार आवी गया छतां फरी फरीने ते ज शब्दो मूळमां आवेला होय छे तेवा शब्दोना पण प्राये वारंवार शब्दार्थ अने भावार्थ लख्या छे के जेथी वाचक अने अभ्यासी बन्नेने विस्मृत थयेला शब्दो अने अर्थ विगेरे शोधवानो प्रयास न पडे. शब्दार्थ के भावार्थ कोइ पण ठेकाणे टीका के टबाना आधार सिवाय लखवामां आव्यो नथी, छतां अल्पमति विगेरेना कारणथी नानी मोटी जे कांइ स्खलना रही होय तेनुं भाषांतरकर्ता मिथ्यादुष्कृत आपे छे. (क्षमा याचे छे) अने तेवी स्खलनाओनी सूचना महात्माओ तरफथी मळशे तो फरी तेवो समय आवे त्यारे तेवी स्खलना थती अटकी शकशे. तेम ज बीजी आवृत्तिमां पण सुधरी शकशे अथवा खास बाबत हशे तो जूदी सूचना पण आपी शकाशे.

आगमोदयसमिति तरफथी छपायेली आ अंगनी सटीक प्रत उपरथी आनुं मूळ तथा भाषांतर करवामां आव्युं छे. साथे लिखित प्रतो पण राखेली होवाथी बनी शकी तेटली मूळमां शुद्धि करी छे.

श्रीउत्तराध्ययन सूत्र तथा ज्ञाताधर्मकथांग सूत्रना भाषांतर थया पछी गुरुणीजी श्रीलाभश्रीजीने केटलीएक महत्तराओ तरफथी तथा अन्य मुनिजनो विगेरे तरफथी आ कार्य करवानी भलामण थवाथी अल्पज्ञानीओना उपर उपकार करवानी बुद्धिथी आ कार्य तेमणे पोतानी देखरेख नीचे शास्त्री जेठालाल हरिभाइनी पासे कराव्युं छे.

प्रुफो सुधारवा विगेरेमां यथाशक्ति काळजी राख्या छतां दृष्टिदोषादिकना कारणथी कांइ पण स्खलना रही गइ होय तो ते सुधारीने वांचवा अने अमने लखी जणाववा अमारी नम्र विज्ञप्ति छे.

संवत १९८७ द्वितीय अषाढशुक्ल पूर्णिमा. }

श्रीजैनधर्म प्रसारक सभा–भावनगर.

श्री वीरपरमात्मने नमः

श्री विपाक सूत्रम्.

(मूळ अने मूळ तथा टीकाना भाषांतर सहित)

(प्रथम अध्ययनम्)

जेनाथी श्रुतनो मार्ग वृद्धि पाम्यो छे एवा श्री वर्धमानस्वामीने नमस्कार करीने आ विपाकसूत्र नामना शास्त्रनी आ टीका हुं (अभयदेवसूरि) करुं छुं.

अहीं 'विपाकश्रुत' ए शब्दनो शो अर्थ छे ? तेने माटे कहे छे-विपाक एटले पुण्यकर्म अने पापकर्मनुं फळ, तेने प्रतिपादन करनारुं श्रुत एटले आगम ते विपाकश्रुत कहेवाय छे. आ बार अंगवाळा प्रवचनरूपी पुरुषनुं अग्यारमुं अंग छे.

आ शास्त्रमां उत्तम पुरुषोना आचारनुं पालन करवा माटे प्रारंभमां मंगळ, संबंध, अभिधेय अने प्रयोजन ए चार अनुबंध कहेवा जोइए. तेमां आ शास्त्र ज समग्र कल्याणने करनार सर्वज्ञे श्रुतपणे रचेलुं होवाथी भावनंदीरूप छे, तेथी ते पोते ज मंगळरूप छे, तेथी अहीं जुदुं मंगळ बताव्युं नथी. तथा शुभाशुभ कर्मनो जे विपाक ते आ ग्रंथनुं अभिधेय छे, ते अभिधेय आ शास्त्रना नामथी ज जणाइ आवे छे. तथा श्रोताने विषे रहेलुं अनंतर (पासेनुं) प्रयोजन कर्मना विपाकनुं ज्ञान थाय ते आ शास्त्रना नामथी ज जणाय छे. केमके जे श्रुत कर्मना विपाकने जणावनारुं होय, ते सांभळवाथी श्रोताने प्राये करीने कर्मना विपाकनुं ज्ञान थाय ज छे. अने श्रोताने परंपर प्रयोजन परंपराए मोक्ष प्राप्त थाय ते छे. ते मोक्षरूप प्रयोजन आप्तपुरुषे (तीर्थंकरे) आ शास्त्र रचेलुं छे तेथी ज स्फुट रीते जणाइ आवे छे. केमके आप्तपुरुषो जे मोक्षनुं साधक न होय तेवुं शास्त्र कहेवाने उत्साह करता ज नथी. जो कदाच तेवुं शास्त्र रचे तो तेमना आप्तपणानी ज हानि थाय छे. (तथा कर्तानुं अनंतर प्रयोजन भव्य प्राणीओना पर उपकार करवो ते, अने परंपर प्रयोजन मोक्षनी प्राप्ति.) तथा आ ग्रंथनो संबंध उपायोपेय नामनो छे, ते पण आ ग्रंथना नामथी ज जणाइ आवे छे. ते ए के आ शास्त्र उपायरूप छे अने कर्मना विपाकनुं जे ज्ञान ते उपेय छे, वळी बीजो गुरुपर्वना अनुक्रमरूप पण आ ग्रंथनो जे संबंध छे, ते संबंध बताववा माटे सूत्रकार ज कहे छे—

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं चंपा णामं णयरी होत्था वण्णओ

अर्थ—ते काळे ते समये चंपा नामनी नगरी हती. तेनुं वर्णन करवुं.

आ सूत्रमां 'णं' ए शब्दो वाक्यनी शोभाने माटे छे, अने एकार प्राकृतने लइने थयो छे. अहीं सूत्रमां काळ अने समय ए बे शब्द लख्या छे तेमां शो तफावत छे? तेना जवाबमां कहे छे के–आ अवसर्पिणीनो जे चोथो आरो ते सामान्य रीते काळ कहेवाय छे. अने तेमां जे वखते आ नगरीनुं वर्णन थाय छे ते विशेष प्रकारना काळने समय कहेवाय छे. अथवा तो 'तेन कालेन तेन समयेन' एवो संस्कार करीने हेतुमां तृतीया विभक्ति जाणवी. वळी आ सूत्रमां चंपा नामनी नगरी हती एम भूतकाळनो निर्देश कर्यो छे: परंतु अत्यारे पण ते नगरी छे, तेथी वर्तमानकाळ केम न लख्यो? तेनो उत्तर ए छे जे–आ अवसर्पिणी होवाने लीधे दरेक वस्तुना स्वभाव तथा गुणादिकनी हानि थती जाय छे, तेथी जेवा विशेषणोवाळी ते नगरी वर्णक ग्रंथमां वर्णवी छे तेवी ते नगरी सुधर्मास्वामीने वखते नहोती, तेथी भूतकाळनो निर्देश कर्यो छे. आ नगरीनुं वर्णन 'ऋद्धत्थिमियसमिद्धे'–ऋद्धिवाळुं, निर्भय अने समृद्धिवाळुं, इत्यादि औपपातिक सूत्रमां जेम कह्युं छे तेम जाणी लेवुं. (वर्णन माटे आ प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं).

मू०–पुण्णभद्दे चेइए होत्था।

अर्थ—ते चंपा नगरीनी बहार पूर्णभद्र नामना उद्यानमां पूर्णभद्र नामनुं चैत्य–व्यंतरनुं गृह हतुं.

मू०–ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे णामं अणगारे जाइसंपन्ने वण्णओ चउद्दसपुव्वी चउनाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं

संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं जाव जेणेव पुण्णभद्दे चेइए अहापडिरूवं जाव विहरइ ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवंत महावीरस्वामीना शिष्य आर्य सुधर्मा नामना अनगार (साधु) जातिसंपन्न एटले उत्तमकुळना हता, तेनुं वर्णन अहीं करेवु. ते आर्य सुधर्मा अनगार चौद पूर्वी अने चार ज्ञानसहित हता. ते पांचसो अनगारनी साथे परिवर्या सता अनुक्रमे गाम, नगर विगेरेमां विचरता यावत् ज्यां पूर्णभद्र नामनुं चैत्य हतुं, ते उद्यानमां पोताने (साधुने) योग्य एवा अवग्रहने एटले आश्रयने ग्रहण करी यावत् संयम तपवडे आत्माने भावता सता रह्या. आ पदवडे एम सूचव्युं छे के–आर्य सुधर्मा नामना स्थविर साधुने योग्य एवा अवग्रहने ग्रहण करे, ग्रहण करीने संयम तपवडे आत्माने भावता सता रह्या.

मू०—परिसा निग्गया, धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

अर्थ—तेमनुं पधारवुं सांभळी चंपा नगरीमांथी पर्षदा बहार नीकळी तेमनी पासे गइ. त्यां तेमनी पासे धर्म सांभळी हृदयमां धारी जे दिशाथी प्रगट थइ हती (आवी हती) ते ज दिशामां पाछी गइ.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं अज्जसुहम्मअंतेवासी अज्जजंबूनामं अणगारे सत्तुस्सेहे जहा गोयमसामी तहा जाव झाणकोट्ठोवगए विहरति ।

अर्थ—ते काळे ते समये आर्य सुधर्मास्वामीना शिष्य आर्य जंबू नामना अनगार (साधु) सात हाथ प्रमाण शरीरवाळा

तथा जेम गौतम स्वामी तेम यावत् ध्यानरूपी कोष्ठ (कोठार) मां रह्या सता संयम तपवडे आत्माने भावता सता रह्या हता.

जेम भगवती सूत्रमां गौतम स्वामीनुं वर्णन कर्युं छे तेवुं अहीं जंबू स्वामीनुं वर्णन जाणवुं ते आ प्रमाणे:—

'समचउरंससंठाणसंठिए' समचतुरस्र नामना संस्थानमां रहेला, 'वज्जरिसहनारायसंघयणे'–वज्रर्षभ-नाराच नामना संघयणवाळा, (आ बे विशेषणो आगममां प्रसिद्ध छे.) 'कणगपुलगनिघसपम्हगोरे'–सुवर्णना कक-डानी कसोटीने विषे करेली जे रेखा तेना जेवा तथा कमळना गर्भ जेवा गौर वर्णवाळा, 'उग्गतवे'–उग्र एटले बीजाथी पराभव न पमाडी शकाय एवा तपवाळा, 'दित्ततवे'–दीप्त एटले कर्मरूपी वनने बाळवामां अग्निना जेवा देदीप्यमान–जाज्वल्यमान तपवाळा, 'तत्ततवे'–तपने तपावनार एटले तेणे ते प्रकारे तप कर्यो छे के जे तपवडे कर्मोने तपावीने ते तपवडे पोतानो तपरूप आत्मा पण सम्यक् प्रकारे तपाव्यो छे के ने तपने बीजा कोइ स्पर्श करी शके नहीं–बीजाओ तेवो तप करी शके नहीं, 'महातवे'–प्रशस्त तपवाळा अथवा मोटा तपवाळा, 'उराले'–भीम एटले अत्यंत कष्टकारी तपने करनार होवाथी पासे रहेला अल्पसत्त्ववाळा मनुष्योने पण भय उत्पन्न थाय तेथी ते भयंकर हता, अथवा उदार एटले प्रधान, 'घोरे'–परीसहादिक शत्रुओनो नाश करवामां निर्दय. 'घोरगुणे'–भयंकर गुणवाळा एटले बीजाओ तेवा गुणने आचरी न शके तेवा. 'घोरतवस्सी'–घोर तपवाळा. 'घोरबंभचेरवासी'–घोर एटले अल्प सत्त्ववाळा प्राणीओ आचरी (पाळी) न शके तेवा दारुण ब्रह्मचर्यने विषे रहेवाना स्वभाववाळा एटले रहेला. 'उच्छूढसरीरे'–स्नानादिक शणगार नहीं करवाथी जेणे शरीरनो (शरीरनी शुश्रूषानो) त्याग कर्यो छे एवा. 'संखित्तविउलते-

उत्तेस्से [1]–शरीरनी अंदर ज संकोची राखेली होवाथी संक्षिप्त अने अनेक योजन प्रमाण क्षेत्रमां रहेली वस्तुओने बाळवामां समर्थ होवाथी विस्तारवाळी छे तेजोलेश्या जेने एवा. 'उड्ढंजाणू'–ऊर्ध्व जानुवाळा एटले के साधुने शुद्ध (केवळ) पृथ्वीपर बेसवानो निषेध होवाथी अने औपग्रहिक आसन एटले निषदीयुं नहीं होवाथी उत्कटुक (उभडक) आसने रहेला, 'अहोसिरे'–नीचा मुखे रहेला एटले उंचे के आजुबाजु तिरछी दृष्टि राख्या विना निचे ज दृष्टि राखीने रहेला जंबूस्वामी हता.

मू०–तए णं अज्जजंबूनामे अणगारे जायसड्ढे जाव जेणेव अज्जसुहम्मे अणगारे तेणेव उवागए तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेति, करित्ता वंदति[2], वंदित्ता नमंसति[3], नमंसित्ता जाव पज्जुवासति, एवं वयासी ॥ १ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते आर्य जंबू नामना अनगार जातश्रद्ध थया एटले विवक्षित अर्थने श्रवण करवानी इच्छावाळा थया यावत् ज्यां आर्य सुधर्मा अनगार हता त्यां आव्या. आवीने त्रण वार दक्षिण बाजुथी आरंभीने दक्षिण बाजु सुधी फरीने प्रदक्षिणा करी. प्रदक्षिणा करीने तेमने वंदना करी, वंदना करीने नमस्कार कर्या, नमस्कार करीने यावत् पर्युपासना (सेवा) करवा लाग्या अने आ प्रमाणे बोल्या—

---

१ विशेष प्रकारना तपथी उत्पन्न थती लब्धीथी उत्पन्न थयेली तेजनी ज्वाळा. २ वचनवडे स्तुति करी. ३ कायावडे प्रणाम कर्या.

विशेषार्थ—' जायसड्ढे '–ए ठेकाणे ' जाव ' शब्द लख्यो छे तेथी आ प्रमाणे जाणवुं.—' जायसड्ढे ' एटले जातश्रद्ध थया. तथा ' जायसंसए '–निश्चय नहीं थयेला अर्थ (पदार्थ) उपर संशयवाळा थया. तथा ' जायकोउहल्ले '–श्रवण करवानी उत्सुकता प्रवृत्त थइ. (२). तथा ' उप्पन्नसड्ढे '–जेने श्रद्धा उत्पन्न थइ छे तेवा एटले प्रथम न हती अने पछी जेने श्रवण करवानी वांछा उत्पन्न थइ छे एवा. ' उप्पन्नसंसए '–प्रथम न हतो अने पछी उत्पन्न थयो छे संशय जेने एवा, ' उप्पन्नकोउहल्ले '–प्रथम न हती अने पछी उत्पन्न थइ छे श्रवण करवानी उत्सुकता जेने एवा. (२) (अहीं कोइ पुनरुक्ति दोषनी शंका करे तेने जवाब आपे छे के–श्रद्धा उत्पन्न थइ तेथी करीने ज श्रद्धा प्रवृत्त थइ. एवी रीते हेतु (कारण) अने फळ (कार्य) नी विवक्षा करवाथी पुनरुक्ति दोष आवतो नथी.) ' संजायसड्ढे '–सारी रीते प्रवर्ती छे विवक्षित अर्थ श्रवण करवानी वांछा जेने एवा. ' संजायसंसए '–सारी रीते प्रवर्त्यो छे अनिश्चित पदार्थनो संशय जेने एवा. ' संजायकोउहल्ले '–जेने श्रवण करवानी उत्सुकता सारी रीते प्रवर्ती छे एवा. (३). ' समुप्पन्नसड्ढे '–प्रथम न हती अने पछी सारी रीते उत्पन्न थइ छे श्रद्धा एटले सांभळवानी इच्छा जेने एवा. ' समुप्पन्नसंसए '–प्रथम न हतो अने पछी सारी रीते उत्पन्न थयो छे संशय जेने एवा. ' समुप्पन्नकोउहल्ले '–प्रथम न हती अने पछी सारी रीते उत्पन्न थइ छे श्रवणनी उत्सुकता जेने एवा. (२). आ पाछळना छ पदोमां ' सं ' शब्द आव्यो छे ते अत्यंतपणुं, सारी रीते, एवो अर्थ सूचवे छे.

केटलाक आचार्यो आ सर्व पदो (विशेषणो) नो आवो अर्थ पण करे छे के–' जायसड्ढे '–प्रश्न पूछवानी इच्छा

थइ छे जेने एवा. एवी इच्छावाळा केम थया ? ' जायसंसए ' संशय थयो माटे. संशय शा माटे थयो ? ' जायकोउ-हल्ले '-श्रवण करवानी उत्सुकता थइ माटे (२). आ त्रण पदो (विशेषणो) वडे अवग्रह कह्यो. ते ज रीते बीजा त्रण पदोवडे ईहा, त्रीजा त्रण पदोवडे अवाय अने चोथा त्रण पदोवडे धारणा कही एम जाणवुं.

' जाव पज्जुवासति '-ए ठेकाणे यावत् शब्द लख्यो छे तेथी त्यां आ प्रमाणे जाणवुं ' सुस्सूसमाणे ' शुश्रूषा करता, ' नमंसमाणे ' नमस्कार करता, ' विणएणं ' विनयवडे ' पंजलिउडे ' बे हाथ जोडीने ' अभिमुहे ' सन्मुख रहीने-पासे बेसीने सेवा करवा लाग्या.

मू०—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दसमस्स अंगस्स पण्हावागरणाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, एक्कारसमस्स णं भंते ! अंगस्स विवागसुयस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थ—हे भगवंत (पूज्य गुरु) ! जो श्रमण भगवंत महावीरस्वामी यावत् मोक्षने पामेला छे तेमणे प्रश्नव्याकरण नामना दशमा अंगनो आ (तमे प्रथम कही गया ते) अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवंत ! विपाकश्रुत नामना अग्यारमा अंगनो श्रमण भगवंत महावीर स्वामी यावत् मोक्षने पामेला छे तेमणे कयो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—तते णं अज्जसुहम्मे अणगारे जंबुं अणगारं एवं वयासी—" एवं खलु जंबू ! समणेणं

जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता, तं जहा–दुहविवागा य १ सुहविवागा य २ "।

अर्थ–त्यारपछी आर्य सुधर्मा अनगारे जंबू अनगारने आ प्रमाणे कह्युं–" आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवंत यावत् मोक्षने पामेला श्री महावीरस्वामीए अग्यारमुं अंग जे विपाकश्रुत तेना बे श्रुतस्कंध कह्या छे, ते आ प्रमाणे—दुःख विपाक १ अने सुख विपाक २. अहीं दुःखविपाक एटले पापकर्मनां फळ. अथवा दुःख एटले दुःखना हेतुरूप होवाथी पापकर्म, तेना विपाक जेमां कहेवामां आवे ते दुःखविपाक कहेवाय छे.

मू०–जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स अंगस्स विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता, तं जहा–दुहविवागा य १ सुहविवागा य २, पढमस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं कइ अज्झयणा पन्नत्ता ?

अर्थ—जो हे भगवंत ! श्रमण भगवंत यावत् मोक्षने पामेला श्री महावीरस्वामीए अग्यारमुं अंग जे विपाकश्रुत तेना बे श्रुतस्कंध कह्या छे, ते आ प्रमाणे—दुःख विपाक १ अने सुखविपाक २, तो हे भगवंत ! पहेलो श्रुतस्कंध जे दुःखविपाक तेनां श्रमण भगवंत यावत् मोक्षने पामेला श्री महावीरस्वामीए केटलां अध्ययनो कह्यां छे ?

मू०–तते णं अज्जसुहम्मे अणगारे जंबूअणगारं एवं वयासी–एवं खलु जंबू ! समणेणं भग-

वया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—

मियापुत्ते १ य उज्झियते २ अभग्ग ३ सगडे ४ बहस्सई ५ नंदी ६ ।
उंवर ७ सोरियदत्ते ८ य, देवदत्ता ९ य अंजू १० य ॥ १ ॥

अर्थ—त्यारपछी आर्य सुधर्मा अनगारे जंबू अनगारने आ प्रमाणे कह्युं—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवंत महावीर के जे धर्मनी आदिने करनारा, तीर्थने करनारा यावत् मोक्षने पामेला छे तेमणे दुःख विपाकनां दश अध्ययनो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे—

मृगापुत्र—मृगापुत्र नामना राजपुत्रनुं चरित्र जेमां कहेलुं छे ते. १. उज्झितक—ए नामना सार्थवाहना पुत्रनुं चरित्र जेमां कहेलुं छे ते. २. एज प्रमाणे अभग्न—विजय नामना चोर सेनापतिनो पुत्र अभग्नसेन. ३. शकट—ते नामनो सार्थवाहनो पुत्र. ४. बृहस्पति—बृहस्पतिदत्त नामनो पुरोहितपुत्र. ५. नंदी—नंदीवर्धन नामनो राजपुत्र. ६. उंबर—उंबरदत्त नामे सार्थवाहनो पुत्र. ७. शौरिकदत्त—ए नामनो मच्छीमारनो पुत्र. ८. देवदत्ता—ए नामनी गृहपतिनी पुत्री. ९. तथा अंजू—ए नामनी सार्थवाहनी पुत्री. १०. (आ नामना—तेमना चरित्रवाला दश अध्ययनो कहेला छे.)

मू०—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थयरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—मियापुत्ते १ य जाव अंजू १० य, पढमस्स णं भंते !

अज्झयणस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

अर्थ—हे भगवंत ! जो श्रमण भगवंत महावीर के जे आदिने करनारा, तीर्थने करनारा यावत् मोक्षने पामेला छे तेमणे दुःख विपाकना दश अध्ययनो कह्यां छे, ते आ प्रमाणे—मृगापुत्र १, यावत् मंजू १०, तो हे भगवंत ! दुःख विपाकना पहेला अध्ययननो श्रमण भगवंत यावत् मोक्षने पामेला महावीरस्वामीए कयो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबूअणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं मियगामे नामे णगरे होत्था, वण्णओ ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुधर्मा अनगारे जंबू अनगारने आ प्रमाणे कह्युं—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये मृगग्राम नामनुं नगर हतुं. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तस्स णं मियगामस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए चंदणपायवे नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउय० वण्णओ । तत्थ णं सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था चिरातीए जहा पुन्नभद्दे ।

अर्थ—ते मृगग्राम नगरनी बहार उत्तर अने पूर्वनी वच्चेनी दिशामां एटले ईशान खुणामां चंदनपादप नामनुं

उद्यान हतुं, ते सर्व ऋतु संबंधी पुष्पोथी व्याप्त हतुं, (तथा नंदनवननी जेवुं हतुं) इत्यादि उद्याननुं वर्णन कहेवुं. ते उद्यानमां सुधर्मा नामना यक्षनुं यक्षायतन (चैत्य) हतुं, ते घणा काळनुं बनावेलुं हतुं इत्यादि पूर्णभद्र चैत्यनी जेवुं वर्णन कहेवुं अने औपपातिक सूत्रमां-हीनता रहित परिपूर्ण पांच इंद्रियो अने शरीर छे जेनुं, इत्यादि यक्षनुं वर्णन कह्युं छे ते प्रमाणे तेनुं कहेवुं.

मू०—तत्थ णं मियग्गामे णगरे विजए नामं खत्तिए राया परिवसइ, वण्णओ। तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स मिया नामं देवी होत्था, अहीणपुण्णपंचिंदियसरीरे, वण्णओ।

अर्थ—ते मृगग्राम नगरमां विजय नामे क्षत्रिय राजा वसतो हतो. तेनुं वर्णन कहेवुं. ते विजय क्षत्रियने मृगा नामनी देवी (पट्टराणी) हती. तेणीना पांचे इंद्रियो अने शरीर हीनता रहित अने परिपूर्ण हतां, इत्यादि वर्णन कहेवुं.

मू०—तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए होत्था, जातिअंधे जाइमूए जातिबहिरे जातिपंगुले य हुंडे य वायव्वे य। नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा, केवलं से तेसिं अंगोवंगाणं आगई आगतिमित्ते।

अर्थ—ते विजय क्षत्रियनो पुत्र मृगादेवीनो आत्मज[1] मृगापुत्र नामनो दारक (बाळक) हतो. ते जन्मथी ज अंध

१ पोताथी उत्पन्न थयेलो.

हतो, जन्मथी ज मुंगो हतो, जन्मथी ज बधिर हतो, जन्मथी ज पंगु—पांगळो हतो, हुंड एटले सर्व अवयवोना प्रमाणथी रहित हतो, तेथी वायुवाळो—वातप्रकृतिवाळो हतो, वळी ते दारकने हाथ, पग, कान, आंख के नासिका कोइपण (पृथक् देखाय तेवुं) नहोतुं, केवळ तेने ते ते अंगोपांगनी आकृति मात्र आकाररूपे ज हती.

मू०—तते णं सा मियादेवी तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ ॥ २ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते मृगादेवी ते मृगापुत्र दारकने (कोइने बताववा योग्य न होवाथी) राहसिक एटले कोइपण मनुष्य न जाणे तेम एकांतवाळा भूमिगृह (भोंयरा) मां गुप्तरीते राखीने भातपाणीवडे पोषण करती पोषण करती रहेती हती. २.

मू०—तत्थ णं मियग्गामे णगरे एगे जातिअंधे पुरिसे परिवसइ । से णं एगेणं सचक्खुतेणं पुरिसेणं पुरओ दंडएणं पगढिज्जमाणे पगढिज्जमाणे फुट्टहडाहडसीसे मच्छियाचडगरपहकरेणं अण्णिज्जमाणमग्गे मियग्गामे नयरे गेहे गेहे कालुणवडियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ ।

अर्थः—ते मृगग्राम नगरमां एक जन्मांध पुरुष रहेतो हतो. ते अंध पुरुष (लाकडी राखीने) आगळ चालता एक चक्षुवाळा (देखता) पुरुषथी लाकडीवडे खेंचातो खेंचातो चालतो हतो. (देखतो पुरुष तेने लाकडीवडे दोरतो हतो.) तेना मस्तकना केश फुटेला अने अत्यंत विखरायेला हता, माखीओनो विस्तारवाळो समूह तेना मार्गने अनुसरतो हतो—

(तेनां वस्त्र तथा शरीर मलिन होवाथी) तेनी पाछळ माखीओनो समूह बणबण करतो जतो हतो. (प्राये मलिन वस्तु उपर माखीओ लागे ज छे.) आवा प्रकारनो ते अंध मियग्राम नगरमां घेर घेर दयानी वृत्तिथी (दया उपजावतो सतो) आजीविकाने करतो सतो रहेतो हतो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए, जाव परिसा निग्गया, तए णं से विजए खत्तिए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जहा कोणिए तहा निग्गते जाव पज्जुवासइ ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवंत महावीरस्वामी यावत् विहारना अनुक्रमे एक गामथी बीजे गाम जता चंपानगरीए समवसर्या, यावत् पर्षदा (तेमने वांदवा माटे नगरीमांथी) नीकळी. त्यारपछी ते विजय क्षत्रिय आ कथाए करीने अर्थने (महावीरस्वामीना आगमनने) पाम्यो सतो (जाणीने) जेम कोणिक राजा (प्रभुने वंदन करवा माटे नीकळ्यो हतो) तेम नीकळ्यो, यावत् प्रभुनी सेवा करवा लाग्यो.

मू०—तते णं से जातिअंधे पुरिसे तं महया जणसद्दं जाव सुणेत्ता तं पुरिसं एवं वयासी—“ किन्नं देवाणुप्पिया ! अज्ज मियग्गामे णगरे इंदमहेइ वा जाव निग्गच्छइ ? ”

अर्थ—त्यारपछी ते जातिअंध (जन्मांध) पुरुषे ते मोटा जनशब्दने (लोकोना शब्दने) यावत् जनना समूहने

अने जनना कोलाहलने सांभळीने ते (पोतानी साथेना) पुरुषने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! शुं आजे आ मृगग्राम नगरमां कोइ इंद्रमहोत्सव विगेरे कांइ छे के यावत् सर्व नगरीना लोको बहार जाय छे ? "

अहीं ' इंदमहेइ वा ' ए ठेकाणे यावत् शब्द छे माटे आ प्रमाणे जाणवुं–शुं इंद्र महोत्सव छे ? के स्कंद (कार्तिकस्वामी) नो महोत्सव छे ? के रुद्र (महादेव) नो महोत्सव छे ? के यावत् उद्याननी यात्रा एटले कांइ उजाणी छे ? के जेथी घणा उग्रकुळना, भोगकुळना, यावत् सर्व लोको एक दिशामां एक ज तरफ सन्मुख थयेला जाय छे ?

मू०–तते णं से पुरिसे तं जातिअंधपुरिसं एवं वयासी–" नो खलु देवाणुप्पिया ! इंदमहेइ वा जाव णिग्गच्छाति, एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे जाव विहराति, तते णं एते जाव निग्गच्छंति।"

अर्थ––त्यारपछी ते पुरुषे ते जन्मांध पुरुषने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! आजे कांइ इंद्रमहोत्सवादिक नथी के जेथी नगरीजनो बहार नीकळे छे. परंतु आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी नगरीनी बहार मृगवन नामना उद्यानमां पधार्या छे. तेथी आ सर्व लोको नीकळे छे–जाय छे."

मू०–तते णं से अंधपुरिसे तं पुरिसं एवं वयासी–" गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! अम्हे वि समणं भगवं जाव पज्जुवासामो "।

अर्थ––त्यारपछी ते अंध पुरुषे ते पुरुषने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिय ! त्यारे आपणे पण जइए, अने श्रमण

भगवंत महावीरस्वामीनी यावत् सेवा करीए. ”

मू०—तते णं से जातिअंधे पुरिसे पुरतो दंडएणं पगाढिज्जमाणे पगाढिज्जमाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासति ।

अर्थ—त्यारपछी ते जातिअंध पुरुष आगळ चालता ते पुरुषे लाकडीवडे खेंचातो खेंचातो (दोरातो दोरातो) ज्यां श्रमण भगवंत महावीरस्वामी हता त्यां आव्यो. आवीने त्रण वार दक्षिण बाजुथी आरंभीने दक्षिण बाजुए पाछा आववा रूप प्रदक्षिणा करी, प्रदक्षिणा करीने वंदना करी, नमस्कार कर्या, वांदी नमस्कार करी यावत् सेवा करवा लाग्यो.

मू०—तते णं समणे भगवं महावीरे विजयस्स खत्तियस्स तीसे य परिसाए धम्ममाइक्खति, परिसा जाव पडिगया, विजए वि गते ॥ ३ ॥

अर्थ—त्यारपछी श्रमण भगवंत महावीरस्वामीए ते विजय क्षत्रियनी पासे तथा ते मोटी पर्षदानी पासे जे प्रकारे जीवो बंधाय छे—कर्म बांधे छे इत्यादि विविध प्रकारे धर्म कह्यो. ते सांभळी पर्षदा यावत् पाछी गइ. विजय क्षत्रिय पण गयो. ३.

मू०— ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूतिनामं अणगारे जाव विहरति ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवंत महावीरस्वामीना मोटा-पहेला शिष्य इंद्रभूति (गौतम) नामना अनगार ध्यानमां रहेला हता.

मू०—तते णं से भगवं गोयमे तं जातिअंधपुरिसं पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव एवं वयासी—" अत्थि णं भंते ! केई पुरिसे जातिअंधे जाति(य)अंधारूवे ? "। ' हंता अत्थि '। " कहण्णं भंते ! से पुरिसे जातिअंधे जाति(य)अंधारूवे ? "।

अर्थ—त्यारपछी ते भगवान गौतमे ते जन्मांध पुरुषने जोयो. जोइने तेनो वृत्तांत जाणवानी इच्छा थवाथी यावत् आ प्रमाणे बोल्या—" हे भगवान् ! कोइ पुरुष जन्मथी ज अंध अने जातांधकरूप एटले प्रथमथी ज जेने कुत्सित अंगरूप नेत्रनुं अंधपणुं उत्पन्न थयुं होय एवो होय छे ? " भगवाने कह्युं—" हा. एवो पण होय छे. ' गौतमे पूछ्युं—" हे भगवन् ! केवी रीते ते पुरुष जन्मांध अने जातांधकरूप होय छे ? "

मू०—" एवं खलु गोयमा ! इहेव मियग्गामे नगरे विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए जातिअंधे जाति(य)अंधारूवे, नत्थि णं तस्स दारगस्स जाव आगातिमित्ते। तते णं सा मियादेवी जाव पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरति "।

अर्थ—भगवाने कह्युं—" आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम! आ ज मृगग्राम नामना नगरमां विजय नामना क्षत्रियनो पुत्र मृगादेवीनो आत्मज मृगापुत्र नामनो दारक छे. ते जात्यंध अने जातांधकरूप छे. ते दारकने हाथ विगेरे अवयवो पण नथी यावत् आकृति मात्र ज छे. तेथी ते मृगादेवी तेने भोंयरामां गुप्त राखी पोषण करती पोषण करती रहेली छे."

मू०—तते णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—" इच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे मियापुत्तं दारगं पासित्तए "। ' अहासुहं देवाणुप्पिया ! '।

अर्थ—त्यारपछी (ते सांभळीने) ते भगवान गौतमस्वामीए श्रमण भगवंत महावीरस्वामीने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं—" हे भगवन् ! हुं तमोए आज्ञा आपायो सतो ते मृगापुत्र दारकने जोवा इच्छुं छुं." भगवान बोल्या—" हे देवानुप्रिय ! जेम तने सुख उपजे तेम कर (तारी इच्छा प्रमाणे कर).'

मू०—तते णं से भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुन्नाए समाणे हट्ठे तुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियं जाव (अच-वलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं) सोहेमाणे सोहेमाणे जेणेव मियग्गामे णगरे

तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव मियादेवीए गेहे तेणेव उवागए ।

अर्थ—त्यारपछी ते भगवान गौतमस्वामी श्रमण भगवंत महावीरस्वामीए आज्ञा अपाया सता हृष्ट तुष्ट थया. अने श्रमण भगवंत महावीरस्वामीनी पासेथी नीकळ्या. नीकळीने अत्वरित एटले मननी स्थिरताने लीधे शीघ्रता रहितपणे यावत् (कायानी चपळता रहितपणे भ्रांति रहित युगप्रमाण पृथ्वीने विषे जोनारी दृष्टिवडे) इर्यासमितिने शोधता शोधता ज्यां मृगग्राम नगर हतुं त्यां आव्या. आवीने मृगग्राम नगरना मध्य भागे थइने ज्यां मृगादेवीनुं घर हतुं त्यां आव्या.

मू०—तते णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ तुट्ठ जाव एवं वयासी—" संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपयोयणं ? "

अर्थ—त्यारपछी ते मृगादेवीए भगवान् गौतमस्वामीने आवता जोया. जोइने हृष्ट तुष्ट थइ यावत् चित्तमां आनंद पामी सती आ प्रमाणे बोली—" हे देवानुप्रिय ! आपने अहीं आववानुं शुं प्रयोजन छे ? ते कहो. "

मू०—तते णं भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी—" अहण्णं देवाणुप्पिए ! तव पुत्तं पासितुं हव्वमागए " ।

अर्थ—त्यारे भगवान् गौतमस्वामीए मृगादेवीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिया ! हुं तमारा पुत्रने जोवा माटे शीघ्रपणे आव्यो छुं. "

मू०—तते णं सा मियादेवी मियापुत्तस्स दारगस्स अणुमग्गजायते चत्तारि पुत्ते सव्वालंकारविभूसिए करेति, करित्ता भगवतो गोयमस्स पादेसु पाडेति, पाडित्ता एवं वयासी—" एए णं भंते ! मम पुत्ते पासह "

अर्थ—त्यारपछी (ते सांभळीने) ते मृगादेवीए मृगापुत्र दारकनी पछी थयेला चार पुत्रोने सर्व अलंकारोवडे विभूषित कर्या. करीने भगवान गौतमस्वामीना पगमां पाड्या (नमाव्या). पगमां पाडीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे भगवन् ! आ मारा पुत्रोने जुओ. "

मू०—तते णं से भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी—" नो खलु देवाणुप्पिए ! अहं एए तव पुत्ते पासिउं हव्वमागते, तत्थ णं जे से तव जेट्ठे मियापुत्ते दारए जाइअंधे जाति(य)अंधारूवे जं णं तुमं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरसि, तं णं अहं पासिउं हव्वमागए "।

अर्थ—त्यारे ते भगवान् गौतमस्वामीए मृगादेवीने आ प्रमाणे कह्युं–" हे देवानुप्रिया ! हुं आ तारा पुत्रोने जोवा शीघ्रपणे आव्यो नथी, पण जे तारो मोटो मृगापुत्र दारक जातिअंध अने जातांधकरूप छे, तथा जेने तुं गुप्त भूमिगृहने विषे राखीने गुप्त रीते भातपाणीवडे पोषण करती पोषण करती विचरे छे-रहेली छे, तेने जोवाने हुं शीघ्रपणे आव्यो छुं. "

मू०—तते णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी–" से के णं गोयमा ! से तहारूवे णाणी वा तवस्सी वा जेणं ताव एसमट्ठे मम ताव रहस्सिकए तुब्भं हव्वमक्खाए जओ णं तुब्भे जाणह ? "

अर्थ—त्यारे ते मृगादेवीए भगवान् गौतमस्वामीने आ प्रमाणे कह्युं के–" हे गौतमस्वामी ! ते तेवा प्रकारना ज्ञानी के तपस्वी कोण छे ? के जेणे तमने प्रथम तो आ मारो गुप्त करेलो अर्थ (वृत्तांत) शीघ्रपणे कह्यो ? के जेथी तमे आ अर्थ जाणो छो ? "

मू०—तते णं भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी–" एवं खलु देवाणुप्पिए ! मम धम्मायरिए समणे भगवं महावीरे जतो णं अहं जाणामि " ।

अर्थ—त्यारपछी भगवान् गौतमस्वामीए मृगादेवीने आ प्रमाणे कह्युं–" आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिया ! मारा धर्माचार्य श्रमण भगवान् महावीर छे, के जेनाथी आ वृत्तांत हुं जाणुं छुं. "

मू०—जावं च णं मियादेवी भगवया गोयमेण सद्धिं एयमट्ठं संलवति तावं च णं मियापुत्तस्स दारगस्स भत्तवेला जाया यावि होत्था।

अर्थ—जेटलामां मृगादेवी भगवान गौतमस्वामीनी साथे आ अर्थनी वातचीत करे छे, तेटलामां मृगापुत्र दारकनो भोजन समय पण थयो.

मू०—तते णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी—" तुब्भे णं भंते ! इहं चेव चिट्ठह, जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि " त्ति कट्टु जेणेव भत्तपाणघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वत्थपरियट्टयं करेति, वत्थपरियट्टयं करित्ता कट्ठसगडियं गिण्हति, कट्ठसगडियं गिण्हित्ता विपुलस्स असणपाणखाइमसाइमस्स भरेति, विपुलस्स असणपाणखाइमसाइमस्स भरेत्ता तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी अणुकड्ढमाणी जेणामेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं एवं वयासी—" एह णं तुब्भे भंते ! मम अणुगच्छह, जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारगं उवदंसेमि "।

अर्थ—त्यारपछी ते मृगादेवीए भगवान गौतमस्वामीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे भगवन् ! तमे अहीं ज रहो, जेट-

लामां हुं तमने मृगापुत्र दारक देखाडुं." एम कही ज्यां भातपाणीनुं घर हतुं त्यां ते आवी. आवीने वस्त्रनुं परावर्तन कर्युं. वस्त्रनुं परावर्तन करीने काष्ठनी गाडी ग्रहण करी. काष्ठनी गाडी ग्रहण करीने विपुल (घणा) अशन, पान, खादिम अने स्वादिमवडे ते गाडी भरी. विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमवडे ते गाडी भरीने ते काष्ठनी गाडीने खेंचती खेंचती ज्यां भगवान गौतमस्वामी हता त्यां आवी. आवीने तेणीए भगवान गौतमस्वामीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे भगवन् ! तमे आवो, मारी पाछळ चालो. जेटलामां हुं तमने मृगापुत्र दारक देखाडुं. "

मू०—तते णं से भगवं गोयमे मियं देविं पिट्ठओ समणुगच्छाति ।

अर्थ—त्यारपछी ते भगवान गौतमस्वामी मृगादेवीनी पाछळ चाल्या.

मू०—तते णं सा मियादेवी तं कट्ठसगडियं अणुकड्ढमाणी अणुकड्ढमाणी जेणेव भूमिघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चउप्पुडेणं[2] वत्थेणं मुहं बंधेति, मुहं बंधमाणि (णी) भगवं गोयमं एवं वयासी—तुब्भे वि णं भंते ! मुहपोत्तियाए मुहं बंधह " । तते णं से भगवं गोयमे मियादेवीए एवं वुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुहं बंधेति

---

१ बीजुं वस्त्र पहेर्युं. २ चउपडेणं. प्रत्य०

अर्थ—त्यारपछी ते मृगादेवी ते काष्ठनी गाडीने खेंचती खेंचती ज्यां भूमिगृह हतुं, त्यां आवी. आवीने तेणीए चार-पड वस्त्रवडे पोतानुं मुख बांध्युं. मुखने बांधती तेणीए भगवान गौतमस्वामीने आ प्रमाणे कह्युं—"हे भगवान! तमे पण मुखवस्त्रिकावडे मुखने बांधो." त्यारे ते भगवान गौतमस्वामीए मृगादेवीए आ प्रमाणे कहे सते (कह्युं त्यारे) मुख-वस्त्रिकावडे पोतानुं मुख बांध्युं.

मू०—तते णं सा मियादेवी परम्मुही भूमिघरस्स दुवारं विहाडेइ, तते णं गंधे निग्गच्छति से जहानामए अहिमडेति वा सप्पकडेवरेइ वा जाव ततो वि णं अणिट्ठतराए चेव जाव गंधे पन्नत्ते।

अर्थ—त्यारपछी ते मृगादेवीए अवळुं मुख राखी भूमिगृहनुं द्वार उघाड्युं. त्यारे तेमांथी दुर्गंध नीकळ्यो, ते जेवो के अहि (सर्प)ना मडदानो अथवा सर्पना कलेवरनो होय, यावत् (गायना मडदानो होय, कुतराना मडदानो होय, इत्यादि) तेनाथी पण अत्यंत अनिष्ट यावत् (अत्यंत अकांत, अप्रिय, अमनोज्ञ तथा मनमां न सांभरे—सारो न लागे तेवो) तेनो गंध कहेलो छे.

मू०—तते णं से मियापुत्ते दारए तस्स विपुलस्स असणपाणखाइमसाइमस्स गंधेणं अभिभूते समाणे तंसि विपुलंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिते (गढिए गिध्धे अज्झोववन्ने) तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसएणं आहारेति, आहारित्ता खिप्पामेव विद्धंसेति विद्धंसेत्ता ततो

पच्छा पूयत्ताए य सोणियत्ताए य परिणामेति, तं पि य णं पूयं च सोणियं च आहारेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मृगापुत्र दारक ते विपुळ (मोटा) एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमना गंधवडे व्याप्त थयो सतो ते विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने विषे मूर्च्छा पाम्यो, (ग्रहण करायो, गृद्ध (लुब्ध) थयो अने अध्युपपन्न एटले आसक्त थयो) सतो ते विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तेमां बेसवावडे आहार कर्यो. (लोमवडे ग्रहण करवा मांड्यो) आहार करीने (करवाथी) शीघ्रपणे ते आहार विध्वंसपणाने पाम्यो (बगडी गयो) विध्वंस पामीने त्यारपछी परुपणे तथा रुधिरपणे परिणमाव्यो. अने पछी ते परु अने रुधिरनो आहार कर्यो.

मू०—तते णं भगवओ गोयमस्स तं मियापुत्तं दारयं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए (चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे) समुप्पज्जित्था—" अहो णं इमे दारए पुरापोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुभाणं पावाणं कडाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणे विहरति, ण मे दिट्ठा णरगा वा णेरइया वा पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे नरयपडिरूवियं वेयणं वेयति " त्ति कट्टु मियं देविं आपुच्छति, आपुच्छित्ता मियाए देवीए गिहाओ पडिनिक्खमति, गिहाओ पडिनिक्खमित्ता मियग्गामं णगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे

भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी भगवान गौतमस्वामीने ते मृगापुत्र दारकने जोइ आवा प्रकारनो (चिंतवेलो, कल्पना करेलो, प्रार्थना करेलो, मनमां रहेलो, संकल्प करेलो) विचार उत्पन्न थयो.—" अहो ! आ दारक पहेलाना (पूर्वभवना), पुराणा (जुनां), दुष्टरीत आचरण करेलां एटले प्राणातिपातादिक दुश्चरित्रना हेतुरूप, प्रायश्चित्तादिकवडे नहीं प्रतिक्रमण करेलां एटले निष्फळ नहीं करेलां, अशुभ एटले दुःखना हेतुरूप तथा पाप एटले पापी (दुष्ट स्वभाववाळां) एवां पोते करेलां ज्ञानावरणादिक कर्मोना पापवाळा (दुःखदायक) फळवृत्ति विशेपने अनुभवतो सतो रहेलो छे. जो के में नरक के नारकी जीवोने नजरे जोया नथी, तोपण आ पुरुष (मृगापुत्र दारक) प्रत्यक्षपणे ज नरकना जेवी ज वेदना अनुभवे छे." आ प्रमाणे विचार करीने ते गौतमस्वामीए मृगादेवीनी रजा मागी. रजा लइने मृगादेवीना घरमांथी ते नीकळ्या. तेना घरमांथी नीकळीने मृगग्राम नगरना मध्य भागे थइने नीकळ्या. नीकळीने ज्यां श्रमण भगवान महावीरस्वामी हता, त्यां आव्या. आवीने श्रमण भगवान महावीरस्वामीने त्रण वार जमणी बाजुथी फरतां जमणी बाजुए आववारूप प्रदक्षिणा करी. प्रदक्षिणा करीने तेमने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे बोल्या—

मू०—" एवं खलु अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मियग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं अणु-

प्पविसामि, जेणेव मियाए देवीए गेहे तेणेव उवागते, तते णं सा मिया देवी ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठा तं चेव सव्वं जाव पूयं च सोणियं च आहारेति । तते णं मम इमे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था–अहो ! णं इमे दारए पुरा जाव विहरइ ॥ ४ ॥

अर्थ—"आ प्रमाणे निश्चे हुं आपनी आज्ञा पाम्यो सतो मृगग्राम नगरना मध्य भागे प्रवेश करतो हतो अने ज्यां मृगादेवीनुं घर हतुं त्यां गयो. ते वखते ते मृगादेवीए मने आवतो जोयो. जोइने ते हर्ष पामी (मने मृगापुत्र बताव्यो) विगेरे ते ज सर्व जाणवुं, यावत् ते मृगापुत्रे परु अने रुधिरनो आहार कर्यो. ते वखते मने आवा प्रकारनो विचार उत्पन्न थयो के–अहो! आ बाळक पूर्वना यावत् पापवाळा–(कर्मोना परिणाम तरीके) दुःखदायक फळवृत्ति विशेषने अनुभवतो सतो रहेलो छे. ४.

मू०–से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसि ? (किंनामए वा किंगोए वा ?) कयरंसि गामंसि वा नयरंसि वा किं वा द(कि)च्चा किं वा भोच्चा किं वा समायरित्ता केसिं वा पुरा जाव (पोराणाणं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताणं असुहाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणे) विहरति ?"।

१ 'किच्चा' प्रत्यंतरनो पाठ ठीक छे.

अर्थ—तो हे भगवंत ! ते पुरुष पूर्वभवे कोण हतो ? तेनुं शुं नाम हतुं ? शुं गोत्र हतुं ? ते क्या गाममां अथवा नगरमां रहेतो हतो ? ते शुं दान आपीने (शुं कार्य करीने) अथवा शुं भोग भोगवीने अथवा शुं आचरण करीने (मरण पामी आ भवमां) क्या पूर्वना यावत् (पुराण–जुनां, दुष्ट रीते आचरण करेलां, प्रायश्चित्तादिकवडे नहीं पडिकमेलां, अशुभ अने पापी एवां पोते करेलां कर्मोना दुःखदायक) फळवृत्ति विशेषने अनुभवतो रहेलो छे ? ”

मू०—गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सयदुवारे नामं नगरे होत्था रिद्धत्थिमिए, वन्नओ । तत्थ णं सयदुवारे नगरे धणवई नामं राया हुत्था, वण्णओ ।

अर्थ—त्यारपछी हे गौतम ! ए प्रमाणे संबोधन आपीने श्रमण भगवान महावीरस्वामीए गौतमस्वामीने आ प्रमाणे कह्युं–“ आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपमां भरतक्षेत्रने विषे शतद्वार नामे नगर हतुं. ते समृद्धिवाळुं अने स्तिमित एटले भय रहित हतुं विगेरे. तेनो वर्णक ग्रंथ औपपातिकमांथी जाणी लेवो. ते शतद्वार नामना नगरमां धनपति नामे राजा हतो. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तस्स णं सयदुवारस्स नगरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरच्छिमे दिसीभाए विजयवद्धमाणे

णामं खेडे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे, तस्स णं विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं आभोए यावि हुत्था।

अर्थ—ते शतद्वार नगरनी अति दूर नहीं तेमज अति नजीक नहीं एवे स्थाने अर्थात् तेनी समीपे दक्षिण अने पूर्वनी वच्चेनी दिशामां एटले ईशान खूणामां विजयवर्धमान नामे खेडं हतुं, ते ऋद्धिवाळुं, भय रहित अने समृद्धिवाळुं हतुं. ते विजयवर्धमान खेडनी पाछळ बीजां पांचसो गामो हतां.

मू०—तत्थ णं विजयवद्धमाणे खेडे इक्काई णामं रट्ठकूडे होत्था अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे।

अर्थ—ते विजयवर्धमान खेडने विषे इक्काइ नामे राष्ट्रकूट (राठोड) हतो. ते अधार्मिक (पापी) यावत् दुष्प्रत्यानंद एटले साधु विगेरेने जोवाथी आनंद न पामे तेवो हतो.

अहीं 'अहम्मिए जाव' ए ठेकाणे यावत् शब्द छे तेथी आटलो पाठ जाणवो–'अधम्माणुए' अधर्मानुग एटले श्रुतचारित्रना अभावरूप अधर्मने अनुसरनारो, शाथी ? ते कहे छे–'अधम्मिट्ठे' अधर्मिष्ठ एटले जेने अधर्म ज वहालो अथवा पूज्य होय ते, अथवा अत्यंत अधर्मी एटले धर्म रहित, तेथी करीने ज 'अधम्मक्खाई'–अधर्माख्यायी एटले अधर्मने कहेनार, तेनुं प्रतिपादन करनार, अथवा अधर्मख्याति एटले आ धर्म रहित छे एवी प्रसिद्धिवाळो, तथा

---

१ धूळना किल्लावाळुं गाम.

'अधम्मप्पलोई '–अधर्मप्रलोकी एटले अधर्मने ज ग्रहण करवानी बुद्धिथी जोनार, ते कारण माटे ज 'अधम्मपलज्जणे अधर्मप्ररजन एटले अधर्मवडे रागी (खुशी) थनार, ए ज कारण माटे 'अधम्मसमुदाचारे '–जेने अधर्मनो ज आचार छे ते. एटले अधर्मनुं ज आचरण करनार, एज कारण माटे 'अधम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे '–अधर्मवडे ज एटले हिंसादिकवडे ज आजीविकाने करतो, 'दुस्सीले ' सारा स्वभाव रहित, तथा 'दुव्वए '–व्रत रहित. इति.

मू०–से णं इक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंचण्हं गामसयाणं आहेवच्चं जाव पाले-माणे विहरइ ।

अर्थ—ते इक्काइ राठोड विजयवर्धमान खेडना पांचसो गामोना आधिपत्यने यावत् पाळतो सतो विचरतो हतो–रहेलो हतो.

'आहेवच्चं जाव ' अहीं यावत शब्द छे तेथी आ प्रमाणे जाणवुं–'आहेवच्चं '–अधिपतिपणाने, 'पोरेवच्चं '–पुरोवर्तित्व एटले अग्रेसरपणाने, 'सामित्तं '–स्वामीपणाने एटले नायकपणाने, 'भट्टित्तं '–भर्तृत्व एटले पोषकपणाने, 'महत्तरगत्तं '–महत्तरकत्व एटले उत्तमपणाने, 'आणाईसरसेणावच्चं '–आज्ञेश्वर एटले जेनी आज्ञा ज प्रधान छे एवा स्वामीनुं जे सेनापतिपणुं तेने 'कारेमाणे '–बीजा नोकरो पासे करावतो–पळावतो अने पोते पाळतो सतो रहेलो हतो.

मू०–तए णं से इक्काई विजयवद्धमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं बहूहिं करेहि य भरेहि य

विद्धीहि य उक्कोडाहि य पराभवेहि य दिज्जेहि य भेज्जेहि य कुंतेहि य लंछपोसेहि य आलीवणेहि य पंथकोट्टेहि य उवीलेमाणे उवीलेमाणे विहम्मेमाणे विहम्मेमाणे तज्जेमाणे तज्जेमाणे तालेमाणे तालेमाणे निद्धणे करेमाणे करेमाणे विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते इक्काइ राठोड विजयवर्धमान खेडना पांचसो गामोने (गामना लोकोने) घणा कर वडे एटले खेतर विगेरेनी उपजमांथी भाग लेवावडे, भरवडे एटले ते ज करने वधारवावडे, वृद्धिवडे एटले कणबी विगेरेने प्रथम आपेला धान्यने बमणा त्रणगुणा आदिक वधारे लेवावडे, (कोइ प्रतमां वृत्तिवडे एवो पण पाठ छे. त्यां वृत्तिवडे एटले राजाना नोकरो (पसाइता विगेरे)ने खेडुतो पासेथी जे माणुं, कांपो विगेरे आजीविका आपवामां आवे छे तेरूप वृत्तिवडे एवो अर्थ करवो.) उत्कोटवडे एटले लांच लेवावडे, पराभववडे, देयवडे एटले देवादार माणसनी पासेथी वधारे व्याज लेवावडे, भेद्यवडे एटले मारामारी विगेरेना अपराधने आश्रीने ते गामना मनुष्यो उपर जे दंडनुं द्रव्य नांखवामां आवे छे तथा दरेक कणबी पासेथी जुदुं जुदुं जे दंडद्रव्य उघरावबामां आवे छे तेवा प्रकारना भेद्यवडे अथवा एक अपराधीनो करेलो दंड सर्व मनुष्योपर नांखवावडे, कुंतवडे एटले आटलुं धन तारे मने आपवुं एवी शरते नोकरने अमुक देश आपी तेनी पासेथी ते धन लेवावडे, लंछपोषवडे एटले चोरोनुं पोषण करवावडे, आदीपनवडे एटले लोकोने व्याकुळ करी तेमने लुंटवा माटे ग्रामादिकने सळगाववावडे तथा पंथकोट्टवडे एटले सार्थ विगेरे वटेमार्गुओने कुटवा–मारवावडे (लोकोने)

बाधा-पीडा करतो करतो, धर्म रहित एटले आचारभ्रष्ट करतो करतो, तर्जना करतो करतो एटले " मारी अमुक वस्तु तुं आपतो नथी तेथी तुं याद राखजे " ए रीते कहीने धैर्यवान (निडर) मनुष्यने भय पमाडतो पमाडतो, ताडना करतो एटले चाबक अने लपाट विगेरेवडे मार मारतो मारतो तथा ते लोकोने निर्धन करतो करतो विचरतो हतो-रहेलो हतो.

मू०—तते णं से इक्काई रट्ठकूडे विजयवद्धमाणस्स खेडस्स बहूणं राईसरतलवरमाडंबियकोडुं-बियसेट्ठिसत्थवाहाणं अन्नेसिं च बहूणं गामेल्लगपुरिसाणं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य सुणमाणे भणाति ' न सुणेमि, ' असुणमाणे भणाति ' सुणेमि, ' एवं पस्समाणे भासमाणे गिण्हमाणे जाणमाणे ।

अर्थ—त्यारपछी ते इकाइ राठोड विजयवर्धमान खेडना घणा राजा, युवराज, तलवर, मंडंबना आधिपति, कौटुंबिक, श्रेष्ठी अने सार्थवाहो तथा बीजा पण गामना घणा लोकोना घणां कार्यो संबंधी अने कारणो संबंधी विचारोमां, गुप्त रहस्योमां, निश्चयोमां अने व्यवहारो (विवादो)मां पोते सांभळ्या छतां कहेतो हतो के– ' में सांभळ्युं नथी. ' अने नहीं सांभळ्या छतां कहेतो हतो के–' में सांभळ्युं छे.' ए ज प्रमाणे जोता छतां, बोलता छतां, ग्रहण करता छतां अने जाणता

१ जेनी फरतां बे योजन सुधीमा ग्रामादिक न होय ते मडंब कहेवाय छे. २ साधवा लायक कार्यना उपाय.

छतां–'में जोयुं नथी, कह्युं नथी, ग्रहण कर्युं नथी अने जाएयुं नथी' एम कहेतो हतो. तेम ज तेनाथी विपरीत पण जाणी लेवुं. (एटले न जाणेला, न कहेला, न ग्रहण करेला ने न जोयेलामां जाएयुं छे, कह्युं छे, लीधुं छे अने जोयुं छे एम असत्य कहेतो हतो.)

मू०–तते णं से इक्काई रट्ठकूडे एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमायारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणमाणे विहरति ।

अर्थ—ए रीते ते इक्काई राठोड आवा कर्मवाळो, आवा कार्यमां ज तत्पर, आवी ज विद्या(कळा)वाळो अने आवा ज आचारवाळो थइने अत्यंत घणा अने कलहना हेतुरूप मलिन पापकर्मोने उपार्जन करतो सतो विचरतो हतो–रहेलो हतो.

मू०–तते णं तस्स इक्काइयस्स रट्ठकूडस्स अन्नया कयाइं सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तं जहा—

" सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४, कुच्छिसूले ५ भगंदरे ६ ।
अरिसा ७ अजीरए ८ दिट्ठी ९, मुद्धसूले १० अकारए ११ ॥ १ ॥
अच्छीवेयणा १२ कन्नवेयणा १३ कंडू १४ उदरे १५ कोढे १६ ॥ "

अर्थ—त्यारपछी एकदा कदाचित् ते इकाई राठोडना शरीरमां एकी साथे सोळ रोगांतक उत्पन्न थया. तेनां नाम आ प्रमाणे—" श्वास १, कास (खांसी) २, ज्वर ३, दाह ४, कुक्षिशूळ ५, भगंदर ६, अर्श (मसा) ७, अजीर्ण ८, नेत्रशूळ ९, मस्तकशूळ १०, अकारक (अरुचि) ११, नेत्रपीडा १२, कर्णपीडा १३, कंडू (खरज) १४, जलोदर १५ अने कोढ १६.

मू०—तते णं से इक्काई रट्ठकूडे सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते इकाइ राठोड सोळ रोगांतकवडे पराभव पामतो सतो कौटुंबिक पुरुषोने (सेवकोने) बोलावे, बोलावीने, आ प्रमाणे कहेतो हतो.

मू०—" गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विजयवद्धमाणे खेडे संघाडगतिगचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वदह—इहं खलु देवाणुप्पिया ! इक्काइरट्ठकूडस्स सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तं जहा—सासे कासे जरे जाव कोढे । तं

१ कष्टसाध्य रोग.

जो णं इच्छाति देवाणुप्पिया ! विज्जो वा विज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छि वा तेगिच्छिपुत्तो वा इक्काइरट्ठकूडस्स तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, तस्स णं इक्काई रट्ठकूडे विपुलं अत्थसंपयाणं दलयाति, दोच्चं पि तच्चं पि उग्घोसेह, उग्घोसित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ” ।

अर्थ—“ हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने विजयवर्धमान नामना खेडना शृंगाटकमां (शींगोडाना आकारवाळा मार्गमां), त्रिकमां (त्रण रस्ता मळता होय त्यां), चतुष्कमां (चार मार्ग भेळा थता होय त्यां), चत्वर (चौटा)मां महापथ (राजमार्ग)मां अने पथ (सामान्य मार्ग)मां मोटा मोटा शब्दवडे आघोषणा करता करता आ प्रमाणे कहो के—अहीं (आ गाममां) हे देवानुप्रियो ! इक्काई राठोडना शरीरमां सोळ रोगातंको प्रगट थया छे, ते आ प्रमाणे—श्वास, कास, ज्वर यावत् कोढ. तेथी करीने हे देवानुप्रिय ! जे कोइ वैद्य एटले वैदक शास्त्रमां (रोगनुं निदान करवामां) अने रोगनी चिकित्सामां कुशळ होय, अथवा तेवा वैद्यनो पुत्र होय, ज्ञायक एटले केवळ वैदकशास्त्रमां ज (निदान करवामां ज) कुशळ होय, अथवा तेवा ज्ञायकनो पुत्र होय, अथवा केवळ चिकित्सामां कुशळ होय अथवा तेवा चिकित्सकनो पुत्र होय अने इक्काई राठोडना ते सोळ रोगांतक मांहेना एक पण रोगातंकने शांत करवा इच्छतो होय तो तेने (रोग मटाडनार वैद्यादिकने) इक्काई राठोड मोटुं (घणुं) धननुं दान आपशे. आ प्रमाणे बे वार त्रण वार आघोषणा करो. ए प्रमाणे

आघोषणा करीने आ मारी आज्ञा मने पाछी सोंपो एटले के ते प्रमाणे अमे कर्युं एम मने आवीने कहो."

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कोडुंबिक पुरुषोए ते प्रमाणे करी यावत् तेनी आज्ञा पाछी आपी.

मू०—तते णं से विजयवद्धमाणे खेडे इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे विज्जा य विज्जपुत्ता य जाणुआ य जाणुअपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छिपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया सएहिं सएहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता विजयवद्धमाणस्स खेडस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव इक्काइरट्ठकूडस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता इक्काइरट्ठकूडस्स सरीरगं परामुसंति, परामुसित्ता तेसिं रोगाणं निदाणं पुच्छंति, पुच्छित्ता इक्काइरट्ठकूडस्स बहूहिं अब्भंगेहि य उव्वट्टणाहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सिंचणेहि य अवद्दहणाहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणाहि य वत्थिकम्मेहि य निरुहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणेहि य पच्छणेहि य सिरोवत्थीहि य तप्पणाहि य पुडपागेहि य छल्लीहि य मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि

य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसएहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसमावित्तए। नो चेव णं संचाएंति उवसामित्तए।

अर्थ—त्यारपछी ते विजयवर्धमान खेडने विषे आ आवा प्रकारनी आघोषणा कानवडे सांभळीने तथा हृदयमां धारीने घणा वैद्यो अने वैद्यपुत्रो, ज्ञायको अने ज्ञायकोना पुत्रो तथा चिकित्सको अने चिकित्सकना पुत्रो शस्त्रकोशने एटले नेरणी विगेरे हथीयारनी कोथळी (पेटी) हाथमां लइने पोतपोताना घरमांथी नीकळ्या, नीकळीने विजयवर्धमान खेडनी मध्ये मध्ये थइने ज्यां इकाइ राठोडनुं घर हतुं, त्यां आव्या. आवीने इकाइ राठोडना शरीरनो स्पर्श कर्यो (एटले तेनी नाडी विगेरे जोइ–तपासी), स्पर्श करीने एटले नाडीपरीक्षा करीने ते रोगोनुं निदान एटले उत्पन्न थवानुं कारण पूछयुं. पूछीने ते इकाइ राठोडने घणा घणा अभ्यंगवडे एटले तेल चोळवावडे, उद्वर्तनवडे एटले तेलने बहार काढवावडे, उकाळा पावावडे, वमन कराववावडे, विरेचन कराववावडे, औषधना जळने सिंचवावडे, अवद्दहणा एटले डांभ देवावडे, अवण्हाण एटले तथाप्रकारना औषधोथी मिश्रित करेला जळना स्नानवडे, अनुवासनावडे एटले गुदाद्वाराए पेटमां तेलनो प्रवेश करवावडे, बस्तिकर्मवडे एटले चर्मनी दोरी वींटीने ते मार्गे मस्तक विगेरे अवयवोमां तेल नांखवावडे अथवा गुदामां वाट विगेरे नांखवावडे, निरुहवडे[1] एटले उपर कहेली अनुवासनावडे, शिरावेधवडे एटले नसोने वींधवावडे, तक्षणवडे एटले

१ अनुवासनामां अने निरुहमां औषधादिक वस्तुओनो ज तफावत छे.

छुरादिक शस्त्रथी चामडी कापवावडे, प्रच्छनवडे एटले अल्प चामडी कापवावडे, शिरोबस्तिवडे एटले मस्तकपर चर्मनी दोरी बांधीने तेमां औपधमिश्रित तेल पूरवावडे करीने, तर्पणवडे एटले तैलादिकथी शरीरनी पुष्टि करवावडे, पुटपाकवडे एटले भट्ठीमां पकवीने तैयार करेली तथाप्रकारनी औषधिवडे, रोहिणीविगेरेनी छालवडे, मूळवडे, कंदवडे, पांदडांवडे, पुष्पोवडे, फळोवडे, बीजवडे, शिलिकावडे एटले किरात, तिक्तक विगेरे ओषधिवडे, गोळीओवडे, एकज वस्तुरूप औषधवडे, अने अनेक वस्तुथी बनेला भेषजवडे ते सोळ रोगातंको मांहेना एक पण रोगातंकने शमाववा माटे तेमणे इच्छा करी एटले प्रयत्न कर्या, परंतु तेओ एक पण रोगातंकने शमाववा समर्थ थया नहीं-शक्तिमान थया नहीं.

मू—तते णं ते बहवे विज्जा य विज्जपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।

अर्थ—त्यारपछी ते घणा वैद्यो, वैद्यना पुत्रो विगेरे सर्वे ज्यारे ते सोळ रोगातंको मांहेना एक पण रोगातंकने शांत करवा माटे शक्तिमान न थया, त्यारे तेओ श्रांत एटले शरीरथी खेद पाम्या, तांत एटले मनथी खेद पाम्या अने परितांत एटले शरीर अने मन बन्नेथी खेद पाम्या सता जे दिशामांथी प्रगट थया हता-आव्या हता तेज दिशामां पाछा गया.

१ उपर कहेलुं बस्तिकर्म सामान्य छे अने अनुवासना निरुह तथा शिरोबस्ति ए त्रण तेना ज भेद छे-विशेष छे.

मू०—तते णं इक्काई रट्ठकूडे विज्जेहि य ६ पडियाइक्खिए परियारगपरिचत्ते निठिवण्णोसहभेसज्जे सोलसरोगायंकेहिं अभिभूए समाणे रज्जे य रट्ठे य जाव अंतेउरे य मुच्छिए रज्जं च रट्ठं च आसाएमाणे पत्थेमाणे पीहेमाणे अभिलसमाणे अट्टदुहट्टवसट्टे अड्ढाइज्जाइं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमठितीएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते इकाइ राठोडना ते वैद्यो विगेरे छए जनोए निषेध कर्यो, एटले "अमाराथी आ व्याधि दूर करी शकाय तेम नथी" एवुं स्पष्ट कह्युं, तेना परिचारको (सेवको)ए पण तेनो त्याग कर्यो, ते औषध अने भेषज करवाथी पण खेद पाम्यो, सोळ रोगातंकोथी पराभव पाम्यो सतो, राज्यने विषे राष्ट्र (देश)ने विषे यावत् (कोषने विषे, कोठारने विषे, वाहनने विषे,) अंतःपुरने विषे मूर्छा पाम्यो सतो, (लुब्ध, गृद्ध अने अध्युपपन्न थयो सतो,) राज्यने अने राष्ट्रने आस्वाद करतो, प्रार्थना करतो, इच्छा करतो अने अभिलाषा करतो सतो, आर्त्त एटले मनमां पीडा पाम्यो, दुःखार्त्त एटले शरीरे पीडा पाम्यो अने वशार्त्त एटले इंद्रियोने वश थवाथी पीडा पाम्यो सतो अढीसो वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने —भोगवीने काळने समये काळ करीने एटले मृत्युने समये मृत्यु पामीने आ रत्नप्रभा नामनी पहेली नरक पृथ्वीने विषे उत्कृष्टपणे एक सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकीओने विषे नारकीपणे उत्पन्न थयो.

मू०—से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव मियग्गामे णगरे विजयस्स खत्तियस्स मियाए देवीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी त्यांथी आंतरा रहित उधरीने-नीकळीने आ ज मृगग्राम नगरमां विजय क्षत्रियनी मृगादेवी राणीनी कुक्षिमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो.

मू०—तते णं तीसे मियाए देवीए सरीरे वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव जलंता, जप्पभिइं च णं मियापुत्ते दारए मियाए देवीए कुच्छिसि गब्भत्ताए उववन्ने तप्पभिइं च णं मियादेवी विजयस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुन्ना अमणामा जाया यावि होत्था ।

अर्थ—ते वखते ते मृगादेवीना शरीरने विषे उज्वळ यावत् (विस्तीर्ण, कर्कश, गाढ, प्रचंड, दुःखकारक, तीव्र, दुःखे सहन थाय तेवी) जाज्वल्यमान वेदना प्रगट थइ-उत्पन्न थइ. तथा ज्यारथी आरंभीने ते मृगापुत्र दारक ते मृगादेवीनी कुक्षिने विषे गर्भपणे उत्पन्न थयो, त्यारथी आरंभीने ते मृगादेवी ते विजय क्षत्रियने अनिष्ट थइ, अमनोहर थइ, अप्रिय थइ, मनमां पण अणगमती थइ अने मनमां तेणीनुं स्मरण पण न थाय एवी थइ.

मू०—तते णं तीसे मियाए देवीए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियाए

जागरमाणीए इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—

अर्थ—त्यारपछी ते मृगादेवी एकदा कदाचित् पूर्व रात्रि अने पाछली रात्रि ते लक्षणवाळो जे काळरूप समय तेने विषे एटले मध्यरात्रिए कुटुंबनी जागरिकावडे जागती हती एटले कुटुंब संबंधी विचार करती हती ते वखते तेने आ आवा प्रकारनो आतमा संबंधी (विचार) यावत् (चिंतित एटले स्मृतिरूप, बुद्धिमां स्थापन करेलो, प्रार्थना करेलो, मनमां रहेलो अर्थात् बहार प्रकाश नहीं करेलो संकल्प एटले विचार) उत्पन्न थयो.

मू०—एवं खलु अहं विजयस्स खत्तियस्स पुव्विं इट्ठा ५ धेज्जा वेसासिया जणुमया आसी, जप्पभिइं च णं मम इमे गब्भे कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववन्ने तप्पभिइं च णं अहं विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा जाव अमणामा जाया यावि होत्था, निच्छति णं विजए खत्तिए मम नामं वा गोयं वा गिण्हित्तए वा, किमंग पुण दंसणं वा परिभोगं वा ?

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे पहेलां तो हुं विजय क्षत्रियने इष्ट हती (ए ज रीते कांत, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम हती), ध्येया एटले ध्यान करवा लायक हती, विश्वसनीया एटले विश्वास करवा लायक हती अने अनुमता एटले कदाच कांइक

१ मनने प्राप्त थयेली एटले मनमां वारंवार स्मरण थाय तेवी.

विप्रिय देख्युं होय तो पण पाछळथी हुं सन्मानने पामती हती (मारुं करेलुं मान्य रहेतुं हतुं). परंतु ज्यारथी आरंभीने मारी कुक्षिने विषे आ गर्भ गर्भपणे उत्पन्न थयो छे, त्यारथी आरंभीने हुं विजय क्षत्रियने अनिष्ट यावत् अमनोमा[1] थइ छुं. तेथी विजय क्षत्रिय मारा नामने[2] के गोत्रने पण ग्रहण करवाने इच्छता नथी, तो पछी मारी साथे जोवुं के भोग भोगववा तो क्यांथी ज होय?

मू०—तं सेयं खलु मम एयं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणाहि य पाडणाहि य गालणाहि य मारणाहि य साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता बहूणि खाराणि य कडुयाणि य तूवराणि य गब्भसाडणाणि य खायमाणी य पीयमाणी य इच्छाति तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा गालित्तए वा मारित्तए वा, नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा गलइ वा मरइ वा।

अर्थ—तेथी मारे निश्चे आ गर्भने घणा गर्भशातन[3]वडे, पातन[4]वडे, गालन[5]वडे अने मारण[6]वडे शातवाने, पाडवाने,

---

१ मनने नहीं प्राप्त थयेली एटले मनमां वारंवार स्मरण न कराय तेवी. २ जे अर्थरहित होय ते नाम अने अर्थ सहित होय ते गोत्र कहेवाय छे. ३ गर्भना ककडा थइने नीकळी जाय तेवा उपाय ४ आखो गर्भ पडी जाय तेवा उपाय. ५ प्रवाही थइने झरी जाय तेवा उपाय. ६ मरी जाय तेवा उपाय.

गाळवाने अने मारवाने योग्य छे." आ प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो. विचार करीने अनेक प्रकारना खारा, कडवा अने तूरा इत्यादि गर्भशातनना औषधोने खाती सती अने पीती सती ते गर्भनुं शातन, पातन, गालन अने मारण करवाने इच्छवा लागी-उद्यम करवा लागी. परंतु ते गर्भ शातन पाम्यो नहीं, पड्यो नहीं, गळयो नहीं अने मर्यो पण नहीं.

मू०-तते णं सा मियादेवी जाहे नो संचाएति तं गब्भं साडेत्तए वा पाडेत्तए वा गालेत्तए वा मारेत्तए वा ताहे संता तंता परितंता अकामिया असवसा तं गब्भं दुहंदुहेणं परिवहइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते मृगादेवी ज्यारे ते गर्भने शातन करवा, पातन करवा, गालन करवा के मारण करवा शक्तिमान न थइ, त्यारे ते श्रांत एटले शरीरे खेद पामी, तांत एटले मनमां खेद पामी अने परितांत एटले शरीर अने मन बन्नेवडे खेद पामी. तेम ज अकामित एटले इच्छा रहित अने अस्ववश एटले पराधीन थइ सती ते गर्भने महा दुःखे वहन करवा लागी.

मू०-तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अट्ठ नालीओ अब्भिंतरप्पवहाओ अट्ठ नालीओ बाहिरप्पवहाओ अट्ठ पूयप्पवहाओ अट्ठ सोणियप्पवहाओ दुवे दुवे कण्णंतरेसु दुवे दुवे अच्छितरेसु दुवे दुवे नक्कंतरेसु दुवे दुवे धमणिअंतरेसु अभिक्खणं अभिक्खणं पूयं च सोणियं च परिसवमाणीओ परिसवमाणीओ चेव चिट्ठंति ।

अर्थ—ते दारक गर्भमां हतो त्यांथी ज तेने आठ नाडीओ शरीरनी अंदर वहेती हती एटले रुधिरादिकने स्रवती हती, आठ नाडीओ शरीरनी बहार वहेती हती एटले परूने झरती हती. ते सोळ नाडीओमां आठ नाडीओ परूने वहन करती हती अने आठ नाडीओ रुधिरने वहन करती हती. ते आ प्रमाणे–बबे एटले चार नाडीओ कानना छिद्रमां वहेती हती. (तेमां बे नाडीओ परूने वहेती हती अने बे नाडीओ रुधिरने वहेती हती. एज प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं.) बबे एटले चार नाडीओ नेत्रना छिद्रमां वहेती हती, बबे एटले चार नाडीओ नासिकाना रंध्रमां वहेती हती, तथा बबे एटले चार नाडीओ कोठाना हाडकाने विषे वहेती हती. (आ प्रमाणे सोळ नाडीओ वहेती हती.) ते सोळे नाडीओ क्षणे क्षणे एटले वारंवार परूने अने रुधिरने झरती झरती रहेली हती.

सू०—तस्स णं दारगस्स गब्भगयस्स चेव अग्गिए नामं वाही पाउब्भूए जे णं से दारए आहारेति से णं खिप्पामेव विद्धंसमागच्छति पूयत्ताए सोणियत्ताए य परिणमति, तं पि य से पूयं च सोणियं च आहारेति ।

अर्थ—ते दारक गर्भमां हतो त्यारथी ज तेने अग्निक एटले भस्मक नामनो व्याधि प्रगट थयेलो छे, तेथी ते बाळक जे कांइ आहार करे ते तरत ज विध्वंसने पामे छे, अने परूपणे तथा रुधिरपणे परिणाम पामे छे. त्यारपछी ते परूनो अने रुधिरनो ज आहार करे छे.

मू०—तते णं सा मियादेवी अन्नया कयाइं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दारगं पयाया जातिअंधे जाव आगइमित्ते ।

अर्थ—त्यारपछी ते मृगादेवीए एकदा कदाचित् नव मास परिपूर्ण थया त्यारे ते दारकने जन्म आप्यो. ते दारक जन्मांध यावत् (जन्मथी ज मुंगो इत्यादि) मात्र इंद्रियोना आकाररूप ज हतो.

मू०—तते णं सा मियादेवी तं दारगं हुंडं अंधारूवं पासति, पासित्ता भीया तत्था उव्विग्गा संजायभया अम्मधाइं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

अर्थ—ते वखते ते मृगादेवीए ते दारकने हुंड (अंगोपांग रहित) अने अंध आकारवाळो जोयो. जोइने ते भय पामी, त्रास पामी, उद्वेग पामी, तथा तेणीने भय उत्पन्न थयो. तेथी तेणीए धात्री माताने बोलावी, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—" गच्छह णं देवाणुप्पिया ! तुमं एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि "

अर्थ—" हे देवानुप्रिया ! तुं जा, आ दारकने एकांते उकरडामां त्याग कर. "

मू०—तते णं सा अम्मधाई मियादेवीए तह त्ति एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव विजए खत्तिए तेणेव उवागच्छइ, तेणेव उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते धात्री माताए ते मृगादेवीना आ अर्थने 'तह त्ति'—बहु सारुं एम कही अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने ज्यां विजय क्षत्रिय हता त्यां आवी. त्यां आवीने बे हाथ जोडी आ प्रमाणे बोली.—

मू०—" एवं खलु सामि ! मियादेवी नवण्हं मासाणं जाव आगतिमित्ते। तते णं सा मियादेवी तं हुंडं अंधारूवं पासति, पासित्ता भीया तत्था उव्विग्गा संजायभया ममं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयं दारगं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झाहि। तं संदिसह णं सामी ! तं दारगं अहं एगंते उज्झामि ? उदाहु मा ? "।

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! मृगादेवीए नव मास परिपूर्ण थये दारकने प्रसव्यो छे यावत् तेना इंद्रियोनो आकार मात्र ज छे. ते वखते ते मृगादेवीए ते दारकने हुंड (अंगोपांग रहित) अने अंध आकारवाळो जोयो. जोइने ते भय पामी, त्रास पामी, उद्वेग पामी तथा तेणीने भय उत्पन्न थयो. तेथी तेणीए मने बोलावी. मने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के—हे देवानुप्रिया ! तुं जा. आ दारकने एकांते उकरडामां त्याग कर. तो हे स्वामी ! आप आज्ञा आपो—कहो के ते दारकने शुं हुं एकांते त्याग करुं के न करुं ? "

मू०—तते णं से विजए खत्तिए तीसे अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा तहेव संभंते उट्ठाए

उट्ठेति, उट्ठाए उट्ठित्ता जेणेव मियादेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मियादेवीं एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते विजय क्षत्रिय ते धात्री मातानी पासे आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी ते ज प्रमाणे संभ्रांत थइ उभा थवावडे उभो थयो. उभा थवावडे उभो थइने ज्यां मृगादेवी हती त्यां आव्यो. आवीने मृगादेवीने आ प्रमाणे तेणे कह्युं—

मू०—" देवाणुप्पिया ! तुब्भं पढमं गब्भे, तं जइ णं तुब्भे एयं एगंते उक्कुरुडियाए उज्झासि ततो णं तुब्भे पया नो थिरा भविस्सति, तो णं तुमं एयं दारगं रहस्सियगंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहराहि, तो णं तुब्भं पया थिरा भविस्सति "।

अर्थ—" हे देवानुप्रिया ! तारो आ पहेलो गर्भ छे, तेथी जो तुं एने एकांते उकरडामां त्याग करीश (करावीश) तो तारी प्रजा (संतति) स्थिर नहीं थाय, तेथी तुं आ दारकने गुप्त रीते भोंयरामां राखी गुप्त रीते भोजन अने पाणीवडे तेनुं पोषण करती करती रहे. ते रीते करवाथी तारी प्रजा स्थिर थशे. "

मू०—तते णं सा मियादेवी विजयस्स खत्तियस्स तह त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मृगादेवीए विजय क्षत्रियना आ अर्थने (वचनने) ' तह त्ति '–' बहु सारुं ' एम कही विनयवडे

अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने ते दारकने गुप्त भोंयरामां राखी गुप्त भक्तपानवडे पोषण करती रहेवा लागी.

मू०—एवं खलु गोयमा! मियापुत्ते दारए पुरापु(पो)राणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणे विहरति" ॥६॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम! मृगापुत्र नामनो दारक पूर्वकाळे करेला ए ज कारण माटे पुराण एटले जुनां बांधेलां कर्मोना यावत् (दुष्ट रीते आचरण करेला, प्रतिक्रमण नहीं करेला इत्यादि पापकर्मना) फळने भोगवतो रहेलो छे."

मू०—" मियापुत्ते णं भंते! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिति? कहिं उववज्जिहिति?"।

अर्थ—गौतमस्वामी पूछे छे के—" हे भगवान! मृगापुत्र दारक काळमासे काळ करीने एटले मृत्युने समये मृत्यु पामीने क्यां जशे? अने क्यां उत्पन्न थशे?"

मू०—" गोयमा! मियापुत्ते दारए छव्वीसं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले सीहकुलंसि सीहत्ताए पच्चायाहिति, से णं तत्थ सीहे भविस्सति अहम्मिए जाव साहासिए सुबहुं पावं जाव समज्जिणाति जाव समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमठितीएसु जाव उववज्जिहिति।

अर्थ—" भगवान श्री महावीरस्वामी उत्तर आपे छे के–" हे गौतम ! ते मृगापुत्र दारक छवीश वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने (भोगवीने) मृत्यु समये मृत्यु पामीने आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रने विषे वैताढ्य-पर्वतनी तळेटीमां सिंहना कुळमां सिंहपणे उत्पन्न थशे. अर्थात् ते त्यां सिंह थशे. ते सिंह अधार्मिक–पापी यावत् (शूरवीर, दृढ प्रहार करनार) साहसिक थशे, अने घणुं पाप यावत् उपार्जन करशे. यावत् उपार्जन करीने मृत्यु समये मृत्यु पामी आ रत्नप्रभा नामनी पहेली नरकपृथ्वीने विषे उत्कृष्ट एक सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकीने विषे यावत् नारकीपणे उत्पन्न थशे.

मू०—से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता सरीसवेसु उववज्जिहिति, तत्थ णं कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसेणं तिन्नि सागरोवमाइं ।

अर्थ—त्यांथी अनंतर (पछी) ते उद्धरीने (नीकळीने) सरीसृप (नोळीया)ने विषे उत्पन्न थशे. त्यां मृत्यु समये मृत्यु पामीने बीजी नरकपृथ्वीमां उत्कृष्ट त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकीमां नारकपणे उत्पन्न थशे.

मू०—से णं ततो अणंतरं उवट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति, तत्थ वि कालं किच्चा तच्चाए पुढवीए सत्त सागरोवमाइं ।

अर्थ—त्यांथी अनंतर ते नीकळीने पक्षीने विषे उत्पन्न थशे. त्यां पण मृत्यु समये मृत्यु पामीने त्रीजी पृथ्वीने विषे उत्कृष्ट सात सागरोपमनी स्थितिवाळो नारकी थशे.

मू–से णं ततो सीहेसु य, तयाणंतरं चउत्थीए। उरगो, पंचमीए, इत्थी, छट्ठीए, मणुओ, अहे सत्तमाए।

अर्थ—त्यांथी नीकळीने ते सिंहने विषे उत्पन्न थशे. त्यारपछी चोथी नरकपृथ्वीमां उत्पन्न थशे. त्यांथी उरग (सर्प) थशे, त्यांथी पांचमी पृथ्वीमां जशे, त्यांथी नीकळी स्त्री थइ छठी पृथ्वीमां जशे. त्यांथी मनुष्य (पुरुष) थइ नीचे सातमी पृथ्वीमां उत्पन्न थशे.

मू० ततोऽणंतरं उव्वट्टित्ता से जाइं इमाइं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मच्छकच्छभगाहमगरसुसुमारादीणं अद्धतेरसजातिकुलकोडिजोणिपमुहसयसहस्साइं तत्थ णं एगमेगंसि जोणीविहाणंसि अणेगसतसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो भुज्जो पच्चायाइस्साति।

अर्थ—त्यांथी अनंतर नीकळीने जे आ जळचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिवाळा मत्स्य, काचबा, ग्राह, मगर अने सुसुमार विगेरेनी साडाबार लाख जाति कुलकोटि योनिप्रमुख कहेली छे, तेमां एक एक योनिना भेदने (प्रकारने) विषे अनेक लाख वार जन्मी मरण पामी पामी वारंवार त्यां ज उत्पन्न थशे.

मू०—से णं ततो उव्वट्टित्ता एवं चउपएसु उरपरिसप्पेसु भुयपरिसप्पेसु खहयरेसु चउरिंदिएसु तेइंदिएसु वेइंदिएसु वणप्फइएसु कडुयरुक्खेसु कडुयदुद्धिएसु वाउकाएसु तेऊकाएसु आउकाएसु पुढवीकाएसु अणेगसयसहस्सखुत्तो ।

अर्थ—ते त्यांथी नीकळीने आ प्रमाणे चतुष्पदने विषे, उरपरिसर्पने विषे, भुजपरिसर्पने विषे, खचर(पक्षी)ने विषे, चतुरिंद्रियने विषे, त्रीन्द्रियने विषे, द्वीन्द्रियने विषे, वनस्पतिने विषे, कडवा वृक्षने विषे, कडवा रसवाळी वनस्पतिने विषे, वायुकायने विषे, तेजस्कायने विषे, अप्कायने विषे तथा पृथ्वीकायने विषे अनेक लाख वार उत्पन्न थशे अने मरशे.

मू०—से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता सुपइट्ठपुरे नगरे गोणत्ताए पच्चायाहिति । से णं तत्थ उम्मुक्क जाव बालभावे[1] अन्नया कयाइं पढमपाउसंसि गंगाए महानईए खलीयमट्टियं खणमाणे तडीए पेल्लिए समाणे कालगए तत्थेव सुपइट्ठे पुरे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुमत्ताए पच्चायाइस्सति ।

अर्थ—त्यांथी अनंतर ते नीकळीने सुप्रतिष्ठपुर नगरने विषे वृषभ(सांढ)पणे उत्पन्न थशे. त्यां ते बाल्यावस्थाने मूकी यावत् यौवनपणाने पामशे त्यारे एकदा कदाचित् पहेली वर्षाऋतुमां गंगा नामनी महानदीना कांठानी भेखडनी

१ ' उम्मुक्कबालभावे जाव जोव्वणगमणुपत्ते ' एवो पाठ होवो जोइए.

माटीने खणतां ते भेखड तेनापर पडवाथी मृत्यु पामीने ते ज सुप्रतिष्ठपुर नगरमां श्रेष्ठीना कुळने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थशे.

मू०—से णं तत्थ उम्मुक्कवालभावे जाव जोव्वणगमणुपत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सति ।

अर्थ—ते श्रेष्ठीपुत्र त्यां बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ यावत् (विन्नयपरिणयमेत्ते '–विज्ञक एटले जाणनार अने परिणत मात्र एटले बुध्ध्यादिकना परिणामने पामेलो) युवावस्थाने पामशे, अने तथाप्रकारना स्थविर मुनिनी पासे धर्म सांभळी हृदयमां धारी मुंड थइ अगारथी (घरथी) अनगार प्रत्ये जशे–दीक्षा ग्रहण करशे.

मू०—से णं तत्थ अणगारे भविस्सति इरियासमिए जाव वंभयारी। से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति ।

अर्थ—त्यां ते अनगार-साधु थशे. ते ईर्यासमितिवाळो यावत् ब्रह्मचारी थशे. ते त्यां घणां वर्षो चारित्रपर्यायने पाळीने आलोचना तथा प्रतिक्रमण करीने समाधिपूर्वक काळमासे काळ करीने एटले मृत्यु समये मृत्यु पामीने सौधर्मकल्प नामना पहेला देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थशे. "

मू०—से णं ततो अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं कुलाइं भवंति अड्ढाइं जहा दढपइन्ने सा चेव वत्तव्वया कलाओ जाव सिज्झिहिति ।

अर्थ—त्यारपछी अनंतर ते स्वर्गथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां जे आढ्य एटले समृद्धिवाळां कुळो छे तेने विषे जन्म पामीने जेम औपपातिकमां दृढप्रतिज्ञ भव्यनुं वर्णन कर्युं छे, तेम ज अहीं कहेवुं. तेनी जेम ते कळाओ ग्रहण करशे, दीक्षा ग्रहण करशे, यावत् 'सेत्स्यति' एटले कृतकृत्य थशे. ('भोत्स्यते' एटले केवळज्ञानवडे सर्व पदार्थो जाणशे, 'मोक्ष्यति' एटले सर्व कर्मथी मुक्त थशे, 'परिनिर्वास्यति' सर्व कर्मोए करेला संतापे करीने रहित थशे, अर्थात् सर्व दुःखोनो अंत करशे.)

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ ७ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवंत महावीरस्वामी यावत् मोक्षने पामेला छे तेमणे आ दुःखविपाकना पहेला अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. ए प्रमाणे हुं कहुं छुं. जे प्रमाणे भगवंते अर्थ कह्यो ते ज प्रमाणे हुं तने कहुं छुं. अर्थात् में स्वतंत्र कांइ पण कह्युं नथी.

इति दुःखविपाकने विषे मृगापुत्रनुं प्रथम अध्ययन. १.

। अथ द्वितीय अध्ययन ।

मू०—जइ णं भंते समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! अज्झयणस्स दुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? "

अर्थ—जंबूस्वामीए सुधर्मास्वामीने पूछ्युं के-हे भगवन् ! श्रमण यावत् मोक्षने पामेला भगवान् महावीरस्वामीए दुःखविपाकना पहेला अध्ययननो आ (तमे उपर कह्यो ते) अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान ! दुःखविपाकना बीजा अध्ययननो श्रमण भगवान यावत् मोक्षपदने पामेला महावीरस्वामीए शो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबु अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं वाणियगामे नामं नयरे होत्था रिद्धित्थिमियसमिद्धे ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुधर्मा अनगारे जंबू नामना अनगारने आ प्रमाणे कह्युं के—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये वाणिजगाम नामे नगर हतुं. ते ऋद्धिवाळुं, निर्भय अने समृद्धिवाळुं हतुं विगेरे वर्णन कहेवुं.

मू—तस्स णं वाणियगामस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए दूईपलासे नामं उज्जाणे होत्था । तत्थ

णं दूइपलासे सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था ।

अर्थ—ते वाणिजगामनी उत्तर अने पूर्वनी वच्चे एटले ईशान खूणाना दिशाना विभागमां दूतीपलाश नामनुं उद्यान हतुं. ते दूतीपलाश उद्याननें विषे सुधर्म नामना यक्षनुं यक्षायतन (चैत्य) हतुं.

मू०—तत्थ णं वाणियगामे मित्ते नामं राया होत्था, वन्नओ । तस्स णं मित्तस्स रन्नो सिरी नामं देवी होत्था, वण्णओ ।

अर्थ—ते वाणिजगामने विषे मित्र नामे राजा हता. तेनुं वर्णन कहेवुं. ते मित्र नामना राजाने श्री नामनी देवी (राणी) हती. तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तत्थ णं वाणियगामे कामज्झया नामं गणिया होत्था अहीण जाव सुरूवा बावत्तरि-कलापंडिया चउसट्ठिगणियागुणोववेया एगूणतीसविसेसे रममाणी एक्कवीसरतिगुणप्पहाणा बत्तीस-पुरिसोवयारकुसला णवंगसुत्तपडिबोहिया अट्ठारसदेसीभासाविसारया सिंगारागारचारुवेसा गीयर-तियगंधव्वनट्टकुसला संगयगयभणियविहियविलाससललियसंलावनिउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जहणवयणकरचरणनयणलावण्णविलासकलिया ऊसियज्झया सहस्सलंभा विदिण्णछत्तचामरवाल-

वीयणीया कन्नीरहप्पयाया यावि होत्था । बहूणं गणियासयसहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरइ ॥८॥

अर्थ—ते वाणिजगामने विषे कामध्वजा नामनी गणिका हती. तेनुं शरीर अने पांचे इंद्रियो हीनता रहित परिपूर्ण हती, यावत् सारा रूपवाळी हती, बहोंतेर[1] कळामां पंडित हती; गीत, नृत्य, विगेरे चोसठ अथवा वात्स्यायन शास्त्रमां कहेला आलिंगन विगेरे आठ वस्तुओना आठ आठ भेद होवाथी कुल चोसठ गुणो गणिकाना कहेला छे तेणे करीने सहित हती, कामशास्त्रमां प्रसिद्ध एवा ओगणत्रीश विशेषोमां क्रीडा करनारी (निपुण) हती, रतिना एकवीश गुणोवडे प्रधान–श्रेष्ठ हती, पुरुषना बत्रीश उपचार करवामां कुशळ हती, बे कान, बे नेत्र, बे नासिकाना छिद्र, एक जिह्वा, एक स्पर्शेन्द्रिय (चामडी) अने एक मन, आ नव अंगो बाल्यावस्थामां सुतेलां जेवां हतां तेने युवावस्थाए जागृत कर्यां, एटले पोतपोताना विषय ग्रहण करवामां निपुणताने पामेलां हतां. आवा प्रकारनी ते हती अर्थात् यौवनने पामेली हती, अढार प्रकारना देशनी[2] भाषा जाणवामां पंडित हती, शृंगाररसनुं जाणे घर होय एवो तेणीनो मनोहर वेष हतो, गीतने विषे प्रीतिवाळी हती, गंधर्व अने नाट्य[3]मां कुशळ हती, तेणीना गमन, वचन, विहित (कार्य) अने विलास संगत एटले मनोहर हतां, प्रसन्नता सहित वातचित करवामां ते निपुण हती, युक्त (योग्य) एवा उपचार एटले व्यवहारने विषे ते कुशळ हती, ते सुंदर एवा स्तन,

---

१ लेखने आरंभीने पक्षीना शब्द पर्यंत गणित प्रधान बहोंतेर कळाओ प्राये पुरुषने ज अभ्यास करवा योग्य छे. स्त्रीओने तो मात्र जाणवा लायक ज छे. २ गीत सहित नृत्य. ३ गीत रहित नृत्य.

जघन, मुख, हाथ, पग, नेत्र, लावण्य[1] अने विलासे[2] करीने सहित हती, तेणीए जयपताकाने वरी करी हती, एक हजार रुपीया आपवाथी तेणीनी प्राप्ति थती हती. राजाए तेणीने प्रसन्न थइने छत्र तथा चामररूपी वालव्यजनिका अर्पण करी हती, कर्णीरथ नामना वाहनवडे ते गमनागमन करती हती, आवी ते गणिका हती. तथा ते बीजी घणी हजार गणिकाओनुं अधिपतिपणुं करती सती यावत् रहेली हती. ८

अहीं ' अहीण जाव सुरूवा ' ए ठेकाणे यावत् शब्द कह्यो छे, त्यां आ प्रमाणे जाणवुं–' लक्खणवंजणगुणोववेया '—स्वस्तिकादिक लक्षणो, मसा अने तिलक विगेरे व्यंजनो तथा सौभाग्यादिक गुणोवडे सहित हती. ' माणुम्माणपमाणपडिपुन्नसुजायसव्वंगसुंदरंगी '—जळ भरेला वासणमां बेसवाथी एक द्रोण प्रमाण जळ बहार नीकळी जाय ते मान कहेवाय छे, जोखवाथी शरीरनुं वजन अर्ध भार प्रमाण थाय तो ते उन्मान कहेवाय छे, अने पोताना एक सो ने आठ आंगळ उंचुं शरीर होय तो ते प्रमाण कहेवाय छे. आ रीते मान, उन्मान अने प्रमाणवडे परिपूर्ण तथा सारी रीते उत्पन्न थयेला सर्व अंगोवडे–अवयवोवडे सुंदर अंगवाळी हती.

'आहेवच्चं जाव विहरइ '—ए ठकाणे यावत् शब्द होवाथी आ प्रमाणे जाणवुं.–'पोरेवच्चं'–अग्रेसरपणाने, भर्तारपणाने एटले पोषकपणाने, स्वामीपणाने एटले केवळ स्वस्वामीभाव संबंधने, महत्तरत्वने एटले बीजी वेश्याओनी अपेक्षाए मोटापणाने, आज्ञा छे प्रधान जेमां एवा सेनाधिपतिपणाने बीजा माणसो पासे करावती हती–पळावती हती अने पोते

१ सुंदर आकार. २ चेष्टा.

पाळती सती रहेली हती.

मू—तत्थ णं वाणियगामे विजयमित्ते नामं सत्थवाहे परिवसति अड्ढे ।

अर्थ—ते वाणिज गाममां विजयमित्र नामे सार्थवाह रहेतो हतो ते यावत् आढ्यमान हतो.

मू०—तस्स णं विजयमित्तस्स सुभद्दा नामं भारिया होत्था, अहीण० जावसुरूवा ।

अर्थ—ते विजयमित्रने सुभद्रा नामनी मार्या हती, तेणीना शरीर अने पांचे इंद्रियो हीनता रहित संपूर्ण हती यावत् सारा रूपवाळी, (लक्षण, व्यंजन अने गुणे करीने सहित) इत्यादि विशेषणो कहेवां.

मू०—तस्स णं विजयमित्तस्स पुत्ते सुभद्दाए भारियाए अत्तए उज्झियए नामं दारए होत्था, अहीण० जाव सुरूवे ।

अर्थ—ते विजयमित्रनो पुत्र सुभद्रा मार्यानो आत्मज[1] उज्झितक नामनो दारक हतो. तेना शरीर तथा पांचे इंद्रियो हीनता रहित संपूर्ण हती, यावत् ते सारा रूपवाळो हतो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा निग्गया, राया

१ पोताथी उत्पन्न थयेलो.

निग्गश्रो, जहा कोणिश्रो तहा णिग्गश्रो, धम्मो कहिश्रो, परिसा पडिगया, राया य गश्रो ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवंत महावीरस्वामी त्यां समवसर्या. तेमने वांदवा माटे नगरमांथी पर्षदा नीकळी. जेम कोणिक राजा नीकळ्यो हतो तेम मित्र राजा नीकळ्यो. तेनी पासे स्वामीए धर्म कह्यो. ते सांभळी पर्षदा पाछी गइ, राजा पण गयो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवश्रो महावीरस्स जेट्ठे श्रंतेवासी इंदभूई नामं श्रणगारे जाव तेश्रलेसे छट्ठंछट्ठेणं जहा पन्नत्तीए पढम० जाव जेणेव वाणियगामे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता वाणियगामे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं श्रडमाणे जेणेव रायमग्गे तेणेव श्रोगाढे ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामीना मोटा (प्रथम) शिष्य इंद्रभूति नामना श्रनगार यावत् तेजोलेश्यावाळा छठ छठनी तपस्या करता जेम प्रज्ञप्तिमां–भगवती सूत्रमां कह्युं छे तेम पहेली पोरसीए स्वाध्याय करी यावत् ज्यां वाणिजगाम नगर हतुं त्यां श्राव्या. श्रावीने वाणिजगामने विषे उंच, नीच श्रने मध्यम कुळोने विषे श्रमण करता ज्यां राजमार्ग हतो, त्यां श्राव्या.

' जाव तेअलेसे ' ए ठेकाणे यावत् शब्द होवाथी–इंद्रभूति नामना अनगार गौतम गोत्रवाळा,' त्यांथी आरंभीने पूर्वे कह्या प्रमाणे संक्षिप्त करी छे विशाळ तेजोलेश्या जेणे ते पर्यंत सर्व विशेषणो कहेवा.

' छट्ठं छट्ठेणं जहा पन्नत्तीए ' जेम भगवतीमां कह्युं छे तेम अहीं पण जाणवुं. ते आ प्रमाणे—पाणी रहित एवा छट्ठ छट्ठना तपकर्मवडे पोताना आत्माने भावता सता रहेता हता. त्यारपछी ते भगवान गौतम अनगारे छट्ठतपना पारणाने दिवसे पहेली पोरसीए स्वाध्याय कर्यो, बीजी पोरसीए ध्यान कर्युं, त्रीजी पोरसीए त्वरा रहित अने चपळता रहितपणे संभ्रम–आकुळता रहित एवा सता मुहपत्तिनी पडिलेहणा करी, पात्रां अने वस्त्रनी पडिलेहणा करी, पात्रोनुं प्रमार्जन कर्युं, पछी पात्रो ग्रहण कर्यां. पछी ज्यां श्रमण भगवान महावीरस्वामी हता त्यां आव्या. आवीने श्रमण भगवान महावीरस्वामीने वंदना करी, नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करी आ प्रमाणे तेणे भगवानने कह्युं—" हे भगवान ! हुं आपनी आज्ञा पाम्यो सतो (आज्ञाथी) आजे छट्ठ तपने पारणे वाणिजग्राम नगरमां उच्च, नीच अने मध्यम कुळना घरोने विषे समुदाण (भिक्षा) ने माटे भिक्षाचर्यावडे एटले भिक्षाना आचारवडे अटन (भ्रमण) करवाने इच्छुं छुं. " त्यारे भगवाने कह्युं के—" हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम कर. प्रतिबंधने न कर एटले ते बाबतमां तुं स्खलना न पाम अर्थात् तुं अटक मा. " त्यारपछी भगवान गौतमस्वामी श्रमण भगवान महावीरस्वामीवडे आ प्रमाणे आज्ञा पाम्या सता श्रमण भगवान महावीरस्वामी पासेथी नीकळ्या. नीकळीने त्वरा रहित अने चपळता रहितपणे आकुळता-रहित एवा सता युग प्रमाण भूमिने विषे जोवावाळी दृष्टिवडे आगळ ईर्यासमितिने शोधता सता विचरवा लाग्या.

मू०—तत्थ णं बहवे हत्थी पासइ सन्नद्धबद्धवम्मियगुडियउप्पीलियकच्छे उद्दामियघंटे णाणामणिरयणविविहगेविज्जउत्तरकंचुइज्जे पडिकप्पिए झयपडागवरपंचामेलआरूढहत्थारोहे गहियाउहप्पहरणे ।

अन्ने य तत्थ बहवे आसे पासति सन्नद्धबद्धवम्मियगुडिए आविद्धगुडिओसारियपक्खरे उत्तरकंचुइयओचूलमुहचंडाधरचामरथासकपरिमंडियकडिए आरूढआसारोहे गहियाउहप्पहरणे ।

अन्ने य तत्थ बहवे पुरिसे पासइ सण्णद्धबद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टीए पिणिद्धगेवेज्जे विमलवरबद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे ।

अर्थ—ते राजमार्गमां तेणे (इंद्रभूति अनगारे) घणा हाथीओ जोया. ते हाथीओने बख्तर पहेराव्या हता, वर्म एटले चामडीने रक्षण करनार उपगरण बांधेलुं हतुं, गुडित एटले शरीरनुं रक्षण करनार झुल जेवुं मोटुं उपगरण तेमनापर नांखेलुं हतुं, तेमनां उदरने रज्जुवडे दृढ रीते बांधेलां हतां, तेमनी बन्ने बाजुए घंटाओ लटकावी हती, अनेक प्रकारना मणि अने रत्नजडित विविध प्रकारना ग्रैवेयको एटले ग्रीवाना आभूषणो अने उत्तरकंचुक एटले शरीरनुं रक्षण करनार उपगरण

१ अंबाडी.

विशेषवडे तेमने शणगारेला हता, तेमने बख्तर विगेरे सर्व सामग्रीथी युक्त करेला हता, तेओ गरुडादिकना चिह्नवाळी ध्वजाओवडे अने चिन्ह रहित एवी पताकाओवडे श्रेष्ठ हता–शोभता हता, तेमनापर (मस्तकपर) पांच पांच शेखरको (तोराओ) लटकाव्या हता, तथा ते हाथीओ उपर आयुध अने प्रहरणोने ग्रहण करीने मावतो चडेला–बेठेला हता.

तथा त्यां बीजा घणा अश्वो पण जोया. ते अश्वोने बख्तर पहेराव्या हता, तेमने वर्म एटले चामडीने रक्षण करनार उपगरण बांधेलां हतां, गुडित एटले शरीरनुं रक्षण करनार झुल जेवुं मोटुं उपगरण तेमनापर नांखेलुं हतुं, एटले के तेमने गुंडा–झुल पहेरावी हती, तेमने शरीरनुं रक्षण करनार पाखर नामना उपगरणो लटकावेला (बांधेला) हता, तेमने शरीरनुं रक्षण करनार उत्तरकंचुक नामना उपगरणो बांधेला हता, तेमना मुखमां अवचूल चडावेला हता तेथी तेना नीचला ओष्ठ भयंकर लागता हता, चामर अने थासक एटले दर्पणोवडे तेमनो कटिमार्ग शोभतो हतो, तथा तेमना उपर आयुध अने प्रहरणने ग्रहण करीने स्वारो चडेला हता.

तथा त्यां बीजा घणा पुरुषोने (सुभटोने) पण जोया. तेमणे पण बख्तर पहेरेलां हतां, तेमणे शरीरने रक्षण करनारुं कवच बांधेलुं हतुं, तेमणे धनुषरूपी पट्टिका उपर प्रत्यंचा चडावेली हती, तेमणे कंठमां ग्रैवेयक नामनुं आभूषण पहेरेलुं हतुं, तेमणे निर्मळ अने श्रेष्ठ चिन्हपट्ट बांधेलो हतो, तथा तेमणे आयुध अने प्रहरणो ग्रहण कर्या हतां.

---

१ फेंकी शकाय नहीं तेवा खड्गादिक. २ फेंकी शकाय तेवा तीर विगेरे. ३ आ गुडा नामनुं उपगरण जो के हस्तीओने ज होय छे तोपण कोई देशमां अश्वने पण होय छे. ४ पलाण. ५ चोकडा, लगाम. ६ पुंछडा तरफनो भाग. ७ केडे बांधवानो पट्टो.

मू०—तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासति अवउडगबंधणं उक्कित्तकन्ननासं नेहतुप्पियगत्तं वज्झकरकडियजुयनियत्थं कंठे गुणरत्तमल्लदामं चुण्णगुंडियगत्तं चुण्णयं वज्झपाणपीयं तिलं तिलं चेव छिज्जमाणं काकणीमंसाइं खावियंतं पावं खक्खरगसएहिं हम्ममाणं अणेगनरनारीसंपरिवुडं चच्चरे चच्चरे खंडपडहएणं उग्घोसिज्जमाणं।

अर्थ—ते पुरुषो (योधाओ) नी मध्ये रहेला एक पुरुषने (गौतमस्वामीए) जोयो. तेने अवळुं मुख राखीने (पांच मोडीये) बांधेलो हतो, तेना कान अने नाक कापेला हता, तेनुं शरीर तेलवडे चीकाशवाळुं करेलुं हतुं, अथवा परसेवावडे तेनुं शरीर आर्द्र हतुं. ते वध करवा लायक होवाथी तेना बे हाथ तेना कटिदेशने विषे बांधेला हता, तेना कंठमां दोरानी जेम राता (कणेरना) पुष्पनी माळा पहेरावी हती, गेरुना चूर्णवडे तेनुं शरीर रंगेलुं हतुं, ते त्रास पामेलो हतो, वध करवा लायक अथवा वहारना श्वासोच्छ्वासरूप प्राणो तेने अति प्रिय हता एटले ते मरवाने खुशी नहोतो, तेनाज शरीरना तल तल जेटला छेदाता अल्प मांसना ककडा तेने खवडाववामां आवता हता, ते अति पापी हतो, सेंकडो चाबकोवडे तेने प्रहार करवामां आवतो हतो, अनेक पुरुषो अने स्त्रीओथी ते परिवरेलो हतो, तथा चौटे चौटे फुटेला पडहवडे तेना अपराधनी आघोषणा थती हती.

१ अलंकार विशेष.

मू०—इमं च णं एयारूवं उग्घोसणं पडिसुणेति—" नो खलु देवाणुप्पिया ! उज्झियगस्स दारगस्स केइ राया वा रायपुत्तो वा अवरज्झइ, अप्पणो से सयाइं कम्माइं अवरज्झंति ॥ ६ ॥

अर्थ—आ आवा प्रकारनी आघोषणा तेणे सांभळी—" हे देवानुप्रियो (लोको) ! आ उज्झितक दारक उपर कोइ राजा के राजपुत्रे अपराध (जुलम) कर्यो नथी (आ बाबतमां कोइनो दोष नथी) परंतु तेनां पोतानां करेलां कर्मो ज अपराधी छे (तेना कर्मनो ज दोष छे). ६.

मू०—तते णं से भगवतो गोयमस्स तं पुरिसं पासित्ता इमे अज्झत्थिए कप्पिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—" अहो णं इमे पुरिसे जाव नरयपडिरूवियं वेदणं वेदेति " त्ति कट्टु वाणियगामे नयरे उच्चनीयमज्झिमकुले जाव अडमाणे अहापज्जत्तं समुदाणियं गिण्हाति, गिण्हित्ता वाणियगामे नयरे मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेति, समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते भगवान गौतमस्वामीने ते पुरुषने जोइने आवो आत्माने विषे रहेलो, कल्पित एटले भेदवाळो अथवा कल्पिक एटले उचित, चिंतित एटले स्मरणरूप, प्रार्थित एटले भगवाननो उत्तर लेवा माटे प्रार्थना करेलो तथा

मनोगत एटले मनमां रहेलो एवो विचार यावत् उत्पन्न थयो के—अहो ! आ पुरुष यावत् नरकना जेवी वेदनाने वेदे छे—अनुभवे छे." आ प्रमाणे विचार करीने वाणिजगाम नगरने विषे उंच, नीच अने मध्यम कुळोने विषे यावत् भ्रमण करता तेणे यथापर्याप्त—जोइए तेटली भिक्षा ग्रहण करी. ग्रहण करीने वाणिजगाम नगरना मध्यभागे करीने यावत् बहार नीकळी भगवान पासे आवी ते आणेली भिक्षा तेमने बतावी. पछी श्रमण भगवान महावीरस्वामीने वंदना करी तथा नमस्कार कर्या. वांदी नमस्कार करी आ प्रमाणे कह्युं—

अहीं " इमे पुरिसे जाव " आ ठेकाणे यावत् शब्द छे तेथी आ प्रमाणे जाणवुं—" अहो ! आ पुरुष पूर्वजन्मना, पुराणा—चिरकाळना जुना, दुष्टपणे आचरण करेला अने नहीं पडिक्कमेला अशुभ पापकर्मोनां पापवाळा (अशुभ) फळवृत्ति विशेषने अनुभवतो सतो रहेलो छे. में नरकनी पृथ्वी के नारकी जीवोने जोया नथी, परंतु प्रत्यक्षपणे ज आ पुरुष नरकना जेवी वेदनाने वेदे छे, " आ प्रमाणे पहेला अध्ययनमां कहेला सूत्रने आश्रीने आ वाक्यनो अर्थ करवो.

मू०—" एवं खलु अहं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे वाणियगामं जाव तहेव वेदेति, से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसी ? जाव पच्चणुब्भवमाणे विहरति ? "

अर्थ—" आ प्रमाणे निश्चे हे भगवान ! हुं आपनी आज्ञा पाम्यो सतो वाणिजगाम नगरमां गयो इत्यादि यावत् ते ज प्रमाणे (उपर प्रमाणे एक माणस) नरक जेवी वेदनाने वेदे छे. तो हे भगवान ! ते पुरुष पूर्व भवे कोण हतो ? के जेथी यावत् आवी वेदनाने अनुभवतो रहेलो छे ? "

मू०—एवं खलु गोयमा! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे।

अर्थ—भगवान महावीरस्वामीए उत्तर आप्यो के—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपमां भरतक्षेत्रमां हस्तिनापुर नामनुं नगर हतुं. ते ऋद्धिवाळुं, निर्भय अने समृद्धिवाळुं हतुं, इत्यादि वर्णन कहेवुं.

मू०—तत्थ णं हत्थिणाउरे नगरे सुनंदे नामं राया होत्था महया हिम०।

अर्थ—ते हस्तिनापुर नगरने विषे सुनंद नामे राजा हतो. ते महान् हिमवान पर्वत समान इत्यादि वर्णन कहेवुं. एटले के महाहिमवान, मलय, मंदर अने महेंद्र पर्वतना जेवो सारभूत-प्रधान, प्रासादीय एटले मननी प्रसन्नताना कारणभूत, दर्शनीय एटले जेने जोवाथी नेत्रने श्रम लागे नहीं एवो, अभिरूप एटले सारा रूपवाळो अने प्रतिरूप एटले जोनार जोनार प्रत्ये जेनुं सुंदर रूप लागे तेवो ते राजा हतो.

मू०—तत्थ णं हत्थिणाउरे णगरे वहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे गोमंडवए होत्था अणेगखंभसयसन्निविट्ठे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

---

१ भवन विगेरेथी वृद्धि पामेलुं. २ धनादिकवडे युक्त.

અર્થ—તે હસ્તિનાપુર નગરમાં બહુમધ્યદેશ ભાગમાં તે ઠેકાણે એક મોટો ગાયોનો મંડપ હતો. તે અનેક સેંકડો સ્તંભોથી યુક્ત હતો, પ્રાસાદીય—મનની પ્રસન્નતાનો હેતુ હતો, જોવા લાયક હતો એટલે તેને જોતાં નેત્રને શ્રમ લાગતો નહોતો, અભિરૂપ એટલે મનોહર રૂપવાળો હતો, તથા પ્રતિરૂપ એટલે દરેક જોનાર માણસને સુંદર લાગતો હતો.

મૂ૦—તત્થ ણં બહવે ણગરગોરૂવા સણાહા ય, અણાહા ય, ણગરગાવિઓ ય, નગરબલિવદ્દા ય, ણગરપડ્ડિયાઓ ય, ણયરમહિસઓ ય, ણયરવસભા ય પઉરતણપાણિયા નિબ્ભયા નિરુવસગ્ગા સુહં-સુહેણં પરિવસંતિ ।

અર્થ—તે ગોમંડપમાં નગરના સનાથ અને અનાથ ઘણા પશુઓ, નગરની ગાયો, નગરના બળદો, નગરની પાડીઓ અથવા વાછરડીઓ, નગરના પાડાઓ અને નગરના સાંઢો (આખલાઓ) રહેતા હતા. તેમાં તેમને માટે ઘાસ અને પાણી ઘણું (પુષ્કળ) હતું. તેથી તે સર્વે ત્યાં નિર્ભય, ઉપસર્ગ રહિત સુખે સુખે રહેતા હતા.

મૂ૦—તત્થ ણં હત્થિણાઉરે નગરે ભીમે નામં કૂડગ્ગાહી હોત્થા અહમ્મિએ જાવ દુપ્પડિયાણંદે । તસ્સ ણં ભીમસ્સ કૂડગ્ગાહસ્સ ઉપ્પલા નામં ભારિયા હોત્થા અહીણપુણ્ણપંચેંદિયસરીરા ।

અર્થ—તે હસ્તિનાપુર નગરમાં ભીમ નામનો કૂટગ્રાહી હતો. તે અધાર્મિક યાવત્ દુષ્પ્રત્યાનંદ એટલે ઘણા સંતોષના

---

૧ કૂટ—કપટવડે જીવોને ગ્રહણ કરનાર.

कारणोवडे पण संतोष नहीं पामनारो हतो. ते भीम नामना कूटग्राहीने उत्पला नामनी भार्या हती. तेनां पांचे इंद्रियो अने शरीर हीनता रहित एटले लक्षणवाळां अने परिपूर्ण हतां.

' अहम्मिए जाव ' अहीं यावत् शब्द लख्यो छे तेथी आ प्रमाणे जाणवुं–' अहम्माणुए '–अधर्मानुग एटले अधर्मी–पापी लोकोने अनुसरनारो हतो, ' अहम्मिट्ठे '–अधर्मिष्ठ एटले अत्यंत अधर्मी हतो, ' अहम्मक्खाई '–अधर्माख्यायी एटले अधर्मने कहेनारो अथवा अधर्मख्याति एटले अधार्मिकनी प्रसिद्धिने पामेलो हतो, ' अधम्मपलोई '–अधर्मप्रलोकी एटले बीजा मनुष्योना अधर्म एटले दोषोने ज जोवाना स्वभाववाळो हतो, ' अहम्मपलज्जणे '–अधर्मप्ररजन एटले हिंसादिक अधर्मने विषे ज अनुरागवाळो हतो, ' अहम्मसमुदाचारो '–अधर्मसमुदाचार एटले अधर्मनुं ज आचरण करनार हतो, ' अहम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणे '–अधर्मवडे ज एटले पापकर्मवडे ज आजीविकाने करनारो हतो, 'दुस्सीले'–दुःशील एटले दुष्ट शीलवाळो हतो, 'दुव्वए'–दुर्व्रत एटले व्रत नियम रहित हतो अथवा माठा आचारवाळो हतो.

मू०–तते णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अन्नया कयाई आवन्नसत्ता जाया यावि होत्था । तते णं तीसे उप्पलाए कूडग्गाहिणीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूते–" धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, (पुन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ) जाव तासिं अम्मयाणं सुलद्धे जम्मजीवियफले, जाओ

णं बहूणं णगरगोरूवाणं सणाहाण य जाव वसभाण य ऊहेहि य थणेहि य वसणेहि य छेप्पाहि य ककुहेहि य वहेहि य कन्नेहिं य अच्छिहि य नासाहि य जिब्भाहि य उट्ठेहि य कंबलेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भाजिएहि य परिसुक्केहि य लावणेहि य सुरं च महुं च मेरगं च जातिं च सीधुं च पसण्णं च आसाएमाणीओ विसाएमाणीओ परिभुंजेमाणीओ परिभाएमाणीओ दोहलं विणयंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते उत्पला नामनी कूटग्राहिणी एकदा कदाचित् आपन्नसत्त्वा एटले गर्भिणी थइ. त्यारे ते उत्पला कूटग्राहिणीने त्रण मास लगभग पूरा थवा आव्या त्यारे आ आवा प्रकारना दोहला प्रगट थया.–"ते माताओ धन्य छे, (ते माताओ पुण्यशाळी छे, ते माताओ कृतार्थ छे अने ते माताओ शुभ लक्षणवाळी छे,) यावत् ते माताओना जन्मनुं तथा जीवितनुं फळ सारुं प्राप्त थयुं छे, के जे (माता) ओ नगरना घणा पशुओ के जे सनाथ के अनाथ छे यावत् वृषभो छे, तेमनां ऊधस एटले आउ, स्तन एटले आंचळ, वृषण एटले अंड, छेप्प[1] एटले पुच्छ, ककुद एटले स्कंधनी उपरनो भाग, वह एटले स्कंध, कान, नेत्र, नासिका, जीभ, होठ, कंबलं, विगेरे अवयवो पकावेला, तळेला, शेकेला अने पोतानी मेळे सुकाइ गयेला होय अने तेमने लवणनो संस्कार कर्यो होय एटले के तेमां मसालो नांख्यो होय, ते सर्व पदार्थोनी

---

१ गायनी डोके लटकतुं चर्म.

साथे सुरा एटले चोखा अने यव विगेरे वृक्षोनी छालथी बनेली मदिरा, मधु एटले मद्य, मेरक एटले नाळियेरनी बनेली मदिरा (ताडी), जाति एटले जाइना पुष्पना रंग जेवी मदिरा, सीधु एटले गोळ अने धावडीना वृक्षथी बनेली मदिरा तथा प्रसन्ना एटले द्राक्षासव विगेरे मनने प्रसन्न करनारी मदिरा आ सर्व पदार्थोने आस्वाद एटले कांइक स्वाद करती एटले शेरडीनी जेम थोडुं खाती अने घणुं त्याग करती, विशेष स्वाद करती एटले खजुर विगेरेनी जेम घणुं खाती अने थोडुं तजती, सर्व खाइ जती तथा बीजाओने आपती सती पोताना दोहलाने परिपूर्ण करे छे.

मू–तं जइ णं अहमवि बहूणं नगर जाव विणिज्जामि " त्ति कट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा नित्तेया दीणविमणवयणा पंडुल्लइयमुहा ओमंथियनयणवयणकमला जहोइयं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकाराहारं अपरिभुंजमाणी करयलमलियव्व कमलमाला ओहयमणसंकप्पा (करतलपल्लत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमीगयदिट्ठीया) जाव झियायति । "

अर्थ—ते कारण माटे जो हुं पण घणा नगरना पशुओना मांसादिक तथा मदिरादिक खाइने यावत् मारा दोहलाने पूर्ण करूं तो धन्य थाउं, " आ प्रमाणे विचार करीने ते दोहला पूर्ण नहीं थवाथी ते उत्पला रुधिरनो क्षय थवाथी सुकाइ गइ, भोजन नहीं करवाथी भूखी थइ, तेथी करीने ज मांस रहित थइ, अवरुग्णा एटले तेणीनुं मन भग्न थयुं,

तेणीनुं शरीर भग्न थयुं, तेणीनी कांति नष्ट थइ, ते दीनतावाळी थइ, मन रहित एवी स्त्रीनुं जेवुं मुख होय तेवुं तेणीनुं मुख झांखुं थयुं, तेणीनुं मुख पांडुर एटले फीक्कुं थयुं, तेणीए पोतानां नेत्रकमळ तथा मुखकमळ नीचां कर्यां, उचितता प्रमाणे पुष्प, वस्त्र, गंध, माळा, अलंकार अने आहारने नहीं करती, हस्ततळमां रहेली अने मसळेली पुष्पनी माळानी जेम ते करमाइ गयेली थइ, अने युक्त अयुक्तनो तेणीनो विचार नष्ट थयो, यावत् (ते हस्ततल उपर मुख राखी आर्तध्यानमां पडी सती भूमिपर दृष्टि राखी) ध्यान करवा लागी.

मू०—इमं च णं भीमे कूडग्गाहे जेणेव उप्पला कूडग्गाहिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ओहय जाव पासति, पासित्ता एवं वयासी—" किं णं तुमे देवाणुप्पिए ! ओहय जाव झियासि ? " ।

अर्थ—आ अवसरे भीम कूटग्राही जे ठेकाणे उत्पला कूटग्राहिणी हती त्यां आव्यो. आवीने जेणीना मननो विचार नष्ट थयो हतो एवी तेणीने यावत् आर्तध्यान करती जोइ, जोइने तेणे आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिया ! तुं शामाटे यावत् आर्तध्यान करे छे ! "

मू०—तते णं सा उप्पला भारिया भीमं कूडग्गाहं एवं वयासी—"एवं खलु देवाणुप्पिया ! ममं तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दोहला पाउब्भूया धन्ना णं ताओ जाओ णं बहूणं गोरूवाणं ऊहेहि

१ पाठांतरमां—दीनतावाळी, शून्य चित्तवाळी अने झीणा एटले भय पामेली थइ.

य जाव लावणएहि य सुरं च ४ आसाएमाणी ३ दोहलं विणेंति, तते णं अहं देवाणुप्पिया ! तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि जाव झियामि ”।

अर्थ—त्यारे ते उत्पला भार्याए भीम कूटग्राहने आ प्रमाणे कह्युं-“ आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! मने त्रण मास लगभग परिपूर्ण थया एटले दोहला उत्पन्न थया के-ते माताओ धन्य छे के जेओ घणा पशुओना आउ विगेरे यावत् लवणवडे संस्कार करेला तेनी साथे मदिरा विगेरेने आस्वादन करती सती दोहलाने दूर करे छे-पूर्ण करे छे. तेथी हुं हे देवानुप्रिय ! ते दोहला नहीं पूरा थवाथी यावत् आर्तध्यान करुं छुं. ”

मू०—तते णं से भीमे कूडग्गाही उप्पलं भारियं एवं वयासी—“ मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय झियाहि, अहन्नं तं तहा करिस्सामि जहा णं तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सति. ” ताहिं इट्ठाहिं (कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं) जाव वग्गूहिं समासासेति ।

अर्थ—त्यारपछी (ते सांभळीने) ते भीम कूटग्राहीए पोतानी उत्पला भार्याने आ प्रमाणे कह्युं के-“ हे देवानुप्रिया ! तुं आर्तध्यान न कर. हुं ते तथाप्रकारे करीश के जे प्रकारे तारा दोहलानी प्राप्ति पूर्ण थशे. ” आ प्रमाणे इष्ट, (कांत, प्रिय, मनोहर अने मनमां भूलाय नहीं एवी) यावत् वाणीवडे तेणीने आश्वासन आप्युं.

मू०—तते णं से भीमे कूडग्गाही अद्धरत्तकालसमयंसि एगे अबीए सन्नद्धं जाव पहरणे सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ, सयाओ गिहाओ निग्गच्छित्ता हत्थिणाउरे नगरे मज्झंमज्झेणं जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागते, उवागच्छित्ता बहूणं णगरगोरूवाणं जाव वसभाण य अप्पेगइयाणं ऊहे छिंदाति, जाव अप्पेगतियाणं कंबले छिंदाति, अप्पेगइयाणं अण्णमण्णाणं अंगोवंगाणं वियंगेति; वियंगित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छाति, उवागच्छित्ता उप्पलाए कूडग्गाहिणीए उवणेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते भीम कूटग्राही अर्धरात्रिना काळ समये एकलो एटले बीजानी सहाय रहित, अद्वितीय एटले धर्मरूप सहाय रहित बख्तर विगेरे पहेरीने यावत् आयुध अने प्रहरणने हाथमां ग्रहण करीने पोताना घरमांथी बहार नीकळ्यो. पोताना घरमांथी बहार नीकळीने हस्तिनापुर नगरना मध्य भागे थइने ज्यां ते गोमंडप हतो त्यां आव्यो. आवीने नगरना घणा पशुओ यावत् वृषभो हता, तेमां केटलाकना आउ छेद्या, यावत् केटलाकना कंबल छेद्या तथा केटलाकना अन्यान्य एटले जुदा जुदा अंगो तथा उपांगोने विकळ कर्या एटले छेद्या. छेदीने ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आव्यो. आवीने (ते अंगोपांग) उत्पला कूटग्राहिणीने आप्यां.

मू०—तते णं सा उप्पला भारिया तेहिं बहूहिं गोमंसेहि य सूलेहि (सोल्लेहि) य सुरं च

आसाएमाणी तं दोहलं विणेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते उत्पला भार्याए ते घणा पशुओना पकावेला मांसनी साथे मदिरादिकनुं आस्वादन करी ते पोताना दोहलाने दूर कर्या–परिपूर्ण कर्या.

मू०—तते णं सा उप्पला कूडग्गाही (हिणी) संपुन्नदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला वोच्छिन्नदोहला संपन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते उत्पला कूटग्राहिणीना समस्त वांछितार्थ पूरा थया, वांछितार्थ निवृत्त थया, वांछितार्थ दूर थया, वांछाना अनुबंधनो विच्छेद थयो, अने सर्व भोगादिकनी प्राप्ति थइ, तेथी ते गर्भने सुखे सुखे वहन करवा लागी–पालन करवा लागी.

मू०—तते णं सा उप्पला कूडग्गाहिणी अन्नया कयाइं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दारयं पयाया ॥ १० ॥

अर्थ—त्यारपछी ते उत्पला कूटग्राहिणीए एकदा कदाचित् नव मास पूर्ण थया त्यारे पुत्रने प्रसव्यो. १०

मू०—तते णं तेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया महया सद्देणं विघुट्ठे विसरे आरसिते ।

अर्थ—त्यारपछी ते पुत्रनो जन्म थयो के तरत ज ते बाळक मोटा मोटा शब्दवडे घोष करवा लाग्यो, विरस शब्द करवा लाग्यो अने बूम पाडवा लाग्यो.

मू०—तते णं तस्स दारगस्स आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे नगरे बहवे णगरगोरूवा जाव वसभा य भीया (तत्था तसिया संजायभया) उव्विग्गा सव्वओ समंता विप्पलाइत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते दारकनी बूमनो शब्द सांभळीने हृदयमां धारीने हस्तिनापुर नगरमां नगरना घणा पशुओ यावत् वृषभो सर्वे भय पाम्या, (त्रास पाम्या, तरस्या थया, अत्यंत भय पाम्या) उद्वेग पाम्या, अने सर्व दिशा विदिशाओमां नाशी गया.

मू०—तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं नामधेज्जं करेंति, " जम्हा णं अम्हे इमेणं दारएणं जायमेत्तेणं चेव महया महया (चिश्वी) सद्देणं विघुट्ठे विस्सरे आरसिए, तते णं एयस्स दारगस्स आरसियं सद्दं सोच्चा निसम्म हत्थिणाउरे बहवे णगरगोरूवा जाव वसभा य भीया तत्था तसिया संजायभया सव्वओ समंता विप्पलाइत्था, तम्हा णं होउ अम्हं दारए

१ भयनुं अधिकपणुं देखाडवा माटे एक ज अर्थवाळा आ सर्व विशेषणो लख्या छे.

गोत्तासए नामेणं ” ।

अर्थ—त्यारपछी ते दारकना मातापिताए तेनुं आ आवा प्रकारनुं नाम पाड्युं—के जे कारण माटे अमारो आ बाळक उत्पन्न थयो ने तरत ज तेणे मोटा मोटा चीत्कार शब्दवडे घोषणा करी, विरस शब्द कर्यो अने बूम पाडी, तेथी आ बाळकनी बूमनो शब्द सांभळी हृदयमां भारी हस्तिनापुर नगरमां नगरना घणा पशुओ यावत् वृषभो सर्वे भय पाम्या, त्रास पाम्या, तृषित थया, उत्पन्न थयो छे भय जेने एवा थया, तथा सर्व दिशा विदिशाओमां नाशी गया ते कारण माटे अमारा आ दारकनुं गोत्रास एवुं नाम हो. ”

मू०—तते णं से गोत्तासे दारए उम्मुक्कबालभावे जाव जाते यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते गोत्रास दारक बाल्यावस्थाने मूकी यावत् युवान वयवाळो थयो.

मू० तते णं से भीमे कूडग्गाहे अन्नया कयाई कालधम्मुणा संजुत्ते ।

अर्थ—त्यारपछी ते भीम कूटग्राही एकदा कदाचित् काळधर्मवडे युक्त थयो (मरण पाम्यो).

मू० तते णं से गोत्तासे दारए बहूणं मित्तणाइनियगसयणसंबंधिपरिजणेणं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे भीमस्स कूडग्गाहिस्स नीहरणं करेति, नीहरणं करित्ता बहूइं

लोइयमयकज्जाइं करेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते गोत्रास बाळके घणा मित्रो, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबंधी[3] अने परिवारनी साथे परिवर्या सता, रोता, आक्रंद करता अने विलाप करता सता भीम कूटग्राहीनुं नीहरण[4] कर्युं. नीहरण करीने घणां लौकिक एटले लोकाचार प्रमाणे मृतकनां कार्य कर्यां.

मू० तते णं से सुनंदे राया गोत्तासं दारयं अन्नया कयाइ सयमेव कूडग्गाहित्ताए ठावेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुनंद राजाए ते गोत्रास दारकने एकदा कदाचित् पोते ज कूटग्राहीपणे एटले कूटग्राहीने स्थाने स्थापन कर्यो.

मू०—तते णं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहे जाए यावि होत्था अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ।

अर्थ—त्यारपछी ते गोत्रास दारक कूटग्राही थयो. ते अधार्मिक यावत् दुष्प्रत्यानंद एटले सतोषनां कारणो मळ्या छतां पण संतोष–आनंद न पामे तेवो थयो.

मू० तते णं से गोत्तासे दारए कूडग्गाहित्ताए(ग्गाहे)कल्लाकल्लिं अद्धरत्तियकालसमयंसि एगे

१ गोत्रीया. २ माता, पिता, काका विगेरे. ३ सासरिया विगेरे ४ घरमांथी काढी स्मशानमां लइ जवानुं कर्म.

अबीए सन्नद्धबद्धकवए जाव गहियाउहपहरणे सयातो गिहाओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव गोमंडवे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता बहूणं णगरगोरूवाणं सणाहाण य जाव वियंगेति, वियंगित्ता जेणेव सए गेहे तेणेव उवागते ।

अर्थ—त्यारपछी ते गोत्रास दारक कूटग्राही हमेशां अर्ध रात्रिने समये एकलो एटले बीजानी सहाय रहित, अद्वितीय एटले धर्मरूपी सहाय रहित, सन्नाह पहेरी कवच धारण करी यावत् आयुध अने प्रहरणने ग्रहण करी पोताना घरमांथी नीकळतो हतो. नीकळीने ज्यां गोमंडप हतो त्यां आवतो हतो आवीने नगरना घणा पशुओ केजे सनाथ अने अनाथ हता तेमने यावत् अंग रहित करतो हतो. अंग रहित करीने ज्यां पोतानुं घर हतुं त्यां आवतो हतो.

मू०—तते णं से गोत्तासे कूडग्गाहे तेहिं बहूहिं गोमंसेहि य सूलेहि य सुरं च मज्जं च आसाएमाणे विसाएमाणे जाव विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते गोत्रास कूटग्राही ते घणां गायोनां मांस विगेरे पकावीने तेनी साथे सुरा अने मद्यनो आस्वाद करतो विशेष स्वाद करतो यावत् रहेलो छे.

मू०—तते णं से गोत्तासे कूडग्गाहे एयकम्मे (एयविज्जे एयप्पहाणे एयसमाचारे) सुबहुं

पावकम्मं समज्जिणित्ता पंचवाससयाइं परमाउयं पालइत्ता अट्टदुहट्टोवगए कालमासे कालं किच्चा दोच्चाए पुढवीए उक्कोसं तिसागरोवमठिइएसु नेरइएसु णेरइयत्ताए उववन्ने ॥ ११ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते गोत्रास कूटग्राही आवा पापकर्मवाळो, (आवा विज्ञानवाळो, आवा ज कर्म करवामां मुख्य अने आवा ज आचारवाळो सतो) अत्यंत घणां पापकर्मने उपार्जन करी पांचसो वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळी दुहट्ट एटले दुर्घट अर्थात् दुःखे करीने वारी शकाय एवा आर्तध्यानने पाम्यो सतो मरण समये मरण पामीने बीजी नरक पृथ्वीने विषे उत्कृष्ट त्रण सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकीओने विषे नारकीपणे उत्पन्न थयो. ११.

मू०—तते णं सा विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दा नामं भारिया जायनिंदुया यावि होत्था जाया जाया दारगा विणिहायमावज्जंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते विजयमित्र सार्थवाहनी सुभद्रा नामनी भार्या जातनिंदु (जातनिर्द्रुता) हती एटले के तेना उत्पन्न थयेला उत्पन्न थयेला पुत्रो विनाशने पामता हता, अर्थात् मरेला बाळकोने प्रसवती हती.

मू०—तते णं से गोत्तासे कुडग्गाहे दोच्चाओ पुढवीओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वाणियगामे नगरे विजयमित्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दाए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते गोत्रास कूटग्राही बीजी नरकपृथ्वीथी अनंतर (तरत) नीकळीने आ ज वाणिजग्राम नगरमां विजयमित्र सार्थवाहनी सुभद्रा भार्यानी कुक्षिने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थयो.

मू०—तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दारगं पयाया ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुभद्रा सार्थवाहीए एकदा कदाचित् नव मास संपूर्ण थया त्यारे पुत्रने प्रसव्यो.

मू०—तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही तं दारगं जायमेत्तयं चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झावेइ उज्झावेत्ता दोच्चं पि गिण्हावेइ गिण्हावित्ता आणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी संवड्ढेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुभद्रा सार्थवाहीए ते पुत्र उत्पन्न थयो के तरत ज तेने एकांते उकरडामां त्याग कराव्यो. त्याग करावीने पछी बीजीवार (फरीथी) ग्रहण कराव्यो. ग्रहण करावीने अनुक्रमे तेने कष्टोथी रक्षण करती, तथा वस्त्र, आच्छादन अने भोंयरामां राखवा विगेरे वडे तेने गोपवती थकी वृद्धि पमाडवा लागी एटले पालन पोषण करवा लागी.

मू०—तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो ठिइवडियं चंदसूरदंसणं च जागरियं महया इड्ढी-सक्कारसमुदएणं करेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते दारकना मातापिताए स्थितिपतिताने एटले कुलक्रमथी आवेली वधामणी विगेरे पुत्रजन्मोत्सवनी क्रियाने तथा चंद्रसूर्यना दर्शनरूप षष्ठीजागरिकाने मोटी ऋद्धि अने सत्कारना समुदाये करीने करी.

मू०—तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो इक्कारसमे दिवसे निव्वत्ते संपत्ते बारसमे दिवसे इममेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति, जम्हा णं अम्हं इमे दारए जायमित्तए चेव एगंते उक्कुरुडियाए उज्झिते तम्हा णं होउ अम्हं दारए उज्झियए नामेणं ।

अर्थ—त्यारपछी ते दारकना मातापिताए अग्यारमो दिवस निवृत्त थयो अने बारमो दिवस प्राप्त थयो त्यारे आ आवा प्रकारनुं गौण (अप्रधान) अने गुणथी बनेलुं नाम पाडयुं. जे कारण माटे आपणा आ पुत्रने उत्पन्न थयो के तरत ज एकांते उकरडामां त्याग कर्यो हतो, ते कारण माटे आपणा आ पुत्रनुं उज्झितक नाम हो.

मू०—तते णं से उज्झियए दारए पंचधातीपरिग्गहीए, तं जहा—खीरधाईए १ मज्जणधाईए २ मंडणधाईए ३ कीलावणधाईए ४ अंकधाईए ५ जहा दढपइन्ने जाव निव्वाघाए गिरिकंदरमल्लीणे व चंपयपायवे सुहंसुहेणं विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते उज्झितक दारकने पांच धात्रीओए ग्रहण कर्यो—पांच धात्रीओ पालन करवा लागी. ते आ

प्रमाणे–क्षीरधात्री एटले दूध धवरावनारी १, मज्जनधात्री एटले स्नान करावनारी २, मंडनधात्री एटले अलंकार पहेरावनारी ३, क्रीडापन धात्री एटले क्रीडा करावनारी (रमाडनारी) ४ अने अंकधात्री एटले खोळामां बेसाडनारी ५. जेम औपपातिक सूत्रमां दृढप्रतिज्ञनुं वर्णन कर्युं छे तेम अहीं पण जाणवुं. यावत् व्याघातरहित पर्वतनी गुफामां रहेला चंपकना वृक्षनी जेम ते सुखे सुखे रहेतो हतो–वृद्धि पाम्यो.

मू०—तते णं से विजयमित्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं गणिमं च १ धरिमं च २ मेज्जं च ३ पारिच्छेज्जं च ४ चउव्विहं भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेणं उवागते ।

अर्थ—त्यारपछी ते विजयमित्र सार्थवाह एकदा कदाचित् गणिम १, धरिम२, मेय[1] ३ अने परिच्छेद्य ४ ए चार प्रकारनुं भांड (करीयाणुं) लइने लवणसमुद्रमां वहाणवडे वेपार करवा गयो.

मू०—तते णं से विजयमित्ते तत्थ लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निबुड्डभंडसारे अत्ताणे असरणे कालधम्मुणा संजुत्ते ।

अर्थ—त्यारपछी ते विजयमित्र सार्थवाहनुं ते लवणसमुद्रमां वहाण भांगी जवाथी सारभूत सर्व भांड बुडी गयुं, तेथी

---

१ सोपारी, नाळीयेर विगेरे गणीने अपाय ते. २ गोळ विगेरे जोखीने अपाय ते. ३ घी, तेल विगेरे पळीवडे मापीने अपाय ते. ४ रत्न विगेरे छेदीने–पारखीने अपाय ते. (अपाय एटले वेचाय)

ते रक्षण विनानो अने शरण विनानो थइने काळधर्मवडे युक्त थयो-मरण पाम्यो.

मू०-तते णं तं विजयमित्तं सत्थवाहं जे जहा बहवे ईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठि-सत्थवाहा लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निव्वुड्डभंडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेंति ते तहा हत्थ-निक्खेवं च बाहिरभंडसारं च गहाय एगंते अवक्कमंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते विजयमित्र सार्थवाहने जे घणा ईश्वर एटले युवराज, तलवर एटले कोटवाळ, माडंबिक, कौटुंबिक, इभ्य, श्रेष्ठी अने सार्थवाहोए " लवणसमुद्रमां वहाण भांगी जवाथी तेनुं सर्व सारभूत भांड बुडी गयुं अने ते काळधर्मवडे युक्त थयो एटले मरण पाम्यो " एम सांभळ्यो, त्यारे तेओ हस्तनिक्षेपने एटले पोतानी पासे मूकेली थापणने तथा बहारना एटले थापण सिवायना सारभूत भांडने ग्रहण करी एकांते जता रह्या, अर्थात् ते सार्थवाहनुं जेना हाथमां जे आव्युं ते लइ गया.

मू०-तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही विजयमित्तं सत्थवाहं लवणसमुद्दे पोयविवत्तीए निव्वुड्ड-भंडसारं कालधम्मुणा संजुत्तं सुणेति, सुणित्ता महया पइसोएणं अप्फुण्णा समाणी परसुणिय-त्ताविव चंपगलता धसत्ति धरणीतलंसि सव्वंगेण सन्निवडिया ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुभद्रा सार्थवाहीए विजयमित्र सार्थवाहने " लवणसमुद्रमां वहाण भांगवाथी सारभूत सर्व भांड बुडी गया अने पोते काळधर्मवडे युक्त थयो एटले मरण पाम्यो " एम सांभळ्यो. सांभळीने पतिना वियोगना मोटा शोकवडे अत्यंत पीडा पामी सती ते सुभद्रा कुहाडाथी कपायेली चंपकलतानी जेम धस दइने पृथ्वीतलमां सर्व अंगे पडी गइ.

मू०—तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही मुहुत्तंतरेण आसत्था समाणी वहूहिं मित्तणाइणियगसंबंधीहिं जाव परिवुडा रोयमाणी कंदमाणी विलवमाणी विजयमित्तसत्थवाहस्स लोइयाइं मियाकिच्चाइं करेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुभद्रा सार्थवाही एक मुहूर्त्त पछी सावधान थइ सती घणा मित्रो, ज्ञातिना जनो, पोताना कुटुंबीओ अने सासराना पक्षवाळा लोकोवडे यावत् परिवरी सती, रुदन करती एटले आंसु मूकती, आक्रंद करती एटले मोटो शब्द करती अने विलाप एटले आर्त्तस्वर करती सती विजयमित्र सार्थवाहना लोकाचार प्रमाणे मरणना कार्य करती हवी.

मू०—तते णं सा सुभद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइं लवणसमुद्दोत्तरणं च लच्छिविणासं च पोयविणासं च पतिमरणं च अणुचिंतेमाणी अणुचिंतेमाणी कालधम्मुणा संजुत्ता ॥ १२ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सुभद्रा सार्थवाही एकदा कदाचित् लवणसमुद्रमां जवुं, लक्ष्मीनो विनाश थवो, वहाणनुं भांगवुं अने पतिनुं मरण थवुं, ए सर्वने विचारती विचारती (शोक करती) काळधर्मवडे युक्त थइ—मरण पामी. १२.

मू-तते णं ते णगरगुत्तिया सुभद्दं सत्थवाहिं कालगयं जाणित्ता उज्झियगं दारगं सयाओ गिहाओ निच्छुभंति, निच्छुभित्ता तं गिहं अन्नस्स दलयंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते नगरना आरक्षकोए सुभद्रा सार्थवाहीने मृत्यु पामेली जाणीने ते उज्झितक दारकने तेना पोताना घरमांथी काढी मूक्यो. काढी मूकीने ते घर बीजाने आप्युं.

मू०—तते णं से उज्झियए दारए सयाओ गिहाओ निच्छूढे समाणे वाणियगामे णगरे सिंघाडग जाव पहेसु जूयखलएसु वेसियाघरेसु पाणागारेसु य सुहंसुहेणं परिवड्ढति ।

अर्थ—त्यारपछी ते उज्झितक दारक पोताना घरमांथी काढी मूकायो सतो वाणिजगाम नगरने विषे शिंगोडाना आकारवाळा यावत् सर्व मार्गोने विषे, जुगारना स्थानोने विषे, वेश्याना घरोने विषे तथा मदिरापानना स्थानोने विषे सुखे सुखे वृद्धि पामवा लाग्यो.

मू०—तते णं से उज्झियए दारए अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमती सइरपयारे मज्जप्पसंगी चोरजूयवेसदारप्पसंगी जाते यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते उज्झितक दारक अनपघट्टक एटले बळात्कारे हाथ झालीने तेने कोइ निवारण करनार न होवाथी

तथा अनिवारक एटले वचनथी तेने कोइ निषेध करनार न होवाथी स्वच्छंद मतिवाळो, स्वैर प्रचारवाळो एटले इच्छा प्रमाणे चालनार, मदिराना प्रसंगवाळो तथा चोरी, द्यूत, वेश्या अने स्त्रीना प्रसंगवाळो अथवा वेश्यारूपी स्त्रीना प्रसंगवाळो थयेलो होतो हवो.

मू०—तते णं से उज्झियते अन्नया कयाइं कामज्झयाए गणियाए सद्धिं संपलग्गे जाते यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते उज्झितक एकदा कदाचित् ते कामध्वजा नामनी गणिकानी साथे प्रसंगवाळो थयो.

मू०—कामज्झयाए गणियाए सद्धिं विउलाइं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ।

अर्थ—तेथी कामध्वजा नामनी गणिकानी साथे विस्तारवाळा अने उदार एवा मनुष्य संबंधी भोगववा लायक एटले मनोहर शब्दादिक भोगोने भोगवतो सतो रहेवा लाग्यो.

मू०—तते णं तस्स मित्तस्स रन्नो अन्नया कयाइं सिरीए देवीए जोणिसूले पाउब्भूए यावि होत्था, नो संचाएइ मित्ते राया सिरीए देवीए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ।

अर्थ—त्यारपछी ते मित्र नामना राजानी श्री नामनी देवीने एटले राणीने एकदा कदाचित् योनिशूळ उत्पन्न थयुं तेथी ते मित्र राजा श्रीदेवीनी साथे उदार एवा मनुष्य संबंधी मनोहर शब्दादिक भोगोने भोगवतो सतो विचरवाने एटले रहेवाने असमर्थ थयो.

मू०—तते णं से मित्ते राया अन्नया कयाइं उज्झियदारयं कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेति, निच्छुभावित्ता कामज्झयं गणियं अब्भिंतरियं ठावेति, ठावित्ता कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते मित्र राजाए एकदा कदाचित् ते उज्झितक दारकने कामध्वजा गणिकाना घरमांथी काढी मूक्यो. काढी मूकीने ते कामध्वजा गणिकाने पोताना अंतःपुरमां स्थापन करी, स्थापन करीने कामध्वजा गणिकानी साथे उदार एवा मनोहर शब्दादिक भोगोने भोगवतो सतो रहेवा लाग्यो.

मू०—तते णं से उज्झियए दारए कामज्झयाए गणियाए गिहाओ निच्छुभेमाणे कामज्झयाए गणियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अन्नत्थ कत्थइ सुइं च रइं च धिइं च अविंदमाणे तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तयप्पियकरणे तब्भावणाभाविए कामज्झयाए

गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे पडिजागरमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते उज्झितक दारक कामध्वजा गणिकाना घरमांथी काढी मूकायो त्यारे ते कामध्वजा गणिकाने विषे मूर्छित एटले दोषने विषे गुणनो आरोप करवाथी मूढ थयो, गृद्ध एटले आकांक्षावाळो थयो, ग्रथित एटले तेणीना स्नेहरूप तंतुथी गुंथायो अने अध्युपपन्न एटले तेणीने विषे अधिकपणे एकाग्रताने पाम्यो. तेथी ते बीजे कोइ ठेकाणे एटले कोइ पण वस्तुने विषे स्मृतिने एटले स्मरणने, रतिने एटले प्रीतिने तथा धृतिने एटले चित्तनी स्वस्थताने नहीं पामवाथी तेणीने विषे ज चित्तवाळो, तेणीने विषेज मनवाळो एटले द्रव्यमनने आश्रीने विशेष उपयोगवाळो, तल्लेश्य एटले तेणीने विषे रहेली अशुभ लेश्याना परिणामवाळो, तदध्यवसाय एटले तेणीने विषे ज भोग भोगववानी क्रियामां प्रयत्नवाळो, तदर्थोपयुक्त एटले तेणीनी प्राप्ति माटे ज उपयोगवाळो, तदर्पितकरण एटले तेणीने विषे ज इंद्रियोने अर्पण करनारो तथा तद्भावनाभावित एटले तेणीना चिंतवनथी ज वासित थयो सतो ते कामध्वजा गणिकाना घणा आंतराने, छिद्रोने अने विवरोने शोधतो शोधतो रहेवा लाग्यो.

मू०—तते णं से उज्झियए दारए अन्नया कयाइं कामज्झयं गणियं अंतरं लब्भेति, काम-

---

१ भावमन अथवा सामान्य ज्ञान. २ लेश्या एटले कृष्णादिक द्रव्यना समीपपणाथी उत्पन्न थतो जीवनो परिणाम. ३ राजा अन्यत्र जाय ते आंतरुं. ४ राजानो परिवार अल्प होय ते छिद्र. ५ कोइ पण बीजा मनुष्य न होय ते विवर.

ज्झयाए गणियाए गिहं रहसियं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते उज्झितक दारक एकदा कदाचित् कामध्वजा गणिकाना आंतराने पाम्यो, त्यारे ते कामध्वजा गणिकाना घरमां छानी रीते पेठो. पेशीने कामध्वजा गणिकानी साथे उदार मनुष्य संबंधी कामभोगने भोगवतो विचरवा–रहेवा लाग्यो.

मू०—इमं च णं मित्ते राया ण्हाते जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए मणुस्सवागुरापरिक्खित्ते जेणेव कामज्झयाए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तत्थ णं उज्झियए दारए कामज्झयाए गणियाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं जाव विहरमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते तिवलियभिउडिं निडाले साहट्टु उज्झियं दारयं पुरिसेहिं गिण्हावेइ, गिण्हावित्ता अट्ठिमुट्ठिजाणुकोप्परपहारसंभग्गमहितगत्तं करेति, करित्ता अवउडगबंधणं करेति, करित्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणावेति । एवं खलु गोयमा ! उज्झियते दारए पुरापोराणाणं कम्माणं जाव पच्चणुब्भव-

१ राजमहेलमानुं तेने रहेवा आपेलुं स्थान.

माणे विहरति ॥ १३ ॥

अर्थ—तेवामां मित्र राजा स्नान करी, यावत् प्रायश्चित्त करी, सर्व अलंकारोवडे विभूषित थइ, मनुष्यरूपी वागुरावडे व्याप्त (सहित) थइ ज्यां कामध्वजा गणिकानुं घर (स्थान) हतुं त्यां आव्यो. आवीने त्यां उज्झितक दारकने कामध्वजा गणिकानी साथे उदार काम भोगवतो यावत् रहेलो जोयो. जोइने ते राजा आशुरुत्त एटले तत्काळ क्रोधवडे मोहित थयो अथवा आसुरोक्त एटले असुर जेवा दारुण कोपे करीने युक्त जेनुं वचन छे एवो थयो. (रुष्ट एटले रोषवाळो थयो, कुपित एटले मनमां कोपयुक्त थयो, चांडिक्यित एटले भयंकर थयो) तथा मिसिमिसिमाण एटले क्रोधाग्निनी ज्वाळावडे जाज्व-ल्यमान थयो, तेथी कपाळमां त्रण वळीयावाळी भृकुटि करीने (चडावीने) ते राजाए ते उज्झितक दारकने पोताना सेवको पासे पकडाव्यो. पकडावीने यष्टि, मुष्टि, ढींचण अने कोणीओना प्रहारवडे तेना गात्र (शरीर) ने भांगी नंखाव्युं तथा दहींनी जेम मथित कराव्युं. करावीने अवळुं बंधन कराव्युं एटले डोकने नीचे रखावी हाथने पाछळ रखावी बंधन कराव्युं करावीने (बंधाव्यो–बंधावीने) ए ज रीतिवडे तेनो वध करवानी आज्ञा आपी. आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते उज्झितक दारक पूर्वे करेलां, जूनां, दुष्टपणे आचरेलां अने प्रतिक्रमण नहीं करेलां (पश्चात्तापवडे नहीं खपावेलां) एवां अशुभ कर्मना फळविपाकने अनुभवतो सतो रह्यो छे. १३.

---

१ वागुरा एटले मृगने बांधवानो पासको तेनी जेम चोतरफ सेवको रहेला होवाथी तेने वागुरा कही छे.

मू०—" उज्झियए णं भंते ! दारए इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? "।

अर्थ—गौतम स्वामीए पूछ्युं के—" हे भगवान ! ते उज्झितक दारक अहींथी मरण समये मरण पामीने क्यां जशे ? अने क्यां उत्पन्न थशे ? "

मू०—"गोयमा ! उज्झियते दारए पणवीसं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलीभिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जिहिति

अर्थ—भगवाने उत्तर आप्यो के—" हे गौतम ! ते उज्झितक दारक पचीश वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने आजे ज दिवसनो त्रीजो भाग बाकी रहेशे त्यारे शूळीवडे (देहथी) भिन्न—जूदो कर्यो सतो मरण समये मरण पामीने आ रत्नप्रभा नामनी पृथ्वीने विषे नारकीपणे उत्पन्न थशे.

मू०—से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले वानरकुलंसि वाणरत्ताए उववज्जिहिति ।

अर्थ—ते त्यांथी अनंतर उद्धरीने आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां वैताढ्य पर्वतनी तळेटीमां वानरायोना कुळने विषे वानरपणे उत्पन्न थशे.

मू०—से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तिरियभोगेसु मुच्छिते गिद्धे गढिते अज्झोववन्ने जाते जाते वानरपेल्लए वहेइ, तं एयकम्मे (एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमुदायारे) कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे णगरे गणियाकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति ।

अर्थ—ते वानर त्यां बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ, तिर्यंचना कामभोगने विषे मूर्छावाळो, गृद्धिवाळो एटले आकांक्षावाळो ग्रथित एटले विषयस्नेहना तंतुथी गुंथायेलो अने अध्युपपन्न एटले विषयमां अत्यंत एकाग्रताने पामेलो थयो सतो उत्पन्न थता उत्पन्न थता वानरना बाळकोने मारी नांखवा मांडशे. तेथी करीने ते आवा पापकर्मवाळो, (आवा कर्म करवामां ज प्रधान एटले तत्पर, आवा ज विज्ञानवाळो अने आवा ज आचारवाळो) मरण समये मरण पामीने आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रने विषे इंद्रपुर नामना नगरमां गणिकाना कुळने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थशे.

मू०—तते णं तं दारयं अम्मापियरो जायमित्तकं वद्धेहिंति नपुंसगकम्मं सिक्खावेहिंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते दारक उत्पन्न थशे–प्रसवशे के तरत ज तेना मातापिता तेने वर्धितक करशे अने नपुंसकनुं

१ लिंगछेदन.

कर्म शीखवशे.

मू०—तते णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो णिव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं णामधेज्जं करेंति, तं जहा—" होऊ णं पियसेणे णामं णपुंसए "।

अर्थ—त्यारपछी बार दिवस व्यतीत थशे त्यारे तेना मातापिता ते दारकनुं आ आवा प्रकारनुं नाम पाडशे. ते आ प्रमाणे—" आ अमारो दारक प्रियसेन नामे नपुंसक हो. "

मू०—तते णं से पियसेणे णपुंसए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते विण्णायपरिणयमित्ते रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठे उक्किट्ठसरीरे भविस्सइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते प्रियसेन नामनो नपुंसक बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ यौवनने पामी विज्ञानना परिणामने पामशे एटले कळाओने शीखशे अने रूप, यौवन तथा लावण्यवडे उत्कृष्ट अने उत्कृष्ट शरीरवाळो थशे.

मू०—तते णं से पियसेणे णपुंसए इंदपुरे णगरे बहवे राईसर जाव पभिइओ बहूहि य विज्जापओगेहि य मंतचुन्नेहि य हियउड्डावणाहि य निण्हवणेहि य पण्हवणेहि य वसीकरणेहि य आभिओगिएहि य अभिओगित्ता उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सति ।

अर्थ—त्यारपछी ते प्रियसेन नपुसक इंद्रपुर नगरमां घणा राजा, ईश्वर यावत् ए विगेरे सर्व लोकोने हृदयनी शून्यताने करनारा, निन्हवणा एटले अदृश्यपणाने करनारा अर्थात् अन्य जनना धनादिकने हरण कर्या छतां ते जन ते वातने प्रकाश न करी शके–बीजानी पासे कही न शके एवा, प्रस्नवन एटले बीजा मनुष्योने आनंद उपजावनारा–जेनाथी बीजा आनंद पामे तेवा, वश करनारा तथा आभियोगिक एटले पराधीनताने करनारा एवा घणा विद्याना प्रयोगवडे तेमज मंत्र अने चूर्णना प्रयोगवडे वश करीने–पराधीन करीने मनुष्य संबंधी उदार कामभोगने भोगवतो सतो विचरशे–रहेशे.

अहीं मूळमां जे अभियोग कह्यो छे ते बे प्रकारे छे. तेने माटे कह्युं छे के—

" दुविहो खलु अभिओगो, दव्वे भावे य होइ नायव्वो ।
दव्वम्मि होंति जोगा, विज्जा मंता य भावम्मि ॥ १ ॥ "

" द्रव्यने विषे अने भावने विषे एम बे प्रकारे अभियोग होय छे एम जाणवुं, तेमां जे औषधना चूर्णना योगो ते द्रव्य अभियोग छे अने विद्या तथा मंत्र ए भाव अभियोग छे."

मू०—तते णं से पियसेणे णपुंसए एयकम्मे (एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमुदायारे) सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एक्कवीसं वाससयं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

अर्थ—त्यारपछी ते प्रियसेन नपुंसक आवा पापकर्मवाळो, (आवा ज काम करवामां प्रधान—तत्पर, आवाज विज्ञानवाळो अने आवा ज आचारवाळो) सतो घणां घणां पापकर्मने उपार्जन करी एकसो ने एकवीश वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने—भोगवीने मरण समये मरण पामीने आ रत्नप्रभा नामनी नरकनी पृथ्वीने विषे नारकीपणे उत्पन्न थशे.

मू०—तत्तो सिरिसिवेसु सुंसुमारे (संसारो) तहेव जहा पढमो जाव पुढवि० ।

अर्थ—त्यारपछी सरीसृप (नोळीया) ने विषे उत्पन्न थशे. इत्यादि तेनो संसार ते ज प्रमाणे जेम पहेला मृगापुत्रनो कह्यो छे तेम यावत् सर्व नरक पृथ्वी सुधीनो कहेवो.

मू०—से णं तत्रो अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए महिसत्ताए पच्चायाहिति ।

अर्थ—ते त्यांथी आंतरा रहित—तरत ज नीकळीने आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रने विषे चंपा नामनी नगरीमां पाडापणे उत्पन्न थशे.

मू०—से णं तत्थ अन्नया कयाइं गोट्ठिल्लएहिं जीविआओ ववरोविए समाणे तत्थेव चंपाए

---

१ सर्व नरकनी पृथ्वी अने त्यारपछी सर्व एकेंद्रियादिकथी.

नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति ।

अर्थ—त्यां ते एकदा कदाचित् गोष्ठिल-मित्रपुरुषोए जीवितथी रहित कर्यो सतो ते ज चंपानगरीने विषे श्रेष्ठीना कुळने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थशे.

मू०—से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं अंतिते केवलं बोहिं अणगारे सोहम्मे कप्पे जहा पढमे जाव अंतं करेहिति । निक्खेवो ॥ ४ ॥

॥ बितियं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ २

अर्थ—त्यां ते बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ युवान थशे त्यारे तथाप्रकारना स्थविर साधुनी पासे केवळ एटले अद्वितीय बोधिने एटले समकितने पामशे, पछी अनगार थशे एटले चारित्र ग्रहण करशे. त्यांथी काळधर्म पामीने सौधर्म कल्पमां उत्पन्न थशे विगेरे प्रथम अध्ययनमां कह्या प्रमाणे जाणवुं यावत् संसारनो अंत करशे-मोक्षने पामशे. अहीं निक्षेप कहेवो एटले समाप्तिनुं सूत्र कहेवुं. ते आ प्रमाणे-आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! मोक्षपदने पामेला श्रमण भगवंते दुःखविपाकना बीजा अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. ते भगवान पासेथी सांभळीने में तमने आ अर्थ कांइक कह्यो छे.

इति विपाक श्रुतने विषे बीजा अध्ययननुं विवरण समाप्त थयुं.

अथ तृतीय अभग्नसेन अध्ययन. ।

हवे त्रीजा अध्ययनमां अभग्नसेननुं चरित्र लखे छे.

मू०—तच्चस्स उक्खेवो—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं पुरिमताले णामं णगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे ।

अर्थ—त्रीजा अध्ययननो उत्क्षेप एटले प्रस्तावना आ प्रमाणे छे--(जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के—हे भगवान (पूज्य) ! श्रमण भगवंत यावत् सिद्धिपदने पामेला श्रीमहावीरस्वामीए दुःख विपाकना बीजा अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे तो हे भगवान ! त्रीजा अध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे ? त्यारे सुधर्मास्वामी उत्तर आपे छे के) आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये पुरिमताल नामनुं नगर हतुं. ते ऋद्धिवाळुं, निर्भय अने समृद्धिवाळुं हतुं विगेरे वर्णन कहेवुं.

मू०—तस्स णं पुरिमतालस्स णगरस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं अमोहदंसणे उज्जाणे । तत्थ णं अमोहदंसिस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था ।

अर्थ—ते पुरिमताल नगरनी बहार उत्तर अने पूर्वनी वच्चेना दिशाभागमां एटले ईशानखूणामां ए ठेकाणे अमोघदर्शन नामनुं उद्यान हतुं, ते उद्यानमां अमोघदर्शी नामना यक्षनुं यक्षायतन एटले देहरुं हतुं.

मू०—तत्थ णं पुरिमताले णयरे महब्बले नामं राया होत्था ।

अर्थ—ते पुरिमताल नगरमां महाबल नामे राजा हतो.

मू०—तस्स णं पुरिमतालस्स नगरस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए देसप्पंते अडवी संठिया; एत्थ णं सालाडवी णामं चोरपल्ली होत्था, विसमगिरिकंदरकोलंबसण्णिविट्ठा वंसीकलंकपागारपरिक्खित्ता छिण्णसेलविसमप्पवायफरिहोवगूढा अब्भिंतरपाणीया सुदुल्लभजलपेरंता अणेगखंडी विदितजणादिन्ननिग्गमप(प्प)वेसा सुबहुयस्स वि कुवियजणस्स दुप्पहंसा यावि होत्था ।

अर्थ—ते पुरिमताल नगरनी उत्तर अने पूर्वनी वच्चेना दिशाभागमां एटले ईशानखूणामां देशने छेडे एक अटवी रहेली हती. ते अटवीमां शालाटवी नामनी चोरपल्ली हती. ते चोरपल्ली पर्वतनी विषम कंदराने कोलंबे एटले छेडे रहेली हती, (जो के कोलंबनो अर्थ नमेली वृक्षनी शाखानो अग्रभाग कहेवाय छे, तो पण अहीं उपचारथी कोलंबनो अर्थ कंदरानो अग्रभाग एटले छेडो कह्यो छे.) तथा ते चोरपल्ली वांसनी झाडीमय वाडरूपी किल्लाए करीने वींटायेली हती. पर्वतनी वच्चे फाट पडेली होवाथी तेमां रहेला विषम खाडाओरूपी खाइवडे ते व्याप्त हती, ते पल्लीनी अंदर ज पाणी मळी शकतुं हतुं, तेना प्रांत एटले बहारना भागमां पाणी दुर्लभ हतुं, तेमां मनुष्योने नासी जवा माटे अनेक छींडीओ हती, ते

पल्ली गुप्त होवाथी जाणीता माणसो ज जवुं आववुं करी शकता हता, तथा तेमां लुंटी लावेलो माल पाछो लेवा आवेला घणा माणसो पण ते पल्लीनो विनाश करी शके तेम नहोतुं.

मू०—तत्थ णं सालाडवीए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावई परिवसति अहम्मिए जाव (हणछिन्नभिन्नवियत्तए) लोहियपाणी बहुणगरणिग्गयजसे सूरे दढप्पहारे साहसिए सद्दवेही असिलट्ठिपढममल्ले । से णं तत्थ सालाडवीए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसताणं आहेवच्चं जाव विहराति ॥१५

अर्थ—ते शालाटवी नामनी चोरपल्लीने विषे विजय नामनो चोरोनो सेनापति रहेतो हतो, ते अधार्मिक एटले पापनुं आचरण करनार हतो. यावत् (तुं हण अने विनाश कर, छेदी नांख अने कुंतादिकवडे भेदी नांख एम बीजा चोरोने प्रेरणा करतो सतो प्राणीओनो विनाश करतो हतो,) प्राणीओने हणवाथी तेना हाथ रुधिरवडे राता थयेला हता, घणा नगरोमां तेनो आवो यश प्रसिद्ध हतो, ते शूरवीर हतो, दृढ प्रहार करनार हतो, साहसिक हतो, शब्दवेधी हतो, तथा खड्गलताने विषे ते पहेलो मल्ल हतो. ते शालाटवी नामनी चोरपल्लीने विषे ते विजय पांचसो चोरोनुं अधिपतिपणुं करतो यावत् (पुरोवर्तित्व अटले अग्रेसरपणुं, स्वामीपणुं एटले नायकपणुं, भर्तृत्व एटले पोषकपणुं, महत्तरकत्व एटले उत्तमपणुं तथा आज्ञाप्रधान सेनापतिपणुं करतो सतो) विचरतो हतो—रहेतो हतो. १५

मू०—तते णं से विजए चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयाण य संधि-

च्छेयाण य खडपट्टाणं य अन्नेसिं च बहूणं छिन्नभिन्नबाहिराहियाणं कुडंगे यावि होत्था।

अर्थ—त्यारपछी ते विजय नामनो चोर सेनापति घणा चोरो, परस्त्री गमन करनारा, कातर विगेरेवडे ग्रंथिने एटले गजवा विगेरेने भेदनारा, संधिने एटले भींतनी सांधोने छेदनारा, मद्य अने द्यूत विगेरेना व्यसनने लीधे परिपूर्ण वस्त्र नहीं मळवाथी वस्त्रना खंडने एटले ककडाने धारण करनारा, अथवा अन्यायथी व्यापार करनारा अथवा धूतारा तथा बीजा घणा हस्तादिक छेदीने अने नासिकादिक भेदीने देशनीकाल करेला अथवा आचारभ्रष्ट थवाथी उत्तम जनोए बहिष्कार करेला अने ग्रामादिक वाळवाथी अहितकारक ए सर्व लोकोने रत्तवाने माटे आश्रय करवा लायक होवाथी कुडंग एटले वांसनी झाडी समान हतो.

मू०—तते णं से विजए चोरसेणावई पुरिमतालस्स णगरस्स उत्तरपुरच्छिमिल्लं जणवयं बहूहिं गामघातेहि य नगरघातेहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य पंथकोट्टेहि य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे उवीलेमाणे विद्धंसेमाणे विद्धंसेमाणे तज्जेमाणे तज्जेमाणे तालेमाणे तालेमाणे नित्थाणे निद्धणे निक्कणे करेमाणे विहरति। महब्बलस्स रन्नो अभिक्खणं अभिक्खणं कप्पायं गेण्हति।

अर्थ—त्यारपछी ते विजय नामनो चोर सेनापति पुरिमताल नगरना उत्तर अने पूर्वनी वच्चेना एटले ईशानखूणा तरफना देशने घणा घणा गामना घातवडे, नगरना घातवडे, गाय विगेरे पशुओना ग्रहणवडे एटले हरण करवावडे,

बंदीने ग्रहण करवावडे एटले लोकोने पकडीने केद करवावडे, मार्गने कुटवावडे एटले मार्गमां जता लोकोने लुंटवावडे तथा खातर पाडवावडे पीडा करतो पीडा करतो, नाश करतो नाश करतो (टीकामां विहम्मेमाणे विहम्मेमाणे एटले धर्म रहित करतो करतो कारणके धननुं हरण करवाथी दानादिक धर्मनो अभाव ज थाय छे.) 'अरे! तुं जाणीश' इत्यादि वचनोवडे तर्जना करतो तर्जना करतो, तथा चाबक विगेरेना मारवावडे ताडन करतो ताडन करतो ते देशने स्थान रहित, गाय भेंश विगेरे पशुने हरण करवाथी पशुधनरहित तथा धान्यरहित करतो सतो विचरतो हतो-रहेलो हतो. तथा महाबळ राजाना कप्पायने एटले प्रजाथी प्राप्त थता कर विगेरे उचित धनना लाभने पण ते वारंवार ग्रहण करतो हतो. (कर उघरावी जनारने लुंटतो हतो.)

मू०—तस्स णं विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरिनामं भारिया होत्था अहीणपुन्नपंचेंदियसरीरा लक्खणवंजणगुणोववेआ।

अर्थ—ते विजय नामना चोर सेनापतिने स्कंदश्री नामनी भार्या हती, तेना पांचे इंद्रियो तथा शरीर हीनतारहित परिपूर्ण हता, तथा ते रेखादिक लक्षण अने मसतिलकादिक व्यंजनना गुणे करीने सहित हती.

मू०—तस्स णं विजयचोरसेणावइस्स पुत्ते खंदसिरीए भारियाए अत्तए अभग्गसेणे नामं दारए होत्था अहीणपुन्नपंचेंदियसरीरे विण्णायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते।

अर्थ—ते विजय नामना चोर सेनापतिनो पुत्र स्कंदश्री भार्यानो आत्मज[1] अभग्नसेन नामनो दारक हतो. तेना पांचे इंद्रियो तथा शरीर हीनतारहित अने परिपूर्ण हता, तथा ते विज्ञानना परिणामने पामेलो अने युवावस्थाने प्राप्त थयेलो हतो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे पुरिमताले नयरे समोसढे, परिसा निग्गया, राया निग्गओ, धम्मो कहिओ, परिसा राया य पडिगओ ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामी पुरिमताल नामना नगरमां समवसर्या. तेमने वांदवा माटे नगरमांथी पर्षदा नीकळी, राजा पण नीकळ्यो, तेमने भगवाने धर्म कह्यो. पछी पर्षदा अने राजा पोताने स्थाने पाछा गया.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी गोयमे जाव रायमग्गं समोगाढे । तत्थ णं बहवे हत्थी पासति बहवे आसे पुरिसे सन्नद्धबद्धकवए । तेसिं णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासति अवउडय जाव उग्घोसेज्जमाणं ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीरस्वामीना मोटा शिष्य गौतम अनगार यावत् राजमार्गमां गया.

---

१ पोते जन्म आपेल.

त्यां तेमणे घणा हाथी जोया, घणा अश्वो जोया, तथा घणा सन्नाह अने बख्तर पहेरेला पुरुषोने जोया. ते पुरुषोनी मध्ये रहेला एक पुरुषने जोयो. तेनुं मस्तक नीचुं करीने तेने बांधेलो हतो, यावत् ते पुरुषो पडहवडे उद्घोषणा करावता हता. (अहीं यावत् शब्द लख्यो छे तेथी ते पुरुषना कान अने नाक कापेला हता, तेना शरीरे तेल लगाड्युं हतुं विगेरे सर्व बीजा अध्ययनमां कह्या प्रमाणे जाणवुं.)

मू०—तते णं तं पुरिसं रायपुरिसा पढमंमि चच्चरंसि निसियावेंति, निसियावेत्ता अट्ठ चुल्लपिउए अग्गओ घाएंति, अग्गओ घाएत्ता कसप्पहारेहिं तालेमाणा तालेमाणा कलुणं काकणिमंसाइं खावेंति, खावेत्ता रुहिरपाणीयं च पायंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पुरुषने राजपुरुषोए पहेला चच्चर (चत्वर)ने विषे बेसाड्यो. बेसाडीने तेनी सन्मुख तेना आठ काकाओने मारवा लाग्या, तेनी समक्ष मारीने चाबुकना प्रहारवडे तेमने ताडन करता करता करुणाना स्थानभूत एवा ते पुरुषने अथवा जोनारने करुणा उपजे तेम ते पुरुषने तेना ज काकिणी जेटला नाना नाना मांसना ककडा खवडाववा लाग्या. खवडावीने तेनुं ज रुधिररूपी जळ तेने ज पावा लाग्या. (काका विगेरेनी समक्ष ते पुरुषने मारवा लाग्या, विगेरे अर्थ पण करी शकाय छे.)

---

१ अमुक स्थान, चौटुं. २ पिताना नाना भाइ.

मू०—तदाणंतरं च णं दोच्चंसि चच्चरंसि अट्ठ चुल्लमाउयाओ अग्गओ घायंति । एवं तच्चे चच्चरे अट्ठ महापिउए, चउत्थे अट्ठ महामाउयाओ, पंचमे पुत्ते, छट्ठे सुण्हा, सत्तमे जामाउया, अट्ठमे धूयाओ, णवमे णत्तुया, दसमे णत्तुईओ, एक्कारसमे णत्तुयावई, वारसमे णत्तुइणीओ, तेरसमे पिउस्सियपतिया, चोद्दसमे पिउसियाओ, पण्णरसमे मासियापतिया, सोलसमे माउस्सियाओ, सत्तरसमे मामियाओ, अट्ठारसमे अवसेसं मित्तनाइनियगसयणसंवंधिपरियणं अग्गओ घातेंति, घातित्ता कसप्पहारेहिं तालेमाणे तालेमाणे कलुणं काकणिमंसाइं खावेंति, रुहिरपाणीयं च पाएंति ॥ १६ ॥

अर्थ—त्यारपछी बीजा चत्वरने विषे आठ काकीओ अथवा मातानी नानी सपत्नीओने ते पुरुषनी समक्ष ते राजपुरुषो मारवा लाग्या, ते ज प्रमाणे त्रीजा चर्चरने विषे आठ मोटा काकाओने, चोथा चर्चरने विषे आठ मोटी काकीओने अथवा मातानी मोटी सपत्नीओने, पांचमा चर्चरने विषे पुत्रोने, छठ्ठा चर्चरने विषे पुत्रोनी वहुओने, सातमा चर्चरने विषे जमाइओने, आठमा चर्चरने विषे पुत्रीओने, नवमा चर्चरने विषे पौत्रोने एटले

१ पिताना नाना भाइओनी वहुओ.

पुत्रोना पुत्रोने अथवा दौहित्रोने एटले पुत्रीओना पुत्रोने, दशमा चर्चरने विषे पौत्रीओने एटले पुत्रोनी पुत्रीओने अथवा दौहित्री एटले पुत्रीओनी पुत्रीओने, अगयारमा चर्चरने विषे पौत्रीओना अथवा दौहित्रीओना पतिओने, बारमा चर्चरने विषे पौत्रोनी अथवा दौहित्रोनी वहुओने, तेरमा चर्चरने विषे फुइओना पतिओने, चौदमा चर्चरने विषे फुइओने, पंदरमा चर्चरने विषे मासीओना पतिओने, सोळमा चर्चरने विषे मासीओने, सत्तरमा चर्चरने विषे मामीओने, अढारमा चर्चरने विषे बाकीना मित्र, ज्ञाति, निजक एटले सरखा गोत्रवाळा, स्वजन एटले मामाना पुत्र विगेरे, संबंधी एटले ससरा, साळा विगेरे अने परिजन एटले दास दासी विगेरेने तेनी समक्ष ते राजपुरुषो मारता हता, मारीने चाबुकना प्रहारवडे ताडन करता करता करुणाना स्थानभूत एवा ते पुरुषने अथवा जोनारने करुणा उत्पन्न थाय तेम ते पुरुषने तेना ज काकिणी जेवडा नाना नाना मांसना ककडा खवडावता हता, अने तेनुं ज रुधिररूपी जळ तेने ज पाता हता.१६

मू०—तते णं से भगवं गोयमे तं पुरिसं पासेइ, पासित्ता इमे एयारूवे अज्झत्थिए पत्थिए समुप्पन्ने जाव तहेव निग्गते एवं वयासी—एवं खलु अहन्नं भंते ! तं चेव जाव से णं भंते ! पुरिसे पुव्वभवे के आसी ? जाव विहरति ?।

अर्थ—त्यारपछी ते भगवान गौतमस्वामीए ते पुरुषने उपर कह्या प्रमाणे जोयो, जोइने आ आवा प्रकारनो अध्यवसाय मनमां चिंतवेलो विचार उत्पन्न थयो (आ पुरुष प्रत्यक्ष नरक जेवुं दुःख अनुभवे छे इत्यादि) यावत् तेज प्रमाणे

एटले गोचरी लइने नगरनी बहार नीकळ्या, अने भगवान पासे आवी आ प्रमाणे बोल्या के—" आ प्रमाणे निश्चे हुं हे भगवान्! आपनी आज्ञाथी गोचरीए गयो हतो" इत्यादि सर्व वृत्तांत कही यावत् पूछ्युं के—" हे भगवान! ते पुरुष पूर्व भवने विषे कोण हतो? के यावत् (ते आवा प्रकारनुं दुःख अनुभवतो) विचरे छे—रहेलो छे?

मू०—एवं खलु गोयमा! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पुरिमताले नाम नगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रने विषे पुरिमताल नामनुं नगर हतुं. ते ऋद्धिवाळुं, स्तिमित एटले निर्भय अने समृद्धिवाळुं हतुं.

मू०—तत्थ णं पुरिमताले नगरे उदिओदिए[1] नामं राया होत्था महयाहिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे।

अर्थ—ते पुरिमताल नामना नगरमां उदायन नामे राजा हतो. ते महा हिमवान पर्वतनी जेवो मोटो अने मलयाचळ, मेरु अने महेंद्रनी जेवो सारभूत हतो.

---

१ उदीए—उदए पाठान्तर

मू०—तत्थ णं पुरिमताले नगरे निन्नए नामं अंडयवाणियए होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूते अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ।

अर्थ—ते पुरिमताल नगरने विषे निन्हव नामनो [1]अंडवाणिक हतो. ते आढय एटले ऋद्धिमंत हतो, यावत् घणा माणसोथी पण पराभव न पामे तेवो हतो. तथा ते अधार्मिक हतो, यावत् बीजानुं खराब करीने आनंद पामनार हतो.

मू०—तस्स णं णिन्नयस्स अंडयवाणियगस्स बहवे पुरिसा दिण्णभातिभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं कोद्दालियाओ य पत्थियापिडए गेण्हंति, पुरिमतालस्स णगरस्स परिपेरंतेसु बहवे काइअंडए य [2]घूघूअंडए य पारेवइअंडए य टिट्टिभिअंडए य खग्गिअअंडए य मयूरिअंडए य कुक्कुडिअंडए य अण्णेसिं च बहूणं जलयरथलयरखहयरमाईणं अंडाइं गेण्हंति, गेण्हेत्ता पत्थियपिडगाइं भरेंति, भरेत्ता जेणेव निन्नयए अंडवाणियए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता निन्नयगस्स अंडवाणियस्स उवणेंति ।

अर्थ—ते निन्हव नामना अंडवाणिके घणा पुरुषोने भृति एटले पैसा विगेरेनी आजीविका अने भक्त एटले धान्य घी

---

१ इंडानो वेपारी. २ धूति० मत्यंतर.

विगेरे रूप वेतन एटले मूल्य आपेलुं हतुं. तेथी तेओ हमेशां कोदाळाओने अने वांसना टोपला विगेरेने ग्रहण करता हता, अने पुरिमताल नगरनी चोतरफ दिशाविदिशामां जइ घणा कागडीओनां इंडांने, घूवडनां इंडांने, पारेवीओनां इंडांने, टीटोडीनां इंडांने, बगलीनां इंडांने, मयूरीनां इंडांने, कुकडीनां इंडांने तथा बीजा पण घणा जळचर, स्थळचर अने खेचर (पक्षी) विगेरेनां इंडांने ग्रहण करता हता. ग्रहण करीने ते इंडांवडे वांसना टोपला भरता हता, भरीने ज्यां निन्हव नामनो अंडवणिक हतो त्यां आवता हता, आवीने ते निन्हव नामना अंडवणिकने ते इंडांना टोपला आपता हता.

मू०—तते णं तस्स निन्नयस्स अंडवाणियगस्स वहवे पुरिसा दिण्णभतिभत्तवेयणा वहवे काइ-अंडए य जाव कुक्कुडिअंडए य अन्नेसिं च वहूणं जलयरथलयरखहयरमाईणं अंडयए तवएसु य कवल्लीसु य कंडुएसु य भज्जणएसु य इंगालेसु य तलिंति भज्जेंति सोल्लिंति, तलेंता भज्जंता सोल्लेंता रायमग्गे अंतरावणंसि अंडयपणिएणं वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति, अप्पणा वि य णं से निन्नयए अंडवाणियए तेहिं वहूहिं काइअंडएहि य जाव कुक्कुडिअंडएहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जेहि य सुरं च आसाएमाणे विसाएमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते निन्हव नामना अंडवणिके बीजा घणा पुरुषोने भृति एटले पैसा विगेरे अने भक्त एटले अनाज

घी विगेरेरूप वेतन एटले मूल्य आपेलुं हतुं तेथी तेओ घणा कागडीनां इंडांने यावत् कुकडीनां इंडांने तथा बीजां पण घणां जळचर, स्थळचर अने खेचर विगेरेनां इंडांने तवकने विषे एटले सुंवाळी (पुरी) विगेरे तळवाना पात्र (तवी) ने विषे, कवल्लीने विषे एटले गोळ विगेरे पकववाना पात्रने विषे, कंडुने विषे एटले मांडा (रोटला रोटली) विगेरे पकववाना पात्र (लोढी, तावडी) ने विषे, भर्जनकने विषे एटले धाणी फोडवाना पात्र (ठीबका) ने विषे तथा अंगाराने विषे अग्निपर मूकीने तेलमां तळता हता, धाणीनी जेम शेकता (भुंजता) हता अने ओदननी जेम रांधता हता अथवा ककडा करता हता, तथा ते प्रमाणे तळीने, शेकीने अने रांधीने अथवा ककडा करीने राजमार्गने विषे अने राजमार्गना मध्यमां रहेली दुकानोने विषे ते इंडांओने वेचवावडे आजीविकाने करता सता विचरता (रहेता) हता. तथा ते निन्हव नामनो अंडवणिक पोते पण ते घणां कागडीनां इंडां यावत् कुकडीनां इंडां के जे रांधेलां, तळेलां अने भुंजेलां हतां तेनी साथे सुरा (मदिरा) ने आस्वाद करतो एटले एकवार खातो अने वारंवार खातो सतो विचरतो (रहेतो) हतो.

मू०—तते णं से निन्नए अंडवाणियए एयकम्मे, एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमाचारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एगं वाससहस्सं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा तच्चाए पुढवीए उक्कोससत्तसागरोवमठितीएसु णेरइएसु णेरइयत्ताए उववन्ने (१७) ॥

अर्थ—त्यारपछी ते निन्हव नामनो अंडवणिक आवां कर्म (व्यापार) वाळो, आवा ज कर्ममां तत्पर, आवा ज कर्मनी

विद्या (कळा) वाळो अने आवा ज आचरणवाळो सतो घणुं पापकर्म उपार्जन करी एक हजार वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळी (पूर्ण करी) मरण समये मरण पामी त्रीजी नरक पृथ्वीने विषे उत्कृष्ट सात सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकीओने विषे नारकीपणे उत्पन्न थयो. १७

मू०—से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव सालाडवीए चोरपल्लीए विजयस्स चोरसेणावइस्स खंदसिरीए भारियाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—ते निन्हवनो जीव त्यांथी अनंतर एटले आंतरा रहित नीकळीने आ ज शालाटवी नामनी चोरपल्लीने विषे विजय नामना चोर सेनापतिनी स्कंदश्री नामनी भार्यानी कुक्षिने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थयो.

मू०—तते णं तीसे खंदसिरीए भारियाए अन्नया कयाइं तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं बहुहिं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणमहिलाहिं अण्णाहि य चोरमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च आसाएमाणी विसाएमाणी विहरंति, जिमियभुत्तुत्तरागयाओ पुरिसनेवत्थिया सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा-

वरणा भरिएहि य फलिएहिं णिक्किट्ठाहिं असीहिं अंसागतेहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं समुक्खि-त्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहि य दामाहिं लंबियाहि य ओसारियाहिं ऊरुघंटाहिं छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं वज्जमाणेणं महया उक्किट्ठि जाव समुद्दरवभूयं पि व करेमाणीओ सालाडवीए चोरपल्लीए सव्वओ समंता ओलोएमाणीओ ओलोएमाणीओ आहिंडमाणीओ आहिंडमाणीओ दोहलं विणेंति, तं जइ णं अहं पि जाव विणिज्जामि त्ति कट्टु तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि जाव झियाति ।

अर्थ—त्यारपछी ते स्कंदश्री भार्याने एकदा कदाचित् गर्भना त्रण मास परिपूर्ण थया त्यारे आ आवा प्रकारनो दोहलो उत्पन्न थयो—धन्य छे ते माताओने के जेओ घणा मित्रो, ज्ञाति, निजक एटले सरखा गोत्रवाळी, स्वजन एटले मामानी पुत्री विगेरे, संबंधी एटले सासु विगेरे अने परिजन एटले दासी विगेरे स्त्रीओ तथा बीजी पण चोरनी स्त्रीओनी साथे परिवरेली सती स्नान करीने बलिकर्म एटले गृहदेवतानी पूजा करीने यावत् प्रायश्चित्त करीने सर्व अलंकारोवडे विभूषित थइ विस्तारवाळा अशन, पान, खादिम, स्वादिम अने मदिराने एक वार आस्वाद करती वारंवार आस्वाद करती विचरे छे–रहे छे. अने भोजन कर्या पछी उचित स्थाने आवी पुरुषनो वेष धारण करी संनद्ध बद्ध थइ यावत् आयुध अने

१ बख्तर पहेरेला तथा वर्म एटले शरीरनुं रक्षण करनार कवचने धारण करनार, तथा जेणे प्रत्यंचा चडाववाथी धनुषने तैयार कर्युं छे, तथा जेणे ग्रीवानुं आभूषण पहेर्युं छे, तथा जेणे निर्मळ अने श्रेष्ठ चिन्हपट्ट (दोरो) बांध्यो छे एवी थइने एम यावत् शब्दथी जाणवुं.

प्रहरणने ग्रहण करी, ढालने हाथना पाशरूपे धारण करी, खड्गने मीयानमांथी बहार काढी, बाणना भाथाने स्कंधपर लटकावी (पाछळ बांधी), धनुषपर प्रत्यंचा (पणच) ने चडावी, छोडवाने माटे बाणने उंचा करी, लांबा एवा दामने एटले अमुक प्रकारना पाशने उल्लासित करी अथवा दाहने एटले लांबा वांसना अग्र भागपर दातरडुं बांध्युं होय एवा अमुक प्रकारना प्रहरणने उल्लासित करी, जंघाने विषे घुघराओने लटकावी, शीघ्र वाजित्रोने वगाडवावडे, मोटा मोटा उत्कृष्टि एटले आनंदना महाध्वनिवडे, यावत् (सिंहनादवडे, बोल एटले अक्षरनी स्पष्टता रहित ध्वनिवडे अने कलकल एटले स्पष्ट वचनना रव (शब्द) वडे) आकाशने जाणे के समुद्रना गर्जारववडे युक्त करती होय एवी सती शालाटवी नामनी चोरपल्लीने सर्व दिशाविदिशामां चोतरफ जोती जोती अने फरती फरती पोताना दोहलाने दूर करे छे-पूर्ण करे छे, तेवी माताओने धन्य छे. तेथी जो हुं पण ते प्रमाणे यावत् (घणी मित्रस्त्री, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबंधी अने परिजननी स्त्रीओ तथा बीजी चोरनी स्त्रीओवडे परिवरी थकी मारा दोहलाने) दूर करुं-पूर्ण करुं तो ठीक. एम करीने एटले आ कारणथी ते दोहलो नहीं पूर्ण थवाथी यावत् (ते सुकाइ गइ, लूखी थइ, खेद पामी, तेणीनुं शरीर कृश थयुं अने ते आर्तध्याननने पामी सती) ध्यान करवा लागी.

मू०—तते णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरिभारियं ओहय जाव पासति, ओहय जाव पासित्ता, एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियासि ? ।

अर्थ—त्यारपछी ते विजय नामना चोरसेनापतिए स्कंदश्री नामनी भार्याने उपहत यावत् एटले जेणीना मननो

संकल्प हणाइ गयो छे, जेणीए भूमिपर दृष्टि राखी छे अने जे आर्त्तध्यानने पामेली छे एवी जोइ. हणायेला संकल्पवाळी यावत् जोइने ते आ प्रमाणे बोल्यो–' केम तुं हे देवानुप्रिया ! हणायेला मनना संकल्पवाळी सती यावत् ध्यान करे छे ? '

मू०–तते णं सा खंदसिरी विजयं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम तिण्हं मासाणं जाव झियामि ।

अर्थ—त्यारपछी ते स्कंदश्रीए विजयने आ प्रमाणे कह्युं–आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! मने गर्भना त्रण मास पूर्ण थया एटले दोहलो थयो, ते पूर्ण न थवाथी यावत् हुं आवुं दुर्ध्यान करुं छुं.

मू०–तते णं से विजए चोरसेणावई खंदसिरीए भारियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जाव निसम्म खंदभारियं एवं वयासी–अहासुहं देवाणुप्पिय त्ति एयमट्ठं पडिसुणेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते विजय नामना चोरसेनापतिए स्कंदश्री भार्यानी पासे आ अर्थने (वृत्तांतने) सांभळीने यावत् हृदयमां धारीने ते स्कंदश्री भार्याने आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रिया ! जेम तने सुख उपजे तेम कर. एम कही तेणे ते अर्थने अंगीकार कर्यो.

मू०–तते णं सा खंदसिरिभारिया विजएणं चोरसेणावतिणा अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठ-

तुट्ठ वहूहिं मित्त जाव अण्णाहि य वहूहिं चोरमहिलाहिं सर्द्धि संपरिवुडा ण्हाया जाव विभूसिया विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च आसाएमाणा विसाएमाणा विहरइ, जिमियभुत्तुत्तरागया पुरिसनेवत्था संनद्धवद्ध जाव आहिंडमाणी दोहलं विणेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते स्कंदश्री भार्या विजय नामना चोरसेनापतिए आज्ञा आपी सती हृष्ट तुष्ट थइ, अने घणी मित्रस्त्री यावत् बीजी घणी चोरस्त्रीओनी साथे परिवरी सती स्नान करी यावत् विभूषित थइ विस्तारवाळा अशन, पान, खादिम, स्वादिम अने मदिराने एकवार आस्वाद करती वारंवार आस्वाद करती विचरवा लागी. भोजन कर्या पछी उचित स्थाने आवी पुरुपनो वेष धारण करी संनद्धबद्ध थइ यावत् ते चोरपल्लीमां फरती फरती तेणीए पोतानो दोहलो दूर कर्यो—पूर्ण कर्यो.

मू०—तते णं सा खंदसिरी भारिया संपुन्नदोहला संमाणियदोहला विणीयदोहला वोच्छिन्नदोहला संपन्नदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति ।

अर्थ—त्यारपछी ते स्कंदश्री भार्याना समग्र वांछित अर्थ पूर्ण थवाथी तेनो दोहलो संपूर्ण थयो, वांछित अर्थ प्राप्त थवाथी तेणीए दोहलानुं सन्मान कर्युं, वांछानी तृप्ति थवाथी तेणीनो दोहलो दूर थयो, वांछाना अनुबंधनो विच्छेद

थवाथी तेणीनो दोहलो विच्छेद पाम्यो, अने वांछित अर्थना भोगनो आनंद प्राप्त थवाथी तेणीनो दोहलो प्राप्तिवाळो थयो. तेथी ते गर्भने सुखे सुखे वहन करवा लागी.

मू०—तते णं सा खंदसिरी चोरसेणावतिणी णवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दारगं पयाया।

अर्थ—त्यारपछी ते स्कंदश्री नामनी चोरसेनापतिनी भार्याए नव मास बराबर परिपूर्ण थया त्यारे एक पुत्रने प्रसव्यो.

मू०—तते णं से विजयए चोरसेणावती तस्स दारगस्स महया इड्डिसक्कारसमुदएणं दसरत्तं ठिइवडियं करेति।

अर्थ—त्यारपछी ते विजय नामना चोरसेनापतिए ते पुत्रनी मोटी ऋद्धि[1] अने सत्कारना[2] समुदायवडे दश रात्रिनी स्थितिपतिका[3] करी.

मू०—तते णं से विजए चोरसेणावई तस्स दारगस्स एक्कारसमे दिवसे विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावित्ता मित्तणातिणियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेति, आमंतित्ता जाव तस्सेव मित्तनाइणियगसयणसंबंधिपरियणस्स पुरओ एवं वयासी—जम्हा णं अम्हं

१ वस्त्र, सुवर्ण विगेरेनी संपदा. २ पूजा विशेष. ३ कुळमां अनुक्रमे आवेलो पुत्रजन्ममहोत्सव.

इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि समाणंसि इमे एयारूवे दोहले पाउब्भूते, तम्हा णं होउ अम्हं दारगे अभग्गसेणे णामेणं । तते णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचधातीए जाव परिवड्ढइ ॥ १८ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते विजय नामना चोर सेनापतिए ते पुत्रना अग्यारमा दिवसे विस्तारवाळुं अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तैयार कराव्युं. तैयार करावीने मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबंधी अने दास दासी आदिक परिजनने आमंत्रण कर्युं. आमंत्रण करीने यावत् (ते सर्वे जमी रह्या पछी) तेज मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबंधी अने परिजननी पासे ते आ प्रमाणे बोल्यो–जे कारण माटे अमारो आ पुत्र गर्भमां रहेलो हतो त्यारे (तेनी माताने) आ आवा प्रकारनो दोहलो उत्पन्न थयो हतो, तेथी करीने आ अमारो पुत्र नामे करीने अभग्नसेन हो. त्यारपछी ते अभग्नसेन कुमार पांच धात्रीवडे (पालन करातो) यावत् वृद्धिं पामवा लाग्यो. १८

मू०—तते णं से अभग्गसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे यावि होत्था अट्ठ दारियाओ जाव अट्ठओ दाओ उप्पिं पासाए भुंजमाणे विहरइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभग्नसेन कुमार बाल्यावस्थाथी मुक्त थयो (युवान थयो) त्यारे तेने आठ कन्याओ परणावी

(१) अहीं भावार्थ आ प्रमाणे छे–त्यारपछी ते अभग्नसेन कुमारना मातापिताए ते अभग्नसेन कुमारने उत्तम तिथि, करण, नक्षत्र अने मुहूर्तने विषे आठ कन्याओ साथे एक ज दिवसे पाणिग्रहण कराव्युं.

यावत् आठ आठनो दायजो आप्यो. पछी ते महेलनी उपर ते स्त्रीओ साथे भोग भोगवतो रहेवा लाग्यो.[2]

मू०—तते णं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाई कालधम्मुणा संजुत्ते ।

अर्थ—त्यारपछी ते विजय नामनो चोर सेनापति एकदा कदाचित् काळधर्मवडे संयुक्त थयो एटले मरण पाम्यो.

मू०—तते णं से अभग्गसेणे कुमारे पंचहिं चोरसतेहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे विजयस्स चोरसेणावइस्स महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेइ, करित्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति, करित्ता केवइकालेणं अप्पसोए जाए यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभग्नसेन कुमारे पांचसो चोरोनी साथे परिवर्या सता रोता आक्रंद करता अने विलाप करता

---

(१) अहीं यावत् शब्द होवाथी आ प्रमाणे जाणवुं.—त्यारपछी ते अभग्नसेन कुमारने तेना मातापिताए आ आवा प्रकारनुं प्रीतिदान आप्युं. अहीं आठ परिमाणवाळो दायजो कहेवो, ते आ प्रमाणे—आठ कोटि हिरण्य, आठ कोटि सुवर्ण विगेरे यावत् आठ प्रेष्य एटले मोकलवाना कामने करनारी तथा बीजुं पण विपुल—घणुं धन, कनक, रत्न, मणि, मोति, शंख, शिला, प्रवाल, राता रत्न विगेरे उत्तम सारभूत धन आप्युं. (२) अहीं आ प्रमाणे अर्थ जाणवो.—त्यारपछी ते अभग्नसेन कुमार श्रेष्ठ महेलनी उपर रही वागता मृंदगादिक वाजित्रोवडे अने उत्तम जुवान स्त्रीओए करेला बत्रीशबद्ध नाटकोवडे प्रशंसा करातो सतो मनुष्य संबंधी विपुल कामभोगनो अनुभव करतो रहेवा लाग्यो.

सता ते विजय नामना चोरसेनापतिनुं मोटी ऋद्धि अने सत्कारना समुदायवडे नीहरण कर्युं, करीने घणां लोक संबंधी मरणनां कार्यो कर्यां, करीने केटलेक काळे ते शोक रहित पण थयो.

मू०—तते णं ते पंच चोरसयाइं अन्नया कयाइं अभग्गसेणं कुमारं सालाडवीए चोरपल्लीए महया महया चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पांचसो चोरोए एकदा कदाचित् अभग्नसेन कुमारने शालाटवी नामनी चोरपल्लीने विषे मोटा मोटा चोरसेनापतिपणाने विषे अभिषेक कर्यो—सेनापतिने स्थाने नीम्यो.

मू०—तते णं से अभग्गसेणे कुमारे चोरसेणावई जाते अहम्मिए जाव कप्पायं गेण्हति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभग्नसेन कुमार चोरोनो सेनापति थयो सतो अधार्मिक थयो यावत् कप्पायने एटले प्रजाथी प्राप्त थता कर विगेरे उचित धनना राजलाभने ते (लुंटीने) ग्रहण करवा लाग्यो.

मू०—तते णं ते जाणवया पुरिसा अभग्गसेणेणं चोरसेणावइणा वहुगामघातावणाहिं ताविया समाणा अण्णमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरिमतालस्स णगरस्स उत्तरिल्लं जणवयं बहूहिं गामघातेहिं जाव निद्धणं करेमाणे विहरति,

(१) श्मशानमां लइ जवानुं कार्य.

तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले णगरे महब्बलस्स रण्णो एयमट्ठं विन्नवित्तते ।

अर्थ—त्यारपछी ते देशना लोको अभग्नसेन चोरसेनापतिए घणां गामोनो घात करवाथी ताप पमाड्या सता एक बीजाने बोलाववा लाग्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं.—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! अभग्नसेन नामनो चोरसेनापति पुरिमताल नगरनी उत्तरमां रहेला देशने घणां गामना घातवडे यावत् निर्धन करतो सतो विचरे छे. तेथी निश्चे हे देवानुप्रियो ! पुरिमताल नगरमां (जइ) आपणे महाबळ नामना राजाने आ अर्थ एटले वृत्तांत जणाववो श्रेय एटले कल्याणकारक छे.

मू०—तते णं ते जाणवया पुरिसा एयमट्ठं अन्नमण्णेणं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायरिहं पाहुडं गेण्हेंति, गेण्हित्ता जेणेव पुरिमताले णगरे तेणेव उवागते, उवागच्छित्ता जेणेव महब्बले राया तेणेव उवागते, उवागच्छित्ता महब्बलस्स रन्नो तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेंति, करयलअंजलिं कट्टु महब्बलं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! सालाडवीए चोरपल्लीए अभग्गसेणे चोरसेणावई अम्हं बहूहिं गामघातेहि य जाव निद्धणे करेमाणे विहरति, तं इच्छामि णं सामी ! तुज्झं बाहुच्छायापरिग्गाहिया निब्भया निरुवसग्गा सुहंसुहेणं परिवसित्तए

त्ति कट्टु पादपडिया पंजलिउडा महब्बलं रायं एतमट्ठं विण्णवेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते देशना लोकोए एक बीजाना आ अर्थने अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने मोटा प्रयोजनवाळुं, मोटा मूल्यवाळुं, मोटाने लायक अने राजाने लायक एवुं भेटणुं ग्रहण कर्युं. ग्रहण करीने ज्यां पुरिमताल नगर हतुं त्यां आव्या. आवीने ज्यां महाबळ राजा हतो त्यां आव्या. आवीने महाबळ राजानी आगळ ते मोटा प्रयोजनवाळुं यावत् भेटणुं मूक्युं. मूकीने बे हाथे अंजलि करीने महाबळ राजाने आ प्रमाणे कह्युं.—आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! शालाटवी नामनी चोरपल्लीने विषे अभग्नसेन नामनो चोरसेनापति रहे छे ते अमने घणा गामोना घातवडे यावत् निर्धन करतो सतो विचरे छे. तेथी अमे इच्छिए छीए के हे स्वामी ! तमारा बाहुनी छायामां ग्रहण करायेला अमे भय रहित अने उपसर्ग रहित सुखे सुखे रहीए. आ प्रमाणे करीने-कहीने तेओए राजाना पगमां पडी बे हाथ जोडी महाबळ राजाने आ अर्थ (वृत्तांत) जणाव्यो-विनंतिपूर्वक कह्यो.

मू०—तते णं से महब्बले राया तेसिं जणवयाणं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्टु दंडं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहि, विलुंपित्ता अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवग्गाहं गेण्हाहि, गेण्हित्ता ममं उवणेहि ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळ राजा ते देशना लोकोनी पासे आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळीने, हृदयमां धारीने तत्काळ क्रोध पाम्यो. यावत् क्रोधनी ज्वाळावडे बळता तेणे त्रण वळीयावाळी भृकुटिने कपाळमां चडावी दंडनायकने बोलाव्यो. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—" हे देवानुप्रिय ! तुं जा अने शालाटवी नामनी चोरपल्लीनो नाश कर. नाश करीने अभग्गसेन नामना चोरसेनापतिने जीवतो ग्रहण कर. ग्रहण करीने मारी पासे लाव एटले मने सोंप.

मू०—तते णं से दंडे तह त्ति एयमट्ठं पडिसुणेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते दंडनायके ' बहु सारुं ' एम कहीने ते अर्थ अंगीकार कर्यो.

मू०—तते णं से दंडे बहूहिं पुरिसेहिं सण्णद्धबद्ध जाव पहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे मग्गइतेहिं फलएहिं जाव छिप्पतूरेणं वज्जमाणेणं महया जाव उक्किट्ठिं जाव करेमाणे पुरिमतालं णगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सालाडवीए चोरपल्लीए तेणेव पहारेत्थ गमणाते ।

अर्थ—त्यारपछी ते दंडनायक घणा पुरुषोनी साथे सन्नद्धबद्ध थइ यावत् प्रहरण (हथीयार) ने धारण करी तेओनी साथे परिवर्यो सतो हाथमां पाशने अने ढालने धारण करी यावत् शीघ्र वागता वाजित्रोवडे मोटा आनंदना शब्दने यावत् करतो सतो पुरिमताल नगरना मध्य मध्य भागे करीने नीकळ्यो. नीकळीने ज्यां शालाटवी नामनी चोरपल्ली हती त्यां जवा नीकळ्यो-मार्गे चाल्यो.

मू०—तते णं तस्स अभग्गसेणस्स चोरसेणावतियस्स चारपुरिसा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव सालाडवी चोरपल्ली जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले णगरे महब्बलेणं रन्ना महाभडचडगरेणं डंडे आणत्ते—गच्छह णं तुमे देवाणुप्पिया ! सालाडविं चोरपल्लिं विलुंपाहिं, अभग्गसेणं चोरसेणावतिं जीवगाहं गेण्हाहि, गेण्हित्ता मम उवणेहि । तते णं से दंडे महया भडचडगरेणं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभग्नसेन चोरसेनापतिना चर पुरुषो आ कथानो अर्थ पाम्या सता ज्यां शालाटवी नामनी चोरपल्ली हती अने ज्यां अभग्नसेन नामनो चोरसेनापति हतो त्यां आव्या. आवीने बे हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे बोल्या.—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! पुरिमताल नामना नगरमां महाबळ नामना राजाए मोटा सुभटोना समूह सहित दंडनायकने हुकम कर्यो छे के—हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ, अने शालाटवी नामनी चोरपल्लीनो विनाश करो. तथा अभग्नसेन नामना चोरसेनापतिने जीवतो ग्रहण करो, ग्रहण करीने मारी पासे लावो. आवी आज्ञा आपवाथी ते दंडनायक मोटा सुभटोना समूह सहित ज्यां शालाटवी नामनी (आपणी) चोरपल्ली छे ते तरफ आववाने नीकळ्यो छे—मार्गमां

चाल्यो आवे छे.

मू०–तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तेसिं चारपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म पंच चोरसताइं सद्दावेति, सद्दाविता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले णगरे महब्बले जाव तेणेव पहारेत्थ गमणाए आगते ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभग्नसेन चोरसेनापतिए ते चर पुरुषोनी पासे आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी पांचसो चोरोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रियो ! पुरिमताल नगरमां महाबळ राजाए यावत् दंडनायकने हुकम कर्यो छे तेथी ते जवाने नीकळ्यो छे—मार्गमां चाल्यो आवे छे.

मू०–तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई ताइं पंच चोरसताइं एवं वयासी–तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तं दंडं सालाडविं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव पडिसेहित्तए ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभग्नसेन चोरसेनापतिए ते पांचसो चोरोने आ प्रमाणे कह्युं—तेथी करीने निश्चे हे देवानुप्रियो ! आपणे ते दंडनायकने शालाटवी नामनी चोरपल्लीने प्राप्त थया पहेलां वच्चे मार्गमां ज प्रतिषेध (निषेध) करवो एटले निवारवो एज श्रेय–कल्याणकारक छे.

मू०—तए णं ताइं पंच चोरसताइं अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तह त्ति जाव पडिसुणेंति।

अर्थ—त्यारपछी ते पांचसो चोरोए अभग्नसेन चोरसेनापतिना ते वचनने तहत्ति (बहु सारुं) एम कही यावत् अंगीकार कर्युं.

मू०—तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडाविता पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं ण्हाते जाव पायच्छित्ते भोयणमंडवंसि तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च आसाएमाणा विसाएमाणा विहराति, जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परमसुइभूए पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लं चम्मं दुरूहाति, अल्लं चम्मं दुरूहइत्ता सण्णद्धबद्ध जाव पहरणेहिं मग्गइएहिं जाव रवेणं पुव्वावरण्हकालसमयंसि सालाडवीओ चोरपल्लीओ णिग्गच्छइ, चोरपल्लीओ निगच्छइत्ता विसमदुग्गगहणं ठिते गहियभत्तपाणे तं दंडं पडिवालेमाणे चिट्ठति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभग्नसेन नामना चोरसेनापतिए विस्तारवाळुं अशन, पान, खादिम अने स्वादिम तैयार कराव्युं. तैयार करावीने ते पांचसो चोरोनी साथे स्नान करी यावत् प्रायश्चित्त (तिलकादि) करी भोजनमंडपमां आवी ते विस्तारवाळा

अशन, पान, खादिम, स्वादिम अने मदिराने एकवार आस्वाद करतो वारंवार आस्वाद करतो विचरवा लाग्यो-रह्यो. भोजन कर्या पछी योग्य स्थाने आव्यो सतो आचमन (चळु) करी मुखशुद्धि करी अत्यंत पवित्र थइ पांचसो चोरोनी साथे आर्द्र चर्म उपर (मंगळने माटे) बेठो. आर्द्र चर्म उपर बेसी सन्नद्ध बद्ध थइ (बखतर विगेरे धारण करी) यावत् आयुध अने प्रहरण (हथियार) ने ग्रहण करी हाथमां पाशला ग्रहण करी यावत् मोटा आनंदना शब्दवडे पूर्वापराह्न काळने विषे एटले मध्यान्ह समये शालाटवी नामनी चोरपल्लीमांथी बहार नीकळ्यो. चोरपल्लीमांथी बहार नीकळी विषम एटले उंचा नीचा तथा दुर्ग एटले प्रवेश न थइ शके तेवा गहन एटले वृक्षोनी झाडीमां रह्यो तथा भोजन अने पाणीने ग्रहण करी ते दंडनायकनी राह जोतो रह्यो.

मू०—तते णं से दंडे जेणेव अभग्गसेणे चोरसेणावई तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता अभग्गसेणेणं चोरसेणावतिणा सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते दंडनायक ज्यां अभग्नसेन चोर सेनापति हतो त्यां आव्यो. त्यां आवीने अभग्नसेन चोरसेनापतिनी साथे एकठो थयो-युद्ध करवा लाग्यो.

मू०—तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई तं दंडं खिप्पामेव हयमहिय जाव पडिसेहइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभग्नसेन चोरसेनापतिए ते दंडनायकने तत्काळ हत एटले सैन्यने हणवाथी हणायेलो अने

माननुं मथन करवाथी मथित एटले मानभ्रष्ट कर्यो यावत् (तेना श्रेष्ठ सुभटोनो विनाश कर्यो तथा तेना चिन्हयुक्त ध्वज-पताकाने पाडी नांख्या, तथा तेने सर्व दिशा विदिशाओमां) प्रतिषेध कर्यो-नसाडी मूक्यो अर्थात् चोतरफ रणसंग्राममांथी काढी मूक्यो.

मू०—तते णं से दंडे अभग्गसेणेण चोरसेणावइणा हयमहिय जाव पडिसेहिए समाणे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु जेणेव पुरिमताले नगरे जेणेव महब्बले राया तेणेव उवागच्छति; उवागच्छित्ता करयल एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते दंडनायक अभग्नसेन नामना चोरसेनापतिवडे हत मथित यावत् प्रतिषेध करायो-काढी मूकायो सतो तथाप्रकारना स्थाम (तेज) रहित थयो, अबल एटले शरीर संबंधी बळ रहित थयो, अवीर्य एटले आत्माना वीर्य-पराक्रम रहित थयो, पुरुषकार एटले पुरुषपणानुं अभिमान अने पराक्रम एटले ते ज पुरुषपणाना अभिमाननी सिद्धि ए बन्नेनो निषेध थवाथी पुरुषकार अने पराक्रमथी रहित थयो, तेथी हवे धारण करवाने एटले आ अभग्नसेन चोरसेनापतिने पकडवाने अशक्य छे अथवा मारे अहीं रणसंग्राममां उभा रहेवुं अशक्य छे, एम करीने एटले एम विचारीने ज्यां पुरिमताल नगर हतुं अने ज्यां महाबळ राजा हतो, त्यां आव्यो. आवीने बे हाथ जोडी आ प्रमाणे बोल्यो—

मू०—एवं खलु सामी ! अभग्गसेणे चोरसेणावई विसमदुग्गगहणं ठिते गाहितभत्तपाणीते नो

खलु से सक्का केणति सुबहुएणावि आसबलेण वा हत्थिबलेण वा जोहबलेण वा रहबलेण वा चाउरंगिणिं (चाउरंगेण)पि उरंउरेणं गिण्हित्तए, ताहे सामेण य भेदेण य उवप्पदाणेण य विसंभमाणे उपयते यावि होत्था ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! अभग्नसेन चोरसेनापति विषम एटले उंचा नीचा तथा दुर्ग एटले प्रवेश न थइ शके तेवा गहन एटले वृक्षोनी झाडीमां रह्यो छे, तथा भोजन अने पाणीने ग्रहण करी रह्यो छे, तेने कोइपण अत्यंत मोटा अश्वसैन्यथी, हाथीना सैन्यथी, योद्धाना सैन्यथी, रथना सैन्यथी एम चतुरंग सैन्यथी पण साक्षात् ग्रहण करी शके तेम नथी. तेथी ते सामवडे एटले प्रीतिना वचनवडे, भेदवडे एटले स्वामीनो सेवक उपर अने सेवकनो स्वामी उपर एम परस्पर अविश्वास उत्पन्न करवावडे तथा उपप्रदान (दान)वडे एटले वांछित अर्थने देवावडे विश्वास पमाडीने वश करवा लायक छे.

मू०—जे वि य से अब्भिंतरगा सीसगभमा मित्तनातिणियगसयणसंबंधिपरियणं च विपुल-धणकणगरयणसंतसारसावइज्जेणं भिंदाति, अभग्गसेणस्स य चोरसेणावइस्स अभिक्खणं अभिक्खणं महत्थाइं महग्घाइं महरिहाइं रायरिहाइं पाहुडाइं पेसेइ अभग्गसेणं चोरसेणावतिं विसंभमाणोति ॥ १९ ॥

अर्थ—वळी जेओ ते अभग्नसेनना शिष्यनी आंतिवाळा एटले विनयवडे करीने शिष्यनी जेवा अभ्यंतर एटले नजीकमां रहेनारा मंत्री विगेरे छे तथा जेओ तेना (अभग्नसेनना) मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबंधी अने दास–दासीरूप परिवार छे ते सर्वे घणुं द्रव्य, सुवर्ण अने रत्नरूप उत्तम सारभूत धन आपवाथी भेद पामशे एटले ते अभग्नसेनने विषे स्नेहनो त्याग करशे. तथा अभग्नसेन चोरसेनापतिने पण वारंवार मोटा प्रयोजनवाळा, मोटा मूल्यवाळा, मोटा पुरुषोने लायक अथवा पूजाने लायक अथवा मोटो छे पूज्य जेने एवां तथा राजाने लायक एवां भेटणां मोकलवाथी ते अभग्नसेन चोरसेनापति विश्वास पामशे–ए रीते तेने विश्वास पमाडी वश करवो योग्य छे.

मू०—तते णं से महब्बले राया अन्नया कयाइं पुरिमताले णगरे एगं महं महतिमहालियं कूडागारसालं करेति अणेगक्खंभसयसन्निविट्ठं पासाइए दरिसणिज्जे ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळ राजाए एकदा कदाचित् पुरिमताल नगरमां एक मोटी महातिमहालिका एटले प्रशंसा करवा लायक एवी सती अत्यंत मोटी कूटाकारशाला एटले पर्वतना शिखर जेवा आकारवाळी शाळा करावी. ते अनेक सेंकडो स्तंभो सहित हती, प्रासादीय एटले मननी प्रसन्नतानुं कारणरूप हती, तेने जोतां नेत्रने थाक लागतो नहोतो. तेथी ते दर्शनीय हती (अभिरूप एटले तेनुं रूप सर्वने इष्ट हतुं. तथा प्रतिरूप एटले दरेक जोनार मनुष्य प्रत्ये तेनुं रूप सुंदर

१ आवां केटलांक भेटणां राजा सिवाय बीजा पण मोटा पुरुषने लायक होय छे तेथी राजाने लायक एवुं विशेषण आप्युं छे.

लागे तेवी ते शाळा हती).

मू०—तते णं से महब्बले राया अन्नया कयाइं पुरिमताले णगरे उस्सुक्कं जाव दस रत्तं पमोयं घोसावेति, घोसावित्ता कोडुंबियपुरिसं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सालाडवीए चोरपल्लीए, तत्थ णं तुम्हे अभग्गसेणं चोरसेणावइं करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले णगरे महाबलस्स रन्नो उस्सुक्के जाव दस रत्ते पमोदे उग्घोसेति, तं किन्नं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पुप्फवत्थमल्लालंकारं ते इहं हव्वमाणिज्जउ ? उदाहु सयमेव गच्छित्ता ? ।

अर्थ—त्यारपछी (ते कूटाकारशाळाने निमित्ते) ते महाबळ राजाए एकदा कदाचित् पुरिमताल नगरने विषे उच्छुल्क एटले दाण माफ कर्युं यावत् दश रात्रि सुधी प्रमोद एटले महोत्सव करवानी उद्घोषणा करावी. उद्घोषणा करावीने तेणे कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं—हे देवानुप्रियो ! तमे शालाटवी नामनी चोरपल्लीमां जाओ. त्यां तमे अभग्नसेन नामना चोरसेनापतिने बे हाथ जोडी आ प्रमाणे कहो—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! पुरिमताल नगरमां महाबळ राजाए उच्छुल्क एटले दाण माफ कर्युं छे यावत् दश रात्रि सुधी प्रमोद एटले महोत्सव करवानी

उद्घोषणा करावी छे. तेथी करीने हे देवानुप्रिय ! शुं तमारे माटे विपुल एवुं अशन, पान, खादिम, स्वादिम, पुष्प, वस्त्र, माळा, अलंकार विगेरेने अमे शीघ्रपणे अहीं लावीए ? के तमे पोते ज त्यां आवशो ?

अहीं मूळमां उच्छुक्क एटले दाण माफ कर्युं ए ठेकाणे यावत् शब्द लख्यो छे, तेथी आटलो पाठ त्यां लेवो.—ते महोत्सवमां राजाए उक्करं-क्षेत्र अने पशुओ विगेरेनो जे कर राजा ग्रहण करे छे ते माफ कर्यो छे, अभडप्पवेसं-कणबीओना घरमां राजाना सुभटोनो प्रवेश बंध कर्यो छे, अडंडिमकुदंडिमं-दंड एटले राजनुं देवुं बाकी रहेवाथी लोकोनो जे दंड करवामां आवे छे ते तथा कुदंड एटले अपराधने लीधे जे दंड करवामां आवे छे ते पण बंध कर्या छे, अधारिमं-कोइनुं देणुं-करज छे नहीं. अधारणिज्जं-कोइपण देवादार ज छे नहीं, (एटले के आ महोत्सवमां लेणदार माणस देणदार उपर ताकीद करीने पोतानुं लेणुं लइ शकतो नथी.) अणुध्धुयमुइंगं-योग्यता प्रमाणे वगाडवाने माटे वादकोए मृदंगने अनुध्धूता एटले उंचा कर्या छे अथवा अनुध्धूता एटले त्याग कर्या नथी. अमिलायमल्लदामं-पुष्पनी माळाओ करमाती नथी अर्थात् करमाइ जती माळाओने काढी नांखी वारंवार ताजां पुष्पोनी माळाओनो उपयोग थया करे छे. गणियावरनाडइज्जकलियं-ते महोत्सव श्रेष्ठ गणिकाओरूपी नाटकना पात्रोवडे व्याप्त छे एटले गणिकाओ नाटक करी रही छे. अणेगतालाचराणुचरियं-अनेक नाटक करनाराओए सेवित छे एटले नाटको करी रह्या छे. पमुइयपक्कीलियाभिरामं-हर्ष पामेला अने क्रीडा करता लोकोवडे ते रमणीय लागे छे. तथा जहारिहं-योग्यता प्रमाणे ते महोत्सव प्रवर्ते छे.

मू०—तते णं कोडुंबियपुरिसा महब्बलस्स रन्नो करयल जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता पुरिमतालाओ णगराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता णातिविकिट्ठेहिं अद्धाणेहिं सुहेहिं वसहिं पायरासेहिं जेणेव सालाडवी चोरपल्ली तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता अभग्गसेणं चोरसेनापतिं करयल जाव एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पुरिमताले नगरे महब्बलस्स रन्नो उस्सुके जाव उदाहु सयमेव गच्छित्ता ?।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए महाबळ राजानी आज्ञा बे हाथ जोडी यावत् अंगीकार करी, अंगीकार करीने पुरिमताल नगरमांथी बहार नीकळ्या. बहार नीकळीने घणा लांबा नहीं एवा एटले टुंका टुंका प्रयाणोए करीने मार्गमां निवास करता तथा शीरामणी, भोजन अने वाळु विगेरे करता करता ज्यां शालाटवी नामनी चोरपल्ली हती त्यां आव्या. आवीने अभग्नसेन नामना चोरसेनापतिने बे हाथ जोडी आ प्रमाणे कह्युं—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! पुरिमताल नगरने विषे महाबल राजाए महोत्सव कर्यो छे. तेमां दाण विगेरे माफ कर्युं छे, यावत् तमारे माटे अमे अशनादिक अहीं लावीए ? के तमे पोते त्यां आवशो ?

मू०—तते णं अभग्गसेणे चोरसेणावई ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—अहन्नं देवाणुप्पिया !

पुरिमतालनगरं सयमेव गच्छामि, ते कोडुंबियपुरिसे सक्कारेति पडिविसज्जेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभग्नसेन चोरसेनापतिए ते कौटुंबिक पुरुषोने आ प्रमाणे कह्युं के–हे देवानुप्रिय ! हुं पुरिमताल नगरमां पोते ज आवीश. एम कही ते कौटुंबिक पुरुषोनो सत्कार कर्यो (सन्मान कर्युं) पछी तेमने विदाय कर्या.

मू०—तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्त जाव परिवुडे पहाते जाव पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए सालाडवीओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुरिमताले नगरे जेणेव महब्बले राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल महब्बलं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावित्ता महत्थं जाव पाहुडं उवणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभग्नसेन चोरसेनापतिए घणा मित्रो विगेरेनी साथे यावत् परिवरीने स्नान कर्युं, यावत् प्रायश्चित्त कर्युं, सर्व अलंकारोवडे ते विभूषित थयो. पछी शालाटवी नामनी चोरपल्लीमांथी नीकळ्यो. नीकळीने ज्यां पुरिमताल नगर हतुं, ज्यां महाबळ राजा हतो, त्यां आव्यो. आवीने तेणे बे हाथ जोडी यावत् महाबळ राजाने 'तमे शत्रुना जयवडे अने विजयवडे वृद्धि पामो' ए प्रमाणे आशीर्वाद आप्यो. आशीर्वाद आपीने मोटा प्रयोजनवाळुं यावत् भेटणुं तेनी पासे मूक्युं.

मू०—तते णं से महव्बले राया अभग्गसेणस्स चोरसेणावइस्स तं महत्थं जाव पडिच्छति, अभग्गसेणं चोरसेणावतिं सक्कारेति सम्माणेति पडिविसज्जेति कूडागारसालं च से आवसहं दलयति ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळ राजाए अभग्नसेन चोरसेनापतिना ते मोटा प्रयोजनवाळा भेटणानो यावत् स्वीकार कर्यो. पछी ते अभग्नसेन चोर सेनापतिनो सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, तेने विदाय कर्यो, अने तेने उतरवा माटे ते कूटाकारशाळानुं मकान आप्युं.

मू०—तते णं अभग्गसेणे चोरसेणावती महव्वलेणं रन्ना विसज्जिए समाणे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छइ ।

अर्थ—त्यारपछी अभग्नसेन चोरसेनापति महाबळ राजाए विसर्जन करायो सतो ज्यां कूटाकारशाळा हती त्यां आव्यो.

मू०—तते णं से महव्वले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विपुलं असणं पाणं खाइमं उवक्खडावेह, उवक्खडावित्ता तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च सुबहुं पुप्फगंधमल्लालंकारं च अभग्गसेणस्स कूडागारसालं उवणेह ।

अर्थ—त्यारपछी महाबळ राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं-हे देवानुप्रियो ! तमे

जाओ. विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करावो, तैयार करावीने ते विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तथा मदिराने तथा घणां पुष्प, गंध, माळा अने अलंकारने अभग्नसेन चोरसेनापतिनी पासे कूटाकारशाळामां लइ जाओ.

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल जाव उवणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषो (आ प्रमाणे राजानी आज्ञाने) बे हाथ जोडी (अंगीकार करी) यावत् (सर्व अशनादिक ते अभग्नसेन पासे) लइ गया.

मू०—तते णं से अभग्गसेणे चोरसेणावई बहूहिं मित्तनाइ सद्धिं संपरिवुडे ण्हाते जाव सव्वालंकारविभूसिए तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च आसाएमाणा विसाएमाणा पमत्ते विहरंति (विहरइ) ।

अर्थ—त्यारपछी ते अभग्नसेन चोरसेनापतिए घणा मित्र, ज्ञाति विगेरेनी साथे परिवर्या सत्ता स्नान कर्युं, यावत् सर्व अलंकारोवडे विभूषित थयो. पछी ते विपुल एवा अशन, पान, खादिम, स्वादिम अने मदिरानो एकवार आस्वाद करतो वारंवार आस्वाद करतो प्रमादी थइ विचरवा लाग्यो—प्रमत्त थयो—गांडो थयो.

मू०—तते णं से महब्बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं

तुम्हे देवाणुप्पिया ! पुरिमतालस्स णगरस्स दुवाराइं पिहेह, अभग्गसेणं चोरसेणावतिं जीवगाहं गिण्हह, ममं उवणेह ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबल राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या, बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं-हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ अने पुरिमताल नगरना दरवाजा बंध करो, अभग्नसेन चोरसेनापतिने जीवतो पकडो अने मारी पासे लावो-मने सोंपो.

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता पुरिमतालस्स णगरस्स दुवाराइं पिहेंति, अभग्गसेणं चोरसेणावइं जीवगाहं गिण्हंति, महब्बलस्स रण्णो उवणेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए बे हाथ जोडी यावत् (ते राजानी आज्ञा) अंगीकार करी, अंगीकार करीने पुरिमताल नगरना दरवाजा बंध कर्या, अभग्नसेन चोरसेनापतिने जीवतो पकड्यो अने महाबळ राजानी पासे लइ गया-तेने सोंप्यो.

मू०—तते णं से महब्बले राया अभग्गसेणं चोरसेणावतिं एतेणं विहाणेणं वज्झं आणवेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते महाबळ राजाए ते अभग्नसेन नामना चोरसेनापतिने आवा एटले हे गौतम ! तमे जेवा जोया तेवा विधानवडे वध करवानी आज्ञा आपी छे.

मू०—एवं खलु गोतमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई पुरापुराणाणं जाव विहराति।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते अभग्नसेन चोरसेनापति पूर्व जन्मना करेला जुना कर्मोना फळने भोगवतो सतो यावत् विचरे छे–रहेलो छे.

मू०—अभग्गसेणे णं भंते ! चोरसेणावई कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?।

अर्थ—गौतमस्वामीए भगवानने पूछ्युं के–हे भगवान ! ते अभग्नसेन नामनो चोरसेनापति काळ समये काळ करीने एटले मरण समये मरण पामीने क्यां जशे ? अने क्यां उत्पन्न थशे ?

मू०—गोयमा ! अभग्गसेणे चोरसेणावई सत्तत्तीसं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलभिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसनेरइएसु उववज्जिहिति।

अर्थ—भगवाने कह्युं के–हे गौतम ! ते अभग्नसेन चोरसेनापति साडत्रीश वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने–भोगवीने आजे ज दिवसनो त्रीजो भाग बाकी रहेशे त्यारे शूळीवडे भेद करायो सतो–शूळीथी भेदायो सतो मरण समये मरण पामीने

आ रत्नप्रभा नामनी पहेली नरकपृथ्वीने विषे उत्कृष्ट (एक सागरोपमना) आयुष्यवाळा नारकीओ मध्ये उत्पन्न थशे.

मू०–से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता एवं संसारो जहा पढमो जाव पुढवीए ।

अर्थ—ते (अभग्नसेननो जीव) त्यांथी (पहेली नरकपृथ्वीथी) आंतरा रहित नीकळीने जेम प्रथम अध्ययनमां मृगापुत्रनो संसार कह्यो तेम आनो पण संसार कहेवो. यावत् नरकपृथ्वीने विषे उत्पन्न थशे.

मू०–ततो उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए सूयरत्ताए पच्चायाहिति । से णं तत्थ सोयरिएहिं जीवियाओ ववरोविए समाणे तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति । से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे एवं जहा पढमे जाव अंतं काहिति । निक्खेवो ॥ २० ॥

॥ ततियं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ३

अर्थ—त्यारपछी ते सातमी नरकपृथ्वीथी नीकळीने वाणारसी नामनी नगरीमां सूकरपणे उत्पन्न थशे. त्यां ते सूकरना पालनाराओए जीवितथी दूर कर्यो (मार्यो) सतो ते ज वाणारसी नगरीमां कोइ श्रेष्ठीना कुळमां पुत्रपणे उत्पन्न थशे. त्यां ते बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ युवान थयो सतो ए ज प्रमाणे जेम पहेला अध्ययनमां मृगापुत्रना जीवने माटे कह्युं

१ भुंड.

छे तेम दीक्षा ग्रहण करशे, यावत् सर्व दुःखनो अंत करशे–मोक्षने पामशे. आ प्रमाणे आ त्रीजा अध्ययननो निक्षेप कह्यो एटले व्याख्यान कर्युं.

अहीं कोइ शंका करे के–तीर्थंकरो जे देशमां विचरता होय ते देशमां पचीश योजन सुधी अथवा मतांतरे चार योजन सुधी तीर्थंकरना अतिशयने लीधे वैरादिक अनर्थो थता नथी. तेने माटे कह्युं छे के—

" पुव्वुप्पन्ना रोगा, पसमंति ईइवेरमारीओ । अइवुट्ठी अणावुट्ठी न होइ दुब्भिक्ख डमरं च ॥ "

" ज्यां तीर्थंकर विचरता होय त्यां प्रथम उत्पन्न थयेला रोगो शांत थाय छे (तथा नवा उत्पन्न थता नथी) तेम ज ईति, वेर, मारी–मरकी, अतिवृष्टि, दुकाळ अने डमर एटले तीड विगेरेनो उपद्रव आ सर्व थता नथी–होता नथी. "

तो श्रीमान् महावीरस्वामी भगवान पुरिमताल नगरमां विचरता हता ते वखते आ अध्ययनमां वर्णवेलो अभग्नसेन चोरसेनापतिनो वृत्तांत केम थयो ? आ शंकाना समाधानमां कहे छे के–आ सर्व अर्थ के अनर्थनो समूह प्राणीओने पोताना करेला कर्मथी ज उत्पन्न थाय छे. ते कर्म सोपक्रम अने निरुपक्रम एम बे प्रकारनुं छे. तेमां जे वैरादिक सोपक्रम कर्मथी उत्पन्न थाय छे, ते ज सारा औषधथी साध्य रोगनी जेम जिनेश्वरोना अतिशयथी शांत थाय छे. परंतु जे वैरादिक निरुपक्रम कर्मथी उत्पन्न थयेला होय छे, ते अवश्य विपाकथी एटले उदयथी भोगववा ज पडे छे. जेम असाध्य व्याधि औषधथी शांत थतो नथी तेम ते उपक्रमना कारणनो विषय नथी एटले के सोपक्रमनी जेम जिनेश्वरोना अतिशयवडे शांत

थता नथी. आ कारणथी ज सर्व अतिशयोनी संपदा सहित एवा जिनेश्वरोने पण वैरभाव शांत थयेला नहीं होवाथी गोशालादिके उपसर्गो करेला छे.

इति विपाक श्रुतमां अभग्नसेन नामना त्रीजा अध्ययननी व्याख्या संपूर्ण.

अथ चतुर्थ शकट अध्ययन ४.

हवे चोथा अध्ययनमां कांइक लखे छे—

मू०—जइ णं भंते ! चउत्थस्स उक्खेवो, एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं. साहंजनीनामं नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा ।

अर्थ—हे भगवन् ! जो इत्यादिक चोथा अध्ययननो उत्क्षेप[1] कहेवो (ते आ प्रमाणेः—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के हे भगवन् ! जो श्रमण भगवंत यावत् मोक्षपदने पामेला श्रीमहावीरस्वामीए दुःखविपाकना त्रीजा अध्ययननो आ उपर तमे कह्यो ते अर्थ कहेलो छे, तो हे भगवन् ! चोथा अध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे ? सुधर्मास्वामी जवाब आपे छे)

१ प्रस्तावना.

आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये साहंजणी नामनी नगरी हती. ते ऋद्धिवाळी, निर्भय अने समृद्धिवाळी हती.

मू०—तीसे णं साहंजणीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए देवरमणे णामं उज्जाणे होत्था। तत्थ णं अमोहस्स जक्खस्स जक्खायणे होत्था पुराणे ।

अर्थ—ते साहंजणी नगरीनी बहार उत्तर अने पूर्व दिशानी वच्चेनी दिशाना भागमां एटले ईशानखूणाने विषे देवरमण नामनुं उद्यान हतुं. ते उद्यानमां अमोघ नामना यक्षनुं यक्षायतन (चैत्य) हतुं, ते प्राचीन एटले घणा काळनुं हतुं.

मू०—तत्थ णं साहंजणीए णयरीए महचंदे नामं राया होत्था महया ।

अर्थ—ते साहंजणी नगरीमां महाचंद्र नामे राजा हतो. ते मोटा हिमवान पर्वत जेवो मोटो तथा मलयाचळ, मंदराचळ (मेरु) अने महेंद्रनी जेवो सार (प्रधान) हतो.

मू०—तस्स णं महचंदस्स रन्नो सुसेणे नामं अमच्चे होत्था सामभेयदंड (उवप्पयाणनीईसुपउत्तनयविहन्नू) निग्गहकुसले ।

अर्थ—ते महाचंद्र राजाने सुसेन नामनो प्रधान हतो. ते साम एटले प्रिय वचन कहेवा, भेद एटले स्वामी अने सेवकना चित्तनो भेद करवो, दंड एटले शरीर अने धननुं हरण करवुं, उपप्रदान एटले इच्छित वस्तु आपवी, आ चार प्रकारनी

नीतिनो सारी रीते उपयोग करनार हतो. तेथी करीने ते नीतिना प्रकारने जाणनार हतो, तथा निग्रह करवामां कुशळ हतो.

मू०—तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुदंसणाणामं गणिया होत्था वन्नओ ।

अर्थ—ते साहंजणी नगरीमां सुदर्शना नामनी गणिका हती, तेनुं वर्णन कहेवुं.

मू०—तत्थ णं साहंजणीए नयरीए सुभद्द नामं सत्थवाहे परिवसइ अड्ढे ।

अर्थ—ते साहंजणी नगरीमां सुभद्र नामनो सार्थवाह वसतो हतो. ते धनाढ्य हतो.

मू०—तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था अहीणपुन्नपंचेंदियसरीरा ।

अर्थ—ते सुभद्र नामना सार्थवाहने भद्रा नामनी भार्या हती. तेनी पांचे इंद्रियो अने शरीर न्यूनता रहित परिपूर्ण हतां.

मू०—तस्स णं सुभद्दस्स सत्थवाहस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सगडे नामं दारए होत्था अहीणपुन्नपंचेंदियसरीरे ।

अर्थ—ते सुभद्र सार्थवाहनो पुत्र अने भद्रा नामनी भार्यानो आत्मज[1] शकट नामनो दारक (बाळक) हतो. तेनी

१ पोताथी जन्मेलो.

पांच इंद्रियो तथा शरीर न्यूनता रहित–परिपूर्ण हतां.

मू०–ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे समोसरणं, परिसा राया य निग्गए, धम्मो कहिओ, परिसा (राया) पडिगया.

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवंत महावीरस्वामी समवसर्या. (तेमने वांदवा माटे नगरीमांथी) पर्षदा अने राजा नीकळ्या. भगवाने धर्म कह्यो. ते सांभळी पर्षदा अने राजा पाछा नगरीमां गया.

मू०–ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव रायमग्गमोगाढे । तत्थ णं हत्थी आसे पुरिसे, तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगए पासति एगं सइत्थीयं पुरिसं अवउडगबंधणं उक्खित्त जाव घोसेणं, चिंता तहेव जाव भगवं वागरेइ ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीरस्वामीना मोटा शिष्य श्री गौतमस्वामी यावत् राजमार्गमां पेठा. त्यां राजमार्गमां घणा हाथी, घोडा अने पुरुषोने जोया. ते पुरुषोनी मध्ये रहेला एक स्त्री सहित पुरुषने जोयो. तेनुं मस्तक नीचुं करीने तेने बांधेलो हतो, तेना नाक कान कापेला हता, यावत् ते राजपुरुषो पटहवडे आघोषणा करावता हता. ते जोइ गौतमस्वामीने विचार थयो विगेरे प्रथमनी जेम सर्व कहेवुं. यावत् प्रश्न पासे आवीने पूछवाथी भगवान महावीर-

स्वामी बोल्या.

मू०—एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे छगलपुरे नामं णगरे होत्था । तत्थ सीहगिरिनामं राया होत्था महया ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रने विषे छगलपुर नामनुं नगर हतुं. तेमां सिंहगिरि नामनो राजा हतो. ते महा हिमवाननी जेवो मोटो हतो विगेरे.

मू०—तत्थ णं छगलपुरे णगरे छणिए नामं छगलीए परिवसति अड्ढे अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ।

अर्थ—ते छगलपुर नगरने विषे छणिक नामनो खाटकी (कसाइ) वसतो हतो. ते धनाढ्य, अधार्मिक यावत् बीजानुं खराब करीने आनंद पामनार हतो.

मू०—तस्स णं छणियस्स छगालियस्स बहवे अयाण य एलाण य रोज्झाण य वसभाण य ससयाण य सूयराण य पसयाण य सिंघाण य हरिणाण य मयूराण य महिसाण य सतबद्धाण य सहस्सबद्धाण य जूहाणि वाडगंसि संनिरुद्धाइं चिट्ठंति ।

अर्थ—ते छणिक नामना खाटकीने घणा बकरा, बोकडा, रोझ, वृषभ (बळद), ससला, सूकर (भुंड), पसय जातना पशु, सिंह, हरण, मोर अने पाडाना शतसहस्र एटले लाखोना यूथो एटले समूहो वाडाने विषे बांधेला अने पूरेला रहेला छे.

मू०—अन्ने य तत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहवे य अए जाव महिसे य सारक्खमाणा संगोवेमाणा चिट्ठंति ।

अर्थ—तथा त्यां बीजा घणा पुरुषो भृति एटले पैसा विगेरे अने भक्त एटले घी, धान्य विगेरेरूप वेतन एटले मूल्य आपीने नोकररूप राखेला हता, तेओ घणा बकरानुं यावत् महिष (पाडा)नुं घास पाणी विगेरेवडे रक्षण करता अने गोपवता एटले चोरादिकना उपद्रवथी रक्षण करता सता रहेला छे.

मू०—अण्णे य से बहवे पुरिसा अयाण य जाव गिहंसि निरुद्धा चिट्ठंति ।

अर्थ—तथा बीजा पण तेना घणा पुरुषो (नोकरो) ते बकराना यावत् पाडाओना घरने विषे एटले वाडाने विषे रुंधेला एटले राखेला रहेला छे.

मू०—अन्ने य से बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा बहवे सयए य सहस्से य (बहवे अयए य जाव महिसे य) जीवियाओ ववरोविंति मंसाइं कप्पिणीकप्पियाइं करेंति छणीयस्स छगली-

यस्स उवरोंति ।

अर्थ—तथा बीजा पण तेना घणा पुरुषो (चाकरो) भृति अने भक्तरूप वेतन आपीने राखेला हता. तेओ घणा सेंकडो
श्रने हजारो बकराओने यावत् पाडाओने जीवितथी दूर करता हता एटले मारी नांखता हता, तेना मांसना कापणी (छरी
अने हजारो बकराओने यावत् पाडाओने जीवितथी दूर करता हता एटले मारी नांखता हता, तेना मांसना कापणी (छरी
विगेरे)थी कापीने ककडा करता हता, अने ते छणिक नामना खाटकीनी पासे लइ जता हता—तेने आपता हता.

मू०—अन्ने य से बहवे पुरिसा ताइं बहुयाइं अयमंसाइं जाव महिसमंसाइं तवएसु य कवल्लीसु य कंदूएसु य भज्जणेसु य इंगालेसु य तलंति य भज्जेंति य सोल्लयंति य तलेंता भज्जंता सोल्लेंता ततो रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ।

अर्थ—तथा बीजा पण तेना घणा पुरुषो (चाकरो) ते घणा बकराना मांसने यावत् पाडाना मांसने तवकने विषे एटले सुंवाळी (पुरी) विगेरे तळवाना पात्र (तवी) ने विषे कवलीने विषे एटले गोळ विगेरे पकववाना पात्रने विषे, कंडुने विषे एटले मांडा (रोटला रोटली) विगेरे पकाववाना पात्र (लोढी–तावडी) ने विषे, भर्जनकने विषे एटले धाणी फोडवाना पात्र (ठीबका) ने विषे तथा अंगाराने विषे अग्निपर मूकीने तेलमां तळता हता, धाणीनी जेम शेकता (भुंजता) हता, अने ओदननी जेम रांधता हता अथवा ककडा करता हता, तथा ते प्रमाणे तळीने, शेकीने अने रांधीने अथवा ककडा करीने पछी राजमार्गने विषे वेचवावडे आजीविकाने करता सता विचरता (रहेता) हता.

मू०—अप्पणा वि य णं से छन्नियए छागलीए तेहिं बहुहिं अयमंसेहि य जाव महिसमंसेहि य सोल्लेहि य तलेहि य भज्जेहि य सुरं च आसाएमाणे विहरति ।

अर्थ—तथा पोते पण ते छणिक नामनो खाटकी तें घणा रांधेला, तळेला अने भुंजेला बकराना मांसने यावत् पाडाना मांसने मदिरानी साथे आस्वादन करतो सतो विचरतो हतो–रहेलो हतो.

मू०—तते णं से छन्नीए छागलीए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमाचारे सुबहुं पावकम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता सत्तवाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा चोत्थीए पुढवीए उक्कोसेणं दससागरोवमाठिइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने॥ २१ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते छणिक नामनो खाटकी आवा कर्म (व्यापार) वाळो, एवा ज कर्ममां तत्पर, एवा ज कर्मनी विद्या (कळा)वाळो अने एवा ज आचारवाळो सतो अत्यंत मलिन घणां पापकर्मने उपार्जन करी सातसो वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने–भोगवीने मरण समये मरण पामीने चोथी नरकपृथ्वीमां उत्कृष्ट दश सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकीने विषे नारकीपणे उत्पन्न थयो. २१.

मू०—तते णं तस्स सुभद्दसत्थवाहस्स भद्दा भारिया जाव निंदुया यावि होत्था, जाया जाया

दारगा विनिहायमावज्जंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुभद्र सार्थवाहनी भद्रा नामनी भार्या यावत् निंदु होती हवी, तेथी तेणीना उत्पन्न थता उत्पन्न थता बाळको तत्काळ ज मरण पामता हता.

मू०—तते णं से छन्नीए छागले चोत्थीए पुढवीए अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव साहंजणीए नयरीए सुभद्दस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुछिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते छणिक खाटकीनो जीव चोथी नरकपृथ्वीमांथी आंतरा रहित नीकळीने आ ज साहंजणी नगरीमां सुभद्र सार्थवाहनी भद्रा नामनी भार्यानी कुक्षिने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थयो.

मू०—तते णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं दारगं पयाया।

अर्थ—त्यारपछी ते भद्रा सार्थवाहीए एकदा कदाचित् नव मास बराबर परिपूर्ण थया त्यारे ते दारकने प्रसव्यो—जन्म आप्यो.

मू०—तए णं तं दारगं अम्मापियरो जायमेत्तं चेव सगडस्स हेट्ठातो ठावेंति, ठावित्ता दोच्चं पि गिण्हावेंति अणुपुव्वेणं सारक्खांति संगोवेंति संवड्ढेंति जहा उज्झियए जाव जम्हा णं अम्हं इमे

दारए जायमेत्ते चेव सगडस्स हेट्ठा ठाविए तम्हा णं होउ णं अम्हं एस दारए सगडे नामेणं, सेसं जहा उज्झियए ।

अर्थ—त्यारपछी ते दारकने तेना मातापिताए उत्पन्न थयो के तरत ज शकटनी (गाडानी) नीचे स्थापन कर्यो. स्थापन करीने पछी फरीथी तेने ग्रहण कर्यो. पछी अनुक्रमे उज्झितकनी जेम तेनुं स्तन्यपानवडे रक्षण करवा लाग्या, उपद्रवोथी गोपन (रक्षण) करवा लाग्या अने वृद्धि पमाडवा लाग्या. विगेरे उज्झितकनी जेम कहेवुं. यावत् जे कारण माटे अमारो आ दारक उत्पन्न थयो ने तरत ज शकटनी नीचे स्थापन कर्यो. तेथी करीने अमारो आ पुत्र नामे करीने शकट हो. बाकी सर्व वृत्तांत उज्झितकनी जेम कहेवो.

मू०—सुभद्दे लवणसमुद्दे कालगते, माया वि कालगया, से वि सयाओ गिहाओ निच्छूढे ।

अर्थ—सुभद्र सार्थवाह लवणसमुद्रमां (व्यापार करवा जतां) काळधर्मवडे युक्त थयो एटले मरण पाम्यो. माता (सुभद्रा) पण काळधर्म पामी. तेथी ते शकटने (राजाना हुकमथी) तेना घरमांथी काढी मूक्यो.

मू०—तते णं से सगडे दारए सयातो गिहाओ निच्छूढे समाणे संघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते शकट दारक पोताना घरमांथी काढी मूकायो सतो शृंगाटक विगेरे मार्गमां स्वच्छंदपणे द्यूतादिक

खेलतो यावत् सुदर्शना नामनी गणिकानी साथे लागेलो थयो–लुब्ध थयो.

मू०–तते णं से सुसेणे अमच्चे तं सगडं दारगं अन्नया कयाइं सुदरिसणाए गणियाए गिहाओ निच्छुभावेति सुदंसणियं गणियं अब्भितरियं ठावेति, ठावित्ता सुदरिसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुसेन नामना प्रधाने ते शकट नामना दारकने एकदा कदाचित् सुदर्शना गणिकाना घरमांथी काढी मूक्यो, अने सुदर्शना गणिकाने पोताना घरनी अंदर (स्त्री तरीके) स्थापन करी. स्थापन करीने सुदर्शना गणिकानी साथे उदार एवा मनुष्य संबंधी कामभोगने भोगवतो सतो विचरवा लाग्यो–रह्यो

मू०–तते णं से सगडे दारए सुदरिसणाओ गिहाओ निच्छूढे समाणे अन्नत्थ कत्थ वि सुतिं वा अलभमाणे अन्नया कयाइं रहसियं सुदरिसणागेहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुदरिसणाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते शकट दारक सुदर्शना गणिकाना घरमांथी काढी मूकायो सतो अन्य कोइ पण ठेकाणे स्मृतिने के प्रमोदने–हर्षने नहीं पामतो सतो एकदा कदाचित् गुप्त रीते सुदर्शना गणिकाने ज्यां राखी छे ते घरमां पेठो. पेसीने

सुदर्शना गणिकानी साथे उदार-प्रधान एवा कामभोगने भोगवतो विचरवा लाग्यो-रह्यो.

मू-इमं च णं सुसेणे अमच्चे ण्हाते जाव विभूसाए मणुस्सवग्गुराए जेणेव सुदरिसणागणियाए गेहे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छइत्ता सगडं दारयं सुदंसणाए गणियाए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते जाव मिसमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु सगडं दारयं पुरिसेहिं गिण्हाविति, गिण्हावित्ता अट्ठि जाव महियं करेति, अवउडगबंधणगं करेति, करित्ता जेणेव महचंदे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु सामी ! सगडे दारए मम अंतेपुरंसि अवरद्धे ।

अर्थ—तेवामां सुसेन नामनो प्रधान स्नान करी यावत् विभूषित थइ मनुष्यो (सेवको)ना परिवार सहित ज्यां सुदर्शना गणिकाने राखवानुं घर हतुं त्यां आव्यो. त्यां आवतां शकट दारकने सुदर्शना गणिकानी साथे उदार-प्रधान एवा कामभोग भोगवतो जोयो. जोइने ते तत्काळ क्रोध पाम्यो, यावत् क्रोधनी ज्वाळावडे सर्पनी जेम फुंफाडा मारतो त्रण वळीयावाळी भृकुटिने कपाळमां चडावी ते शकट दारकने पुरुषो पासे पकडाव्यो. पकडावीने यष्टि (लाकडी), मुठी विगेरेवडे तेना शरीरनुं मथन कर्युं, तथा नीचुं मस्तक राखी बंधन कर्युं. बंधन करीने ज्यां महाचंद्र राजा हतो त्यां आव्यो.

आवीने बे हाथ जोडी यावत् आ प्रमाणे बोल्यो—आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी! आ शकट दारके मारा अंतःपुरमां (प्रवेश करवारूप) अपराध कर्यो छे.

मू०—तते णं से महचंदे राया सुसेणं अमच्चं एवं वयासी—तुमं चेव णं देवाणुप्पिया! सगडस्स दारगस्स दंडं वत्तेहि।

अर्थ—त्यारपछी ते महाचंद्र राजाए ते सुसेन प्रधानने आ प्रमाणे कह्युं—हे देवानुप्रिय! तुं ज आ शकट दारकनो (तारी इच्छा प्रमाणे) दंड कर.

मू०—तए णं से सुसेणे अमच्चे महचंदेणं रन्ना अब्भणुन्नाए समाणे सगडं दारयं सुदरिसणं च गणियं एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेति। तं एवं खलु गोयमा! सगडे दारगे पोरापुराणाणं पच्चणुब्भवमाणे विहरति ॥ २२ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते सुसेन प्रधाने महाचंद्र राजाए आ प्रमाणे अनुज्ञा आपे सते शकट दारकने अने सुदर्शना गणिकाने आवा प्रकारवडे वध करवानी आज्ञा आपी छे. तेथी आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम! शकट दारक पूर्व जन्मना जूनां पापकर्मने अनुभव करतो विचरे छे-रह्यो छे. २२.

मू०—सगडे णं भंते ! दारए कालगए कहिं गच्छिहिति कहिं उववज्जिहिइ ?।

अर्थ—हे भगवन् ! शकट नामनो दारक मरण पामीने क्यां जशे ? अने क्यां जन्मशे ?

मू०—सगडे णं दारए गोयमा ! सत्तावण्णं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे एगं महं अओमयं तत्तं समजोइभूयं इत्थिपडिमं अवयासाविते समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववज्जिहिति । से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता रायगिहे णगरे मातंगकुलंसि जुगलत्ताए पच्चायाहिति ।

अर्थ—हे गौतम ! ते शकट नामनो दारक सत्तावन वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने आजे ज दिवसनो त्रीजो भाग बाकी रहेशे त्यारे एक मोटी लोढामय (लोढानी) तपावेली अग्निना वर्ण जेवी थयेली स्त्रीनी प्रतिमाने आलिंगन कराव्यो सतो मरण समये मरण पामीने आ रत्नप्रभा नामनी पहेली नरकपृथ्वीने विषे नारकीपणे उत्पन्न थशे. ते त्यांथी आंतरा रहित नीकळीने राजगृह नगरमां मातंग (चंडाळ)ना कुळमां युगलपणे उत्पन्न थशे.

मू०— तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णिवत्तबारसगस्स इमं एयारूवं गोण्णं नामधेज्जं करिस्संति—तं होऊ णं दारए सगडे नामेणं होऊ णं दारिया सुदरिसणा नामेणं ।

अर्थ—त्यारपछी ते दारकनुं तेना मातपिता बार दिवस निवर्तन थशे त्यारे आ आवा प्रकारनुं गौण (गुणवाळुं-सार्थक) नाम करशे-पाडशे-ते कारण माटे आ अमारो वाळक नामे करीने शकट हो, अने पुत्री नामे करीने सुदर्शना हो.

मू०—तते णं से सगडे दारए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते भविस्सइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते शकट दारक बाल्यपणाथी मुक्त थइ यौवनने पामेलो थशे.

मू०—तए णं सा सुदरिसणा वि दारिया उम्मुक्कबालभावा विण्णाय जोव्वणगमणुप्पत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा यावि भविस्सइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुदर्शना दारिका पण बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ कळाना ज्ञानमां निपुण थइ यौवनने पामी रूप, यौवन अने लावण्यवडे उत्कृष्ट अने उत्कृष्ट शरीरवाळी थशे.

मू०—तए णं से सगडे दारए सुदरिसणाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य मुच्छिए सुदरिसणाए भगिणीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्सति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शकट नामनो दारक ते सुदर्शनाना रूपवडे, यौवनवडे अने लावण्यवडे मूर्छित थइ एटले मोह पामी ते सुदर्शना नामनी बहेननी साथे उदार एवा कामभोगने भोगवतो सतो विहार करशे-रहेशे.

मू०—तए णं से सगडे दारए अन्नया कयाइं सयमेव कूडगाहित्तं उवसंपज्जित्ता णं विहरिस्सति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शकट दारक एकदा कदाचित् कूटग्राहिपणाने अंगीकार करीने विचरशे रहशे. (ते जातिनो व्यापार करशे).

मू०—तते णं से सगडे दारए कूडगाहे भविस्सइ अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ।

अर्थ—त्यारपछी ते शकट दारक कूटग्राही थशे, ते वखते ते अधर्मी यावत् कोइनुं खराब करीने आनंद पामनारो थशे.

मू०—एयकम्मे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—आवा क्रूर कर्म करनार ते शकट दारक घणुं पापकर्म उपार्जन करी मरण समये मरण पामी आ रत्नप्रभा नामनी पहेली नरकपृथ्वीने विषे नारकीपणे उत्पन्न थशे.

मू०—संसारो तहेव जाव पुढवीए

अर्थ—ते ज प्रमाणे (प्रथम अध्ययननी जेम) तेनो संसार यावत् सातमी नरक पृथ्वी सुधीनो कहेवो.

---

१ जातिविशेष.

मु०—से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता वाणारसीए नयरीए मच्छत्ताए उववज्जिहिति । से णं तत्थ णं मच्छबंधिएहिं वहिए तत्थेव वाणारसीए नयरीए सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति । बोहिं बुज्झे पव्वज्जा सोहम्मे कप्पे । महाविदेहे वासे सिज्झिहिति । निक्खेवो दुहविवागाणं चोत्थस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते ॥ २३ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते त्यांथी आंतरा रहित नीकळीने वाणारसी नगरीमां मत्स्यपणे उत्पन्न थशे. त्यां मच्छीमारो तेनो वध करशे. त्यारपछी ते ज वाणारसी नगरीमां कोइ श्रेष्ठीना कुळने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थशे. त्यां युवान थशे त्यारे ते समकित पामी प्रतिबोध पामी दीक्षा ग्रहण करी सौधर्मकल्प नामना पहेला स्वर्गने विषे देव थशे. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां जन्म पामी दीक्षा ग्रहण करी सिद्धिपदने पामशे. आ प्रमाणे दुःखविपाकना चोथा अध्ययननो निक्षेप कहेवो एटले के—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीरस्वामीए चोथा अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे ते में तमने कह्यो. ए प्रमाणे निगमन एटले समाप्तिनुं वचन कहेवुं. बाकीनो वृत्तांत पहेला अध्ययननी जेम जाणवो.

॥ चोत्थं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ४

आ प्रमाणे चोथा अध्ययननी व्याख्या संपूर्ण थइ. ४.

अथ पंचम बृहस्पतिदत्त नामनुं अध्ययन.

हवे पांचमा बृहस्पतिदत्त नामना अध्ययननो कांइक अर्थ लखे छेः—

मू०—जइ णं भंते ! पंचमस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं कोसंबी नामं नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा ।

अर्थ—जो हे भगवान ! श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामीए चोथा अध्ययननो आ तमे कह्यो ते प्रमाणे अर्थ कह्यो छे तो पांचमा अध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे ? तो पांचमा अध्ययननो उत्क्षेप (प्रस्तावना) कहो. आ प्रमाणे जंबूस्वामीना पूछवाथी सुधर्मास्वामी पांचमा अध्ययननो उत्क्षेप करे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये कौशांबी नामनी नगरी हती ते ऋद्धिवाळी, निर्भय अने समृद्धिवाळी हती.

मू०—बाहिं चंदोत(त्त)रणे उज्जाणे, सेयभद्दे जक्खे ।

अर्थ—ते कौशांबी नगरीनी बहार चंद्रोत(त्त)रण नामनुं उद्यान हतुं. ते उद्यानमां श्वेतभद्र नामे यक्ष हतो—यक्षनुं चैत्य हतुं.

मू०—तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सयाणीए नामं राया होत्था महता । मियावती देवी ।

अर्थ—ते कौशांबी नगरीमां शतानीक नामे राजा हतो. ते महा हिमवान पर्वत विगेरे जेवो मोटो सारभूत हतो. ते राजाने मृगावती नामनी पट्टराणी हती.

मू०—तस्स णं सयाणीयस्स पुत्ते मियादेवीए अत्तए उदायणे णामं कुमारे होत्था अहीण जाव जुवराया ।

अर्थ—ते शतानीक राजानो पुत्र अने मृगावती देवीनो आत्मज उदयन नामनो कुमार हतो. तेना शरीर अने इंद्रियो हीनता रहित परिपूर्ण हता, यावत् ते युवराज थयो.

मू०—तस्स णं उदायणस्स कुमारस्स पउमावती नामं देवी होत्था ।

अर्थ—ते उदायन कुमारने पद्मावती नामनी देवी-भार्या हती.

मू०—तस्स णं सयाणीयस्स सोमदत्ते नामं पुरोहिए होत्था रिउवेय० ।

अर्थ—ते शतानीक राजाने सोमदत्त नामनो पुरोहित हतो ते यजुर्वेद, सामवेद, ऋग्वेद अने अथर्ववेद विगेरे भणेलो हतो.

१ पोताथी जन्मेलो.

मू०—तस्स णं सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ता नामं भारिया होत्था ।

अर्थ—ते सोमदत्त नामना पुरोहितने वसुदत्ता नामनी भार्या हती.

मू०—तस्स णं सोमदत्तस्स पुरोहियस्स पुत्ते वसुदत्ताए अत्तए वहस्सातिदत्ते नामं दारए होत्था अहीण ।

अर्थ—ते सोमदत्त पुरोहितनो पुत्र अने वसुदत्ता भार्यानो आत्मज बृहस्पतिदत्त नामनो दारक हतो. तेना शरीर अने इंद्रियो हीनता रहित परिपूर्ण हतां.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे समोसरणं ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामी नगरीनी बहार समवसर्या.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं भगवं गोयमे तहेव जाव रायमग्गमोगाढे तहेव पासइ हत्थी आसे पुरिसमज्झे पुरिसं, चिंता, तहेव पुच्छाति पुव्वभवं ।

अर्थ—ते काळे ते समये भगवान गौतमस्वामी ते ज प्रमाणे एटले प्रथम अध्ययनमां कह्या प्रमाणे यावत् राजमार्गमां गोचरी माटे अटन करता हता. ते वखते ते ज प्रमाणे एटले प्रथमनी जेम त्यां घणा हाथीओ, अश्वो अने पुरुषो (राज-

सेवको) नी मध्ये रहेला एक पुरुषने जोयो. जोइने प्रथमनी जेम विचार थयो. तेथी ते ज प्रमाणे भगवाननी पासे आवी ते पुरुषनो पूर्वभव पूछ्यो.

मू०—भगवं वागरेइ—एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सव्वतोभद्दे नामं नयरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे ।

अर्थ—भगवान श्रीमहावीरस्वामीए कयुं के—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रने विषे सर्वतोभद्र नामनुं नगर हतुं. ते ऋद्धिवाळुं, निर्भय अने समृद्धिवाळुं हतुं.

मू०—तत्थ णं सव्वतोभद्दे नगरे जियसत्तू नामं राया ।

अर्थ—ते सर्वतोभद्र नामना नगरमां जीतशत्रु नामे राजा हतो.

मू०—तस्स णं जियसत्तुस्स रन्नो महेसरदत्ते नामं पुरोहिए होत्था, रिउव्वेय जाव अथव्वण-कुसले आवि होत्था ।

अर्थ—ते जितशत्रु राजाने महेश्वरदत्त नामनो पुरोहित हतो. ते यजुर्वेद यावत् अथर्ववेदने विषे कुशळ हतो यावत् शब्दथी ऋग्वेद अने सामवेदमां पण कुशळ हतो.

मू०—तते णं से महेसरदत्ते पुरोहिए जियसत्तुस्स रन्नो रज्जबलविवद्धणअट्ठयाए कल्लाकल्लिं एगमेगं माहणदारयं एगमेगं खत्तियदारयं एगमेगं वइस्सदारयं एगमेगं सुद्दारगं गिण्हावेति, गिण्हावित्ता तेसिं जीवंतगाणं चेव हिययउंडए गिण्हावेति, गिण्हावित्ता जियसत्तुस्स रन्नो संतिहोमं करेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते महेश्वरदत्त पुरोहित जितशत्रु राजाना राज्य अने सैन्यनी वृद्धि थवाने माटे हमेशां एक एक ब्राह्मणना पुत्रने, एक एक क्षत्रियना पुत्रने, एक एक वैश्यना पुत्रने तथा एक एक शूद्रना पुत्रने पकडावतो हतो. पकडावीने तेमना जीवताना ज हृदयना मांसने ग्रहण करतो हतो. ग्रहण करीने जितशत्रु राजानी शांतिने माटे होम करतो हतो.

मू०—तए णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठमीचोद्दसीसु दुवे दुवे माहणखत्तियवेससुद्दे, चोण्हं मासाणं चत्तारि चत्तारि, छण्हं मासाणं अट्ठ अट्ठ, संवच्छरस्स सोलस सोलस, जाहे जाहे वि य णं जियसत्तू राया परबलेणं अभिजुंजइ ताहे ताहे वि य णं से महेसरदत्ते पुरोहिए अट्ठसयं माहणदारगाणं अट्ठसयं खत्तियदारगाणं अट्ठसयं वइस्सदारगाणं अट्ठसयं सुद्दारगाणं पुरिसेहिं गिण्हावेति, गिण्हावित्ता तेसिं जीवंताणं चेव हिययउंडीओ गिण्हावेति, गिण्हावित्ता जियसत्तुस्स

रन्नो संतिहोमं करेति । तते णं से परबले खिप्पामेव विद्धंसिज्जइ वा पडिसेहिज्जइ वा ॥ २४ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते महेश्वरदत्त पुरोहित आठम अने चौदशने दिवसे बब्बे ब्राह्मणना, क्षत्रियना, वैश्यना अने शूद्रना बाळकोने पकडावतो हतो, चार मासे चार चार ब्राह्मणादिकना बाळकोने, छ मासे आठ आठ बाळकोने अने वरसे सोळ सोळ बाळकोने तथा ज्यारे ज्यारे जितशत्रु राजाने शत्रुना सैन्य साथे युद्धनो प्रसंग आवतो त्यारे त्यारे ते महेश्वरदत्त पुरोहित एकसो ने आठ ब्राह्मणना बाळकोने, एकसो ने आठ क्षत्रियना बाळकोने, एकसो ने आठ वैश्यना बाळकोने अने एकसो ने आठ शूद्रना बाळकोने राजपुरुषो पासे पकडावतो हतो. पकडावीने ते बाळकोना जीवतां ज हृदयमांथी मांसनी पेशीओ कढावतो हतो. कढावीने जितशत्रु राजानी शांतिने निमित्ते होम करतो हतो. तेथी ते शत्रुनुं सैन्य शीघ्रपणे नाश पामतुं हतुं, अथवा छिन्न भिन्न थइने नाशी जतुं हतुं. २४.

मू०—तते णं से महेसरदत्ते पुरोहिए एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमाचारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता तीसं वाससयं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा पंचमाए पुढवीए उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमट्ठिईए नरगे उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते महेश्वरदत्त पुरोहित आवा कर्म (व्यापार) वाळो, आवा ज कर्ममां तत्पर, आवा ज कर्मनी विद्या (कळा) वाळो अने आवा ज आचरणवाळो सतो घणुं पापकर्म उपार्जन करीने त्रीश सो (त्रण हजार) वर्षनुं

उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने (भोगवीने) मरण समये मरण पामीने पांचमी नरकपृथ्वीने विषे उत्कृष्ट सत्तर सागरोपमनी स्थितिवाळो नारकी उत्पन्न थयो–एटली स्थितिवाळा नारकीओमां नारकीपणे उत्पन्न थयो.

मू०–से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव कोसंबीए नयरीए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स वसुदत्ताए भारियाए पुत्तत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—ते महेश्वरदत्तनो जीव ते पांचमी नरकपृथ्वीमांथी आंतरा रहित नीकळीने आ ज कौशांबी नगरीमां सोमदत्त पुरोहितनी भार्या वसुदत्ताना पुत्रपणे उत्पन्न थयो छे.

मू०–तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं नामधेज्जं करेंति –जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोमदत्तस्स पुरोहियस्स पुत्ते वसुदत्ताए भारियाए अत्तए तम्हा णं होउ अम्हं दारए वहस्सइदत्ते नामेणं ।

अर्थ—त्यारपछी ते बाळकना मातापिताए बार दिवस पुरा थया त्यारे तेनुं आ आवा प्रकारनुं (गुणवाळुं) नाम कर्युं (पाड्युं) के जे कारण माटे अमारो आ बाळक सोमदत्त पुरोहितनो पुत्र अने वसुदत्ता भार्यानो आत्मज छे, ते कारण माटे आ अमारो बाळक नामे करीने बृहस्पतिदत्त हो.

मू०–तते णं से वहस्सतिदत्ते दारए पंचधातिपरिग्गहिए जाव परिवड्ढइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते बृहस्पतिदत्त नामनो दारक पांच धात्रीओए ग्रहण करायो एटले पालन पोषण करायो सतो यावत् वृद्धि पाम्यो.

मू०—तते णं से वहस्सतिदत्ते दारए उम्मुक्कबालभावे जुव्वणगमणुपत्ते विण्णयपरिणयमेत्ते होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते बृहस्पतिदत्त दारक बाळभावथी एटले बाल्यावस्थाथी मुक्त थयो, यौवन वयने पाम्यो अने विज्ञानवाळो थयो सतो बुद्धिविगेरेना परिणामने पामेलो थयो.

मू०—से णं उदायणस्स कुमारस्स पियबालवयस्सए यावि होत्था सहजायए सहवड्ढीयए सहपंसुकीलियए ।

अर्थ—ते बृहस्पतिदत्त दारक उदायन कुमारनो प्रिय बाळमित्र पण थयो हतो. केमके ते तेनी साथे ज जन्म्यो हतो, साथे ज वृद्धि पाम्यो हतो अने साथे ज पांसुक्रीडा करतो हतो एटले धूळनी रमत करतो हतो.

मू०—तते णं से सयाणीए राया अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते ।

अर्थ—त्यारपछी ते शतानीक राजा एकदा कदाचित् काळधर्म (मरण) वडे युक्त थयो एटले मरण पाम्यो.

मू०—तते णं से उदायणकुमारे बहुराईसर जाव सत्थवाहप्पभिइहिं सद्धिं संपरिवुडे रोयमाणे

कंदमाणे विलवमाणे सयाणीयस्स रन्नो महया इड्डिसक्कारसमुदएणं नीहरणं करेति, बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेति ।

अर्थ—ते वखते ते उदायनकुमारे घणा राजा, ईश्वर यावत् सार्थवाह विगेरेनी साथे परिवर्या सता उभा रोता, आक्रंद करता अने विलाप करता सता शतानीक राजानुं मोटी ऋद्धि अने सत्कारना समुदायवडे नीहरण कर्युं एटले श्मशानमां लइ जवा माटे बहार काढ्या तथा घणां लोकसंबंधी मरणनां कार्यो कर्यां.

मू०—तते णं ते बहवे राईसर जाव सत्थवाहप्पभिई उदायणं कुमारं महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते घणा राजा, ईश्वर यावत् सार्थवाह विगेरेए ते उदायनकुमारनो मोटा राज्याभिषेके करीने अभिषेक कर्यो.

मू०—तते णं से उदायणे कुमारे राया जाते महया ।

अर्थ—त्यारपछी ते उदायनकुमार राजा थयो, अने महाहिमवान विगेरेनी जेवो मोटो सारभूत थयो.

मू—तते णं से बहस्सतिदत्ते दारए उदायणस्स रन्नो पुरोहियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु

सव्वभूमियासु अंतेउरे य दिन्नवियारे जाए यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते बृहस्पतिदत्त दारक उदायनराजाना पुरोहितकर्मने करतो सतो सर्व स्थानोने विषे, सर्व भूमिकाने विषे अने अंतःपुरने विषे पण इच्छा प्रमाणे गमनागमन करनारो थयो.

मू०—तते णं से वहस्सातिदत्ते पुरोहिए उदायणस्स रण्णो अंतेउरंसि वेलासु य अवेलासु य काले य अकाले य रात्रो य वियाले य पविसमाणे अन्नया कयाइं पउमावईए देवीए सद्धिं संपलग्गे यावि होत्था, पउमावईए देवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते बृहस्पतिदत्त पुरोहित उदायनराजाना अंतःपुरने विषे वेळाए एटले भोजन, शयन विगेरेना अवसरे, अवेळाए एटले भोजनादिकना अवसर विना, काळे एटले पहेला के त्रीजा पहोरे, अकाळे एटले मध्यान्हादिकने वखते, रात्रिने वखते तथा विकाळे एटले संध्याकाळे प्रवेश करतो हतो. तेथी एकदा कदाचित् पद्मावती राणीनी साथे आसक्त थयो. अने पद्मावती राणीनी साथे उदार एवा कामभोगने भोगवतो विचरवा लाग्यो–रहेवा लाग्यो.

मू०—इमं च णं उदायणे राया ण्हाए जाव विभूसिए जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ वहस्सातिदत्तं पुरोहियं पउमावतीदेवीए सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणं पासति, पासित्ता

आसुरुत्ते तिवलिं भिउडिं साहट्टु वहस्सतिदत्तं पुरोहियं पुरिसेहिं गिण्हावेति, गिण्हावित्ता जाव एएणं विहाणेणं वज्झं आणाविए ।

अर्थ—आ अवसरे उदायनराजा स्नान करी यावत् विभूषित थइ ज्यां पद्मावती देवी हती त्यां आव्यो, अने त्यां बृहस्पतिदत्त पुरोहितने पद्मावती देवीनी साथे उदार एवा कामभोग भोगवतो जोयो. जोइने तत्काळ ते राजा क्रोध पाम्यो. तेथी कपाळमां त्रण वळीयावाळी भृकुटि चडावीने ते बृहस्पतिदत्त पुरोहितने पुरुषो पासे एटले पोताना सेवको पासे पकडाव्यो. पकडावीने यावत् आवा (तमे जोया तेवा) प्रकारवडे तेनो वध करवानी आज्ञा आपी.

मू०—एवं खलु गोयमा ! वहस्सतिदत्ते पुरोहिए पुरापोराणाणं जाव विहरइ ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते बृहस्पतिदत्त पुरोहित पूर्वजन्ममां करेला जुनां पापकर्मना फळने भोगवतो विचरे छे–रहेलो छे.

मू०—वहस्सतिदत्ते णं भंते ! दारए इओ कालगए समाणे कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ? ।

अर्थ—गौतमस्वामीए पूछयुं के–हे भगवान ! ते बृहस्पतिदत्त नामनो दारक अहींथी मरण पाम्यो सतो क्यां एटले कइ गतिमां जशे ? अने क्यां उत्पन्न थशे ?

मू०—गोयमा ! वहस्सतिदत्ते णं दारए पुरोहिए चोसट्ठिं वासाइं परमाउयं पालइत्ता अज्जेव तिभागावसेसे दिवसे सूलीयभिन्ने कए समाणे कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए। संसारो तहेव पुढवी ।

अर्थ — हे गौतम ! बृहस्पतिदत्त दारक पुरोहित चोसठ वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने आजेज दिवसनो त्रीजो भाग बाकी रहेशे त्यारे शूळीथी भेदायो सतो मरण समये मरण पामीने आ रत्नप्रभा नामनी पहेली नरकपृथ्वीमां उत्पन्न थशे. ते ज रीते संसार साते पृथ्वीमां उत्पन्न थवा रूप कहेवो.

मू०—ततो हत्थिणाउरे नगरे मिगत्ताए पच्चायाइस्सति, से णं तत्थ वाउरितेहिं वहिए समाणे तत्थेव हत्थिणाउरे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए, बोहिं सोहम्मे कप्पे विमाणे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिति । निक्खेवो ॥ २५ ॥ पंचमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥

अर्थ—त्यांथी नीकळीने हस्तिनापुर नगरमां मृगपणे उत्पन्न थशे. त्यां ते शिकारीवडे हणायो सतो ते ज हस्तिनापुर नगरमां श्रेष्ठिना कुळने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थइ बोधि पामी सौधर्मकल्प विमानमां देव थशे. त्यांथी चवी महाविदेहक्षेत्रमां जन्म पामी दीक्षा लइ सिद्धिपदने पामशे. आ प्रमाणे आ अध्ययननो निक्षेप कहेवो.

इति बृहस्पतिदत्तनुं पांचमुं अध्ययन समाप्त थयुं. ५

॥ अथ षष्ठ नन्दिवर्धन अध्ययन ॥ ६ ॥

हवे छठ्ठा नंदिवर्धन अध्ययनने विषे कांइक लखे छे.

मू०—जइ णं भंते ! छट्ठस्स उक्खेवो ।

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के—हे भगवान ! जो पांचमा अध्ययननो आ उपर कह्या प्रमाणे अर्थ कह्यो छे, तो छठ्ठा अध्ययननो उत्क्षेप कहो.

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं महुरा नाम नयरी, भंडीरे उज्जाणे, सुदंसणे जक्खे, सिरीदामे राया, बंधुसिरी भारिया, पुत्ते णंदिवद्धणे कुमारे अहीणे जुवराया, तस्स सिरीदामस्स सुबंधु नामं अमच्चे होत्था सामदंडभेदउवप्पयाणनीईसुपउत्तनयाविहन्नू ।

अर्थ—सुधर्मास्वामी कहे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये मथुरा नामनी नगरी हती. ते नगरीनी बहार भंडीर नामनुं उद्यान हतुं. तेमां सुदर्शन नामे यक्ष हतो. ते मथुरा नगरीमां श्रीदाम नामे राजा हतो. तेने बंधुश्री नामे भार्या (राणी) हती. तेमने नंदीवर्धन नामनो पुत्र हतो, तेना शरीर तथा इंद्रियो हीनता रहित परिपूर्ण

हता, तथा ते युवराजनी पदवीने पामेलो हतो, ते श्रीदाम नामना राजाने सुबंधु नामनो प्रधान हतो. ते साम एटले प्रियवचन, दंड एटले शरीर अने धननुं हरण, भेद एटले स्वामी अने सेवकना चित्तनो भेद तथा उपप्रदान एटले इच्छित अर्थनुं दान, आ चार नीतिनो सारी रीते उपयोग करनार होवाथी नीतिना प्रकारने जाणनार हतो.

मू०—तस्स णं सुबंधुस्स अमच्चस्स बहुमित्ता नामं भारिया होत्था ।

अर्थ—ते सुबंधु अमात्यने बहुमित्रा नामनी भार्या हती.

मू०—तस्स णं सुबंधुस्स अमच्चस्स बहुमित्तापुत्ते नामं दारए होत्था अहीण० ।

अर्थ—ते सुबंधु अमात्यने बहुमित्रापुत्र नामनो दारक (पुत्र) हतो. तेना शरीर अने इंद्रियो हीनता रहित परिपूर्ण हतां.

मू०—तस्स णं सिरिदामस्स रण्णो चित्ते नामं अलंकारिए होत्था, सिरिदामस्स रन्नो चित्तं बहुविहं अलंकारियकम्मं करेमाणे सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमियासु य अंतेउरे य दिन्नवियारे यावि होत्था ।

अर्थ—ते श्रीदाम नामना राजाने चित्र नामनो अलंकार करनार (नापित) हतो. ते नापित श्रीदाम राजानुं विचित्र प्रकारे एटले आश्चर्यकारक अने घणा प्रकारनुं अलंकारकर्म एटले मुंडन आदिक कर्म करतो हतो, तेथी सर्व स्थानोने विषे

एटले राजाना शयनगृह, भोजनस्थान अने विचार करवाना स्थानोने विषे अथवा दाण विगेरे उपजना स्थानोने विषे तथा सर्व भूमिकाने विषे एटले राजमहेलना पहेलेथी साते माळने विषे (अथवा अमात्यादिक सर्व पदने विषे) तथा अंतःपुरने विषे राजानी आज्ञाथी इच्छा प्रमाणे विचरतो (फरतो) हतो, अथवा राजानी आज्ञाथी राजानी साथे विहार करतो हतो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं सामी समोसढे, परिसा निग्गया, राया वि निग्गओ, जाव परिसा पडिगया।

अर्थ—ते काळे ते समये स्वामी-श्रमण भगवान महावीरस्वामी उद्यानमां समवसर्या. तेमने वांदवा माटे नगरमांथी पर्षदा नीकळी, राजा पण नीकळ्यो. यावत् धर्मोपदेश श्रवण करी राजा तथा पर्षदाना लोको पाछा पोताने स्थानके गया.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणस्स जेट्ठे जाव रायमग्गं ओगाढे तहेव हत्थी आसे पुरिसे, तेसिं च णं पुरिसाणं मज्झगयं एगं पुरिसं पासति जाव नरनारिसंपरिवुडं।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान श्री महावीरस्वामीना मोटा शिष्य श्री गौतम अनगार यावत् राजमार्गमां अटन करता हता. त्यां तेमणे ते ज प्रमाणे (प्रथमनी जेम) घणा हाथी, घोडा अने पुरुषो जोया. ते पुरुषोनी मध्ये रहेला एक पुरुषने जोयो. यावत् ते पुरुष घणा पुरुषो अने स्त्रीओथी परिवरेलो हतो.

मू०—तते णं तं पुरिसं रायपुरिसा चच्चरंसि तत्तंसि अयोमयंसि समजोईभूयसिंहासणंसि निविसावेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पुरुषने राजपुरुषोए चत्वरमां (चौटामां) तपावेला लोढाना अग्निनी जेवा वर्णवाळा थयेला सिंहासनपर बेसाड्यो.

मू०—तयाणंतरं च णं पुरिसाणं मज्झगयं बहुहिं अयकलसेहिं तत्तेहिं समजोईभूएहिं अप्पेगइया तंबभरिएहिं अप्पेगइया तउयभरिएहिं अप्पेगइया सीसगभरिएहिं अप्पेगइया कलकल-भरिएहिं अप्पेगइया खारतेल्लभरिएहिं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचति ।

अर्थ—त्यारपछी घणा पुरुषोनी मध्ये रहेला ते पुरुषने लोढाना घणा कळशोने तपावी अग्नि समान वर्णवाळा करी तेमां केटलाकमां उकाळेला तांबानो रस भर्यो, केटलाकमां उकाळेला तरवानो रस भर्यो, केटलाकमां उकाळेला सीसानो रस भर्यो, केटलाकमां चूर्णादिकना उकाळेला जळ भर्या, अने केटलाकमां खार सहित उकाळेला तेल भर्या. आवा कळशोए करीने मोटा मोटा राज्याभिषेके करीने अभिषेक कर्यो.

मू०—तयाणंतरं च णं तत्तं अयोमयं समजोइभूयं अयोमयसंडासएणं गहाय हारं पिणद्धंति ।

तयाणंतरं च णं अद्धहारं जाव पट्टं मउडं ।

अर्थ—त्यारपछी तपावेलो अग्नि समान वर्णवाळो थयेलो लोढानो अढार सरनो हार लोढानी सांडसीवडे ग्रहण करीने तेना कंठमां पहेराव्यो. त्यारपछी तेवी ज रीते करेलो नव सरवाळो अर्धहार पहेराव्यो. यावत् (तेवो ज त्रण सरनो हार पहेराव्यो, तेवो ज प्रालंब एटले झुंबनक पहेराव्युं, तेवुं ज कटिसूत्र[1] पहेराव्युं,) तेवुं ज पट्ट एटले ललाटनुं आभरण अने तेवां ज मुकुट विगेरे आभूषणो पहेराव्यां.

मू०—चिंता तहेव, जाव वागरेति ।

अर्थ—ते ज प्रमाणे चिंता[2] थइ, यावत् भगवाने कह्युं. अहीं आ प्रमाणे समजवुं—ते पुरुषने जोइ श्री गौतमस्वामीने जेम पहेला अध्ययनमां थयो हतो तेम विचार थयो के–में नरकनी पृथ्वी के नारकी जीवो जोया नथी, परंतु आ पुरुष नरकना जेवी वेदनाने वेदे छे. एम विचारी पोताने तृप्ति थाय तेटलो आहार तथा जळ ग्रहण करी ज्यां श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामी हता, त्यां आव्या. इत्यादि कहेवुं. पछी गौतमस्वामीए भगवानने पूछयुं के–हे भगवन्! ते पुरुष पूर्व भवमां कोण हतो ? त्यारे भगवाने कह्युं के—

मू०—एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे

१ कंदोरो. २ विचार.

सीहपुरे नामं नगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रने विषे सिंहपुर नामनुं नगर हतुं. ते ऋद्धिवाळुं, निर्भय अने समृद्धिवाळुं हतुं.

मू०—तत्थ णं सीहपुरे नयरे सीहरहे नामं राया होत्था ।

अर्थ—ते सिंहपुर नगरमां सिंहरथ नामे राजा हतो.

मू०—तस्स णं सीहरहस्स रन्नो दुज्जोहणे नामं चारगपालए होत्था अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ।

अर्थ—ते सिंहरथ राजाने दुर्योधन नामनो गुप्तिपालक[1] हतो. ते अधर्मी हतो यावत् बीजानुं खराब करीने पोते आनंद पामनार हतो.

मू०—तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स इमेयारूवे चारगभंडे होत्था—बहवे अयकुंडीओ अप्पेगइयाओ तंबभरियाओ अप्पेगइयाओ तउयभरियाओ अप्पेगइयाओ सीसगभरियाओ अप्पेगइयाओ कलकलभरियाओ अप्पेगइयाओ खारतेल्लभरियाओ अगणिकायंसि अद्दहिया चिट्ठंति ।

---

१ केदखानानो उपरी—जेलर.

अर्थ—ते दुर्योधन नामना गुप्तिपालक पासे आवा प्रकारना केदखानाना उपकरणो हता—घणी लोढानी कुंडीओ हती. तेमां केटलीक उकाळेला तांबाना रसनी भरेली हती, केटलीक तरवाना रसनी भरेली हती, केटलीक सीसाना रसनी भरेली हती, केटलीक चूर्ण मिश्रित उकाळेला जळनी भरेली हती, अने केटलीक खार युक्त तेलनी भरेली हती. ते सर्व कुंडीओ अग्नि उपर उकळती ज रहेली हती–राखवामां आवी हती.

मू०–तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालस्स बहवे उट्टियाओ आसमुत्तभरियाओ अप्पेगइयाओ हत्थिमुत्तभरियाओ अप्पेगइयाओ गोमुत्तभरियाओ अप्पेगइयाओ महिसमुत्तभरियाओ अप्पेगइयाओ उट्टमुत्तभरियाओ अप्पेगइयाओ अयमुत्तभरियाओ अप्पेगइयाओ एलमुत्तभरियाओ बहुपडिपुन्नाओ चिट्ठंति।

अर्थ—ते दुर्योधन नामना गुप्तिपालकने घणा माटीना कुंडाओ अश्वना मूत्रथी भरेला हता, केटलाक हाथीना मूत्रथी भरेला हता, केटलाक बळदना मूत्रथी भरेला हता, केटलाक पाडाना मूत्रथी भरेला हता, केटलाक उंटना मूत्रथी भरेला हता, केटलाक बकराना मूत्रथी भरेला हता, अने केटलाक घेटाना मूत्रथी भरेला हता. ए रीते संपूर्ण भरेला हता.

मू०–तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स बहवे हत्थुं (त्थं) डुयाण य पायंदुयाण य

हडीण य नियलाण य संकलाण य पुंजा निगरा य सन्निक्खित्ता चिट्ठंति ।

अर्थ—ते दुर्योधन गुप्तिपालकनी पासे घणा हस्तांदुक एटले हाथमां नांखवाना लाकडाना अने लोढानां बंधनो हतां, पादांदुक एटले पगना बंधन हतां, हेडो हती, निगड (बेडीओ) हती अने सांकळो हती. आ सर्व वस्तुओना घणा पुंज अने निकरो तेनी पासे रहेला हता.

मू०—तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स बहवे वेणुलयाण य वेत्तलयाण य चिंचालयाण य छियाणं कसाण य वायरासीण य पुंजा णिगरा चिट्ठंति ।

अर्थ—ते दुर्योधन गुप्तिपालकनी पासे (केदीओने मारवा माटे) घणी वांसनी लाकडीओ, नेतरनी सोटीओ, आंबलीनी सोटीओ, कोमळ चर्मनी चाबुको, चर्मनी सोटीओ अने वटवृक्षादिकनी छालनी सोटीओ विगेरेना घणा पुंज (ढग) अने निकर (समूह) रहेला हता.

मू०—तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स बहवे सिलाण य लउडाण य मोग्गराण य कनंगराण य पुंजा णिगरा चिट्ठंति ।

१ शिखरबंध ढगलो. २ छुटो छवायो समूह.

अर्थ—ते दुर्योधन गुप्तिपालकनी पासे घणी शिलाओ, लाकडीओ, मुद्गरो अने [1]कनंगरो अथवा कानंगरो एटले नाना नांगरो विगेरेना घणा पुंज (ढग) अने निकर (समूह) रहेला हता.

तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स वहवे तंताण य वरत्ताण य वागरजाण य वालयसुत्त-रज्जूण य पुंजा णिगरा संचिट्ठंति ।

अर्थ—ते दुर्योधन गुप्तिपालकनी पासे घणी तांतो एटले चामडीमां पेसी जाय तेवी झीणी दोरी, वरत्रा एटले जाडी दोरी, चर्मनी दोरी तथा वाळ अने सुतरनां दोरडांओनां घणां पुंज (ढग) अने निकर (समूह) रहेला हता.

मू०—तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स वहवे असिपत्ताण य करपत्ताण य खुरपत्ताण य कलंवचीरपत्ताण य पुंजा णिगरा चिट्ठंति ।

अर्थ—ते दुर्योधन गुप्तिपालकनी पासे खड्गो, करवतो, क्षुर (सजाया जेवा शस्त्रो) अने कलंबचीर नामना शस्त्रोना घणा पुंज (ढग) अने निकर (समूह) रहेला हता.

मू०—तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स वहवे लोहखीलाण य कडगसक्कराण य

१ क एटले पाणी तेने माटे नांगर एटले नहाणने जळमां स्थिर करवा माटे नांगर नामना पत्थर.

चम्मपट्टाण य अल्लपल्लाण य पुंजा निगरा चिट्ठंति ।

अर्थ—ते दुर्योधन गुप्तिपालकनी पासे लोढाना खीला, वांसना खीला, चर्मना पट्टा एटले वाधरी अने अल्लपल्ल एटले वींछीना पुच्छनी जेवी आकृतिवाळा खीलाना घणा पुंज (ढग) अने निकर (समूह) रहेला हता.

मू०—तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स बहवे सूतीण य डंभणाण य कोट्टिल्लाण य पुंजा निगरा चिट्ठंति ।

अर्थ—ते दुर्योधन गुप्तिपालकनी पासे सोयो, डांभणां अने कोट्टिल्ल एटले लोढाना नाना मुद्गरोना घणा पुंज (ढग) अने निकर (समूह) रहेला हता.

मू०—तस्स णं दुज्जोहणस्स चारगपालगस्स बहवे सत्था (पच्छा) ण य पिप्पलाण य कुहाडाण य नहच्छेयणाण य दब्भातिणाण य पुंजा निगरा चिट्ठंति ।

अर्थ—ते दुर्योधन गुप्तिपालकनी पासे प्रच्छनक नामनां शस्त्र, नाना क्षुर (सजाया), कुहाडा, नखच्छेदनक (नेरणी) अने दर्भ (डाभ) विगेरेना घणा पुंज (ढग) अने निकर (समूह) रहेला हता.

मू०—तते णं से दुज्जोहणे चारगपाले सीहरथस्स रन्नो बहवे चोरे य पारदारिए य गंठिभेदे

य रायावकारी य अणधारए य बालघातए य विसंभघाते य जुतिकरे य खंडपट्टे य पुरिसेहिं गिण्हावेति, गिण्हावित्ता उत्ताणए पाडिति, लोहदंडेणं मुहं विहाडेइ, अप्पेगतिए तत्ततंबं पज्जेति, अप्पेगतिया तउयं पज्जेति, अप्पेगतिए सीसगं पज्जेति, अप्पेगतिए कलकलं पज्जेति, अप्पेगतिए खारतेल्लं पज्जेति, अप्पेगतियाणं तेणं चेव अभिसेयगं करेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते दुर्योधन गुप्तिपालक सिंहरथ राजाना घणा चोरोने, परस्त्रीने विषे लंपट थयेलाने, ग्रंथिभेद करनाराने, राजानो अपकार करनाराने, देवादारोने, बाळहत्या करनाराओने, विश्वासघात करनाराओने, जुगार रमनाराओने तथा धूर्त विगेरे लोकोने पुरुषो (सेवको) पासे पकडावतो हतो. पकडावीने तेमने चत्ता पाडतो हतो. पछी लोढाना दंडवडे तेमना मुखने फाडतो हतो. फाडीने केटलाकने तपावेला (उकाळेला) तांबाना रसने पातो हतो, केटलाकने तरवुं पातो हतो, केटलाकने सीसुं पातो हतो, केटलाकने चूर्ण मिश्रित उकाळेला जळने पातो हतो, अने केटलाकने खारयुक्त उकाळेला तेल पातो हतो. तेम ज केटलाकने ते ज उकाळेला तांबा विगेरेना रसवडे अभिषेक करतो हतो—स्नान करावतो हतो.

मू०—अप्पेगतिए उत्ताणए पाडेति, पाडित्ता आसमुत्तं पज्जेति, अप्पेगतिए हत्थिमुत्तं पज्जेति, जाव एलमुत्तं पज्जेति। अप्पेगतिए हेट्ठामुहे पाडेति, पाडित्ता छडछडस्स वम्मावेति, अप्पेगतिए तेणं

चेव उवीलं दलयाति। अप्पेगतियाणं हत्थुंडुयाइं वंधावेति, अप्पेगतियाणं पायंदुडियं बंधावेति, अप्पेगइयाणं हडिवंधणं करेति, अप्पेगइयाणं नियडवंधणं करेति, अप्पेगइयाणं संकोडियमोडियं करेति, अप्पेगइयाणं संकलवंधणं करेति, अप्पेगतिए हत्थच्छिन्नए करेति जाव सत्थोवाडियं करेति, अप्पेगतिए वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि य हणावेति, अप्पेगइए उत्ताणए कारवेति, उरे सिलं दलावेति, तओ लउलं छुभावेइ, छुभावित्ता पुरिसेहिं उक्कंपावेति। अप्पेगइए तंतीहि य जाव सुत्तरज्जूहि य हत्थेसु पाएसु य वंधावेइ, अगडंसि ओचूलयालगं पज्जेति, अप्पेगतिए असिपत्तेहि य जाव कलंवचीरपत्तेहि य पच्छावेंति खारतेल्लेणं अब्भिंगावेति, अप्पेगतियाणं निलाडेसु य अवदूसु य कोप्परेसु य जाणुसु य खलुएसु य लोहकीलए य कडसक्कराओ य दलावेति, अलिए भंजावेंति, अप्पेगइयाणं सुतीओ य दंभणाणि य हत्थंगुलियासु य पायंगुलियासु य कोट्टिल्लएहिं आउडावेति, आउडावित्ता भूमिं कंडुयावेति, अप्पेगइयाणं सत्थेहि य जाव नहच्छेदणेहि य अंगं पच्छावेइ दब्भेहि य कुसेहि य उल्लवद्धेहि य वेढावेति, आयवंसि दलयाति, सुक्के समाणे चडचडस्स उप्पाडेंति।

अर्थ—केटलाकने चत्ता पाडतो हतो, पाडीने तेमने घोडानुं मूत्र पातो हतो, केटलाकने हाथीनुं मूत्र पातो हतो, यावत् केटलाकने घेटानुं मूत्र पातो हतो. केटलाकने उंधा मुखे पाडतो हतो. पाडीने सडसड शब्द पूर्वक वमन करावतो हतो. केटलाकना मस्तकपर ते ज मूत्रना कुंडाओ मूकी मुगटने करतो हतो, केटलाकने हस्तबंधनवडे बांधतो हतो, केटलाकने पादबंधनवडे बांधतो हतो, केटलाकने हेडनुं बंधन करतो हतो, केटलाकने निगड (बेडी)नुं बंधन करतो हतो, केटलाकना अंगनो संकोच करी तथा मरडीने बांधतो हतो, केटलाकने सांकळनुं बंधन करतो हतो, केटलाकना हाथ छेदतो हतो, यावत् (केटलाकना पाद छेदतो हतो, केटलाकना नाक, ओष्ठ, जीभ अने मस्तकने छेदतो हतो) केटलाकना अंगोने खड्गादिक शस्त्रोथी विदारतो हतो. केटलाकने वांसनी लाकडीओथी यावत् (नेतरनी सोटीओथी, आंबलीनी सोटीओथी, कोमळ चर्मनी चाबकोथी, चर्मनी सोटीओथी) अने वटवृक्षादिकनी छालनी सोटीओथी मार मरावतो हतो, केटलाकने चत्ता करावतो हतो अने पछी तेमनी छाती उपर मोटी शिला मूकावतो हतो, तेना उपर एक मोटुं लाकडुं मुकावतो हतो, लाकडुं मुकावीने तेने बे पुरुषो पासे कंपावावतो हतो एटले के ते लाकडाना बे छेडा उपर बे पुरुषोने बेसाडी तेमनी पासे ते लाकडाने एवी रीते दबावरावतो हतो के जेथी ते अपराधीना (छातीना) हाडकां भांगी जतां हतां. केटलाकने तांतोवडे एटले चामडीमां पेसी जाय तेवी झीणी दोरीवडे, यावत् (वरत्रावडे एटले जाडी दोरीवडे, चर्मनी दोरीवडे, वाळना दोरडावडे) अने सुतरना दोरडावडे हाथ अने पगने बंधावतो हतो, बंधावीने कुवामां उंधे मस्तके लटकावी डुबाववुं अने खेंचवुं करावतो हतो. तेम करीने तेमने पाणी पीवरावतो हतो.

केटलाकने खड्गवडे यावत् (करवतवडे, चुरवडे एटले सजायावडे) अने कलंबचीर नामना शस्त्रवडे छेदावतो हतो. छेदावीने तेमां चारयुक्त तेलनुं अभ्यंगन करावतो हतो (चोपडावतो हतो). केटलाकने कपाळमां, कंठमां, कोणीमां, ढींचणमां अने पगना कांडामां लोढाना खीला अने वांसना खीला ठोकावतो हतो, तथा वींछीओ करडावतो हतो एटले तेमना शरीरमां वींछीओना आंकडा खोसावतो हतो. केटलाकना हाथनी आंगळीओमां तथा पगनी आंगळीओमां सोयोने अने सोय जेवा डंभनकने एटले लोढानी खीलीओने मुद्गरवडे ठोकावतो हतो. ठोकावीने तेमने महा दुःख उत्पन्न करवा माटे ते ज हाथ-पगवडे पृथ्वीने खणावतो हतो. केटलाकना शस्त्रवडे यावत् (चुरवडे, कुहाडावडे अने) नेरणीवडे अंगने छेदावतो हतो. पछी तेने समूला डाभवडे, मूळ विनाना डाभवडे तथा आर्द्र वाधीवडे बंधावतो हतो. बंधावीने तेमने तडकामां सुकवावतो हतो. ज्यारे ते सुकाइ जता त्यारे तेमनी चामडीने चडचड चीरावतो हतो.

मू०—तते णं से दुज्जोहणे चारगपालए एयकम्मे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता एगतीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमठितीएसु णेरइत्ताए उववन्ने ॥ २६ ॥

अर्थ—त्यारपछी ते दुर्योधन गुप्तिपालक आवां कर्मवडे अत्यंत घणां पापकर्मोने उपार्जन करी (बांधी) एकत्रीश सो (३१००) वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळी (भोगवी)ने मरण समये मरण पामीने छठी नरकपृथ्वीमां उत्कृष्ट बावीश

सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकीओने विषे नारकीपणे उत्पन्न थयो. २६

मू०—से णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव महुराए णगरीए सिरीदामस्स रण्णो बंधुसिरीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—ते छट्ठी नरकपृथ्वीमांथी आंतरा रहित नीकळीने ते (दुर्योधननो जीव) आ ज मथुरा नगरीमां श्रीदाम राजानी बंधुश्री नामनी राणीनी कुक्षिने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थयो.

मू०—तते णं बंधुसिरी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव दारगं पयाया ।

अर्थ—त्यारपछी ते बंधुश्री राणीए नव मास बराबर परिपूर्ण थया त्यारे यावत् पुत्रने प्रसव्यो.

मू०—तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो निव्वत्तबारसाहे इमं एयाणुरूवं नामधेज्जं करेंति—होऊ णं अम्हं दारगे नंदिसेणे नामेणं ।

अर्थ—त्यारपछी ते पुत्रना मातापिताए बार दिवस पूरा थया त्यारे तेनुं आ आवा प्रकारनुं नाम पाड्युं.—आ अमारो पुत्र नामवडे नंदीसेन हो.

१ आरंभमां नंदिवर्धन नाम आप्युं छे. अध्ययन पण ए ज नामनुं छे. अहीं नंदीसेन नाम आप्युं छे. ते एक ज समजवुं.

मू०—तते णं से नंदीसेणे कुमारे पंचधातीपरिवुडे जाव परिवुड्ढइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंदीसेन कुमार पांच धात्रीवडे परिवर्यो सतो यावत् वृद्धि पाम्यो.

मू०—तते णं से नंदिसेणे कुमारे उम्मुक्कबालभावे जाव विहरति जोव्वणगमणुप्पत्ते जुवराया जाते यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंदीसेन कुमार बाल्यावस्थाथी मुक्त थयो सतो यावत् विचरतो हतो, तथा युवावस्थाने पाम्यो सतो युवराज पण थयो-युवराजनी पदवीने पाम्यो.

मू०—तते णं से णंदिसेणे कुमारे रज्जे य जाव अंतेउरे य मुच्छिते इच्छाति सिरिदामं रायं जीवियातो ववरोवित्तए सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंदीसेन कुमार राज्यने विषे यावत् अंतःपुरने विषे मूर्छित एटले लुब्ध थयो सतो श्रीदाम राजाने जीवितथी रहित करवाने तथा पोते ज राज्यलक्ष्मीने पोतानी करवाने अने पाळवाने एटले भोगववाने विचरवा माटे इच्छवा लाग्यो.

मू०—तते णं से णंदिसेणे कुमारे सिरीदामस्स रन्नो बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि

य पडिजागरमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंदीसेन कुमार श्रीदाम राजाना घणा आंतरा एटले अवसरने, अन्प परिवाररूप छिद्रने तथा निर्जनतारूप विवरोने जोतो सतो रहेवा लाग्यो.

मू०—तते णं से नंदिसेणे कुमारे सिरीदामस्स रन्नो अंतरं अलभमाणे अन्नया कयाइं चित्तं अलंकारियं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! सिरीदामस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु य सव्वभूमीसु य अंतेउरे दिण्णवियारे सिरीदामस्स रन्नो अभिक्खणं अभिक्खणं अलंकारियं कम्मं करेमाणे विहरसि, तण्णं तुम्हं देवाणुप्पिया ! सिरीदामस्स रन्नो अलंकारियं कम्मं करेमाणे गीवाए खुरं निवेसेहि, तो णं अहं तुम्हं अद्धरज्जयं करेस्सामि, तुम्हं अम्हेहिं सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरिस्ससि ।

अर्थ—त्यारपछी ते नंदीसेन कुमारे श्रीदाम राजानुं आंतरुं (तेने मारवानो अवसर) नहीं पामवाथी एकदा कदाचित् चित्र नामना अलंकारिक (नापित) ने बोलाव्यो. बोलावीने तेने आ प्रमाणे कह्युं—हे देवानुप्रिय ! तुं श्रीदाम राजाना सर्व स्थानोने विषे एटले राजाना शयनगृह, भोजनगृह अने विचार करवानां स्थानोने विषे अथवा दाणविगेरे उपजना

स्थानोने विषे तथा सर्व भूमिकाने विषे एटले राजमहेलना पहेलेथी साते माळने विषे अथवा अमात्यादिक सर्व पदने विषे तथा अंतःपुरने विषे राजानी आज्ञाथी इच्छा प्रमाणे विचरतो सतो श्रीदाम राजानुं वारंवार अलंकार (मुंडन विगेरे) नुं कार्य करतो रहे छे. तेथी हे देवानुप्रिय ! जो तुं श्रीदाम राजानुं अलंकार (मुंडन) संबंधी कर्म करती वखते तेनी ग्रीवाने विषे क्षुर (सजायो) स्थापन करे एटले क्षुरवडे तेनी ग्रीवाने कापी नांखे तो हुं तने अर्ध राज्य आपुं, जेथी तुं अमारी साथे उदार कामभोगने भोगवतो विचरीश–रहीश.

मू०–तते णं से चित्ते अलंकारिए नंदिसेणस्स कुमारस्स वयणं एयमट्ठं पडिसुणेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते चित्र नामना अलंकारके (नापिते) नंदीसेन कुमारनुं आ अर्थवाळुं वचन अंगीकार कर्युं.

मू०–तए णं तस्स चित्तस्स अलंकारियस्स इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–जइ णं मम सिरीदामे राया एयमट्ठं आगमेति तते णं मम ण णज्जति केणाति असुभेणं कुमरणेणं मारिस्सति ? त्ति कट्टु भीए जेणेव सिरीदामे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिरीदामं रायं रहस्सियगं करयल एवं वयासी—

अर्थ—त्यारपछी ते चित्र अलंकारिकने आवा प्रकारनो यावत् विचार उत्पन्न थयो.—जो मारा आ अर्थ (कार्य)ने श्रीदाम राजा जाणे तो हुं नथी जाणतो के मने केवी जातना अशुभ कुमरणवडे मारे ? आ प्रमाणे विचार करी भय

पामेलो ते (चित्र) ज्यां श्रीदाम राजा हतो त्यां आव्यो. आवीने तेणे श्रीदाम राजाने एकांतमां छानी रीते बे हाथ जोडी आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—एवं खलु सामी ! णंदिसेणे कुमारे रज्जे य जाव मुच्छिते इच्छति तुब्भे जीवियातो ववरोवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! नंदीसेन कुमार राज्यने विषे यावत् मूर्छित (लुब्ध) थयो छे, तेथी ते तमने जीवितथी दूर करी पोते ज राज्यलक्ष्मीने करतो अने पाळतो सतो विचरवाने इच्छे छे.

मू०—तते णं से सिरिदामे राया चित्तस्स अलंकारियस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव साहट्टु णंदिसेणं कुमारं पुरिसेहिं सद्धिं गिण्हावेति, गिण्हावित्ता एएणं विहाणेणं वज्झं आणवेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रीदाम राजा चित्र अलंकारिकनी पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळी हृदयमां धारी तत्काळ क्रोध पाम्यो, यावत् भृकुटि चडावी तेणे नंदीसेन कुमारने सेवको पासे पकडाव्यो. पकडावीने आवा (तमे जोया तेवा) प्रकारवडे तेनो वध करवानी आज्ञा आपी छे.

मू०—तं एवं खलु गोयमा ! णंदिसेणे पुत्ते जाव विहरति ।

अर्थ—तेथी करीने आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ते नंदीसेन पुत्र (कुमार) यावत् आवा प्रकारनुं दुःख अनुभवतो रहेलो छे.

मू०—नंदिसेणे कुमारे इओ चुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिइ?।

अर्थ—गौतम गणधरे भगवानने पूछयुं के—हे भगवन्! ते नंदीसेन कुमार अहींथी चवीने मरण समये मरण पामीने क्यां जशे? अने क्यां उत्पन्न थशे?

मू०—गोयमा! णंदिसेणे कुमारे सट्ठिं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, संसारो तहेव।

अर्थ—श्री महावीरस्वामीए उत्तर आप्यो के—हे गौतम! ते नंदीसेन कुमार साठ वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने (भोगवीने) मरण समये मरण पामीने आ रत्नप्रभा नामनी पहेली नरक पृथ्वीने विषे (नारकीपणे उत्पन्न थशे). विगेरे सर्व संसार ते ज प्रमाणे कहेवो एटले के साते नरकपृथ्वीमां अनुक्रमे जशे. ए सर्व अधिकार प्रथम अध्ययनमां कह्या प्रमाणे कहेवो.

मू०—ततो हत्थिणाउरे णगरे मच्छत्ताए उववज्जिहिति, से णं तत्थ मच्छीएहिं वधिए समाणे तत्थेव सेट्ठिकुले बोहिं सोहम्मे कप्पे महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति

परिनिव्विहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ।

अर्थ—त्यारपछी (नरकमांथी नीकळीने) हस्तिनापुर नामना नगरमां (ते नंदीसेननो जीव) मत्स्यपणे उत्पन्न थशे. त्यां ते मच्छीमारोवडे वध करायो सतो ते ज हस्तिनापुर नगरमां श्रेष्ठीना कुळमां उत्पन्न थशे. त्यां युवावस्थाने पामी प्रतिबोध पामी दीक्षा ग्रहण करी सौधर्मकल्प नामना पहेला देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां उच्च कुळमां उत्पन्न थइ युवावस्थाने विषे दीक्षा ग्रहण करी 'सेत्स्यति' एटले कृतकृत्य (कृतार्थ) थशे, 'भोत्स्यते' एटले केवळज्ञानवडे सर्व पदार्थोने जाणशे, 'मोक्ष्यति' एटले सर्व कर्मथी मुक्त थशे, तथा 'परिनिर्वास्यति' एटले समग्र कर्मोए करेला संतापे करीने रहित थशे, अर्थात् सर्व दुःखोनो अंत (विनाश) करशे.

मू०—एवं खलु जंबू ! निक्खेवो छट्ठस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ २७ ॥

। छट्ठमज्झयणं सम्मत्तं[1] । ६.

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! छठ्ठा अध्ययननो निक्षेप (निगमन) यावत् आ अर्थ भगवाने कह्यो छे. एम हुं कहुं छुं, एटले भगवान श्री महावीरस्वामीनी पासे आ वृत्तांत जाणीने में तमने ते प्रमाणे कह्युं छे.

आ प्रमाणे छठ्ठा अध्ययननी व्याख्यामां नंदीवर्धननो अधिकार समाप्त थयो. ६.

१ समाप्ति.

अथ सप्तम उंबरदत्त नामनुं अध्ययन.

हवे आ सातमा उंबरदत्त नामना अध्ययनने विषे कांइक लखे छे.

मू०–जति णं भंते ! उक्खेवो सत्तमस्स ।

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के–हे भगवन् ! जो छठा अध्ययननो आ तमे कह्यो ते प्रमाणे अर्थ कह्यो छे, तो सातमा अध्ययननो उत्क्षेप (प्रस्तावना) कहो.

मू०–एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं पाडलसंडे णगरे, वणसंडे नाम उज्जाणे, उंबरदत्तो जक्खो !

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळने विषे ते समयने विषे पाडलखंड नामनुं नगर हतुं, त्यां वनखंड नामनुं उद्यान हतुं, तेमां उंबरदत्त नामनो यक्ष हतो एटले उंबरदत्त नामनुं यक्षायतन हतुं.

मू०–तत्थ णं पाडलसंडे णगरे सिद्धत्थे राया ।

अर्थ—ते पाडलखंड नगरमां सिद्धार्थ नामे राजा हतो.

मू०—तत्थ णं पाडलसंडे णगरे सागरदत्ते सत्थवाहे होत्था अड्ढे, गंगदत्ता भारिया ।

अर्थ—ते पाडलखंड नगरमां सागरदत्त नामे सार्थवाह हतो. ते ऋद्धिमंत हतो. तेने गंगदत्ता नामनी भार्या हती.

मू०—तस्स णं सागरदत्तस्स पुत्ते गंगदत्ताए भारियाए अत्तए उंबरदत्ते नामं दारए होत्था अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे ।

अर्थ—ते सागरदत्त सार्थवाहनो पुत्र गंगदत्ता भार्यानो आत्मज उंबरदत्त नामनो दारक हतो. तेना पांचे इंद्रियो अने शरीर हीनता रहित परिपूर्ण हतां.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समोसरणं जाव परिसा पडिगया ।

अर्थ—ते काळे ते समये (ते नगरना उद्यानमां) श्री महावीरस्वामी समवसर्या. यावत् पर्षदा आवीने पाछी पोताने स्थानके गइ.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं भगवं गोयमं तहेव जेणेव पाडलसंडे णगरे तेणेव उवागच्छति, पाडलसंडं णगरं पुरत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसति ।

अर्थ—ते काळे ते समये भगवान गौतमस्वामी ते ज प्रमाणे एटले प्रथम अध्ययनमां कह्या प्रमाणे भगवाननी आज्ञा

लइन ज्यां पाडलखंड नगर हतुं, तेना पूर्व दिशाना दरवाजामां प्रवेश करता हता.

मू०—तत्थ णं पासति एगं पुरिसं कच्छुल्लं कोढियं दोउयरियं भगंदरियं अरिसिल्लं कासिल्लं सासिल्लं सोगिलं सूयमुहं सूयहत्थं सूयपायं सडियहत्थंगुलियं सडियपायंगुलियं सडियकन्ननासियं रसीयाए य पूईएण य थिविथिवितवणमुहकिमिउत्तयंतपगलंतपूयरुहिरं लालापगलंतकन्ननासं अभिक्खणं अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमियकवले य वममाणं कट्ठाइं कलुणाइं विसराइं कूयमाणं मच्छियाचडगरपहकरेणं अण्णिज्जमाणमग्गं फुट्टहडाहडसीसं दंडिखंडवसणं खंडमल्लगखंडघडहत्थगयं गेहे गेहे देहबलियाए वित्तिं कप्पेमाणं पासति ।

अर्थ—त्यां (ते नगरना मार्गमां) ते गौतमस्वामीए एक पुरुष जोयो. ते पुरुषने खरजनो व्याधि हतो, कोढनो व्याधि हतो, जलोदरनो व्याधि हतो, भगंदरनो व्याधि हतो, अर्शनो व्याधि हतो, कास (उधरस) नो व्याधि हतो, श्वासनो व्याधि हतो, तथा तेने सोजा चडेला हता, ते आ प्रमाणे:—तेना मुखपर सोजा चडेला हता, हाथपर सोजा चड्या हता, पग सोजावाळा हता, तेना हाथनी आंगळीओ सडेली हती, पगनी आंगळीओ सडी गइ हती, तथा तेना कान अने नाक पण सडी गयां हतां, तेना शरीरमांथी रसी अने परु नीकळतुं हतुं, तेना शरीरमां घणां व्रणो हतां, ते व्रणोना

मुखमां कीडाओ खदबदता हता तेथी अत्यंत पीडा थती हती, तथा तेमांथी परु अने लोही नीकळतुं हतुं, तेना कान अने नासिकामांथी लाळ (रसी) नीकळती हती, ते वारंवार परुना कोगळा, रुधिरना कोगळा अने कृमिना कोगळाने (मुखमांथी) वमन करतो हतो, ते कष्टकारक, करुणा (दया) उपजावे तेवा अने नीरस शब्दने बोलतो हतो, मार्गमां माखीओनो विस्तारवाळो (मोटो) समूह तेनी पाछळ अनुसरतो हतो–जतो हतो (तेनी चोतरफ माखीओ बणबणती हती), केशनो समूह फुटेलो होवाथी तेना मस्तकपरना केशो अत्यंत विखरायेला हता, तेणे दांडीयुं करेलुं अने फाटेलुं वस्त्र पहेरेलुं हतुं, तेना हाथमां फुटेलुं ठीबकुं अने फुटेलो घडो हतो, आवी रीतनो ते पुरुष घेर घेर देहबलिए[1] करीने आजीविकाने करतो फरतो हतो, तेने गौतमस्वामीए जोयो.

मू०—तदा भगवं गोयमं उच्चनीय जाव अडति, अहापजत्तं गिण्हति, गिण्हित्ता पाडलिसंडाओ नगराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव समणे भगवं (महावीरे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता गमणागमणाए पाडिक्कमइ, पडिक्कमइत्ता) भत्तपाणं आलोएइ, आलोइत्ता भत्तपाणं पडिदंसेति, पडिदंसित्ता समणेणं भगवया अब्भणुन्नाए समाणे जाव बिलमिव पन्नगभूते

[1] देहना पोषण माटे तेने बळिदान आपवुं जोइए तेथी ते देहबलि एटले भिक्षा कहेवाय छे.

(अप्पाणेणं आहारमाहारेइ) संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहराति ।

अर्थ—ते वखते भगवान गौतमस्वामी उंच, नीच विगेरे कुळने विषे यावत् भिक्षाने माटे अटन करता हता, तेमणे पोताने जोइए तेटलो आहार ग्रहण कर्यो, ग्रहण करीने पाडलखंड नगरमांथी बहार नीकळ्या. बहार नीकळीने ज्यां श्रमण भगवान (महावीरस्वामी हता त्यां आव्या. आवीने गमनागमननुं प्रतिक्रमण कर्युं एटले इर्यापथिकी प्रतिक्रमी. प्रतिक्रमीने) भक्तपाननी आलोचना करी, आलोचना करीने ते भक्तपान भगवानने बताव्या. बतावीने श्रमण भगवान महावीरस्वामीए आज्ञा अपाया सता यावत् बिलनी जेम सर्परूप (सर्प जेवा) तेमणे पोते आहार कर्यो, एटले के जेम सर्प बिलमां प्रवेश करती वखते (शरीर न घसाय माटे) ते बिलने स्पर्श कर्या विना अंदर पेसे छे, तेम भगवान गौतमस्वामी रसनो स्वाद लेवानी इच्छा नहीं होवाथी आहारने चावता नहोता, तेथी ते आहारनो स्पर्श कर्या विना ज आहार करता हता, अर्थात् रसना स्वादनी अपेक्षा विना ज आहार करता हता. अने पछी संयम तथा तपवडे पोताना आत्माने भावता सता विचरता हता–रहेला हता.

मू०—तते णं से भगवं गोयमे दोच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरसीए सज्झाए जाव पाडलिसंडं नगरं दाहिणिल्लेणं दुवारेणं अणुप्पविसाति, तं चेव पुरिसं पासाति कच्छुल्लं तहेव जाव संजमेणं तवसा विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते भगवान गौतमस्वामीए त्रीजी वखते छठ तपना पारणाने विषे पहेली पोरसीए सज्झाय ध्यान करी यावत् पाडलखंड नगरमां दक्षिण तरफना दरवाजावडे प्रवेश कर्यो, त्यां पण तेमणे ते ज पुरुष जोयो के जे खरज विगेरेना व्याधिवाळो हतो, ए सर्व हकिकत उपर प्रमाणे कहेवी. यावत् संयम अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता विचरता हता-रहेला हता.

मू०—तते णं से गोयमे तच्चं पि छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरसीए सज्झाए जाव पच्चत्थिमिल्लेणं दुवारेणं अणुपविसमाणे तं चेव पुरिसं कच्छुल्लं पासति ;

अर्थ—त्यारपछी ते गौतमस्वामीए त्रीजीवार छट्ठ तपना पारणाने विषे पहेली पोरसीए सज्झाय ध्यान करी यावत् पश्चिम दिशाना दरवाजावडे नगरमां प्रवेश करी ते ज पुरुष जोयो, के जे खरजना व्याधिवाळो विगेरे हतो.

मू०—चोत्थ छट्ठक्खमणपारणगंसि उत्तरेणं इमे अज्झत्थिए समुप्पन्ने अहो णं इमे पुरिसे पुरापोराणाणं जाव एवं वयासी—

अर्थ—चोथी वार पण ए ज रीते छट्ठना तपना पारणाने विषे उत्तर दिशाना दरवाजे प्रवेश करी ते ज पुरुषने तेवो ज जोइ गौतमस्वामीने आ प्रमाणे विचार उत्पन्न थयो के—अहो ! आ पुरुष पोताना पूर्वना जूना उपार्जन करेला पापना फळने भोगवे छे इत्यादि विचार करी यावत् भगवान पासे आवी आ प्रमाणे कह्युं.

मू०—एवं खलु अहं भंते ! छट्ठस्स पारणगंसि जाव रीयंते जेणेव पाडलसंडे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पाडलसंडं पुरच्छिमिल्लेणं दुवारेणं पविट्ठे । तत्थ णं एगं पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव कप्पेमाणं तं अहं दोच्च छट्ठपारणगंसि दाहिणिल्लेणं दुवारेणं तच्चछट्ठक्खमणपारणगंसि पच्चत्थिमेणं तहेव तं अहं चोत्थछट्ठपारणगंसि उत्तरदुवारेणं अणुप्पविसामि तं चेव पुरिसं पासामि कच्छुल्लं जाव वित्तिं कप्पेमाणे विहरति, चिंता मम पुव्वभव पुच्छा वागरेति ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे भगवन् ! हुं छट्ठ तपने पारणे यावत् अटन करतो ज्यां पाडलखंड नगर छे त्यां गयो हतो. त्यां जइने पाडलखंड नगरमां हुं पूर्व दिशाना दरवाजे पेठो हतो. त्यां एक पुरुषने में जोयो के जे खरजना व्याधिवाळो यावत् (भिक्षावृत्तिवडे) आजीविकाने करतो हतो. त्यारपछी हुं बीजा छट्ठने पारणे दक्षिण दिशाना दरवाजावडे, त्रीजा छट्ठ तपना पारणाने विषे पश्चिम दिशाना दरवाजावडे ते ज प्रमाणे में तेने जोयो. त्यारपछी चोथा छट्ठना पारणाने विषे उत्तर दिशाना दरवाजावडे नगरमां हुं पेठो. ते वखते पण ते ज पुरुषने में जोयो के जे खरज विगेरेना व्याधिवाळो हतो यावत् आजीविकाने करतो सतो विचरतो हतो. तेने जोइ मने विचार उत्पन्न थयो. आ प्रमाणे कही तेना पूर्वभवनो प्रश्न कर्यो, त्यारे भगवान श्रीमहावीरस्वामीए आ प्रमाणे कह्युं.

मू०—एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विजयपुरे नाम नगरे होत्था सिद्धत्थिमियसमिद्धे ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरत नामना क्षेत्रमां विजयपुर नामनुं नगर हतुं ते ऋद्धिवाळुं, निर्भय अने समृद्धिवाळुं हतुं.

मू०—तत्थ णं विजयपुरे नगरे कणगरहे नामं राया होत्था ।

अर्थ—ते विजयपुर नगरमां कनकरथ नामनो राजा हतो.

मू०—तस्स णं कणगरहस्स रन्नो धन्नंतरी नामं विज्जे होत्था अट्ठंगाउव्वेयपाढए, तं जहा—कुमारभिच्चं १ सालागे २ सल्लकहत्ते ३ कायातिगिच्छा ४ जंगोले ५ भूयविज्जे ६ रसायणे ७ वाजीकरणे ८ सिवहत्थे सुहहत्थे लहुहत्थे ।

अर्थ—ते कनकरथ राजाने धन्वंतरी नामनो वैद्य हतो. ते अष्टांग आयुर्वेदने एटले आठ अंगवाळा वैद्यकशास्त्रने भणेलो हतो. ते आठ अंग आ प्रमाणे.—कुमारभृत्य—कुमारनी एटले बाळकनी भृति एटले पोषणने विषे मुख्य छे. आ शास्त्र कुमारनुं पोषण करनार दूधना दोषोने शोधनारुं अने दोषवाळा दूधना कारणभूत व्याधिओनो नाश करनारुं होय छे.

१. शालाक्य–शलाकाना कर्मने प्रतिपादन करनारुं जे तंत्र एटले शास्त्र ते शालाक्य कहेवाय छे. आ शास्त्र कान, मुख विगेरेमां थता रोगोने तथा ऊर्ध्व जत्रुमां[1] थयेला रोगोने (सळीना प्रयोग वडे) नाश करनारुं होय छे. २. शल्यहत्य–शरीरमां कोइपण ठेकाणे पेठेला शल्यने नाश करनारुं एटले बहार काढी नांखनारुं जे शास्त्र ते शल्यहत्य कहेवाय छे. ३. कायचिकित्सा–ज्वरादिक रोगथी व्याप्त एवा शरीरनी चिकित्सा (रोगनी प्रतिक्रिया) जे शास्त्रमां कही होय छे, ते कायचिकित्सा कहेवाय छे. ते शास्त्र शरीरना मध्य भागमां (पेटमां) उत्पन्न थता ज्वर, अतिसार विगेरे व्याधिओनो नाश करनारुं होय छे. ४. जंगोल–विषनो घात करवानी क्रियाने कहेनारुं औषध जेमां बताव्युं होय ते जंगोल कहेवाय छे. ते शास्त्र सर्प, कीटक, करोळीया विगेरेना दंशनो नाश करनारुं तथा विविध प्रकारना विषना संयोगनो नाश करनारुं होय छे. ५. भूतविद्या–भूतादिकनो निग्रह करवानी विद्या जेमां कहेली होय छे ते भूतविद्या कहेवाय छे. ते शास्त्र देव, असुर, गंधर्व, यक्ष, राक्षस विगेरेए जेना चित्तमां उपद्रव कर्यो होय तेने शांतिकर्म अने बळिदान विगेरे करी दुष्ट ग्रहोनी शांति करनारुं होय छे. ६. रसायन–अमृतरसनुं अयन एटले प्राप्ति, तेनो विधि एटले आयुष्य अने बुद्धिनी वृद्धिने करनारुं तथा रोगनुं हरण करवामां समर्थ एवुं जे स्थापन तेने कहेनारुं शास्त्र रसायन कहेवाय छे. ७. वाजीकरण–वाजी एटले अश्व, ते नहीं छतां तेनुं जे करवुं ते वाजीकरण कहेवाय छे. एटले के वीर्यनी वृद्धि करी अश्व जेवुं बनाववुं, तेने कहेनारुं शास्त्र. आ शास्त्र जेनुं वीर्य अल्प, क्षीण के शुष्क होय तेने ते वीर्यनी वृद्धि करी प्रसन्नताने उत्पन्न करनारुं होय छे. ८. आ अष्टांग वैद्यक शास्त्रने

१ स्कंध अने छातीनो वचलो भाग एटले कंठमाळ नामनो व्याधि थाय छे ते स्थान.

मणेलो हतो तेमज ते वैद्यनो हाथ आरोग्य करनार हतो, तथा तेनो हाथ शुभ एटले प्रशस्त करनार अथवा सुख करनार हतो, तेम ज तेनो हाथ लघु एटले दक्ष–चतुर हतो–लघुलाघवी कळायुक्त हतो.

मू०–तते णं से धन्नंतरी विज्जे विजयपुरे णगरे कणगरहस्स रन्नो अंतेउरे य अन्नेसिं च बहूणं राईसर जाव सत्थवाहाणं अन्नेसिं च बहूणं दुब्बलाण य १ गिलाणाण य २ वाहियाण य रोगियाण य अणाहाण य समणाण य माहणाण य भिक्खागाण य करोडियाण य कप्पडियाण य आउराण य अप्पेगतियाणं मच्छमंसाइं उवदंसेति, अप्पेगतियाणं कच्छपमंसाइं उवदंसेति, अप्पेगतियाणं गाहामंसाइं, अप्पेगतियाणं मगरमंसाइं, अप्पेगतियाणं सुंसुमारमंसाइं, अप्पेगतियाणं अयमंसाइं, एवं एलारोज्झसूयरमिगससयगोमंसमाहिसमंसाइं, अप्पेगतियाणं तित्तिरमंसाइं, अप्पेगतियाणं वट्टकमंसाइं, लावकमंसाइं कपोतमंसाइं कुक्कुडमंसाइं मयूरमंसाइं, अन्नेसिं च बहूणं जलयरथलयरखहयरमादीणं मंसाइं उवदंसेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्वंतरी वैद्य विजयपुर नगरमां कनकरथ राजाने, तेना अंतःपुरनी स्त्रीओने, तथा बीजा घणा राजा, ईश्वर, यावत् (तलवर, माडंबिक, कौटुंबिक, श्रेष्ठी) सार्थवाह विगेरेने, तथा बीजा घणा दुर्बळ एटले कृश शरीरवाळा

अथवा हीन बळवाळा, ग्लान एटले हर्ष रहित थयेला शोकथी पीडाने पामेला, व्याधित एटले चिरकाळ सुधी रहेनारा कोढ विगेरे व्याधिवाळा अथवा व्यथित एटले गरमी विगेरेथी पराभव पामेला, तथा रोगित एटले अल्पकाळ रहेनारा ज्वरादिक रोगवाळा एवा सनाथ एटले नाथ (स्वामी) सहित, अनाथ एटले स्वामी रहित, श्रमण एटले गैरिक विगेरे तापसो, ब्राह्मणो, भिक्षाक एटले बीजा भिक्षुको, करोडिक एटले कापालिक (हाथमां कपाळुं राखीने भिक्षा मागनार), कार्पटिक एटले कापडी (चिंथरा पहेरीने भिक्षा मागनार), आ सर्वे आतुर एटले चिकित्साने (औषधने) लायक रह्या न होय, ते सर्वेमांथी केटलाकने मत्स्यनुं मांस खावानो उपदेश आपतो हतो, केटलाकने काचबाना मांसनो उपदेश आपतो हतो, केटलाकने ग्राहनुं मांस बतावतो हतो, केटलाकने मगरनुं मांस बतावतो हतो, केटलाकने सुंसुमारनुं[1] मांस बतावतो हतो, केटलाकने बकरानुं मांस बतावतो हतो. एज प्रमाणे घेटा, रोझ, सूकर (सुवर), हरण, ससला, गायनुं मांस अने पाडा विगेरेना मांसने बतावतो हतो. केटलाकने तेतरनुं मांस, केटलाकने वर्तक पक्षीनुं मांस, केटलाकने पारेवानुं मांस, केटलाकने कुकडानुं मांस अने केटलाकने मोरनुं मांस बतावतो हतो. तथा बीजा पण घणा जळचर, स्थळचर अने खचर विगेरे प्राणीओना मांसने ते बतावतो हतो—औषध तरीके खावा विगेरेना उपयोगमां लेवानुं कहेतो हतो.

मू—अप्पणा वि य णं से धन्नंतरी विज्जे तेहिं बहूहिं मच्छमंसेहि य जाव मयूरमंसेहि य

---

१ जळचर प्राणी विशेष. पाडा जेवुं होय छे.

अन्नेहि य बहूहिं जलयरथलयरखहयरमंसेहि य सोल्लेहि य तलेहि य भज्जिएहि य सुरं च आसाएमाणे विसाएमाणे विहराति ।

अर्थ—तथा वळी ते पोते धन्वंतरी वैद्य पण ते घणा मत्स्यना मांस यावत् मोरना मांस तेमज बीजा घणा जळचर स्थळचर अने खेचर प्राणीओना मांसने शेकीने, तळीने अने भुंजीने मदिरानी साथे एक वार आस्वाद करतो वारंवार आस्वाद करतो रहेलो हतो.

मू०—तते णं से धन्नंतरी विज्जे एयकम्मे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता बत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमाओ उववण्णे।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्वंतरी वैद्य आवां कर्म करी अत्यंत घणुं पापकर्म उपार्जन करी बत्रीश सो (३२००) वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळी (भोगवी) मरण समये मरण पामी छठी नरकपृथ्वीने विषे उत्कृष्ट बत्रीश सागरोपमना आयुष्यवाळो नारकी उत्पन्न थयो.

मू०—तते णं गंगदत्ता भारिया जायणिंदुया यावि होत्था जाया जाया दारगा विनिघायमावज्जंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते गंगदत्ता भार्या जातनिंदुका एटले मृतवंध्या हती, तेथी तेना उत्पन्न थता उत्पन्न थता बाळको मरण पामता हता.

मू०—तते णं तीसे गंगदत्ताए सत्थवाहीए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंब-जागरियं जागरमाणीए अयं अज्झत्थिए समुप्पन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते गंगदत्ता सार्थवाही एकदा कदाचित् पूर्वरात्री अने अपर (पाछली) रात्रिनी वच्चेना काळ समयने विषे एटले अर्धरात्रिने समये कुटुंबजागरिका प्रत्ये जागती हती एटले कुटुंबसंबंधी चिंता करती हती, ते वखते तेणीने आवा प्रकारनो अध्यवसाय एटले विचार उत्पन्न थयो.

मू०—एवं खलु अहं सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं सद्धिं बहूइं वासाइं उरालाइं मणुस्सगाइं भोग-भोगाइं भुंजमाणी विहरामि, णो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हुं सागरदत्त सार्थवाहनी साथे घणा वर्षोथी उदार एवा मनुष्य संबंधी कामभोगने भोगवती विचरुं छुं-रहेली छुं. परंतु में एक पण पुत्र अथवा पुत्रीने जन्म आप्यो नथी.

---

१ बाळक मरेलो जन्मे अथवा जन्मे के तरत मरण पामे एवी. २ जन्म आप्या छतां उछरेल न होवाथी जन्म न आप्या बरोबर समजवी.

मू०—तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ सपुन्नाओ कयत्थाओ कयलक्खणाओ, सुलद्धे णं तासिं अम्मयाणं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जासिं मन्ने नियगकुच्छिसंभूगाइं थणदुद्धलुद्धगाइं महुरसमुल्लावगाइं मम्मणं पयंपियाइं थणमूलकक्खदेसभागं अतिसरमाणगाति मुद्धगाइं, पुणो य कोमलकमलोवमेहि य हत्थेहिं गिण्हेऊण उच्छंगं निवेसियाति दिंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो पुणो मंजुलप्पभणिते, अहं णं अधन्ना अपुन्ना अकयपुन्ना एत्तो एगमवि न पत्ता ।

अर्थ— तेथी करीने ते माताओ ज धन्य छे, ते ज पुण्यवाळी छे, ते ज कृतार्थ छे अने ते ज शुभ लक्षण सहित छे. तथा ते ज माताओनुं मनुष्य संबंधी जन्म अने जीवितनुं फळ सारुं प्राप्त थयेलुं छे. हुं मानुं छुं के जे माताओना पोतानी कुक्षिथी उत्पन्न थयेला बाळको पोताना स्तनना दूधपान करवामां लुब्ध होय, मधुर वाणी बोलता होय, मन्मन (अस्पष्ट) शब्द बोलता होय, स्तनना मूळभागथी कक्षा (काख) ना प्रदेशना भाग सुधी चालता होय (आळोटता होय), तथा मुग्ध एटले भोळा होय, तथा वळी कोमळ कमळनी जेवी उपमावाळा बे हाथवडे तेने ग्रहण करीने पोताना उत्संगमां बेसाडे छे त्यारे ते बाळको अत्यंत मधुर उल्लापने आपे छे, तथा वारंवार मनोहर शब्दने बोले छे. हुं तो निश्चे अधन्य छुं, पुण्य रहित अथवा अपूर्ण मनोरथवाळी छुं. केमके हुं अकृतपुण्य[1] छुं, के जेथी एमांथी एटले उपर कहेली बाळकोनी चेष्टाओ-

१ जेणे पुण्य न कर्युं होय एवी.

मांथी एकने पण हुं पामी नथी.

मू०—तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छित्ता सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं गहाय बहुमित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजनमहिलाहिं सद्धिं पाडलसंडाओ णगराओ पडिनिक्खमित्ता बहिया जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ णं उंबरदत्तस्स जक्खस्स महारिहं पुप्फच्चणं करेइ, करेइत्ता जाणुपायवडियाए ओयाचित्तए ।

अर्थ—तेथी मारे कल्याणकारक छे के निश्चे मारे काले यावत् (रात्रि प्रकाशनडे प्रभातरूप थये सते, विकस्वर कमलना पत्रो अने हरणना नेत्रो कोमलताथी एटले कठोरता रहितपणे उघडे सते, तथा प्रभात उज्वळ थये सते, तथा उदय पामेलो हजार किरणोवाळो सूर्य तेजवडे) जाज्वल्यमान थये सते सागरदत्त सार्थवाहने पूछीने एटले तेनी रजा लइने घणां पुष्प, वस्त्र, गंध, माळा अने अलंकार ग्रहण करीने घणा मित्र, ज्ञाति, निजक (पोताना), स्वजन, संबंधी अने परिजननी स्त्रीओनी साथे पाडलखंड नगरमांथी बहार नीकळीने बहार उद्यानमां ज्यां उंबरदत्त यक्षनुं यक्षायतन (चैत्य) छे त्यां जाउं. जइने त्यां उंबरदत्त यक्षनी मोटाने योग्य पुष्पपूजा करुं. करीने ढींचणोने पृथ्वीपर राखी तेना पगमां पडीने आ प्रमाणे मानता करुं.

मू०—जति णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा पयामि तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयाणिहिं च अणुवड्ढइस्सामि त्ति कट्टु ओवाइयं ओवाइणित्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—

अर्थ—हे देवानुप्रिय ! जो हुं पुत्र के पुत्रीने जन्म आपीश, तो हुं तमारा याग (पूजा) ने अथवा यात्राने, दाय एटले दानने, भाय एटले भागने अर्थात् लाभना अंशने अने अक्षयनिधि एटले देवभंडारने वृद्धि पमाडीश एम करीने मारे मानता मानवाने (मानवी ते) कल्याणकारक छे. आ प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो, विचार करीने काले एटले बीजे दिवसे प्रातःकाळे यावत् सूर्य जाज्वल्यमान थयो त्यारे ज्यां सागरदत्त सार्थवाह हतो त्यां आवी. आवीने सागरदत्त सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं.—

मू०—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं सद्धिं जाव न पत्ता, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया जाव उवाइणित्तए ।

---

१ उपजमांथी अमुक हिस्सो आपवो ते.

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे देवानुप्रिय ! हुं तमारी साथे भोग भोगवुं छुं यावत् एक पण बाळकने में जन्म आप्यो नथी. तेथी हे देवानुप्रिय ! तमारी आज्ञा पामी सती हुं यावत् (उंबरदत्त यत्तनी) मानता मानवाने इच्छुं छुं.

मू०—तेए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्तं भारियं एवं वयासी–ममं पि णं देवाणुप्पिए ! एस चेव मणोरहे कहं णं तुमं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जासि ? गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणति !

अर्थ—त्यारपछी ते सागरदत्त सार्थवाहे गंगदत्ता भार्याने आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रिया ! मारो पण आ ज मनोरथ छे के तुं केवी रीते (कया उपायवडे) पुत्र अथवा पुत्रीने प्रसवीश (पामीश) ? एम कहीने तेणे गंगदत्ता भार्याने ते अर्थनी (तेम करवानी) अनुज्ञा आपी.

मू०—तते णं सा गंगदत्ता भारिया सागरदत्तसत्थवाहेणं एयमट्ठं अब्भणुन्नाया समाणी सुबहुं पुप्फ जाव महिलाहिं सद्धिं सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता पाडलसंडं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं उवणेति, उवणित्ता पुक्खरिणीं ओगाहेति, ओगा-

हित्ता जलमज्जणं करेति, करित्ता जलकीडं करेमाणी ण्हाया कयकोउयमंगलपायच्छित्ता उल्लगपडसाडिया पुक्खरिणीओ पच्चुत्तराति, पच्चुत्तरित्ता तं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं गिण्हाति, गिण्हित्ता जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता उंबरदत्तस्स जक्खस्स आलोए पणामं करेति, करित्ता लोमहत्थं परामुसति, परामुसित्ता उंबरदत्तं जक्खं लोमहत्थेणं पमज्जति, पमज्जित्ता दगधाराए अब्भोक्खेति, अब्भोक्खित्ता पम्हलसुकुमालगंधकासाइयाए गायलट्ठी ओलूहेति, ओलूहित्ता सेयाति वत्थाइं परिहेति, परिहित्ता महरिहं पुप्फारुहणं वत्थारुहणं मल्लारुहणं गंधारुहणं चुन्नारुहणं करेति, करित्ता धूवं डहति, डहित्ता जाणुपायवडिया एवं वयति—

अर्थ—त्यारपछी ते गंगदत्ता भार्या सागरदत्त सार्थवाहे आ अर्थनी अनुज्ञा आपी सती घणा पुष्पो विगेरे लइ यावत् मित्रादिकनी स्त्रीओनी साथे पोताना घरमांथी नीकळी. नीकळीने पाडलखंड नगरनी मध्ये मध्ये थइने नीकळी. नीकळीने ज्यां पुष्करिणी (वाव) हती त्यां आवी. आवीने पुष्करिणीने कांठे ते घणा पुष्प, वस्त्र, गंध अने माल्यरूपी अलंकारने मूक्या. मूकीने पुष्करिणीमां प्रवेश कर्यो. प्रवेश करीने जळमां मज्जन कर्युं. मज्जन करीने जळक्रीडा करती सती न्हाइने मषीनुं तिलक वगेरे कौतुक अने दहीं, अक्षत वगेरे मंगळने करी भीनुं वस्त्र पहेरी पुष्करिणीमांथी बहार नीकळी. बहार नीकळीने

ते मूकेला पुष्प, वस्त्र, गंध अने माल्यरूपी अलंकारने ग्रहण कर्या. ग्रहण करीने ज्यां उंबरदत्त यक्षनुं यक्षायतन (मंदिर) हतुं त्यां आवी. आवीने उंबरदत्त यक्षनुं दर्शन थतां ज तेने प्रणाम कर्या. प्रणाम करीने मोरपींछीने हाथमां ग्रहण करी. ग्रहण करीने उंबरदत्त यक्षने ते मोरपींछीवडे प्रमार्जन कर्युं, प्रमार्जन करी (पूंजी) जळनी धारावडे तेने स्नान कराव्युं. स्नान करावीने बारीक अने कोमळ गंधकाषाय वस्त्रवडे तेनी गात्रयष्टिने लूही साफ करी (अंगलूहणुं कर्युं). करीने ते प्रतिमाने श्वेत वस्त्र पहेराव्या. पहेरावीने मोटाने योग्य पुष्पारोहण (पुष्पनुं चडाववुं), वस्त्रारोहण (वस्त्रनुं पहेराववुं), माल्यारोहण (माळा पहेराववी), गंधारोहण (चंदन चडाववुं), अने चूर्णारोहण (चूर्ण चडाववुं) कर्युं. करीने धूप उवेख्यो, (तथा दीवो कर्यो). वगेरे पूजा करी ढींचणने पृथ्वीपर राखी तेना पगमां पडी आ प्रमाणे बोली.—

मू०—जइ णं अहं देवाणुप्पिया! दारगं वा दारियं वा पयामि ते णं जाव उवातिणाति, उवातिणित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

अर्थ—हे देवानुप्रिय! जो हुं पुत्रने के पुत्रीने प्रसवीश (पामीश), तो हुं तमने यावत् उपर कह्या प्रमाणे करीश! एम तेणीए मानता मानी. मानता मानीने ते जे दिशामांथी आवी हती ते दिशामां पाछी गइ (पोताने घेर गइ).

मू०—तते णं से धन्नंतरी विज्जे ताओ नरयाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे पाड-

१ पुष्पनी पूजा करी एम सर्वत्र कहेवुं.

लसंडे नगरे गंगदत्ताए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते धन्वंतरी वैद्य ते छठी नरकपृथ्वीथी आंतरारहित नीकळीने आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे पाडलखंड नगरमां गंगदत्ता भार्यानी कुक्षिमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो.

मू०—तते णं तीसे गंगदत्ताए भारियाए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अयमेयारूवे दोहले पाउब्भूते—धन्नाओ णं ताओ जाव फले, जाओ णं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता बहूहिं जाव परिवुडाओ तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च पुप्फ जाव गहाय पाडलसंडं नगरं मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता पुक्खरिणीं ओगाहिंति, ण्हाता जाव पायच्छित्ताओ तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं बहूहिं मित्तणाइ जाव सद्धिं आसादेंति विणयेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते गंगदत्ता भार्याने त्रण मास बहु परिपूर्ण थया त्यारे आ आवा प्रकारनो दोहलो उत्पन्न थयो.—ते माताओने धन्य छे यावत् तेनुं जन्मजीवित सफळ छे, के जे माताओ विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करे, तैयार करीने घणी स्त्रीओनी साथे परिवरी थकी ते विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम अने मदिरा तथा

पुष्प विगेरेने यावत् ग्रहण करी पाडलखंड नगरना मध्य मध्य भागवडे बहार नीकळे, बहार नीकळीने ज्यां पुष्करिणी वाव छे त्यां आवे, त्यां आवीने पुष्करिणी वावमां प्रवेश करे. तेमां स्नान करी यावत् प्रायश्चित्त करी ते विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम विगेरेने घणा मित्र, ज्ञाति विगेरेनी यावत् स्त्रीओ साथे आस्वादन करे यावत् दोहलाने दूर करे एटले परिपूर्ण करे.

मू०—एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव जलंते जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—धन्नाओ णं ताओ जाव विणेंति, तं इच्छामि णं जाव विणित्तए ।

अर्थ—आ प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो. विचार करीने काले एटले प्रातःकाळे यावत् सूर्य जाज्वल्यमान थयो त्यारे ज्यां सागरदत्त सार्थवाह हतो त्यां आवी. आवीने सागरदत्त सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं.—ते माताओ धन्य छे यावत् पोताना दोहलाने दूर करे छे, तेथी हुं पण ते रीते यावत् दोहलाने दूर करवा इच्छुं छुं.

मू०—तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे गंगदत्ताए भारियाए एयमट्ठं अणुजाणाति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरदत्त सार्थवाहे गंगदत्ता भार्याने आ अर्थनी अनुज्ञा आपी.

मू०—तते णं सा गंगदत्ता भारिया सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावित्ता तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च सुबहुं पुप्फ परिगिण्हावेइ, परिगिण्हावित्ता बहूहिं जाव ण्हाया कयवलिकम्मा जेणेव उंबरदत्तस्स जक्खस्स जक्खाययणे जाव धूवं डहइ, जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति ।

अर्थ—त्यारपछी ते गंगदत्ता भार्याए सागरदत्त सार्थवाहे आज्ञा आपी सती विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार कराव्युं. तैयार करावीने ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तथा मदिराने तथा घणां पुष्पो, विगेरेने ग्रहण कराव्यां. ग्रहण करावीने घणी स्त्रीओनी साथे यावत् स्नान कर्युं. बलिकर्म कर्युं एटले गृहदेवतानी पूजा करी. पछी ज्यां उंबरदत्त यक्षनुं यक्षायतन (मंदिर) हतुं त्यां आवीने यावत् धूप उवेख्यो. पछी ज्यां पुष्करणी वाव हती त्यां आवी.

मू०—तते णं तातो मित्त जाव महिलाओ गंगदत्तं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसियं करेंति।

अर्थ—त्यारपछी ते मित्र विगेरेनी यावत् स्त्रीओए गंगदत्ता सार्थवाहीने सर्व अलंकारवडे विभूषित करी.

मू०—तते णं सा गंगदत्ता भारिया ताहिं मित्तनाईहिं अन्नाहिं बहूहिं णागरमहिलाहिं सद्धिं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च आसाएमाणी दोहलं विणेति, विणेत्ता जामेव दिसिं

पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया। सा गंगदत्ता सत्थवाही पसत्थदोहला तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति।

अर्थ—त्यारपछी ते गंगदत्ता भार्याए ते मित्र, ज्ञाति विगेरेनी स्त्रीओ साथे, तथा बीजी घणी नगरनी स्त्रीओ साथे ते विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम अने मदिरानो आस्वाद करती दोहलाने दूर कर्यो. दूर करीने जे दिशामांथी प्रगट थइ हती एटले आवी हती ते ज दिशामां पाछी गइ. ए रीते ते गंगदत्ता सार्थवाही प्रशस्त दोहलावाळी होवाथी ते गर्भने सुखे सुखे वहन करवा लागी.

मू०—तते णं सा गंगदत्ता भारिया णवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव पयाया, ठिइवडियं, जाव नामे, जम्हा णं इमे दारए उंबरदत्तस्स जक्खस्स उववातियलद्धते तं होऊ णं दारए उंबरदत्ते नामेणं।

अर्थ—त्यारपछी ते गंगदत्ता भार्या नव मास बराबर परिपूर्ण थया त्यारे यावत् पुत्रने प्रसवती हवी. तेनी स्थितिपतिका (जन्मोत्सव) करी, यावत् तेनुं नाम पाडयुं—जे कारण माटे आ पुत्र उंबरदत्त यक्षनी मानता मानवाथी प्राप्त थयो छे तेथी करीने आ पुत्र नामवडे उंबरदत्त हो—आ पुत्रनुं नाम उंबरदत्त हो.

मू०—तते णं से उंबरदत्ते दारए पंचधातिपरिग्गहिए परिवड्ढइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते उंबरदत्त पुत्र पांच धात्रीमाताए ग्रहण कर्यो सतो एटले पालन पोषण कर्यो सतो वृद्धि पाम्यो.

मू०—तते णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जहा विजयमित्ते जाव कालमासे कालं किच्चा, गंगदत्ता वि, उंबरदत्ते निच्छूढे जहा उज्झियते ।

अर्थ—त्यारपछी ते सागरदत्त सार्थवाह विजयमित्रनी जेम यावत् मरण समये मरण पाम्यो. गंगदत्ता पण मरण पामी. तेथी राजपुरुषोए उंबरदत्तने उज्झितकनी जेम घरमांथी काढी मूक्यो.

मू०—तते णं तस्स उंबरदत्तस्स दारयस्स अन्नया कया वि सरीरगंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तं जहा—सासे कासे जाव कोढे ।

अर्थ—त्यारपछी ते उंबरदत्त दारकने एकदा कदाचित् शरीरने विषे एकी साथे ज सोळ रोगातंक उत्पन्न थया. ते आ प्रमाणे—श्वास, कास, यावत् कोढ.

मू०—तते णं से उंबरदत्ते दारए सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे सडियहत्थं

[1] जुओ बीजुं अध्ययन.

जाव विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते उंबरदत्त दारक सोल रोगातंकवडे पराभव (पीडा) पाम्यो सतो तेना हाथ सडी गया विगेरे यावत् विचरतो हतो. (ए सर्व प्रथम कह्या प्रमाणे कहेवुं.)

मू०—एवं खलु गोयमा ! उंबरदत्ते पुरापोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणे विहरति।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते उंबरदत्त पूर्वना संचय करेला जुना कर्मोनो यावत् अनुभव करतो सतो विचरे छे-रहेलो छे.

मू०—तते णं से उंबरदत्ते दारए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिति ?।

अर्थ—(गौतमस्वामीए भगवानने पूछ्युं के-हे भगवन् ! त्यारपछी ते उंबरदत्त दारक मरण समये मरण पामीने क्यां जशे ? क्यां उत्पन्न थशे ?

मू०—गोयमा ! उंबरदत्ते दारए बावत्तरिं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववन्ने, संसारो तहेव जाव पुढवी।

अर्थ—(भगवाने उत्तर आप्यो) हे गौतम ! ते उंबरदत्त दारक बोंतेर वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पामीने मरण समये

मरण पामीने आ रत्नप्रभा नामनी पहेली नरकपृथ्वीने विषे नारकीपणे उत्पन्न थशे. तेनो संसार ते ज प्रमाणे (प्रथम अध्ययननी जेम जाणवो) यावत् साते नरकपृथ्वीमां जशे.

मू०—ततो हत्थिणाउरे णगरे कुक्कुडत्ताए पच्चायायाहिति, गोट्ठिवहिए, तहेव हत्थिणाउरे णगरे सेट्ठिकुलंसि उववज्जिहिति, बोहिं, सोहम्मे कप्पे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, निक्खेवो ॥२८॥

॥ सत्तमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥ ७

अर्थ—त्यांथी नीकळीने हस्तिनापुर नगरमां कुकडापणे उत्पन्न थशे. त्यां तेने गोष्ठिक पुरुषो हणशे. त्यांथी ते ज प्रमाणे हस्तिनापुर नगरमां श्रेष्ठीना कुळमां उत्पन्न थशे. त्यां बोधि (समकित) पामशे. दीक्षा ग्रहण करी सौधर्मकल्प नामना पहेला देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां जन्मी दीक्षा ग्रहण करी सिद्धिपदने पामशे. ए प्रमाणे आ सातमा अध्ययननो निक्षेप कहेवो.

इति उंबरदत्त नामना सातमा अध्ययननुं विवरण समाप्त थयुं. ७

अथ शौरिकदत्त नामनुं अष्टम अध्ययन. ८.

हवे शौरिकदत्त नामना आठमा अध्ययनने विषे कांइक लखे छे—

मू०—जइ णं भंते ! अट्ठमस्स उक्खेवो ।

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के—हे भगवन् ! जो सातमा अध्ययननो आ तमे कह्यो ते प्रमाणे अर्थ भगवान श्री महावीरस्वामीए कह्यो छे, तो आठमा अध्ययननो उत्क्षेप (प्रस्तावना) कहो.

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं सोरियपुरं णगरं, सोरियवडेंसगं उज्जाणं, सोरियो जक्खो, सोरियदत्तो राया ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये शौर्यपुर नामे नगर हतुं. शौर्यावतंसक नामनुं उद्यान हतुं. तेमां शौर्य नामे यक्ष हतो (तेना आयतनमां ते यक्षनी मूर्ति हती.) त्यां शौर्यदत्त नामे राजा हतो.

मू०—तस्स णं सोरियपुरस्स णगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे एत्थ णं एगे मच्छंध-वाडए होत्था ।

अर्थ—ते शौर्यपुर नगरनी बहार उत्तर अने पूर्व दिशानी वच्चे एटले ईशान खूणाना प्रदेशमां एक मत्स्यबंध (मच्छीमार) लोकोनो पाडो (महोल्लो) हतो.

मू०—तत्थ णं समुद्ददत्ते नामं मच्छंधे परिवसति अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ।

अर्थ—त्यां समुद्रदत्त नामनो मत्स्यबंध (मच्छीमार) रहेतो हतो. ते अधार्मिष्ट यावत् बीजानुं खराब करीने आनंद पामनार हतो.

मू०—तस्स णं समुद्ददत्तस्स समुद्ददत्ता नामं भारिया होत्था अहीणपंचेंदियसरीरे ।

अर्थ—ते समुद्रदत्तने समुद्रदत्ता नामनी भार्या हती. तेणीना पांचे इंद्रियो अने शरीर हीनता रहित परिपूर्ण हतां.

मू०—तस्स णं समुद्ददत्तस्स पुत्ते समुद्ददत्ताभारियाए अत्तए सोरियदत्ते नामं दारए होत्था अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरे ।

अर्थ—ते समुद्रदत्तनो पुत्र समुद्रदत्ता भार्यानो आत्मज शौरिकदत्त नामे दारक हतो. तेना पांचे इंद्रियो अने शरीर हीनता रहित परिपूर्ण हतां.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं सामी समोसढे जाव परिसा पडिगया ।

अर्थ—ते काळे ते समये त्यां श्रीमहावीरस्वामी समवसर्या. यावत् पर्षदा पाछी गइ. (नगरमांथी पर्षदा भगवानने वांदवा आवी. ते देशना सांभळीने पाछी पोताने स्थाने गइ.)

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं जेट्ठे सीसे जाव सोरियपुरे णगरे उच्चनीयमज्झिमकुलाइं अहापज्जत्तं समुदाणं गहाय सोरियपुराओ नगराओ पडिनिक्खमति तस्स मच्छंधपाडगस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे महतिमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगयं पासति एगं पुरिसं सुक्कं भुक्खं निम्मंसं अट्ठिचम्मावणद्धं किडिकिडीभूयं णीलसाडगणियच्छं मच्छकंटएणं गलए अणुलग्गेणं कट्ठाइं कलुणाइं विसराइं कूवेमाणं अभिक्खणं अभिक्खणं पूयकवले य रुहिरकवले य किमिकवले य वम्ममाणं पासति, पासित्ता इमे अज्झत्थिए समुप्पन्ने, पुरापोराणाणं जाव विहरति।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामीना मोटा शिष्य (गौतम गणधर) यावत् शौर्यपुर नगरमां उंच, नीच अने मध्यम कुळमां अटन करी पोताने परिपूर्ण थाय तेटलो आहार ग्रहण करी शौर्यपुर नगरमांथी बहार नीकळ्या. त्यां ते मत्स्यबंध (मच्छीमार) ना पाडानी बहु दूर नहीं तेम ज बहु समीपे नहीं एवी रीते जता सता अत्यंत घणी मोटी मनुष्यनी प्रर्षदा (मेदिनी) नी मध्ये रहेला एक पुरुषने जोयो. तेनुं शरीर शुष्क हतुं, राख जेवुं लूखुं हतुं, मांस रहित

हतुं, चर्मथी मढेला हाडकानुं पंजर जेवुं हतुं, शरीरनां हाडकां कडकड शब्द करतां हतां, तेणे भीनुं वस्त्र पहेर्युं हतुं, तेना गळामां मत्स्यनो कांटो वळगेलो हतो, तेथी ते कष्टकारक, करुणा उपजे तेवा नीरस शब्द बोली आक्रंद करतो हतो, तथा ते वारंवार मुखमांथी परुना कोगळा, लोहीना कोगळा अने कृमिना कोगळा वमतो हतो. आवा पुरुषने जोयो. जोइने ते गौतमस्वामीने आवा प्रकारनो विचार उत्पन्न थयो—आ पुरुष पूर्व जन्मना जुना करेला कर्मना फळने भोगवतो रहेलो जणाय छे.

मू०—एवं संपेहेति, संपेहित्ता जेणेव समणे भगवं जाव पुव्वभवपुच्छा, जाव वागरणं ।

अर्थ—आ प्रमाणे गौतमस्वामीए विचार कर्यो. विचार करीने ज्यां श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामी हता त्यां आव्या यावत् तेमनी पासे ते पुरुषना पूर्वभवनो प्रश्न कर्यो, यावत् भगवाने आ प्रमाणे जवाब आप्यो—

मू०—एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे नंदिपुरे नामं णगरे होत्था । मित्ते राया ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां नंदिपुर नामनुं नगर हतुं. तेमां मित्र नामे राजा हतो.

मू०—तस्स णं मित्तस्स रन्नो सिरीए नामं महाणसिए होत्था अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ।

अर्थ—ते मित्र नामना राजाने श्रीयक नामनो रसोइयो हतो. ते अधर्मिष्ठ यावत् कोइनुं खराब करीने आनंद पाम-

नार हतो. (अथवा संतोषना कारणो मळया छतां पण संतोष पामतो नहोतो).

मू०—तस्स णं सिरीयस्स महाणसियस्स बहवे मच्छिया य वागुरिया य साउणिया य दिन्न-भतिभत्तवेयणा कल्लाकल्लं बहवे सण्हमच्छा य जाव पडागातिपडागे य अए य जाव महिसे य तित्तिरे य जाव मयूरे य जीवियाओ ववरोवेंति, सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति।

अर्थ—ते श्रीयक रसोइयाने घणा मच्छीमार, पाशलावडे पशुने मारनार वागुरिक अने शाकुनिक एटले पक्षीने मारनारा नोकर हता, तेमने भृति एटले पैसा विगेरेनी आजीविका अने भक्त एटले घी, अनाज, विगेरे आपतो हतो, तेथी तेओ हमेशां घणा सूक्ष्म–नाना मत्स्य यावत् (खवल्ल जातिना मत्स्य, विझिडी जातिना मत्स्य, हलि जातिना मत्स्य विगेरे तथा लंभण जातिना मत्स्य, पडाग जातिना मत्स्य तथा) पडागातिपडाग जातिना मत्स्यने तथा बकरा यावत् (घेटा, रोझ, सूकर, मृग अने) पाडा विगेरेने, तथा तेतर यावत् (वर्तक, लावक, कुकडा अने) मोर विगेरेने जीवितथी दूर करता हता–मारी नांखता हता, अने पछी ते लावीने श्रीयक रसोइयाने आपता हता.

मू०—अन्ने य से बहवे तित्तिरा य जाव मयूरा य पंजरंसि संनिरुद्धा चिट्ठंति।

अर्थ—बीजा पण घणा तेना तेतर यावत् मोर विगेरे पांजरामां रुंधेला रहेला छे.

मू०—अन्ने य वहवे पुरिसे दिन्नभातिभत्तवेयणा ते वहवे तित्तिरे य जाव मयूरे य जीवियाओ चेव निप्पक्खेंति सिरीयस्स महाणसियस्स उवणेंति ।

अर्थ—तथा बीजा घणा पुरुषोने भृति एटले पैसा विगेरेनी आजीविका अने भक्त एटले घी, अनाज विगेरे आपतो हतो, तेथी ते पुरुषो (नोकरो) ते घणा तेतरोने यावत् मोरोने जीवता ज पांख रहित करता हता. पांख रहित करीने श्रीयक रसोइयाने आपता हता.

मू०—तते णं से सिरीए महाणसिए वहूणं जलयरथलयरखहयराणं मंसाइं कप्पणीयकप्पियाइं करेंति, तं जहा—सण्हखंडियाणि य वट्टखंडियाणि य दीहखंडियाणि य रहस्सखंडियाणि य हिमपक्काणि य जम्मघम्म (वेग) मारुयपक्काणि य कालाणि य हेरंगाणि य महिट्ठाणि य आमलरसियाणि य मुद्दियारसियाणि य कविट्ठरसियाणि य दालिमरसियाणि य मच्छरसियाणि य तालियाणि य भज्जियाणि य सोल्लियाणि य उवक्खडावेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रीयक रसोइयो घणा जलचर, स्थलचर अने खेचर प्राणीओना मांसने कापणीवडे कापेला करे (कापे). ते आ प्रमाणे—सूक्ष्म (नाना) ककडा करी, गोळ ककडा करी, लांबा ककडा करी, ह्रस्व ककडा करी पछी तेने हिममां

(शीतमां) पकावी, जम्म, घम्म, वेग अने वायुमां पकावी, काळा वर्णवाळा करी, हींगलोकना वर्णवाळा करी, छाशथी मिश्र करी, आमळाना रसथी मिश्र करी, द्राक्षना रसथी मिश्र करी, कोठाना रसथी मिश्र करी. दाडमना रसथी मिश्र करी, मच्छीना रसथी मिश्र करी, पछी तेने अग्नि उपर मूकी तेल विगेरेथी तळीने, अग्निमां भुंजीने-शेकीने तथा शूळ उपर राखी अग्निमां पकावीने तैयार करतो हतो.

मू०—अन्ने य बहवे मच्छरसे य एणेज्जरसे य तित्तिररसे य जाव मयूररसे य अन्नं विउलं हरियसागं उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता मित्तस्स रन्नो भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए उवणेंति ।

अर्थ—तथा बीजा पण घणा मच्छीना मांसना रस, मृगना मांसना रस, तेतरना मांसना रस, यावत् (वर्तकना मांसना रस, लावकना मांसना रस, अने) मोरना मांसना रस तथा बीजुं विपुल (घणुं) लीलुं शाक विगेरे तैयार करतो हतो. तैयार करीने मित्र राजाना भोजनमंडपमां भोजनने समये लइ जतो हतो.

मू०—अप्पणा वि य णं से सिरीए महाणसिते तेसिं च बहूहिं जाव जलयरमंसेहिं थलयरमंसेहिं खहयरमंसेहिं रसतेहि य हरियसागेहिं य सोल्लेहि य तलेहि य भज्जेहि य सुरं च आसाएमाणे विहरति ।

अर्थ—तथा ते पोते श्रीयक रसोइयो पण ते घणा मांस विगेरे यावत् जलचरना मांस, स्थलचरना मांस, खेचरना

मांस, सर्व प्रकारना मांसना रस तथा लीला शाक ए सर्व शेकेला, तळेला अने रांधेलां हतां, ते सर्वना भोजननी साथे मदिरानुं आस्वादन करतो सतो रहेतो हतो.

मू०—तते णं से सिरीए महाणसिते एयकम्मे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता तेत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उववन्नो ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रीयक रसोइयो आवा पापकर्मने करी घणुं पापकर्म उपार्जन करी तेत्रीश सो (३३००) वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळी (भोगवी) मरण समये मरण पामी छठी नरकपृथ्वीमां नारकीपणे उत्पन्न थयो.

मू०—तते णं सा समुद्ददत्ता भारिया निंदू यावि होत्था, जाया जाया दारगा विणिहायमावज्जंति, जह गंगदत्ताए चिंता आपुच्छणा उवातियं दोहला जाव दारगं पयाया । जाव जम्हा णं अम्हं इमे दारए सोरियस्स जक्खस्स उवाइयलद्धे तम्हा णं होउ अम्हं दारए सोरियदत्ते नामेणं ।

अर्थ—त्यारपछी ते समुद्रदत्ता भार्या निंदू एटले मृतवंध्या हती, तेथी तेणीना उत्पन्न थयेला उत्पन्न थयेला बाळको मरण पामता हता. एकदा तेणीने गंगदत्तानी जेम चिंता थइ. (एटले के ते माताओ धन्य छे, कृतार्थ छे. इत्यादि सातमा

१ विचार.

अध्ययनमां गंगदत्ताने थयेला मनोरथनी उत्पत्ति अहीं पण कहेवी.) तेथी तेणीए भर्तारने पूछ्युं (हुं इच्छुं छुं के तमारी आज्ञा पामी सती हुं यक्षनी पूजा करी मानता करुं विगेरे.) पछी उपयाचित एटले मानता, तथा दोहलो उत्पन्न थयो ते विगेरे सर्व गंगदत्तानी जेम कहेवुं यावत् तेणीए पुत्रने प्रसव्यो. यावत् जे कारण माटे अमारो आ पुत्र शौर्य यक्षनी मानता करवाथी प्राप्त थयो छे, तेथी करीने अमारो आ पुत्र नामे करीने शौर्यदत्त हो–आनुं नाम शौर्यदत्त हो.

मू०—तए णं से सोरियदत्ते दारए पंचधाइ जाव उम्मुक्कबालभावे विण्णयपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते शौर्यदत्त पुत्र पांच धात्री माताओथी पालन पोषण करातो यावत् बाल्यावस्थाथी मुक्त थयो, परिणाममात्रथी विज्ञानने (कळाने) पाम्यो, तथा युवावस्थाने पाम्यो.

मू०—तते णं से समुद्ददत्ते अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते ।

अर्थ—त्यारपछी ते समुद्रदत्त एकदा कदाचित् काळधर्मवडे युक्त थयो–मरण पाम्यो.

मू०—तते णं से सोरियदत्ते बहूहिं मित्तणाइ सद्धिं रोयमाणे समुद्ददत्तस्स णीहरणं करेति,

१ मानता कर्या पछी छठ्ठी नरकपृथ्वीमांथी नीकळीने ते श्रीयक रसोइयानो जीव समुद्रदत्तानी कुक्षिमां उत्पन्न थयो. विगेरे सर्व कहेवुं.

करित्ता लोइयमयाइं किच्चाइं करेति, करित्ता अन्नया कयाइं सयमेव मच्छंधमहत्तरगत्तं उवसंपज्जित्ता णं विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शौर्यदत्ते घणा मित्र, ज्ञाति विगेरे साथे रोता रोता समुद्रदत्तनुं निंहरण[१] कर्यु. करीने बीजा लौकिक मरण संबंधी कार्य कर्या. करीने एकदा कदाचित् पोते ज मत्स्यबंधना महत्तरपणानी पदवीने पामीने विचरतो हवो–रहेतो हवो.

मू०—तए णं से सोरियदत्ते दारए मच्छंधे जाते अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे ।

अर्थ—त्यारपछी ते शौर्यदत्त दारक मत्स्यबंध थयो सतो अधर्मिष्ठ यावत् आनंदना कारण मन्या छतां पण आनंदने नहीं पामनारो थयो.

मू०—तते णं तस्स सोरियमच्छंधस्स बहवे पुरिसा दिन्नभतिभत्तवेयणा कल्लाकल्लं एगट्ठियाहिं जउणामहानदीं ओगाहिंति बहूहिं दगगालणाहि य दहमलणेहि य दहमहणेहि य दहवहणेहि य दहपवहणेहि य अयंपुलेहि य पंचपुलेहि य मच्छंधलेहि य मच्छपुच्छेहि य जंभाहि य तिसिराहि

१ स्मशानमां लइ जवानुं कार्य.

य भिसिराहि य घिसराहि य विसिराहि य हिल्लीरिहि य झिल्लीरिहि य जालेहि य गलेहि य कूडपासेहि य वक्कबंधेहि य सुत्तबंधणेहि य वालबंधणेहि य बहवे सण्हमच्छे जाव पडागातिपडागे य गिण्हंति, गिण्हित्ता एगट्ठियाओ नावा भरंति कूलं गाहंति मच्छखलए करेंति, करित्ता आयवंसि दलयंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शौर्यदत्त मत्स्यबंधे घणा पुरुषोने भृति एटले पैसा विगेरेनी आजीविका अने भक्त एटले घी अनाज विगेरेरूप मूल्य आपेलुं हतुं तेथी ते पुरुषो हमेशां एगठिया एटले वहाणवडे करीने यमुना नामनी मोटी नदीमां प्रवेश करता हता. प्रवेश करीने घणा ह्रदगालन एटले द्रहनी मध्ये मत्स्यादिक ग्रहण करवा माटे भमवुं अथवा जळ काढी नाखवुं ते. ह्रदमलन एटले द्रहनी मध्ये वारंवार भमवुं अथवा जळ काढी नांख्या पछी तेमां रहेला पंकनुं मर्दन करवुं तथा तेमां थोर विगेरे नांखीने द्रहनुं जळ विकारवाळुं करवुं ते. ह्रदमथन एटले द्रहना जळने वृक्षनी शाखाओवडे वलोववुं ते. ह्रदवहन एटले पोतानी मेळे ज द्रहमांथी पाणी बहार नीकळे ते. तथा ह्रदप्रवहण एटले द्रहनुं जळ पोतानी मेळे अत्यंत बहार नीकळी जाय ते. आटला उपायवडे करीने पछी अयंपुल, पंचपुल, मत्स्यबंध, मत्स्यपुच्छ, जंभा, तिसिरा, भिसिरा, घिसरा, विसिरा, हिल्लीरी, झिल्लीरी, जाळ, गळ, (कांटा) अने कूटपाश आ जातिनी (नामनी) मत्स्य पकडवानी जाळोवडे तथा छालना बंधनवडे, सुतरना बंधनवडे अने वाळना बंधनवडे घणा नाना मत्स्योने यावत् पताकातिपताका नामना

मत्स्योने ग्रहण करता हता. ग्रहण करीने एक लाकडाना वहाणमां तेने भरीने कांठे लावीने माछलाना खळां करता हता. करीने ते माछलाओने तडके नांखता हता—सुकवता हता.

मू०—अन्ने य से बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा आयवतत्तएहिं सोलेहि य तलेहि य भज्जेहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ।

अर्थ—तथा बीजा पण तेना घणा पुरुषो के जेमने भृति एटले पैसा विगेरेनी आजीविका अने भक्त एटले घी अनाज विगेरे मूल्य आप्युं हतुं तेओ तडकाथी तपेला (सुकाएला) ते मत्स्योने रांधी, तळी तथा शेकीने राजमार्गमां लइ जइ तेनावडे वृत्तिने (वेपारने) करता सता विचरता हता—रहेता हता.

मू०—अप्पणा वि य णं से सोरियदत्ते बहूहिं सण्हमच्छेहि य जाव पडागाइपडागेहि य सोल्लेहि य भज्जेहि य तलेहि य सुरं च आसाएमाणे विहरति ।

अर्थ—तथा पोते पण ते शौर्यदत्त घणा नाना मत्स्यो यावत् पताकातिपताका जातिना मत्स्यो के जे रांधेला, भुंजेला अने तळेला होय तेनी साथे मदिरानो आस्वाद विगेरे करतो सतो विचरतो हतो—रहेतो हतो.

मू०—तते णं तस्स सोरियदत्तस्स मच्छंधस्स अन्नया कयाइं ते मच्छे सोल्ले तले भज्जे आहारे-

माणस्स मच्छकंटए गलए लग्गे आवि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते शौर्यदत्त मत्स्यबंध (मच्छीमार) एकदा कदाचित् ते रांधेला, तळेला अने भुंजेला मत्स्योने खातो हतो ते वखते तेना गळामां एक मत्स्यनो कांटो लाग्यो.

मू०—तए णं से सोरियमच्छंधे महयाए वेयणाए अभिभूते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! सोरियपुरे नगरे संघाडग जाव पहेसु य महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सोरियस्स मच्छंधस्स मच्छकंटए गले लग्गे, तं जो णं इच्छाति विज्जो वा विज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छी वा तेगिच्छिपुत्तो वा सोरियमच्छियस्स मच्छकंटयं गलाओ निहरित्तते, तस्स णं सोरियमच्छिए विउलं अत्थसंपयाणं दलयाति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शौर्यदत्त मत्स्यबंध मोटी वेदनाए करीने पराभव पाम्यो सतो कौटुंबिक पुरुषोने बोलावतो हवो. बोलावीने तेमने तेणे आ प्रमाणे कह्युं—हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ. शौर्यपुर नगरमां शींगोडाना आकारवाळा मार्गने विषे यावत् सामान्य मार्गने विषे मोटा मोटा शब्दवडे उद्घोषणा करता उद्घोषणा करता तमे आ प्रमाणे बोलो के—आ प्रमाणे

निश्चे हे देवानुप्रियो ! शौर्यदत्त मत्स्यबंधना गळामां मत्स्यनो कांटो लागेलो छे. तेथी जे कोइ वैद्य एटले वैद्यक शास्त्रमां तथा चिकित्सा करवामां कुशळ होय, अथवा तेवा वैद्यनो कोइ पुत्र होय, अथवा कोइ ज्ञायक एटले केवळ वैद्यक शास्त्रमां ज कुशळ होय, अथवा तेवा ज्ञायकनो पुत्र कोइ होय, अथवा कोइ चिकित्सक एटले एकली चिकित्सा करवामां कुशळ होय, अथवा तेवा चिकित्सकनो कोइ पुत्र होय, अने ते शौरिक मात्सिक (मच्छीमार) ना गळामां लागेला मत्स्यना कांटाने काढवाने इच्छतो (काढी शकतो) होय, तो तेने शौरिक मत्स्यबंध विपुल धनप्रदान आपे छे–धन आपे छे.

मू०–तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव उग्घोसंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए यावत् तेना कहेवा प्रमाणे उद्घोषणा करी.

मू०–तए णं ते बहवे विज्जा य विज्जपुत्ता य जाणुआ य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छिपुत्ता य इमेयारूवं उग्घोसणं उग्घोसिज्जमाणं निसामेंति, निसामित्ता जेणेव सोरियस्स मच्छंधस्स गिहे जेणेव सोरियमच्छंधे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता उप्पात्तियाहिं ४ बुद्धीहि य परिणममाणा वमणेहि य छड्डणेहि य उवीलणेहि य कवलग्गाहेहिं य सल्लुद्धरणेहि य विसल्लकरणेहि य इच्छंति सोरियमच्छंधे मच्छकंटयं गलाओ नीहरित्तए । नो चेव णं संचाएंति नीहरि-

त्तए वा विसोहित्तए वा ।

अर्थ—त्यारपछी ते घणा वैद्यो एटले वैद्यक शास्त्र अने चिकित्सा बन्नेना जाण, वैद्यना पुत्रो, ज्ञायको एटले केवळ वैद्यकशास्त्रना जाणनारा, ज्ञायकना पुत्रो, चिकित्सको एटले केवळ चिकित्साने जाणनारा तथा चिकित्सकना पुत्रो ए सर्वेए आवा प्रकारनी उद्घोषणा कराती उद्घोषणाने सांभळी. सांभळीने तेओ ज्यां शौरिक मच्छीमारनुं घर हतुं अने ज्यां शौरिक मच्छीमार हतो, त्यां आव्या. आवीने औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मणिकी अने पारिणामिकी ए चार प्रकारनी बुद्धिवडे परिणाम पामेला तेओए पोतानी मेळे थयेला वमनवडे, छर्दनवडे एटले वातादिक द्रव्यना प्रयोगथी करावेला वमनवडे, अवपीडनवडे एटले दबाववावडे, कवलग्राहवडे एटले गळाना कांटाने दूर करवा माटे मोटा कोळीयाना ग्रहणवडे एटले मुखमां नांखवावडे अथवा मुखनुं मर्दन करवा माटे दाढनी नीचे लाकडानो ककडो मूकवावडे, शल्यना उद्धारवडे एटले यंत्रना प्रयोगथी कांटानो उद्धार करवावडे तथा विशल्यकरणवडे एटले औषधना सामर्थ्यथी शल्य (कांटा) रहित करवाना उपायवडे ते शौरिक मच्छीमारना गळामांथी ते मत्स्यनो कांटो काढवानी इच्छा करी. परंतु ते कांटो काढवाने के शोधवाने एटले परु विगेरेने दूर करवाने तेओ समर्थ थया नहीं.

मू०—तते णं ते बहवे विज्जा य विज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छियपुत्ता य जाहे नो संचाएंति सोरियस्स मच्छकंटगं गलाओ नीहरित्तए, ताहे संता जाव जामेव

दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।

अर्थ—त्यारपछी ते घणा वैद्यो, वैद्यपुत्रो, ज्ञायको, ज्ञायकपुत्रो, चिकित्सको अने चिकित्सकपुत्रो ज्यारे ते शौरिक मच्छीमारना गळामांथी ते मत्स्यकंटकने काढवा समर्थ थया नहीं, त्यारे तेओ श्रांत थया एटले थाकी गया यावत् जे दिशामांथी प्रगट थया हता एटले आव्या हता ते ज दिशामां पाछा गया–पोताने स्थानके पाछा गया.

मू०–तते णं से सोरियमच्छंधे विज्जपडियारनिव्विण्णे तेणं दुक्खेणं महया अभिभूते सुक्के जाव विहराति । एवं खलु गोयमा ! सोरियदत्ते पुरापोराणाणं जाव विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते शौरिक मच्छीमार वैद्यना प्रतिकारथी खेद पाम्यो सतो ते मोटा दुःखवडे पराभव पाम्यो सतो अने सुकाइ गयो सतो यावत् रहेलो छे. आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते शौरिकदत्त मच्छीमार पूर्वना जुना करेला कर्मना फळने भोगवतो यावत् रहेलो छे.

मू०–सोरिए णं भंते ! मच्छंधे इओ य कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

अर्थ—(गौतमस्वामीए पूछ्युं के) हे भगवन् ! ते शौरिक मच्छीमार अहींथी मरण समये मरण पामीने क्यां जशे ? अने क्यां उत्पन्न थशे ?

मू०—गोयमा! सत्तरि वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए, संसारो तहेव पुढवीओ, हत्थिणाउरे णगरे मच्छत्ताए उववन्ने, से णं ततो मच्छिएहिं जीवियाओ ववरोविए तत्थेव सेट्ठिकुलंसि बोहिं सोहम्मे कप्पे महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्विहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति । एवं खलु जंबू! निक्खेवो अट्ठमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि ॥ २९ ॥

॥ अट्ठमं अज्झयणं सोरियदत्तस्स सम्मत्तं ॥ ८ ॥

अर्थ—(श्री महावीरस्वामी उत्तर आपे छे के) हे गौतम! ते शौरिक मच्छीमार सीतेर वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने (भोगवीने) मरण समये मरण पामीने आ रत्नप्रभा नामनी पहेली नरकपृथ्वीने विषे नारकीपणे उत्पन्न थशे. विगेरे तेनो संसार ते ज प्रमाणे एटले प्रथम अध्ययनमां कह्या प्रमाणे कहेवो. यावत् साते नरकपृथ्वीमां अनुक्रमे उत्पन्न थशे. त्यारपछी हस्तिनापुर नगरमां मत्स्यपणे उत्पन्न थशे, त्यां मच्छीमारो तेने जीवितथी रहित करशे. पछी त्यां ज एटले हस्तिनापुर नामना नगरमां ज श्रेष्ठीना कुळने विषे उत्पन्न थशे. त्यां बाळपणाथी मुक्त थइ यौवन वयने पामशे त्यारे ते बोधिने एटले समकितने पामी चारित्र ग्रहण करी सौधर्मकल्प नामना पहेला देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी

आयुष्य पूर्ण थये चवीने महाविदेह क्षेत्रमां उच्च कुळने विषे उत्पन्न थशे. त्यां बाळपणाथी मुक्त थइ युवान थइ चारित्र ग्रहण करी ' सेत्स्यति ' एटले कृतकृत्य थशे, ' भोत्स्यते ' एटले केवळज्ञानवडे सर्व जाणवा लायक पदार्थोने जाणशे. ' मोक्ष्यति ' एटले सर्व कर्मथी मुक्त थशे. ' परिनिर्वास्यति ' एटले सर्व कर्मोए करेला संतापे करीने रहित थशे. अर्थात् सर्व दुःखना अंतने करशे. आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! निक्षेप कहेवो एटले आठमा अध्ययननो आ प्रमाणे अर्थ भगवान श्रीमहावीरस्वामीए कह्यो छे. ते में तमारी पासे कह्यो.

आ प्रमाणे शौरिकदत्त नामनुं आठमुं अध्ययन समाप्त थयुं. ८

अथ देवदत्ता नामनुं नवमुं अध्ययन. ९

हवे देवदत्ता नामना नवमा अध्ययनने विषे कांइक लखे छे.

मू०—जइ णं भंते ! उक्खेवो णवमस्स ।

अर्थ—जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के–हे भगवन् ! जो आठमा अध्ययननो आ तमे कह्यो ते प्रमाणे अर्थ भगवान श्री महावीरस्वामीए कह्यो छे, तो नवमा अध्ययननो उत्क्षेप (प्रस्तावना) कहो.

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं रोहीडए नामं नगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे । पुढवीवडेंसए उज्जाणे, धरणो जक्खो, वेसमणदत्तो राया, सिरी देवी, पूसनंदी कुमारे जुवराया ।

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये रोहीड नामनुं नगर हतुं. ते ऋद्धिवाळुं, निर्भय अने समृद्धिवाळुं हतुं. ते नगरनी ईशान खूणमां पृथ्वीवनंसक नामनुं उद्यान हतुं. ते उद्यानमां धरण नामनो यक्ष हतो एटले यक्षायतन हतुं. ते नगरमां वैश्रमणदत्त नामे राजा हतो. तेने श्रीदेवी नामनी पट्टराणी हती. ते बन्नेने पुष्पनंदी नामनो कुमार हतो. ते अनुक्रमे युवराज थयो हतो.

मू०—तत्थ णं रोहीडए नगरे दत्ते णामं गाहावती परिवसति अड्ढे, कण्हसिरी भारिया ।

अर्थ—ते रोहीड नामना नगरने विषे दत्त नामनो एक गाथापति रहेतो हतो. ते आढ्य एटले ऋद्धिवाळो विगेरे हतो. तेने कृष्णश्री नामनी भार्या हती.

मू०—तस्स णं दत्तस्स धूया कन्हसिरीए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया होत्था अहीणपडिपुण्णपंचेंदियसरीरा जाव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा ।

अर्थ—ते दत्त गाथापतिनी पुत्री कृष्णश्री भार्यानी आत्मजा देवदत्ता नामनी दारिका हती. तेणीना पांचे इंद्रियो अने शरीर हीनता रहित परिपूर्ण हतां, यावत् ते उत्कृष्ट अने उत्कृष्ट शरीरवाळी हती.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं सामी समोसढे जाव परिसा निग्गया (पडिगया)।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीरस्वामी ते नगरना उद्यानमां समवसर्या. यावत् तेमने वांदवा माटे नगरमांथी पर्षदा नीकळी (अने धर्म सांभळी पाछी पोताने स्थाने गइ).

मू०-ते णं काले णं ते णं समए णं जेट्ठे अंतेवासी छट्ठक्खमण तहेव जाव रायमग्गं ओगाढे हत्थी आसे पुरिसे पासति, तेसिं पुरिसाणं मज्झगयं पासति एगं इत्थियं अवउडगबंधणं उक्खित्तकन्ननासं जाव सूले भिज्जमाणं पासति, इमे अब्भत्थिए, तहेव निग्गए जाव एवं वयासी--एसा णं भंते ! इत्थिआ पुव्वभवे का आसी ?।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामीना मोटा शिष्य गौतम गणधरे छट्ठ तपने पारणे ते ज प्रमाणे यावत् राजमार्गमां प्रवेश कर्यो. त्यां घणा हाथी, अश्वो अने पुरुषोने जोया. ते पुरुषोनी मध्ये रहेली एक स्त्रीने जोइ.

१ पोताथी जन्मेलो.

ते स्त्रीने नीचुं मुख करी अवळा हाथे बांधी हती, तेना कान तथा नासिका कापेला हता यावत् शूलिकावडे भेदवा माटे लइ जवाती देखी. ते जोइ तेमने विचार थयो. पछी गोचरी लइ ते ज प्रमाणे नगरमांथी बहार नीकळ्या. यावत् भगवान पासे जइ आ प्रमाणे बोल्या–हे भगवन् ! आ स्त्री पूर्व भवमां कोण हती–केवी हती ?

मू०–एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सुपइट्ठे नामं नगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे । महसेणे राया ।

अथ—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां सुप्रतिष्ठ नामे नगर हतुं. ते ऋद्धिवाळुं, निर्भय अने समृद्धिवाळुं हतुं. तेमां महासेन नामे राजा हतो.

मू०–तस्स णं महासेणस्स रन्नो धारिणीपामोक्खाणं देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था ।

अर्थ—ते महासेन राजाने धारिणी विगेरे हजार राणीओ तेना अंतःपुरमां हती.

मू०–तस्स णं महासेणस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए सीहसेणे नामं कुमारे होत्था अहीणपडिपुण्णपंचेंदियसरीरे जुवराया ।

अर्थ—ते महासेन राजानो पुत्र धारिणी देवीनो आत्मज सिंहसेन नामनो कुमार हतो. तेना पांच इंद्रियो तथा शरीर हीनता रहित परिपूर्ण हतां. तथा ते युवराज थयो हतो.

मू०—तते णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अम्मापियरो अन्नया कयाइं पंच पासायवडिंसय-सयातिं करेंति अब्भुग्गयमूसियपहसिए ।

अर्थ—त्यारपछी ते सिंहसेन कुमारने माटे तेना मातापिताए एकदा कदाचित् पांचसो प्रासादावतंसक एटले श्रेष्ठ प्रासादो (महेलो) करावी आप्या. ते प्रासाद अत्यंत उंचा अने जाणे हसवाने आरंभ करता होय तेवा उज्वळ कराव्या. (तथा ' मणिकणगरयणचित्ते '—मणि, सुवर्ण अने रत्नोवडे विचित्र कराव्या. तथा ते पांचसो प्रासादोनी मध्ये एक मोटुं भवन कराव्युं. ते घणा स्तंभोना सेंकडावडे व्याप्त कराव्युं. इत्यादि भवनना वर्णननुं सूत्र जाणवुं.)

मू०—तए णं तस्स सीहसेणस्स कुमारस्स अन्नया कया वि सामापामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नगसयाणं एगदिवसे पाणिं गिण्हावेंसु, पंचसयओ दाओ ।

अर्थ—त्यारपछी ते सिंहसेन नामना कुमारने (तेना मातापिताए) एकदा कदाचित् श्यामा विगेरे पांचसो श्रेष्ठ राजकन्याओ साथे एक ज दिवसे पाणिग्रहण कराव्युं (परणाव्यो) तथा पांचसो पांचसोनो दायजो आप्यो एटले कोटि हिरण्य, कोटि सुवर्णथी आरंभी काम करनारी दासीओ पर्यंत पांचसो पांचसो वस्तुओ सिंहसेन कुमारने तेना मातापिताए आपी. अने ते कुमारे ते दरेक स्त्रीने एक एक वस्तु आपी.

मू०—तते णं से सीहसेणे कुमारे सामापामोक्खाहिं पंचहिं सयाहिं देवीहिं सर्द्धि उप्पि जाव विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सिंहसेन कुमार ते श्यामा विगेरे पांचसो राणीओनी साथे प्रासादोनी उपर यावत् विचरवा लाग्यो—क्रीडा करवा लाग्यो.

मू०—तते णं से महसेणे राया अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते, नीहरणं राया जाए महया (हिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे) ।

अर्थ—त्यारपछी ते महासेन राजा एकदा कदाचित् काळधर्मवडे युक्त थयो एटले मरण पाम्यो. त्यारे तेनुं नीहरण कर्युं एटले स्मशानमां लइ गया. पछी ते सिंहसेन कुमार राजा थयो. ते मोटा हिमवंत, महामलय, मंदराचळ अने महेंद्रना जेवा सारभूत थयो. इत्यादि राजानुं वर्णन अहीं कहेवुं.

मू०—तते णं से सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिते गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने, अवसेसाओ देवीओ नो आढाति नो परिजाणाति अणाढाइज्जमाणे अपरिजाणमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सिंहसेन राजा श्यामादेवीने विषे मूर्छित थयो एटले दोषने विषे पण गुणनो आरोप करवाथी

मूढ थयो, गृद्धिवाळो एटले तेणीनी ज आकांक्षावाळो थयो, ग्रथित एटले तेणीना ज स्नेहरूपी तंतुथी गुंथायेलो (बंधायेलो) थयो, तथा अध्युपपन्न एटले तेणीने विषे अत्यंत एकाग्रताने (तन्मयपणाने) पाम्यो. तेथी बाकीनी बीजी राणीओनो आदर करतो नहोतो, तथा अनुमोदन पण करतो नहोतो एटले वाणीवडे पण संतोष आपतो नहोतो. ए रीते नहीं आदर करतो अने नहीं अनुमोदन करतो सतो विचरतो हतो-रहेलो हतो.

मू०—तते णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंच धाईसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं समाणाइं एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अम्हं धूयाओ नो आढायंति नो परिजाणंति, अणाढाइज्जमाणे अपरिजाणमाणे विहरति, तं सेयं खलु अम्हं सामं देविं अग्गिपओगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियातो ववरोवित्तए, एवं संपेहेंति, संपेहित्ता सामाए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ पडिजागरमाणीओ विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते एक न्यून पांचसो (४९९) राणीओनी एक न्यून पांचसो (४९९) धात्री माताओ आ कथानो अर्थ (वृत्तांत) पामी सती (विचारवा लागी के) आ प्रमाणे निश्चे सिंहसेनराजा श्यामाराणीने विषे मूर्छित

एटले दोषने विषे पण गुणनी बुद्धिने धारण करनार मूढ थयो छे, गृद्धिवाळो एटले तेणीनी ज आकांक्षावाळो थयो छे, ग्रथित एटले तेणीना ज स्नेहरूपी तंतुथी बंधायेलो थयो छे, अने अध्युपपन्न एटले तेणीने विषे ज अत्यंत एकाग्रताने (तन्मयपणाने) पाम्यो छे. तेथी ते अमारी पुत्रीओनो आदर करतो नथी अने अनुमोदन एटले वाणीवडे पण प्रसन्नताने करतो नथी. नहीं आदर करतो अने नहीं अनुमोदन करतो सतो रहेलो छे. तेथी अमारे (आपणे) श्यामादेवीने अग्निना प्रयोगवडे, विषना प्रयोगवडे अथवा शस्त्रना प्रयोगवडे जीवित रहित करवी ए श्रेयकारक (योग्य) छे. आ प्रमाणे तेमणे विचार कर्यो. विचार करीने श्यामादेवीना आंतराने एटले अवसरने, अल्प परिवारपणारूप छिद्रने तथा निर्जनतारूप विवरोने जोती सती जोती सती विचरवा लागी एटले रहेवा लागी.

मू०—तते णं सा सामा देवी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी एवं वयासी—एवं खलु मम पंचण्हं सवत्तीसयाणं पंच माइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं समाणाइं अन्नमन्नं एवं वयासी—एवं खलु सीहसेणे जाव पडिजागरमाणीओ पडिजागरमाणीओ विहरंति, तं न नज्जति णं मम केण वि कुमरणेणं मारिस्सति त्ति कट्टु भीया जेणेव कोवघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ओहय जाव झियाति ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्यामादेवी आ कथानो अर्थ पामी सती (आ वृत्तांत जाण्यो त्यारे) आ प्रमाणे बोली

(मनमां विचार करवा लागी)-आ प्रमाणे निश्चे मारी पांचसो सपत्नीओनी पांचसो[1] माताओ आ कथानो अर्थ पामी सती परस्पर आ प्रमाणे बोली हती (विचार करती हती)-आ प्रमाणे निश्चे सिंहसेन राजा यावत् (श्यामा राणीमां आसक्त थयो छे तेथी आपणे तेणीने कोइ पण उपायथी मारवी इत्यादि विचारीने तेणीना अवसरादिकने) जोती सती जोती सती रहेली छे. तो हुं नथी जाणती के मने केवा खराब (भयंकर) मरणवडे मारशे ? एम करीने (विचारीने) ते भय पामी (तथा त्रास पामी) सती ज्यां कोपघर[2] हतुं त्यां आवी. आवीने हणायेला मनना संकल्पवाळी यावत् विचारवा लागी (एटले 'ओहयमणसंकप्पा '-तेणीना मननो विचार हणाइ गयो अर्थात् ते विचारमां दिग्मूढ बनी, 'भूमीगयदिठ्ठिया ' भूमि उपर दृष्टि राखी, 'करतलपल्हत्थमुही ' मुखने हस्ततलपर राखी, 'अट्टज्झाणोवगया '-आर्तध्यानने पामी सती ध्यान करवा लागी).

मू०—तते णं से सीहसेणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जेणेव कोवघरए जेणेव सामा देवी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सामं देवीं ओहयमणसंकप्पा जाव पासति, पासित्ता एवं वयासी—किन्नं देवाणुप्पिया ! जाव ओहयमणसंकप्पा झियासि ? ।

अर्थ—त्यारपछी ते सिंहसेन राजा आ कथानो अर्थ पाम्यो सतो (आ वृत्तांत जाणवामां आव्यो त्यारे) ज्यां कोप-

१ एक ओछी छता तेनी विवक्षा करी नथी तेथी सामान्यपणे पाचसो लखी छे. २ रीसाइने रहेवानुं घर.

घर हतुं अने ज्यां श्यामा देवी हती, त्यां आव्यो. आवीने श्यामा देवीने हणायेला मनना संकल्पवाळी यावत् जोइ. जोइने आ प्रमाणे बोल्यो.–हे देवानुप्रिया ! शुं तुं यावत् हणायेला मनना संकल्पवाळी थइ सती ध्यान करे छे ?

मू०–तते णं सा सामा देवी सीहसेणेण रण्णा एवं वुत्ता समाणी उप्फेणउप्फेणीयं सीहसेणं रायं एवं वयासी–एवं खलु सामी ! मम एगूणपंचसवत्तीसयाणं एगूणपंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं समाणाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए उवरि मुच्छिए अम्हाणं धूया णो आढाति जाव अंतराणि अ छिद्दाणि अ विवराणि य पडिजागरमाणीओ पडिजागरमाणीओ विहरंति, तं न नज्जति भीया जाव झियामि ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्यामा देवीने सिंहसेन राजाए आ प्रमाणे कह्युं त्यारे तेणीए कोपथी उष्ण थयेला वचनवडे सिंहसेन राजाने आ प्रमाणे कह्युं.–आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! मारी एक ओछी पांचसो सपत्नीनी एक ओछी पांचसो माताओ आ कथानो अर्थ (मारापर तमारी अत्यंत प्रीति छे इत्यादि वृत्तांत) पामी सती एकबीजी धात्रीमाताओने बोलावती हती, अने बोलावीने परस्पर आ प्रमाणे कहेती हती एटले विचार करती हती.–आ प्रमाणे निश्चे सिंहसेन राजा श्यामा देवीनी उपर मूर्छित थयो छे, तेथी आपणी पुत्रीओनो आदर करतो नथी इत्यादि विचारीने यावत् आंतराने,

१ हर्षनो के शमताभावनो श्वास, अश्रु, वचन विगेरे शीतळ होय छे अने कोपना के शोकना श्वासादिक उष्ण होय छे.

छिद्रने अने विवरोने जोती सती जोती सती रहेली छे. तेथी हुं नथी जाणती के (मने केवा खराब मरणवडे मारशे ? एम विचार आववाथी) हुं भय पामीने यावत् ध्यान करुं छुं.

आ सूत्रमां ' एवं खलु सामी ' ए पाठ उपर टीकामां नीचे प्रमाणे लख्युं छे.—आनी पछीना एटले ' एवं खलु सामी ' एनी पछीना वाक्यनो एक एक अक्षर प्रतोमां देखाय छे ते ठेकाणे आ प्रमाणे जाणवुं.

" एवं खलु सामी ! ममं एगूणगाणं पंचण्हं सवत्तीसयाणं एगूणपंचमाइसयाइं इमीसे कहाए लद्धट्ठाइं सवणयाए अन्नमन्नं सद्दावेंति, अन्नमन्नं सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु सीहसेणे राया सामाए देवीए मुच्छिए अम्हं धूयाओ नो आढाइ नो परियाणाइ, अणाढाएमाणे अपरियाण-माणे विहरइ । ' जा ' इति यावत्करणात्, तच्चेदं दृश्यम्—तं सेयं खलु अम्ह सामं देवीं अग्गि-पओगेण वा विसप्पओगेण वा सत्थप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवित्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता ममं अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणीओ विहरंति, तं न नज्जइ सामी ! ममं केणइ कुमरणेणं मारिस्संति त्ति कट्टु भीया, यावत्करणात् तत्था तासिया उव्विग्गा ओहयमण-संकप्पा भूमीगयदिट्ठीया इत्यादि दृश्यम् "।

"आ प्रमाणे निश्चे हे स्वामी ! मारी एक न्यून पांचसो सपत्नीओनी एक न्यून पांचसो माताओ आ कथाना अर्थने (मारा परनी तमारी प्रीतिना वृत्तांतने) पामीने श्रवण करीने एक बीजीने बोलावती हती. एक बीजीने बोलावीने आ प्रमाणे कहेती हती के-आ प्रमाणे निश्चे सिंहसेन राजा श्यामा देवीने विषे मूर्च्छित थयो छे. तेथी ते आपणी पुत्रीओनो आदर करतो नथी तथा अनुमोदन एटले वाणीवडे पण प्रसन्न करतो नथी. नहीं आदर करतो अने नहीं अनुमोदन करतो सतो विचरे छे-रहेलो छे. अहीं 'जा' एटले 'यावत्' शब्द लख्यो छे, तेथी आ प्रमाणे जाणवुं.-तेथी करीने आपणे श्यामादेवीने अग्निना प्रयोगवडे के विषना प्रयोगवडे के शस्त्रना प्रयोगवडे जीवितथी रहित करवी श्रेयस्कार छे-कल्याण कारक छे. आ प्रमाणे विचार करती हती. विचार करीने मारा अंतरने एटले अवसरने, छिद्रने एटले अल्प परिवारपणाने अने विवरने एटले निर्जनताने जोती सती रहेली छे. तो हे स्वामी ! हुं जाणती नथी के मने तेओ केवा प्रकारना खराब मरणवडे मारशे ? आ प्रमाणे मने विचार थवाथी हुं भय पामी. अहीं 'यावत्' शब्द होवाथी त्रास पामी, तर्षित थइ, उद्वेग पामी, मारा मनना संकल्प (विचार) हणाइ गया, अने भूमिपर दृष्टि राखीने हुं रही छुं. इत्यादि जाणवुं.

मू०-तते णं से सीहसेणे राया सामं देविं एवं वयासी-मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियाइसि, अहन्नं तह घत्तिहामि जहा णं तव णत्थि कत्तो वि सरीरस्स आबाहे वा पबाहे वा भविस्सति त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं (वग्गूहिं) समासेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सिंहसेन राजाए श्यामा देवीने आ प्रमाणे कह्युं के-हे देवानुप्रिया ! तुं हणायेला मनना संकल्पवाळी थइने यावत् ध्यान न कर (विचार न कर). हुं तेवी रीते यत्न करीश के जेथी तारा शरीरने कोइथी पण 'आबाधा' एटले थोडी पीडा अथवा 'प्रबाधा' एटले उत्कृष्ट पीडा नहीं थाय. आ प्रमाणे कहीने तेणे तेवा प्रकारनी इष्ट विगेरे वाणीवडे तेणीने आश्वासन कर्युं-धीरज आपी.

मू०-ततो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुपइट्ठस्स णगरस्स वहिया एगं महं कूडागारसालं करेह अणेगक्खंभसयसंनिविट्ठं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं करेह, करित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।

अर्थ—त्यारपछी (ते सिंहसेन राजा) त्यांथी नीकळ्यो. नीकळीने तेणे कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं-हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ. सुप्रतिष्ठ नगरनी बहार एक मोटी कूटाकारशाळा करावो. ते अनेक सेंकडो स्तंभोए करीने सहित, प्रासादीय[2], दर्शनीय[3], अभिरूप[4] अने प्रतिरूप[5] बनावो. बनावीने मारी आ आज्ञा मने पाछी आपो.

---

१ पर्वतना शिखर जेवा आकारवाळी. २ मननी प्रसन्नता करनार. ३ जोवाथी चक्षु तृप्त न थाय एवी. ४ इच्छित रूपवाळी. ५ दरेक जोनारने मनोहर लागे तेवी.

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा करयल जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सुपइट्ठनगरस्स वहिया पच्चत्थिमे दिसीविभाए एगं महं कूडागारसालं जाव करेंति अणेगक्खंभसयसंनिविट्ठं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं, जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषोए बे हाथ जोडी यावत् तेनी आज्ञा अंगीकार करी. अंगीकार करीने सुप्रतिष्ठ नगरनी बहार पश्चिम दिशाना विभागमां एक मोटी कूटाकारशाळा यावत् बनावी. ते अनेक सेंकडो स्तंभो सहित, प्रासादीय, दर्शनीय, अभिरूप अने प्रतिरूप बनावी. पछी ज्यां सिंहसेन राजा हतो त्यां आव्या. आवीने तेनी आज्ञा पाछी सोंपी एटले जेम तमे कह्युं तेम अमे कर्युं छे एम कह्युं.

मू०—तते णं से सीहसेणे राया अन्नया कयाति एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणाइं पंचमाइसयाइं आमंतेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सिंहसेन राजाए एकदा कदाचित् एक न्यून पांचसो राणीओनी, एक न्यून पांचसो (धाव) माताओने आमंत्रण कर्युं.

मू०—तते णं तासिं एगूणपंचदेवीसयाणं एगूणपंचमाइसयाइं सीहसेणेणं रन्ना आमंतियाइं समाणाइं सव्वालंकारविभूसियाइं जहाविभवेणं जेणेव सुपइट्ठे नगरे जेणेव सीहसेणे राया तेणेव उवागच्छंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते एक न्यून पांचसो राणीओनी एक न्यून पांचसो माताओ सिंहसेनराजाए आमंत्रण करी सती सर्व अलकारोवडे विभूषित थइ पोतपोताना वैभव प्रमाणे तैयार थइ ज्यां सुप्रतिष्ठित नगर हतुं अने ज्यां सिंहसेन राजा हतो त्यां आवी.

मू०—तते णं से सीहसेणे राया एगूणपंचदेवीसयाणं एगूणगाणं पंचण्हं माइसयाणं कूडागारसालं आवासे दलयति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सिंहसेन राजाए ते एक न्यून पांचसो राणीओनी एक न्यून पांचसो माताओने ते कूटाकारशाळा निवास करवा माटे आपी.

मू०—तते णं से सीहसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेह, सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं च

कूडागारसालं साहरह ।

अर्थ—त्यारपछी ते सिंहसेन राजाए कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के-हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ. अने विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करो, तथा घणां पुष्प, वस्त्र, गंध अने माळारूपी अलंकारने कूटाकारशाळामां लइ जाओ.

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव साहरेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौटुंबिक पुरुषो ते ज प्रमाणे यावत् सर्व लइ गया.

मू०—तते णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणपंचमाइसयाइं सव्वालंकारविभूसियाइं करेंति, करित्ता तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च आसाएमाणाइं विसाएमाणाइं परिभाएमाणाइं परिभुंजमाणाइं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगीयमाणाइं विहरंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते एक न्यून पांचसो राणीओनी एक न्यून पांचसो माताओने सर्व अलंकारोवडे विभूषित करी, विभूषित करीने ते विपुल अशन, पान, खादिम, स्वादिम अने मदिरानो आस्वाद करती एटले शेरडीनी जेम घणानो त्याग करी थोडुं खाती, विस्वाद करती एटले खजुर विगेरेनी जेम अन्पनो त्याग करी घणुं खाती, अन्यने आपती तथा सर्वने खाती सती गंधर्वेवडे अने नाटकवडे गवाती (प्रशंसा कराती) सती विचरवा लागी-रहेवा लागी.

मू०—तते णं से सीहसेणे राया अद्धरत्तकालसमयंसि वहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव कूडागारसाला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता कूडागारसालाए दुवाराइं पिहेति, पिहित्ता कूडागारसालाए सव्वओ समंता अगणिकायं दलयति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सिंहसेन राजा अर्धरात्रिने समये घणा पुरुषो (सेवको)नी साथे परिवर्यो सतो ज्यां कूटाकारशाळा हती त्यां आव्यो. आवीने कूटाकारशाळाना द्वार बंध कर्या. बंध करीने कूटाकारशाळानी चोतरफ सर्व दिशाए अग्नि मूकाव्यो.

मू०—तते णं तासिं एगूणगाणं पंचण्हं देवीसयाणं एगूणगाइं पंचमाइसयाइं सीहसेणरण्णा आलीवियाइं समाणाइं रोयमाणाइं कंदमाणाइं विलवमाणाइं अत्ताणाइं असरणाइं कालधम्मुणा संजुत्ताइं ।

अर्थ—त्यारपछी ते एक न्यून पांचसो राणीओनी एक न्यून पांचसो माताओ सिंहसेन राजाए बाळी सती रोती रोती, आक्रंद करती करती अने विलाप करती करती त्राण (रक्षण) रहित अने शरण रहित सती काळधर्मवडे युक्त थइ—मरण पामी.

मू०—तते णं से सीहसेणे राया एयकम्मे एयप्पहाणे एयविज्जे एयसमुदाचारे सुबहुं पावकम्मं समज्जिणित्ता चोत्तीसं वाससयाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमाइं ठितिएसु उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते सिंहसेन राजा आवां पापकर्म करनार, आवां कर्ममां ज प्रधान, आवी ज विद्यावाळो अने आवा ज आचारवाळो अत्यंत घणां पापकर्मने उपार्जन करीने चोत्रीश सो (३४००) वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने (भोगवीने) मरण समये मरण पामीने छठी नरकपृथ्वीने विषे उत्कृष्ट बावीश सागरोपमनी स्थितिवाळा नारकीने मध्ये उत्पन्न थयो.

मू०—से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव रोहीडए नगरे दत्तस्स सत्थवाहस्स कन्नसिरीए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—ते (सिंहसेन राजानो जीव) ते छठी नरकपृथ्वीमांथी आंतरारहित नीकळीने आ ज रोहीड नगरमां दत्त नामना सार्थवाहनी कृष्णश्री नामनी भार्यानी कुक्षिने विषे पुत्रीपणे उत्पन्न थयो.

मू०—तते णं सा कन्नसिरी नवण्हं मासाणं जाव दारियं पयाया सुकुमालपाणिपायं(जाव)सुरूवं ।

अर्थ—त्यारपछी ते कृष्णश्रीए नव मास परिपूर्ण थया त्यारे यावत् दारिका (पुत्री)ने प्रसवी. तेणीना हाथ पग कोमळ हता, यावत् ते सारा रूपवाळी हती.

मू०—तते णं तीसे दारियाए अम्मापियरो निव्वित्तबारसाहियाए विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं जाव मित्तणाति णामधिज्जं करेंति तं होऊ णं दारिया देवदत्ता णामेणं तते णं सा देवदत्ता पंचधातीपरिगहिया जाव परिवड्ढति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पुत्रीना मातापिताए बार दिवस व्यतीत थया त्यारे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार करावी यावत् मित्र, ज्ञाति विगेरेने भोजन करावी तेणीनुं नाम कर्युं (पाड्युं) के यावत् ते कारण माटे आ अमारी पुत्री नामे करीने देवदत्ता हो. त्यारपछी ते देवदत्ता दारिका पांच धात्रीमाताए ग्रहण (पालन) करी सती यावत् वृद्धि पामी.

मू०—तते णं सा देवदत्ता दारिया उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण रूवेण लावण्णेण य जाव अतीव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते देवदत्ता दारिका बाल्यपणाथी मुक्त थइ यौवनवडे, रूपवडे अने लावण्य (शरीरनी कांति)वडे अत्यंत उत्कृष्ट अने उत्कृष्ट शरीरवाळी पण थइ.

मू०—तते णं सा देवदत्ता दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया जाव विभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं

जाव परिक्खित्ता उप्पिं आगासतलगंसि कणगतिंदूसेणं कीलमाणी विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते देवदत्ता दारिका एकदा कदाचित् स्नान करी यावत् विभूषित थइ, घणी कुब्जा दासी विगेरे सर्व जातिनी दासीओथी यावत् परिवरेली थइने (पोताना प्रासादनी) उपर अगाशीमां सुवर्णना गेडीदडावडे क्रीडा करती रहेली हती.

मू०—इमं च णं वेसमणदत्ते राया ण्हाए जाव विभूसिए आसं दुरूहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे आसवाहिणीयाए णिज्जायमाणे दत्तस्स गाहावइस्स गिहस्स अदूरसामंतेण विइवयति ।

अर्थ—आ वखते वैश्रमणदत्त नामनो राजा स्नान करी यावत् विभूषित थइ अश्वपर आरूढ थइ घणा पुरुषो (सेवको)नी साथे परिवरीने अश्वक्रीडा करवाने नीकळ्यो सतो ते दत्त गाथापतिना घरनी नहीं अति दूर अने नहीं अति समीपे एवी रीते एटले पासे थइने चाल्यो.

मू०—तते णं से वेसमणे राया जाव विइवयमाणे देवदत्तं दारियं उप्पिं आगासतलगंसि कणगतिंदूसेण य कीलमाणीं पासति, पासित्ता देवदत्ताए दारियाए जुव्वणेण य लावण्णेण य जाव विम्हिए कोडुंवियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—कस्स णं देवाणुप्पिया ! एसा

दारिया ? किं वा नामधेज्जेणं ?

अर्थ—त्यारपछी ते वैश्रमणदत्त राजाए यावत् जता सता देवदत्ता नामनी दारिकाने (पोताना प्रासाद उपर) अगाशीमां सुवर्णना गेडीदडावडे रमती जोइ. जोइने देवदत्ता दारिकाना यौवनवडे (रूपवडे) अने लावण्यवडे एटले शरीरनी कांतिवडे यावत् आश्चर्य पामी कौडुंबिक पुरुषोने बोलाव्या. बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं (पूछ्युं) के—हे देवानुप्रियो ! आ दारिका कोनी छे ? तथा तेणीनुं नाम शुं छे ?

मू०—तते णं ते कोडुंबियपुरिसा वेसमणरायं करयल एवं वयासी—एस णं सामी ! दत्तस्स सत्थवाहस्स धूआ कण्हसिरीए भारियाए अत्तया देवदत्ता नामं दारिया रूवेण य जुव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा ।

अर्थ—त्यारपछी ते कौडुंबिक पुरुषोए ते वैश्रमणदत्त राजाने बे हाथ मस्तके राखी आ प्रमाणे कह्युं के—हे स्वामी ! आ दत्त नामना सार्थवाहनी पुत्री कृष्णश्री भार्यानी आत्मजा देवदत्ता नामनी दारिका रूपवडे, यौवनवडे अने लावण्यवडे उत्कृष्ट अने उत्कृष्ट शरीरवाळी (श्रेष्ठ शरीरवाळी) छे.

मू०—तते णं से वेसमणे राया आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दत्तस्स

धूयं कन्नसिरीए भारियाए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसणंदस्स जुवरण्णो भारियत्ताए वरेह जति वि सा सयं रज्जसुक्का ।

अर्थ—त्यारपछी ते वैश्रमणदत्त राजाए अश्ववाहनिका (अश्वक्रीडा) थकी पाछा वळया सता आभ्यंतर सभाना पुरुषोने बोलाव्या. आभ्यंतर सभाना पुरुषोने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के–हे देवानुप्रियो ! तमे जाओ, अने दत्त सार्थवाहनी पुत्री कृष्णश्री भार्यानी आत्मजा देवदत्ता नामनी दारिकाने पुष्पनंदी युवराजनी भार्यापणे वरो (मागो). जो के ते पोते राज्यना शुल्कवाळी होय एटले तेणीना मूल्य बदल राज्य मागे तो ते पण आपजो.

मू०--तते णं ते अब्भितरट्ठाणिज्जा पुरिसा वेसमणेणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ण्हाया जाव सुद्धप्पावेसाइं संपरिवुडा जेणेव दत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते आभ्यंतर सभाना पुरुषोए वैश्रमणदत्त राजाए आ प्रमाणे कह्या सता (कह्युं त्यारे) हृष्ट तुष्ट थइ बे हाथ मस्तके जोडी यावत् तेनी आज्ञा अंगीकार करी. अंगीकार करीने तेमणे स्नान कर्युं, यावत् शुद्ध (उज्वळ) वस्त्र विगेरे पहेरी ज्यां दत्त सार्थवाहनुं घर हतुं त्यां आव्या.

मू०--तते णं से दत्ते सत्थवाहे ते पुरिसे एज्जमाणे पासति, ते पुरिसे एज्जमाणे पासित्ता हट्ठ

तुट्ठ आसणाओ अब्भुट्ठेइ, आसणाओ अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गते आसणेणं उवनिमंतेति, उवनिमंतित्ता ते पुरिसे आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! किं आगमणप्पओअणं ?

अर्थ—त्यारपछी ते दत्त सार्थवाहे ते पुरुषोने आवता जोया. ते पुरुषोने आवता जोइने हृष्ट तुष्ट थइ आसनपरथी उभो थयो. आसनपरथी उभा थइ सात आठ पगलां सामो गयो, तेमने आसनवडे निमंत्रण कर्युं (आसनपर बेसवानुं कह्युं). निमंत्रण करी ते पुरुषो आश्वस्त थया, विश्वस्त थया अने आसनपर बेठा त्यारे तेणे तेमने आ प्रमाणे कह्युं के-हे देवानुप्रियो! मने आज्ञा आपो (कहो) तमारे आववानुं शुं प्रयोजन छे?

मू.-तते णं ते रायपुरिसा दत्तं सत्थवाहं एवं वयासी-अम्हे णं देवाणुप्पिया! तव धूयं कण्हसिरीए अत्तयं देवदत्तं दारियं पूसनंदिस्स जुवरण्णो भारियत्ताते वरेमो, तं जइ णं जाणासि देवाणुप्पिया! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो, दिज्जउ णं देवदत्ता भारिया पूसणंदिस्स जुवरण्णो, भण देवाणुप्पिया! किं दलयामो सुक्कं?।

अर्थ—त्यारपछी ते राजपुरुषोए दत्त सार्थवाहने आ प्रमाणे कह्युं के-हे देवानुप्रिय! अमे तमारी पुत्री कृष्णश्री

भार्यानी आत्मजा देवदत्ता नामनी दारिकाने पुष्पनंदी युवराजनी भार्यापणे मागीए छीए. तेथी हे देवानुप्रिय ! जो तमे जाणता (मानता) हो के आ योग्य छे, पात्र छे, श्लाघा करवा लायक छे अने ते बन्ने वरवहुनो संयोग सदृश एटले उचित छे, तो तमे देवदत्ता भार्या पुष्पनंदी युवराजने आपो अने हे देवानुप्रिय ! कहो, अमे तेनुं शुं शुल्क (मूल्य) आपीए ? एटले ते बदल अमे शुं द्रव्यादिक आपीए ?

मू०—तते णं से दत्ते अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—एवं चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुक्कं जन्नं वेसमणे राया मम दारिया निमित्तेणं अणुगिण्हाति, ते ठाणिज्जपुरिसे विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति संमाणेति, सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते दत्त सार्थवाहे ते आभ्यंतर सभाना पुरुषोने आ आ प्रमाणे कह्युं के—हे देवानुप्रियो ! आ प्रमाणे निश्चे मारे ए ज शुल्क छे के वैश्रमणदत्त राजा मारी पुत्रीने ग्रहण करवानुं अंगीकार करे. (एम कही) ते आभ्यंतर सभाना राजपुरुषोनो विपुल एवा पुष्प, वस्त्र, गंध अने माळारूप अलंकारवडे सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं, सत्कार करी सन्मान करी तेमने विसर्जन कर्या—विदाय कर्या.

मू०—तते णं ते ठाणिज्जपुरिसा जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वेसमणस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेंति ।

अर्थ—त्यारपछी ते आभ्यंतर सभाना पुरुषो ज्यां वैश्रमणदत्त राजा हतो त्यां आव्या. आवीने तेमणे वैश्रमणदत्त राजाने ते अर्थ (ते सर्व वृत्तांत) निवेदन कर्यो (कह्यो).

मू०—तते णं से दत्ते गाहावती अन्नया कयावि सोभणंसि तिहिकरणदिवसनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असणं पाणं खादिमं सादिमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तनाति आमंतेति ण्हाते जाव पायच्छित्ते सुहासणवरगते तेणं मित्तनाति सद्धिं सपरिवुडे तं विउलं असणं पाणं खादिमं सादिमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजमाणा विहरति, जिमियभुत्तुत्तरागया आयंते चोक्खे परमसुईभूए तं मित्तनाइनियग विउलगंधपुप्फ जाव अलंकारेणं सक्कारेति संमाणेति, सक्कारित्ता संमाणित्ता देवदत्तं दारियं ण्हायं विभूसियसरीरं पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरूहति, दुरूहित्ता सुबहुमित्त जाव सद्धिं संपरिवुडे सव्वइड्ढीए जाव नाइयरवेणं रोहीडं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव वेसमणरण्णो गिहे जेणेव वेसमणे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेति, वद्धावित्ता वेसमणस्स रन्नो देवदत्तं दारियं उवणेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते दत्त गाथापतिए एकदा कदाचित् सारा (उत्तम) तिथि, करण, दिवस, नक्षत्र अने मुहूर्तने विषे

विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार कराव्या. तैयार करावीने मित्र, ज्ञाति विगेरेने आमंत्रण कर्युं. स्नान कर्युं यावत् प्रायश्चित्त कर्युं. श्रेष्ठ सुखासनपर बेठो. पछी ते मित्र, ज्ञाति विगेरेनी साथे परिवर्यो सतो ते विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमनुं आस्वादन करतो एटले शेरडीनी जेम घणानो त्याग करी थोडुं खातो, विस्वाद करतो एटले खजुर विगेरेनी जेम अल्पनो त्याग करी घणुं खातो, अन्यने आपतो अने सर्वने खातो सतो विचरवा लाग्यो—रह्यो. भोजन जमी रह्या पछी आचांत एटले जळनुं चलु कर्युं, चोच एटले अन्नना कणीया विगेरे दूर करी अर्थात् अत्यंत पवित्र थयो. पछी ते मित्र, ज्ञाति, पोताना, विगेरेने विपुल एवा गंध, पुष्प यावत् अलंकारवडे सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं. सत्कार करी, सन्मान करी देवदत्ता दारिकाने स्नान करावी शरीरे विभूषित करी हजार पुरुषोथी वहन करातो शिबिका उपर आरुढ करी. आरुढ करीने (बेसाडीने) घणा मित्रो, ज्ञाति यावत् (स्वकीय, संबंधी, परिजननी) साथे परिवर्यो सतो सर्व ऋद्धिवडे यावत् वाजित्रोना शब्दवडे रोहीड नगरनी मध्ये मध्ये थइने ज्यां वैश्रमणदत्त राजानुं घर हतुं अने ज्यां वैश्रमणदत्त राजा हतो त्यां आव्यो. आवीने बे हाथ जोडी यावत् तेने वधाव्यो. वधावीने ते वैश्रमणदत्त राजाने पोतानी देवदत्ता नामनी दारिका (पुत्री) आपी (अर्पण करी).

मू०—तते णं से वेसमणे राया देवदत्तं दारियं उवणीयं पासति, उवणीयं पासित्ता हट्ठ तुट्ठ विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेति, उवक्खडावित्ता मित्तनाति आमंतेति, जाव

सक्कारेति, सक्कारित्ता पूसणंदिकुमारं देवदत्तं च दारियं पट्टयं दुरूहेति, दुरूहित्ता सियापीतेहिं कलसेहिं मज्जावेति, मज्जावित्ता वरनेवत्थाइं करेति, करित्ता अग्गिहोमं करेति, करित्ता पूसणंदिकुमारं देवदत्ताए दारियाए पाणिं गिण्हावेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते वैश्रमणदत्त राजाए देवदत्ता दारिकाने प्राप्त थयेली जोइ. प्राप्त थयेली जोइने हृष्ट तुष्ट थइने विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिमने तैयार कराव्या. तैयार करावीने मित्र, ज्ञाति विगेरेने (भोजन माटे) आमंत्रण कर्युं यावत् सत्कार कर्यो. सत्कार करीने पुष्पनंदी कुमारने तथा देवदत्ता दारिकाने पट्टक (बाजोठ) उपर बेसाड्या. बेसाडीने श्वेत अने पीळा एटले रुपाना अने सोनाना कळशोवडे स्नान कराव्युं. स्नान करावीने श्रेष्ठ वस्त्र विगेरे पहेराव्यां, पहेरावीने अग्निनो होम कर्यो. करीने पुष्पनंदी कुमारने देवदत्ता दारिकानुं पाणिग्रहण कराव्युं. (पाणिग्रहणनी क्रिया शरु करावी.)

मू०—तते णं से वेसमणे राया पूसनंदिकुमारस्स देवदत्तं दारियं सव्वड्ढीए जाव रवेणं महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं पाणिग्गहणं कारेति, देवदत्ताए दारियाए अम्मापियरो मित्त जाव परियणं च विउलेणं असणपाणखादिमसादिमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेति सम्माणेति जाव पडिविसज्जेति ।

अर्थ—त्यारपछी ते वैश्रमणदत्त राजाए पुष्पनंदी कुमारने देवदत्ता दारिका साथे सर्व ऋद्धिवडे यावत् वाजित्रना शब्दवडे मोटी ऋद्धि अने सत्कारना समुदायवडे पाणिग्रहण कराव्युं. पछी देवदत्ता दारिकाना मातापिताने तथा मित्र यावत् परिजनने विपुल एवा अशन, पान, खादिम अने स्वादिमवडे तथा वस्त्र, गंध, माळा अने अलंकारवडे सत्कार कर्यो, सन्मान कर्युं यावत् तेमने विदाय कर्या. ('सव्वइड्ढीए' ए ठेकाणे यावत् शब्द लख्यो छे तेथी आ प्रमाणे जाणवुं.– 'सव्वजुईए'–सर्वद्युत्या' एटले आभरणादिक संबंधी सर्व कांतिवडे, अथवा 'सर्वयुक्त्या' एटले उचित अने इष्ट वस्तुनी घटना (प्राप्ति) रूप सर्व युक्तिवडे, सर्व बळ एटले सैन्यवडे, सर्व समुदायवडे एटले सर्व पुरजनोना मेळापवडे, सर्व आदरवडे एटले सर्व उचित कार्य करवावडे, 'सव्वविभूईए' एटले सर्व संपत्तिवडे, 'सव्वविभूसाए' एटले समग्र-शोभावडे, 'सव्वसंभमेणं' एटले हर्षथी करेली उत्सुकतावडे, 'सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेण सव्वतूरसद्दसंनिनाएणं'–सर्व पुष्प, गंध, माल्य अने अलंकारवडे तथा सर्व तूर्य (वाजित्र)ना शब्द मळवामां जे प्राप्त थयेलो मोटो नाद (घोष) ते वडे, ऋद्धि विगेरे पदार्थो थोडा होय तो पण सर्व शब्दनो प्रयोग जोवामां आवे छे, तेथी कहे छे के– 'महता इड्ढीए'–मोटी ऋद्धिवडे, 'महता जुईए'–मोटी कांतिवडे अथवा मोटी युक्तिवडे, 'महता बलेणं'–मोटा सैन्यवडे, 'महता समुदएणं'–मोटा समुदायवडे, 'महता वरतुरियजमगसमगपवाइएणं'–मोटा श्रेष्ठ वाजित्रना एकी साथे अवाजवडे, आ हकीकतने विशेषपणे कहे छे–'संखपणवपडहभेरिझल्लरिखरमुहिहुडुक्कमुरवमुइंगदुंदुहिनिग्घोसनाइयरवेणं'–शंख, पणव, पडह, भेरी, झालर, खरमुखी, हुडुक, मुरव, मृदंग अने दुंदुभि आ सर्व वाजित्रोनो

अत्यंत घोष एटले मोटा प्रयत्नथी उत्पन्न करेलो शब्द तथा नादित एटले सामान्य ध्वनि ए बन्ने प्रकारना शब्दवडे एटले आ सर्व वाजित्रोना ध्वनिपूर्वक पाणिग्रहण कराव्युं.)

मू०—तए णं से पूसनंदी कुमारे देवदत्ताए सद्धिं उप्पिं पासाय फुट्टेहिं मुइंगमत्थेहिं बत्तीसं उवगिज्ज जाव विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पुष्पनंदी कुमार देवदत्तानी साथे महेलना उपरना माळमां फुटता (वगाडाता) मृदंगना मस्तकवडे बत्रीश प्रकारना नाटकवडे गवातो (प्रशंसा करातो) सतो यावत् विचरवा लाग्यो.

मू०—तते णं से वेसमणे राया अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते नीहरणं जाव राया जाते।

अर्थ—त्यारपछी ते वैश्रमणदत्त राजा एकदा कदाचित् काळधर्मवडे युक्त थयो एटले मरण पाम्यो. तेनुं नीहरण कर्युं एटले स्मशानमां लइ गया विगेरे यावत् (पुष्पनंदी) राजा थयो.

मू०—तए णं से पूसनंदी राया सिरीए देवीए मायभत्तिते यावि होत्था, कल्लाकल्लिं जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए पायवडणं करेति, करित्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भिगावेति, अट्ठिसुहाते मंससुहाते तयासुहाते (चम्मसुहाए) रोमसुहाए

चोव्विहाए संवाहणाए संवाहावेति, सुरभिणा गंधवट्टएणं उवट्टावेति, तिहिं उदएहिं मज्जावेति, तं जहा–उसिणोदएणं सीओदएणं गंधोदएणं, विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं भोयावेति सिरीए देवीए ण्हाताए जाव पायच्छित्ताए जिमियभुत्तुत्तरागयाए तते णं पच्छा ण्हाति वा भुंजाति वा उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते पुष्पनंदी राजा श्रीदेवी जे पोतानी माता तेनेविषे भक्तिवाळो हतो. तेथी हमेशां प्रातःकाळे ज्यां श्रीदेवी होय त्यां आवतो हतो. आवीने श्रीदेवीमाताना पादने वंदन करतो हतो. वंदनकरीने शतपाक अने सहस्रपाक तेलवडे अभ्यंगन करतो हतो. अस्थिने सुखकारक, मांसने सुखकारक, त्वचा (चामडी)ने सुखकारक अने रोमने सुखकारक एम चार प्रकारनी संवाहनावडे संवाहना करतो हतो, सुगंधि गंधचूर्णवडे उद्वर्तन करतो हतो, पछी त्रणजातना जळवडे स्नान करावतो हतो, ते त्रणप्रकारना जळ आ प्रमाणे छे.–उष्ण जळ, शीत जळ अने सुगंधि जळ. आ त्रणप्रकारना जळवडे स्नान करावतो हतो. पछी विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चारप्रकारना आहारनुं भोजन करावतो हतो. आ प्रमाणे श्रीदेवी स्नान करी यावत् प्रायश्चित्त करी यावत् भोजन करे अने भोजन कर्या पछी पोताने स्थाने आवीने बेसे. त्यारपछी ते (पुष्पनंदी राजा) पोते स्नान करे, भोजन करे अने उदार एवा मनुष्यसंबंधी कामभोगने भोगवतो विचरे.

मू०—तते णं तीसे देवदत्ताए देवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं

जागरमाणीइ इमेयारूवे अब्भत्थिए चिंतिए कप्पिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पन्ने—एवं खलु पूसनंदी राया सिरीए देवीए माइभत्ते जाव विहराति, तं एएणं वक्खेवेणं नो संचाएमि अहं पूसनंदिणा रण्णा सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीए विहरित्तए, तं सेयं खलु मम सिरीदेविं अग्गिपओगेण सत्थप्पओगेण विसप्पओगेण मंतप्पओगेण वा जीवियाओ ववरोवेत्तए, ववरोवित्ता पूसनंदिरन्ना सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुंजमाणीए विहरित्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सिरीए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणी विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी ते देवदत्ता देवी (राणी) एकदा कदाचित् पूर्व रात्रि अने अपर रात्रिनी वच्चे एटले मध्यरात्रिने समये कुटुंबजागरिका प्रत्ये जागती एटले कुटुंबसंबंधी चिंता करती हती, ते वखते तेणीने आवा प्रकारनो अभ्यर्थित (इच्छित), चिंतवेलो, कल्पेलो, प्रार्थना करेलो अने मनमां रहेलो संकल्प (विचार) उत्पन्न थयो.—आ प्रमाणे निश्चे पुष्पनंदी राजा श्रीदेवी माताने विषे भक्तिमान होवाथी यावत् (तेनी ज सेवा करता) विचरे छे. तेथी आ व्याक्षेप (व्यवसाय)ने लीधे हुं पुष्पनंदी राजा साथे उदार कामभोगने भोगवती रहेवाने माटे शक्तिमान थइ शकती नथी. तेथी करीने मारे श्रीदेवीने अग्निना प्रयोगवडे, शस्त्रना प्रयोगवडे, विषना प्रयोगवडे के मंत्रना प्रयोगवडे जीवितथी दूर करवाने

अने जीवितथी दूर करीने पुष्पनंदी राजानी साथे उदार कामभोग भोगवती सती विचरवाने श्रेयकारक (योग्य) छे. आ प्रमाणे तेणीए विचार कर्यो. विचार करीने श्रीदेवीना आंतराने एटले अवसरने, अल्प परिवारपणारूप छिद्रने तथा निर्जनतारूप विवरोने जोती सती विचरवा लागी–रहेवा लागी.

मू०--तते णं सा सिरीदेवी अन्नया कया वि मज्जाइया विरहियसयणिज्जंसि सुहपसुत्ता जाया यावि होत्था ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रीदेवी एकदा कदाचित् मदिरापान करी एकांतमां शय्याने विषे सुखे सुती हती.

मू०--इमं च णं देवदत्ता देवी जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिरीदेविं मज्जाइयं विरहितसयणिज्जंसि सुहपसुत्तं पासति, पासित्ता दिसालोयं करेति, करित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता लोहदंडं परामुसति, परामुसित्ता लोहदंडं तावेति, तत्तं समजोइभूयं फुल्लकिंसुयसमाणं संडासएणं गहाय जेणेव सिरीदेवी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिरीए देवीए अवाणंसि पक्खिवेति ।

अर्थ—आ वखते देवदत्ता देवी ज्यां श्रीदेवी हती त्यां आवी. आवीने श्रीदेवीने मदिरापान करी एकांत स्थाने

शय्यामां सुखे सुतेली जोइ. जोइने चोतरफ सर्व दिशामां दृष्टि करी (जोयुं.) दृष्टि करीने ज्यां भक्तगृह (रसोडुं) हतुं त्यां आवी. आवीने एक लोढानो दंड ग्रहण कर्यो. ग्रहण करीने ते लोढाना दंडने अग्निमां तपाव्यो. तपावीने अग्निनी जेवा वर्णवाळा थयेला अने विकस्वर किंशुक (केसुडा)ना पुष्प जेवा वर्णवाळा थयेला ते लोढाना दंडने सांडसीवडे ग्रहण करी ज्यां श्रीदेवी हती त्यां आवी. आवीने श्रीदेवीना अपान (योनि) स्थानमां ते दंड नांख्यो.

मू०—तते णं सा सिरी देवी महया महया सद्देणं आरसित्ता कालधम्मुणा संजुत्ता ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रीदेवी मोटा मोटा शब्दवडे बूम पाडीने (तत्काळ) काळधर्मवडे युक्त थइ–मरण पामी.

मू०—तते णं तीसे सिरीए देवीए दासचेडीओ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्तं देविं ततो अवक्कममाणिं पासंति, पासित्ता जेणेव सिरी देवी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सिरीदेविं निप्पाणं निच्चिट्ठं जीवियाविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अहो अकज्जमिति कट्टु रोयमाणीओ कंदमाणीओ विलवमाणीओ जेणेव पूसनंदी राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पूसनंदिं रायं एवं वयासी–एवं खलु सामी ! सिरी देवी देव-

१ तवेथो विगेरे काइ वस्तु.

दत्ताए देवीए अकाले चेव जीवियाओ ववरोविया ।

अर्थ— त्यारपछी ते श्रीदेवीनी दासचेटीओ (दासीओ) आक्रंदनो शब्द सांभळीने मनमां धारीने ज्यां श्रीदेवी हती त्यां जवा चाली. तेणे देवदत्तादेवीने त्यांथी पाछीवळीने जती जोइ. जोइने ज्यां श्रीदेवी हती त्यां आवी. एटले श्रीदेवीने प्राणरहित, चेष्टारहित अने जीवितथी मुक्त थयेली जोइ. जोइने हाय ! हाय ! अहो ! आ अकार्य थयुं. एम करी (बोली)ने रोतीरोती एटले अश्रु मूकती, आक्रंद करती अने विलाप करती ज्यां पुष्पनंदी राजा हतो त्यां आवी. आवीने पुष्पनंदीराजाने आ प्रमाणे कह्युं.—निश्चे हे स्वामी ! श्रीदेवीने देवदत्ता देवीए अकाळे ज जीवितथी दूर करी छे.

मू०—तते णं से पूसनंदी राया तासिं दासचेडीणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म महया मातिसोएणं अप्फुण्णे समाणे परसुनियत्ते विव चंपगवरपायवे धस त्ति धरणीतलंसि सव्वंगेहिं संनिपडिते ।

अर्थ—त्यारपछी ते पुष्पनंदी राजा ते दासचेटीओ (दासीओ)नी पासेथी आ अर्थ (वृत्तांत) सांभळीने हृदयमां धारीने मोटा माता संबंधी शोकवडे स्पर्श करायो सतो कुहाडावडे कपायेला श्रेष्ठ चंपकवृक्षनी जेम धस (भस) दइने पृथ्वी तळ उपर सर्व अंगोवडे पडी गयो.

मू०—तते णं से पूसनंदी राया मुहुत्तंतरेण आसत्थे वीसत्थे समाणे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहेहिं मित्तनाति जाव परियणेण य सद्धिं रोयमाणे कंदमाणे विलवमाणे सिरीए देवीए महया

इड्ढीए नीहरणं करेति, करित्ता आसुरुत्ते (रुट्ठे कुविए चंडाक्किए मिसिमिसिमाणे) देवदत्तं देविं पुरिसेहिं गिण्हावेति, गिण्हावित्ता तेणं विहाणेणं वज्झं आणवेति। तं एवं खलु गोयमा ! देवदत्ता देवी पुरापुराणाणं विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते पुष्पनंदी राजाए एक मुहूर्तमां आश्वस्त विश्वस्त थया सता घणा राजा, ईश्वर विगेरे यावत् सार्थवाहोनी साथे तथा मित्र, ज्ञाति विगेरे यावत् परिवारनी साथे रुदन करता एटले अश्रु मूकता, आक्रंद करता अने विलाप करता सता श्रीदेवीनुं मोटी ऋद्धिवडे नीहरण (स्मशानमां लइ जवानुं कर्म) कर्युं. करीने पछी शीघ्र कोपवडे मोहित (व्याप्त) थयो, (रुष्ट–क्रोधना उदयवाळो थयो, कुपित–वृद्धि पामता कोपना उदयवाळो थयो, चंडक्य–प्रचंड एटले महा रौद्र रूपने धारण करनार थयो, तथा कोपाग्निवडे देदीप्यमान थयो.) तेथी तेणे देवदत्ता देवीने पुरुषो (सेवको) पासे ग्रहण करावी (पकडावी). ग्रहण करावीने तेवा प्रकारवडे (तमे जे रीते जोयुं तेवी रीते) तेणीनो वध करवानी आज्ञा आपी. ते कारण माटे हे गौतम ! देवदत्ता देवी पूर्वना पोताना जुना एकठा करेला कर्मना फळने भोगवती रहेली छे.

मू०–देवदत्ता णं भंते! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिति? कहिं उववज्जिहिति ?।

अर्थ—(गौतमस्वामी भगवान श्रीमहावीरस्वामीने पूछे छे के) हे भगवन् ! ते देवदत्ता देवी (राणी) अहींथी मरण समये मरण पामीने क्यां जशे ? अने क्यां उत्पन्न थशे ?

मू०—गोयमा ! असीइं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयत्ताए उववन्ने संसारो वणस्सति । ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता गंगपुरे नगरे हंसत्ताए पच्चायाहिति । से णं तत्थ साउणितेहिं वधिए समाणे तत्थेव गंगपुरे णगरे सेट्ठिकुल बोहिं सोहम्मे महाविदेहे वासे सिज्झिहिति । णिक्खेवो ॥ ३१ ॥

॥ दुहविवागस्स नवमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥

अर्थ—(भगवान उत्तर आपे छे के) हे गौतम! ते अेंसी वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने मरण समये मरण पामीने आ रत्नप्रभा नामनी पहेली नरकपृथ्वीने विषे नारकीपणे उत्पन्न थशे. विगेरे सर्व संसार वनस्पतिना काळ सुधीनो कहेवो. त्यांथी आंतरा रहित नीकळीने गंगपुर नामना नगरमां हंसपणे उत्पन्न थशे. ते त्यां शिकारीवडे वध करायो सतो ते ज गंगपुर नगरमां श्रेष्ठिना कुळमां उत्पन्न थइ बोधि (समकित) पामी चारित्र ग्रहण करी सौधर्म नामना पहेला देवलोकमां जशे. त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां उंच कुळमां जन्मी दीक्षा ग्रहण करी मोक्षपदने पामशे. ए प्रमाणे निक्षेप कहेवो. ३१.

आ प्रमाणे दुःखविपाकनुं देवदत्ता नामनुं नवमुं अध्ययन समाप्त थयुं.

। अथ दशमुं अंजू नामनुं अध्ययन ॥ १०

हवे अंजू नामना दशमा अध्ययनमां कांइक लखे छे.—

मू०—जति णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स उक्खेवो ।

अर्थ—(जंबूस्वामी सुधर्मास्वामीने पूछे छे के) हे भगवान (पूज्य गुरु) ! श्रमण भगवान महावीरस्वामीए दशमा अध्ययनो शो उत्क्षेप कह्यो छे ? ते कहो.

मू०—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं वद्धमाणपुरे णाम नगरे होत्था, विजयवद्धमाणे उज्जाणे, माणिभद्दे जक्खे, विजयमित्ते राया ।

अर्थ—(सुधर्मास्वामी उत्तर आपे छे) आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये वर्धमान नामनुं नगर हतुं. (ते नगरनी बहार ईशान खूणामां) विजयवर्धमान नामनुं उद्यान हतुं. तेमां माणिभद्र नामनो यक्ष हतो एटले यक्षायतन हतुं. ते नगरमां विजयमित्र नामनो राजा हतो.

मू०—तत्थ णं धणदेवे नामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे। पियंगु नाम भारिया। अंजू दारिया जाव सरीरा।

अर्थ—ते वर्धमान नगरमां धनदेव नामे सार्थवाह हतो. ते ऋद्धिमान विगेरे विशेषणवाळो हतो. तेने प्रियंगु

नामनी भार्या हती. ते बन्नेने अंजू नामनी दारिका (पुत्री) हती. ते यावत् उत्कृष्ट शरीरवाळी हती.

मू०—समोसरणं परिसा जाव पडिगया ।

अर्थ—एकदा ते नगरनी बहार उद्यानमां श्रीमहावीरस्वामी समवसर्या. तेमने वांदवा माटे नगरमांथी पर्षदा आवी अने यावत् पाछी पोताने स्थाने गइ.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं जेट्ठे जाव अडमाणे जाव विजयमित्तस्स रन्नो गिहस्स असोगवणियाए अदूरसामंतेणं वितिवयमाणे पासति एगं इत्थियं सुक्कं भुक्खं निम्मंसं किडिकिडीभूयं अट्ठिचम्मावणद्धं नीलसाडगनियत्थं कट्ठाइं कलुणाइं विसराइं कूवमाणं पासति, पासित्ता चिंता तहेव जाव एवं वयासी—सा णं भंते ! इत्थिया पुव्वभवे के आसि ? ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रीमहावीरस्वामीना मोटा शिष्य गौतम अनगार गोचरीने माटे नगरमां अटन करता यावत् विजयमित्र राजाना घरनी अशोकवाटिकानी अत्यंत दूर नहीं तेमज अत्यंत समीपे नहीं एवी रीते अर्थात् कांइक नजीक चालता हता. तेवामां तेमणे एक स्त्रीने जोइ. ते शरीरे शुष्क हती, भूखी हती. मांस रहित हती, चालती वखते तेना शरीरना हाडकां खखडता हता, तेणीनुं शरीर हाडकां उपर नसोथी मढेलुं हतुं, तेणीए पाणीथी भींजवेली साडी पहेरी हती. तथा ते कष्टकारक, करुणा उपजे एवा अने नीरस शब्द करती हती, एवी स्त्रीने जोइ. जोइने ते ज प्रमाणे

(पहेला अध्ययनमां कह्या प्रमाणे) गौतमस्वामीने विचार थयो. अने ते ज प्रमाणे भगवाननी पासे आवी यावत् तेमणे आ प्रमाणे कह्युं.—हे भगवन् ! ते स्त्री पूर्वभवमां कोण हती ?

मू०—वागरणं—एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इंदपुरे णामं णगरे होत्था ।

अर्थ—भगवान श्रीमहावीरस्वामीए कह्युं के—आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीप नामना द्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां इंद्रपुर नामनुं नगर हतुं.

मू०—तत्थ णं इंददत्ते राया, पुढवीसिरी नामं गणिया होत्था, वण्णओ ।

अर्थ—ते नगरमां इंद्रदत्त नामे राजा हतो. तथा ते ज नगरमां पृथ्वीश्री नामनी गणिका हती. तेनुं वर्णन कहेवुं.

परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं णेरइयत्ताए उववन्ना ।

अर्थ—त्यारपछी ते पृथ्वीश्री गणिका आवां कर्म करी घणुं पापकर्म उपार्जन करी पांत्रीश सो वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळी (भोगवी) मरण समये मरण पामी छट्ठी नरकपृथ्वीने विषे उत्कृष्ट आयुष्यवाळा नारकीने विषे नारकीपणे उत्पन्न थइ.

मू०—सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव वद्धमाणपुरे णगरे धणदेवस्स सत्थवाहस्स पियंगुभारियाते कुच्छिंसि दारियत्ताए उववन्ना ।

अर्थ—त्यारपछी ते त्यांथी आंतरा रहित नीकळीने आ ज वर्धमानपुर नगरमां धनदेव सार्थवाहनी प्रियंगु नामनी भार्यानी कुक्षिने विषे पुत्रीपणे उत्पन्न थइ.

मू०—तते णं सा पियंगुभारिया णवण्हं मासाणं दारियं पयाया, नामं अंजूसिरी, सेसं जहा देवदत्ताए।

अर्थ—त्यारपछी ते प्रियंगु भार्याए नव मास पूर्ण थया त्यारे पुत्रीने जन्म आप्यो. तेणीनुं नाम अंजूश्री पाड्युं. शेष वर्णन देवदत्तानी जेवुं जाणवुं.

मू०—तते णं से विजये राया आसवाहिणीयाए जहा वेसमणदत्ते तहा अंजूं पासइ, णवरं अप्पणो अट्ठाए वरेति, जहा तेतली जाव अंजूए दारियाते सद्धिं उप्पिं जाव विहरति ।

અર્થ—ત્યારપછી તે વિજયમિત્ર રાજા (એકદા કદાચિત્) અશ્વક્રીડા કરવા માટે નીકળ્યો. તે રસ્તે વૈશ્રમણદત્ત રાજાની જેમ તેણે તે અંજૂ દારિકાને પ્રાસાદ ઉપર ક્રીડા કરતી જોઇ. વિશેષ એ કે આ રાજાએ પોતાને માટે તેણીની યાચના-માગણી કરી. તથા તેતલિની જેમ યાવત્ તે અંજૂ દારિકાની સાથે મહેલના ઉપલા ભાગમાં યાવત્ કામભોગ ભોગવતો રહેવા લાગ્યો. (જેમ જ્ઞાતાધર્મકથાંગમાં તેતલિસુત નામનો મંત્રી પોટ્ટિલા નામની કલાદ મૂષિકાર શ્રેષ્ઠીની પુત્રીને પોતાને માટે માગણી કરી પોતે જ પરણ્યો હતો, તેમ આ વિજયમિત્ર રાજા પણ અંજૂને પરણ્યો.)

મૂ૦—તતે णं तीसे अंजूते देवीते अन्नया कयावि जोणिसूले पाउब्भूते यावि होत्था ।

અર્થ—ત્યારપછી તે અંજૂદેવી (રાણી)ને એકદા કદાચિત્ યોનિશૂળ નામનો રોગ ઉત્પન્ન થયો.

મૂ૦—तते णं विजए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं देवाणुप्पिया ! वद्धमाणपुरे णगरे सिंघाडग जाव एवं वदह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! विजयस्स रण्णो अंजूए देवीए जोणिसूले पाउब्भूते, जो णं इत्थ विज्जो वा विज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुयपुत्तो वा तेगिच्छी वा तेगिच्छियपुत्तो वा जाव उग्घोसेंति ।

અર્થ—ત્યારપછી વિજયમિત્ર રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા. બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ અને વર્ધમાનપુર નગરમાં શીંગોડાના આકારવાળા માર્ગમાં જઇને યાવત્ આ પ્રમાણે કહો કે-આ પ્રમાણે નિશ્ચે હે

देवानुप्रियो ! विजयमित्र राजानी अंजूदेवीने योनिशूळ उत्पन्न थयुं छे तेथी जे कोइ अहीं वैद्य एटले वैद्यकशास्त्रमां तथा चिकित्सामां कुशळ होय, अथवा तेवा वैद्यनो पुत्र होय, अथवा कोइ ज्ञायक एटले केवळ वैद्यकशास्त्रमां कुशळ होय, अथवा तेवा ज्ञायकनो पुत्र होय, अथवा कोइ चिकित्सक एटले एकली चिकित्सा करवामां कुशळ होय, अथवा तेवा चिकित्सकनो पुत्र होय अने ते जो आ व्याधिने दूर करवा इच्छतो होय तो तेने राजा घणुं धन आपशे विगेरे यावत् तेओए ते प्रमाणे उद्घोषणा करी.

मू०–तते णं ते बहवे विज्जा य विज्जपुत्ता य जाणुआ य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिआ य तेगिच्छिपुत्ता य इमं एयारूवं सुच्चा निसम्म जेणेव विजए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अंजूते बहवे उप्पत्तियाहिं ४ परिणामेमाणा इच्छंति अंजूते देवीए जोणिसूलं उवसामित्तते, नो (चेव णं) संचाएंति उवसामित्तए ।

अर्थ—त्यारपछी ते घणा वैद्यो, वैद्यपुत्रो, ज्ञायको, ज्ञायकपुत्रो, चिकित्सको अने चिकित्सकना पुत्रो आ आवा प्रकारनी उद्घोषणा सांभळीने, हृदयमां धारीने ज्यां विजयमित्र राजा हतो, त्यां आव्या. आवीने अंजू राणीनी पासे आवी घणा एवा ते वैद्य विगेरे औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मणिकी अने पारिणामिकी ए चार प्रकारनी बुद्धिवडे परिणाम पाम्या सता अंजूदेवीनुं योनिशूळ शांत करवा माटे इच्छवा लाग्या. परंतु तेओ शांत करी शक्या ज नहीं.

मू०—तते णं ते बहवे विज्जा य विज्जपुत्ता य जाणुआ य जाणुयपुत्ता य तेगिच्छिया य तेगिच्छिपुत्ता य जाहे नो संचाएंति अंजूदेवीए जोणिसूलं उवसामित्तते, ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ।

अर्थ—त्यारपछी ते घणा वैद्यो, वैद्यपुत्रो, ज्ञायको, ज्ञायकपुत्रो, चिकित्सको अने चिकित्सकना पुत्रो ज्यारे ते अंजूदेवीना योनिशूळने उपशमाववा शक्तिमान थया नहीं, त्यारे तेओ श्रांत एटले शरीरे खेदवाळा थया, तांत एटले मनना खेदवाळा थया अने परितांत एटले शरीर अने मन बन्नेना खेदवाळा थया सता जे दिशामांथी प्रगट थया हता —आव्या हता, ते ज दिशाए पाछा गया.

मू०—तते णं सा अंजू देवी ताए वेयणाए अभिभूता समाणा सुक्का भुक्खा निम्मंसा कट्ठाइं कलुणाइं विसराइं विलवति, एवं खलु गोयमा ! अंजू देवी पुरापोराणाणं जाव विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते अंजू देवी ते वेदनावडे पराभव पामी सती शरीरे सुकाइ गइ, भूखवडे दुर्बळ थइ, मांस रहित थइ, अने कष्टकारक—दुःखदायक, सांभळनारने पण करुणा उत्पन्न थाय एवा खराब (दीन) स्वरवाळा विलाप करवा लागी. आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! अंजूदेवी ते पूर्वना जूना आचरेला—उपार्जन करेला पापकर्मने भोगवती यावत् रहेली छे.

मू०—अंजू णं भंते ! देवी इओ कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?।

अर्थ—(गौतमस्वामीए पूछयुं के) हे भगवन् ! ते अंजू देवी अहींथी मरण पामीने क्यां जशे ? अने क्यां उत्पन्न थशे ?

मू०--गोयमा ! अंजू णं देवी नउइं वासाइं परमाउयं पालित्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयत्ताए उववज्जिहिइ। एवं संसारो जहा पढमे तहा नेयव्वं जाव वणस्सति।

अर्थ—(भगवान महावीरस्वामीए उत्तर आप्यो के) हे गौतम ! ते अंजू देवी नेवुं वर्षनुं उत्कृष्ट आयुष्य पाळीने (भोगवीने) मरण समये मरण पामीने आ रत्नप्रभा नामनी पहेली नरकपृथ्वीने विषे नारकीपणे उत्पन्न थशे. ए प्रमाणे संसार जेम पहेला अध्ययनमां कह्यो छे तेम जाणवो. यावत् वनस्पतिकायना काळ जेटलुं भमशे.

मू०-सा णं ततो अणंतरं उव्वट्टित्ता सव्वतोभद्दे णगरे मयूरत्ताए पच्चायाहिति, से णं तत्थ साउणिएहिं वधिए समाणे तत्थेव सव्वतोभद्दे णगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति। से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे तहारूवाणं थेराणं केवलं बोहिं बुज्झिहिति, पव्वज्जा, सोहम्मे।

अर्थ—त्यारपछी ते त्यांथी आंतरा रहित नीकळीने सर्वतोभद्र नामना नगरमां मयूर(मोर)पणे उत्पन्न थशे. ते त्यां शिकारीओवडे हणायो सतो ते ज सर्वतोभद्र नगरमां श्रेष्ठीना कुळमां पुत्रपणे उत्पन्न थशे. ते त्यां बाल्यावस्थाथी मुक्त थइ तथाप्रकारना स्थविर मुनिनी पासे केवळ बोधिने (समकितने) पामशे. पछी दीक्षा ग्रहण करशे. छेवट काळधर्म पामी सौधर्मकल्प नामना प्रथम देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थशे.

मू०—से णं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववाज्जिहिति ? ।

अर्थ—(गौतमस्वामीए पूछ्युं के) ते प्रथम देवलोकथी आयुष्यना चये चवीने क्यां जशे ? अने क्यां उत्पन्न थशे ?

मू०—गोयमा ! महाविदेहे जहा पढमे जाव सिज्झिहिइ जाव अंतं काहिति ।

अर्थ—(भगवान महावीरस्वामीए उत्तर आप्यो के) हे गौतम ! ते महाविदेह क्षेत्रने विषे उच्च कुळमां उत्पन्न थशे. विगेरे प्रथम अध्ययनमां कह्या प्रमाणे कहेवुं. यावत् सिद्ध थशे—सर्व कर्मनो अंत करशे.

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते । सेवं भंते ! सेवं भंते ! ॥ ३२ ॥ दुहविवागो दससु अज्झयणेसु ॥

॥ पढमो सुयक्खंधो समत्तो ॥

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान यावत् मोक्षने पामेला श्रीमहावीरस्वामीए दुःखविपाकना दशमा अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. जंबू बोल्या—हे भगवन् ! ते एम ज छे, एम ज छे. ३२

आ अंजू नामनुं दशमुं अध्ययन समाप्त.—आ प्रमाणे दुःख विपाकना दश अध्ययन कह्या.

प्रथम श्रुतस्कंध समाप्त.

श्रीविपाकसूत्र. द्वितीय श्रुतस्कन्ध.

प्रथम सुबाहु अध्ययन.

(आ बीजा श्रुतस्कन्धमां पण दश अध्ययनो छे. ते संबंधी प्रस्तावना कहे छे)

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं रायगिहे णगरे गुणासिले चेइए ।

अर्थ—ते काळे ते समये राजगृह नामे नगर हतुं. तेनी बहार गुणशील नामनुं चैत्य हतुं.

मू०—सोहम्मे समोसढे, जंबू जाव पज्जूवासमाणे एवं वयासी—जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं दुहविवागाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, सुहविवागाणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ? ।

अर्थ—त्यां एकदा सुधर्मास्वामी समवसर्या. ते वखते तेमना मुख्य शिष्य जंबूस्वामीए यावत् तेमनी सेवा करतां आ प्रमाणे कह्युं.—हे भगवन् ! जो श्रमण भगवान यावत् मोक्षने पामेला श्रीमहावीरस्वामीए दुःखविपाकनो आ उपर कह्या प्रमाणे अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवान ! श्रमण भगवान यावत् मोक्षने पामेला श्रीमहावीरस्वामीए सुखविपाकनो कयो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—तते णं से सोहम्मे अणगारे जंबूं अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, तं जहा—

सुबाहू १ भद्दनंदी २ य, सुजाए ३ य सुवासवे ४ । तहेव जिणदासे ५ य, धणपती ६ य महब्बले ७ ॥ १ ॥ भद्दनंदी ८ महच्चंदे ९, वरदत्ते १० ।

अर्थ—त्यारे ते सुधर्मा अनगारे जंबू नामना अनगारने आ प्रमाणे कह्युं—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान यावत् मोक्षने पामेला श्रीमहावीरस्वामीए सुखविपाकनां दश अध्ययनो कह्यां छे. तेनां नाम आ प्रमाणे छे—सुबाहु १, भद्रनंदी २, सुजात ३, सुवासव ४, जिनदास ५, धनपति ६, महाबळ ७, भद्रनंदी ८, महाचंद्र ९ अने वरदत्त १०.

मू०—जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दस अज्झयणा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स सुहविवागाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

अर्थ—(जंबूस्वामीए पूछ्युं.) जो हे भगवन् ! श्रमण भगवान यावत् मोक्षने पामेला श्रीमहावीरस्वामीए सुखविपाकनां दश अध्ययनो कह्यां छे, तो हे भगवान ! श्रमण भगवान यावत् मोक्षने पामेला श्रीमहावीरस्वामीए सुखविपाकना पहेला अध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे ?

मू०—तते णं से सुहम्मे अणगारे जंबूं अणगारं एवं वयासी—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं हत्थीसीसे नामं णगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे ।

अर्थ—त्यारे ते सुधर्मा अनगारे जंबू नामना अनगारने आ प्रमाणे कह्युं—

(प्रथम अध्ययननो प्रारंभ)

आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये हस्तिशीर्ष नामनुं नगर हतुं. ते ऋद्धिवाळुं, निर्भय अने समृद्धिवाळुं हतुं.

मू०—तस्स णं हत्थिसीसस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं पुप्फकरंडए णामं उज्जाणे होत्था सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

अर्थ—ते हस्तिशीर्ष नगरनी बहार उत्तर अने पूर्व दिशानी वच्चेना दिशा भागमां (ईशान खूणामां) पुष्पकरंडक नामनुं उद्यान हतुं. ते सर्व (छए) ऋतुनां पुष्पो अने फळोनी समृद्धिवाळुं, नंदन वननी जेवुं, प्रासादीय एटले लोकोना मनने प्रसन्न करनार, दर्शनीय एटले तेने जोतां नेत्रने श्रम न लागे तेवुं, अभिरूप एटले मनोहर रूपवाळुं अने प्रतिरूप एटले दरेक जोनारने तेनुं रूप सुंदर लागे तेवुं हतुं.

मू०—तत्थ णं कयवणमालपियस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था दिव्वे ।

अर्थ—ते उद्यानमां कृतवनमालप्रिय नामना यक्षनुं यक्षायतन (चैत्य) हतुं. ते दिव्य एटले मनोहर विगेरे विशेषणवाळुं हतुं.

मू०—तत्थ णं हत्थिसीसे णगरे अदीणसत्तू णामं राया होत्था महताहिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे ।

अर्थ—ते हस्तिशीर्ष नगरमां अदीनशत्रु नामे राजा हतो. ते मोटा हिमवान पर्वतनी जेवो महान् तथा मलयाचळ पर्वत, मेरुपर्वत अने महेंद्र पर्वत अथवा महेंद्र एटले शक्र इंद्र ए सर्वना जेवो सारभूत–प्रधान हतो.

मू०—तस्स णं अदीणसत्तुस्स रन्नो धारणीपामोक्खा देवीसहस्सं ओरोहे यावि होत्था ।

अर्थ—ते अदीनशत्रु राजाने धारिणी विगेरे एक हजार राणीओ तेना अंतःपुरमां हती. (तेमां धारिणी पट्टराणी हती)

मू०—तते णं सा धारणी देवी अन्नया कयाइ तंसि तारिसगंसि वासघरंसि सीहं सुमिणे पासति।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवीए एकदा कदाचित् ते तेवा प्रकारना एटले राजलोकने उचित एवा वासगृहने विषे स्वप्नमां सिंहने जोयो.

मू०—जहा मेहस्स जम्मणं तहा भाणियव्वं जाव सुबाहुकुमारे अलं भोगसमत्थं वा जाणंति ।

अर्थ—जेम मेघकुमारनो जन्म ज्ञातासूत्रमां कह्यो छे तेम अहीं कहेवो. परंतु अहीं अकाळ मेघनो दोहद कहेवो नहीं. (सिंहना स्वप्नसूचित पुत्रने योग्यकाळे धारिणीदेवीए जन्म आप्यो.) यावत् तेनुं सुबाहु कुमार नाम पाड्युं.

पछी ते अत्यंत भोगने समर्थ थयो (युवावस्थाने पाम्यो) एम मातापिताए तेने जाण्यो.

अहीं यावत् शब्द छे तेथी टीकामां आ प्रमाणे छे—ते कुमार बोंतेर कळामां कुशळ थयो. तथा बे कान, बे नेत्र, बे नासिका, एक जीभ, एक शरीरनी चामडी अने एक मन आ तेना नव अंग बाल्यावस्थाने लीधे सुतेला जेवा हता ते हवे युवावस्थाने लीधे जागृत थया. तथा ते अढार प्रकारना देशनी भाषा जाणवामां निपुण थयो. विगेरे.

मू०—अम्मापियरो पंच पासायवडिंसगसयाइं करावेंति अब्भुग्गयमूसियपहसिए भवणं एवं जहा महाबलस्स रन्नो णवरं पुप्फचूलापामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नयसयाणं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हावेंति, तहेव पंचसतिओ जाव उप्पिं पासायवरगते फुट्ट जाव विहराति ।

अर्थ—त्यारपछी तेना मातापिताए तेने माटे पांच सो श्रेष्ठ प्रासादो कराव्या. ते अत्यंत उंचा अने उज्वळ कांतिने लीधे जाणे हसता होय तेवा जणाता हता. तथा एक भवन कराव्युं. जेम भगवतीमां महाबळ राजाने माटे कह्युं छे तेम अहीं सर्व

१ लंबाइथी बमणो उंचो होय ते प्रासाद. २ लंबाइथी पोणुं उंचुं ते भवन कहेवाय छे.

जाणवुं. विशेष ए के-त्यां महाबळ राजाने कमलश्री विगेरे ५०० राजकन्याओ साथे पाणिग्रहण कराव्युं हतुं, अहीं पुष्पचूला विगेरे पांचसो श्रेष्ठ राजकन्याओ साथे एक ज दिवसे पाणिग्रहण कराव्युं. ते ज प्रमाणे (महाबळनी जेम) अनेक वस्तुओ पांचसो पांचसोनो दायजो आप्यो. यावत् ते श्रेष्ठ प्रासादो उपर रहीने ते राजकन्याओ साथे सुबाहुकुमार क्रीडा करवा लाग्यो.

अहीं पांचसोनो दायजो आप्यो ते आ प्रमाणे—पांचसो हिरण्यनी कोटि तथा पांचसो सुवर्णनी कोटि विगेरे तेना पिताए प्रीतिदानमां आप्युं ते सर्व कहेवुं. अहीं यावत् शब्द छे तेथी आ प्रमाणे जाणवुं-त्यारपछी ते सुबाहुकुमारे पोतानी एक एक भार्याने एक एक कोटि हिरण्य, सुवर्ण विगेरे वहेंची आप्युं. तथा छेवट बीजुं पण घणुं धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शंख, शिल, प्रवाल विगेरे सर्व आप्युं. अहीं मूळमां 'फुट्ट जाव' लख्युं छे त्यां आ प्रमाणे जाणवुं—मृदंगना उपरना पुट जाणे फाटी जता होय तेम अत्यंत जोरथी वागता हता, विविध प्रकारनी श्रेष्ठ स्त्रीओ तेनी पासे बत्रीश पात्रोथी बांधेला नाटकोवडे नाचती हती, अने तेना गुणोना गान करती हती अने तेमने इच्छित धन आपवाथी तेओ तेनुं लालन करती हती (तेने प्रेम उपजावती हती). ए रीते ते मनुष्य संबंधी कामभोगनो अनुभव करतो हतो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं समणे भगवं महावीरे समोसढे, परिसा निग्गया, अदीणसत्तू जहा कोणिओ निग्गतो, सुबाहु वि जहा जमाली तहा रहेणं निग्गते, जाव धम्मो कहिओ, रायपरिसा गया ।

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीरस्वामी त्यां समवसर्या. तेमने वांदवा माटे नगरमांथी पर्षदा नीकली. अदीनशत्रु राजा पण कोणिकराजानी जेम घणी ऋद्धिसिद्धि साथे—मोटी धामधूमपूर्वक निकळ्यो. एटले के औपपातिक सूत्रमां भगवानने वंदना करवा जता कोणिक राजानुं जे वर्णन कर्युं छे ते प्रमाणे अहीं पण करवुं. सुबाहुकुमार पण जमालिनी जेम रथमां बेशीने नीकळ्यो. एटले के भगवती सूत्रमां भगवानने वांदवा माटे भगवाननो जमाइ जमालि रथमां बेसीने नीकळ्यो हतो तेना जेवुं अहीं वर्णन जाणवुं. यावत् भगवाने धर्म कह्यो. ते सांभळी राजा तथा पर्षदाना लोको पाछा पोताने स्थाने गया.

मू०—तते णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति जाव एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर जाव नो खलु अहण्णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचअणुव्वइयं सत्तासिक्खावइयं गिहिधम्मं पडिवज्जामि । अहासुहं मा पडिबंधं करेह । तते णं से सुबाहू समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तासिक्खावइयं गिहिधम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरूहति, दुरूहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगते ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबाहुकुमार श्रमण भगवान महावीरस्वामीनी पासे धर्म सांभळी हृदयमां धारी हृष्ट तुष्ट (यावत् आनंदित हृदयवाळो) थइ उभा थवानी क्रियावडे उभो थयो. यावत् (उभो थइ श्रमण भगवान महावीरस्वामीने त्रणवार प्रदक्षिणा करी, वांदी, नमस्कार करी) आ प्रमाणे बोल्यो—" हे भगवन् ! हुं निर्ग्रंथ प्रवचन उपर श्रद्धा करुं छुं. (हे भगवन् ! हुं निर्ग्रंथ प्रवचनने विषे विश्वास करुं छुं.) हे भगवन् ! आप देवानुप्रियनी पासे घणा राजा, ईश्वर, यावत् (तलारक्ष, मांडवीना अधिकारीओ, कौटुंबिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह विगेरे सर्वेए मुंड थइ घरथकी नीकळी चारित्र अंगीकार कर्युं छे परंतु हुं तो अधन्य छुं तेथी प्रव्रज्या लेवाने शक्तिमान नथी.) तेथी हुं तो देवानुप्रिय एवा आपनी पासे पांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रतरूप बार प्रकारनो गृहीधर्म अंगीकार करवाने इच्छुं छुं. " (ते सांभळी भगवाने कह्युं—) " जेम तने सुख उपजे तेम कर. विलंब न कर. " त्यारपछी ते सुबाहुकुमारे श्रमण भगवान महावीरस्वामीनी पासे पांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रतरूप बार प्रकारनो गृहीधर्म अंगीकार कर्यो. अंगीकार करीने ते ज पोताना चार घंटावाळा अश्वयुक्त रथ उपर आरूढ थयो. आरूढ थइने जे दिशामांथी आव्यो हतो ते ज दिशामां पाछो गयो—पोताने स्थाने गयो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई जाव एवं वयासी—

अर्थ—ते काळे ते समये श्रमण भगवान महावीरस्वामीना मोटा शिष्य इंद्रभूति नामना यावत् (अनगार-साधु, गौतम गोत्रवाळा अर्थात् गौतम) गणधरे भगवानने आ प्रमाणे कह्युं—

मू०—अहो ! णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे कंते कंतरूवे पिए पियरूवे मणुन्ने मणुन्नरूवे मणामे मणामरूवे सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे, बहुजणस्स वि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे कंते पिए मणुन्ने मणामे सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे, साहुजणस्स वि य णं भंते ! सुबाहुकुमारे इट्ठे इट्ठरूवे ५ जाव सुरूवे । सुबाहुणा भंते ! कुमारेणं इमा एयारूवा उराला माणुस्सरिद्धी किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमन्नागया के वा एस आसि पुव्वभवे ? जाव समन्नागया ? ।

अर्थ—अहो ! हे भगवन् ! सुबाहुकुमार इष्ट छे एटले इच्छा कराय तेवो छे. (ते इष्ट तेना करेला अमुक कार्यनी अपेक्षाए पण कही शकाय छे तेथी बीजुं विशेषण कहे छे के–) इष्टरूप छे एटले तेनुं स्वरूप ज इष्ट छे अर्थात् स्वभावथी ज ते इष्ट छे. (इष्ट अथवा इष्टरूप कोइ कारणथी पण थइ शके छे तेथी बीजुं विशेषण कहे छे के) ते कांत एटले इच्छवा योग्य छे, अने कांत स्वरूपवाळो छे, एटले के ते सारो छे अने सारा स्वभाववाळो पण छे. (आवा प्रकारनो छतां पण कोइक कर्मना दोषथी कदाच बीजाने प्रीति उत्पन्न करनार न होय तेथी बीजुं विशेषण आपे छे के) ते प्रिय एटले प्रीति उत्पन्न करनार छे, तथा प्रियरूप एटले तेनुं स्वरूप ज प्रीतिकारक छे. (आवा प्रकारनो कदाच कोइक लोकरूढिथी पण

होइ शके छे तेथी बीजुं विशेषण कहे छे के) ते मनोज्ञ छे एटले मननी साक्षीए ते सारो लागे तेवो छे तथा मनोज्ञरूप एटले तेनुं स्वरूप ज मनोहर छे. (आवा प्रकारनो पण कोइक कोइ वखत होइ शके छे तेथी बीजुं विशेषण कहे छे के) ' मनोऽम ' एटले वारंवार स्मरण करवाथी ते वारंवार मनमां आवे तेवो छे, तथा ' मनोऽमरूप ' एटले स्वभावथी ज ते वारंवार मनमां आवे तेवो छे (आ बाबतने ज विस्तारथी कहे छे.) ते सौम्य एटले रौद्र परिणाम रहित (सौम्य दृष्टि-वाळो) छे. सुभग एटले वल्लभ (वहालो लागे तेवो) छे. प्रियदर्शन एटले तेनी आकृति ज प्रेम उपजावे तेवी छे. तात्पर्य ए छे के ते सुरूप छे एटले तेनो आकार अने स्वभाव घणो सारो छे (आवा प्रकारनो पण कोइ एकाद मनुष्यनी अपेक्षाए पण होइ शके छे तेथी कहे छे के) हे भगवन् ! ते सुबाहुकुमार घणा मनुष्योने इष्ट, इष्टरूप, कांत, कांतरूप, प्रिय, प्रियरूप, मनोज्ञ, मनोज्ञरूप मनोऽम, मनोऽमरूप, सौम्य, सुभग, प्रियदर्शन अने सुरूप छे. (आवा प्रकारनो पण कोइ मात्र सामान्य मनुष्योने ज इष्ट विगेरे विशेषणवाळो होइ शके छे तेथी कहे छे के) हे भगवन् ! ते सुबाहुकुमार साधुजनोने पण इष्ट, इष्टरूप यावत् सुरूप विगेरे विशेषणवाळो छे. वळी हे भगवन् ! ते सुबाहुकुमारे आ—प्रत्यक्षपणे दे-खाती, आवा स्वरूपवाळी एटले स्वाभाविकपणे जणाती अने उदार एटले मोटी मनुष्य संबंधी संपदा शाथी उपार्जन करी ? शाथी प्राप्त करी ? तथा ते संपदा प्राप्त थया छतां पण शा हेतुथी सम्यक् प्रकारे उपभोगपणाने पामी ? अथवा तो आ सुबाहुकुमार पूर्वभवमां कोण हतो ? यावत् सम्यक् प्रकारे उपभोगपणाने पामी ?

अहीं छेवटमां यावत् शब्द लख्यो छे त्यां आ प्रमाणे पाठ जाणवो—

" किं नामए वा ? किं वा गोएणं ? कयरंसि वा गामंसि वा सन्निवेसंसि वा किं वा दच्चा किं वा भोच्चा, किं वा किच्चा किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिते एगमवि आयरियं सुवयणं सोच्चा निसम्म सुबाहुणा कुमारेण इमा एयारूवा उराला माणुस्सिड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागय त्ति "।

" पूर्व भवमां तेनुं नाम शुं हतुं ? अथवा तेनुं कयुं गोत्र हतुं ? अथवा कया गाममां अने कया देशमां ते उत्पन्न थ-गेलो हतो ? अथवा तेणे शुं दान दइने, शुं भोगवीने, शुं करीने अथवा शुं आचरीने अथवा तेवा प्रकारना कया साधु के माहण (श्रावक) नी पासे एक पण आर्य (धर्म संबंधी) सारुं वचन सांभळीने के हृदयमां धारण करीने ते सुबाहु-कुमारे आ-प्रत्यक्ष देखाती आवा प्रकारनी उदार मनुष्य संबंधी संपदा उपार्जन करी ? प्राप्त करी ? अने सम्यक् प्रकारे उपभोगपणाने पमाडी छे ? "

मू०—एवं खलु गोयमा ! ते णं काले णं ते णं समए णं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे णामं णगरे होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धे ।

(सुबाहुकुमारना पूर्व भवनुं वर्णन.)

अर्थ—(श्रमण भगवान महावीरस्वामीए उत्तरमां कह्युं के) आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! ते काळे ते समये आ ज जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रमां हस्तिनापुर नामनुं नगर इतुं. ते ऋद्धिवाळुं, भय रहित अने समृद्धिवाळुं हतुं.

मू०—तत्थ णं हत्थिणाउरे णगरे सुमुहे नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे० ।

अर्थ—ते हस्तिनापुर नगरमां सुमुख नामनो एक गाथापति रहेतो हतो. ते आढ्य एटले धन, धान्यादिकवडे परिपूर्ण हतो.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं धम्मघोसा णामं थेरा जातिसंपन्ना जाव पंचहिं समणसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा जेणेव हत्थिणाउरे णगरे जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता णं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।

अर्थ—ते काळे ते समये धर्मघोष नामना स्थविर के जे जातिसंपन्न यावत् (जेम सुधर्मास्वामीनुं वर्णन कर्युं छे ते प्रमाणे अहीं कहेवुं.) पांचसो साधुओनी साथे परिवर्या सता पूर्वानुपूर्वीए (अनुक्रमे) चालता, एक गामथी बीजे गाम विहार करता सता ज्यां हस्तिनापुर नगर हतुं, त्यां आव्या. आवीने यथायोग्य अवग्रह (उपाश्रय) ग्रहण करीने संयम अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता विहार करता हता—आवीने रह्या हता.

मू०—ते णं काले णं ते णं समए णं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी सुदत्ते णामं अणगारे उराले जाव लेस्से मासंमासेणं खममाणे विहरति ।

अर्थ—ते काळे ते समये ते धर्मघोष स्थविरना शिष्य सुदत्त नामना साधु उदार यावत् संक्षेपी छे तेजोलेश्या जेणे एवा सता मासमासना उपवास करता सता विचरता हता—रहेला हता.

मू०—तए णं से सुदत्ते अणगारे मासक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेति जहा गोयमसामी तहेव धम्मघोसे (सुहम्मे) थेरे आपुच्छति जाव अडमाणे सुमुहस्स गाहावतिस्स गेहे अणुप्पविट्ठे ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुदत्त अनगारे मासखमणने पारणे पहेली पोरसीए सज्झाय ध्यान कर्युं. विगेरे जेम गौतमस्वामीए कर्युं तेम कहेवुं एटले के बीजा अध्ययनमां देखाडेली गौतमस्वामीनी भिक्षाचर्याना न्यायवडे आ सुदत्त साधुए पण भिक्षाचर्यानी सामाचारी प्रवर्तावी अर्थात् बीजी पोरसीए ध्यान कर्युं अने त्रीजी पोरसीए धर्मघोष (सुधर्म) स्थविरने पूछ्युं-भिक्षाचर्या माटे आज्ञा लीधी. यावत् नगरमां अटन करता तेणे सुमुख गाथापतिना घरमां प्रवेश कर्यो.

मू०—तए णं से सुमुहे गाहावती सुदत्तं अणगारं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आस-

१ धर्म शब्दना सदृशपणाथी धर्मघोष अने सुधर्म ए बन्ने शब्दनो एक ज अर्थ छे तेथी टीकामां 'सुहम्मे' लख्युं छे.

णातो अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पाउयातो ओमुयइ, ओमुयइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति, करित्ता सुदत्तं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छाति, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सयहत्थेणं विउलेणं असणपाणेणं (असणपाणखाइमसाइमेणं) पडिलाभेस्सामि त्ति तुट्ठे (पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे पडिलाभिए वि तुट्ठे)।

अर्थ—त्यारपछी (ते वखते) ते सुमुख गाथापतिए ते सुदत्त साधुने आवता जोया. जोइने ते हृष्ट तुष्ट थयो. आसन उपरथी उभो थयो. उभो थइने पादपीठ उपरथी नीचे उतर्यो. नीचे उतरीने पादुका (मोजडी) उतारी. उतारीने एक साडीनुं (खेसनुं) उत्तरासण कर्युं. उत्तरासण करीने सुदत्त साधुनी सन्मुख सात आठ पगलां चाल्यो. चालीने त्रण वार जमणी बाजुथी फरता फरता फरीथी जमणी बाजुए आववारूप प्रदक्षिणा करी. प्रदक्षिणा करीने तेमने वंदना (वचनवडे स्तुति) करी तथा कायावडे नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करी ज्यां भक्तगृह (रसोडुं) हतुं, त्यां आव्यो. आवीने पोताने हाथे विस्तारवाळा आहार पानवडे एटले अशन, पान, खादिम अने स्वादिम ए चारे प्रकारना आहारवडे हुं पडिलाभीश एम विचारी ते तुष्टमान थयो. (पडिलाभती वखते पण ते तुष्टमान थयो, तथा में मुनिने पडिलाभ्या एम विचारीने पण तेनी अनुमोदनावडे तुष्टमान थयो.)

मू०—तते णं तस्स सुमुहस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं (दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं) तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं सुदत्ते अणगारे पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तीकते मणुस्साउते निबद्धे गेहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुहारा वुट्ठा दसद्धवन्ने कुसुमे निवातिते चेलुक्खेवे कए आहयाओ देवदुंदुहीओ अंतरा वि य णं आकासे अहो दानमहो दानं घुट्ठे य। हत्थिणाउरे सिंघाडग जाव पहेसु बहुजणो अन्नमन्नस्स एवं आइक्खति एवं भासइ एवं पन्नवेइ एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिए ! सुमुहे गाहावई सुकयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धे णं मणुस्सजम्मे सुकयत्थरिद्धी य जाव तं धन्ने णं देवाणुप्पिया ! सुमुहे गाहावई ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुमुख नामना गाथापतिएं तेवा प्रकारनी द्रव्यनी शुद्धिवडे एटले प्रासुक विगेरे निर्दोष आहारनुं दान करवावडे, दायकनी शुद्धिवडे एटले उदारता विगेरे गुणवाळा दातारनी शुद्धिवडे अने चारित्रना गुणे करीने युक्त एवा ग्राहक (ग्रहण करनार)नी शुद्धिवडे एम त्रण प्रकारनी शुद्धिवडे तथा दातारनी मन, वचन अने काया एम त्रण करणनी शुद्धिवडे सुदत्त साधुने पडिलाभता—वहोरावता सता पोतानो संसार परिमित कर्यो. तेणे मनुष्यनुं आयुष्य बांध्युं.

१ अहीं मूळमा छट्ठी विभक्ति छे. तेनो विपर्यास करीने त्रीजी विभक्तिनो अर्थ कर्यो छे.

तथा ते वखते तेना घरने विषे आ पांच दिव्य प्रगट थयां. ते आ प्रमाणे–वसुधारानी वृष्टि थइ एटले साडीबार करोड सुवर्णनी वृष्टि थइ १, पांच वर्णना पुष्पोनी वृष्टि थइ २, चेलोत्क्षेप कर्यो एटले वस्त्रनी वृष्टि थइ ३, आकाशमां देवदुंदुभिनो ध्वनि थयो. ४ तथा आकाशने विषे "अहो दान अहो दान" एवी उद्घोषणा थइ ५, ते जोइ हस्तिनापुर नगरमां शृंगाटक –शींगोडाना आकारवाळा मार्गमां यावत् सामान्य मार्गमां घणा माणसो परस्पर आ प्रमाणे सामान्य रीते कहेवा लाग्या, आ प्रमाणे विशेषे करीने कहेवा लाग्या, आ प्रमाणे प्रज्ञापना करवा लाग्या अने आ प्रमाणे प्ररूपणा करवा लाग्या एटले सामान्यपणे अने विशेषपणे व्याख्यान करवा लाग्या, अथवा 'आख्याति' एटले सामान्य रीते कहेवा लाग्या, 'भाषते' एटले स्पष्ट वचनवडे कहेवा लाग्या, 'प्रज्ञापयति' एटले युक्तिवडे कहेवा लाग्या, अने 'प्ररूपयति' एटले भेदवडे (प्रकार वडे) कहेवा लाग्या.–हे देवानुप्रिय ! आ सुमुख नामनो गाथापति धन्य छे, तेणे सारुं पुण्य कर्युं छे, ते सारा लक्षणवाळो छे, तेने मनुष्य जन्म सारो प्राप्त थयो छे, अने तेनी समृद्धि सारी कृतार्थ (सफळ) थइ छे, यावत् तेथी करीने हे देवानुप्रिय ! ते सुमुख नामनो गाथापति धन्य छे. (अहीं यावत् शब्द छे तेथी आवो पाठ जाणवो.–हे देवानुप्रिय ! आ सुमुख गाथापति पुण्यशाळी छे, कृतार्थ छे, कृतलक्षण छे (सारा लक्षणवाळो छे), ते सुमुख गाथापतिना जन्म अने जीवितनुं फळ सारुं प्राप्त थयुं छे. केमके तेने आ आवा प्रकारनी उदार (मोटी) मनुष्य संबंधी संपदा प्राप्त थइ छे, तेनी पोतानी थइ छे (तेने वश थइ छे) अने चोतरफथी आवीने तेनामां ज रही छे. तेथी करीने हे देवानुप्रिय ! सुमुख गाथापति धन्य छे,

१ आकाशमां वस्त्र उछाळवामां आव्यां.

कृतार्थ छे, इत्यादि प्रथम बतावेला पांचे शब्दो—विशेषणो निगमनपखे जाणी लेवा.)

मू०—तते णं से सुमुहे गाहावई बहूइं वाससताइं आउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव हत्थिसीसे णगरे अदीणसत्तुस्स रन्नो धारणीए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुमुख नामनो गाथापति घणा सेंकडा वर्षनुं आयुष्य पाळीने (भोगवीने) काळ समये काळ करी ने आ ज हस्तिशीर्ष नामना नगरमां अदीनशत्रु राजानी धारिणी नामनी राणीनी कुक्षिने विषे पुत्रपणे उत्पन्न थयो.

मू०—तए णं सा धारणी देवी सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी ओहीरमाणी तहेव सीहं पासति, सेसं तं चेव जाव उप्पिं पासाए विहरति। तं एयं खलु गोयमा! सुबाहुणा इमा एयारूवा माणुस्सरिद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया ।

अर्थ—त्यारपछी ते धारिणी देवी शय्याने विषे कांइक उंघती अने कांइक जागती चालित निद्रावाळी हती, ते वखते तेणीए ते ज प्रमाणे (प्रथम कह्या प्रमाणे) स्वप्नने विषे सिंहने जोयो. विगेरे बाकीनो सर्व वृत्तांत प्रथमनी जेम कहेवो. यावत् (पतिने स्वप्ननी वात करी. तेमणे पुत्रप्रसव थवा रूप फळ कह्युं. राणी राजी थइ. अनुक्रमे गर्भस्थिति पूर्ण थये पुत्र प्रसव्यो. तेनुं सुबाहुकुमार नाम आप्युं. अनुक्रमे ते यौवनावस्था पाम्यो. राजाए अनेक कन्याओ साथे पाणिग्रहण कराव्युं.) ते सुबाहुकुमार प्रासाद उपर स्त्रीओ साथे विचरे छे (रहेलो छे.) तेथी आ प्रमाणे निश्चे हे गौतम ! सुबाहुकुमारे (पूर्वे करेला

मुनिदानना प्रभावे) आ आवा प्रकारनी मनुष्य संबंधी संपदा लब्धा–उपार्जन करी छे, प्राप्ता–प्राप्त करी छे अने अभिसमन्वागता–सम्यक् प्रकारे उपभोगपणाने पमाडी छे. (तेनो यथेच्छ उपभोग करे छे).

मू०–पभू णं भंते ! सुबाहुकुमारे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ! । हंता पभू ।

अर्थ—गौतमस्वामीए भगवान महावीरस्वामीने पूछ्युं के, हे भगवन् ! ते सुबाहुकुमार देवानुप्रिय एवा आपनी पासे मुंड थइ घरमांथी नीकळी अनगारपणुं पामवाने–अंगीकार करवाने समर्थ छे (थशे) ? (भगवान बोल्या के) हा, समर्थ छे (थशे.)

मू०–तते णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते भगवान गौतमस्वामीए श्रमण भगवान महावीरस्वामीने वंदना (वचनवडे स्तुति) करी, तथा कायावडे नमस्कार कर्या. वंदना नमस्कार करी संयम अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता विचरवा लाग्या–रह्या.

मू०–तए णं से समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ हत्थिसीसाओ नगराओ पुप्फकरंडाओ उज्जाणाओ कयवणमालजक्खाययणाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवय-

विहारं विहरइ ।

अर्थ—त्यारपछी ते श्रमण भगवान महावीरस्वामी एकदा कदाचित् हस्तिशीर्ष नामना नगरथी, पुष्पकरंडक नामना उद्यानथी अने कृतवनमाल नामना यक्षना आयतनथी (चैत्यथी) बहार नीकळ्या, बहार नीकळीने बहारना जनपदविहार-प्रत्ये विचरवा लाग्या एटले बीजा देशोमां विहार करवा लाग्या.

मू०—तते णं से सुबाहुकुमारे समणोवासए जाते अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबाहुकुमार श्रमणोपासक (श्रावक) थयो, तेथी जीव, अजीव विगेरे तत्त्वोने जाणनार थयो. यावत् प्रतिलाभतो सतो एटले साधुओने आहारपाणीने वहोरावतो सतो विचरवा लाग्यो—रह्यो. (अहीं 'जाव' शब्द लख्यो छे तेथी 'उवलद्धपुन्नपावे' त्यांथी प्रारंभीने 'अहापडिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' त्यां सुधीनो सर्व पाठ लेवो. एटले के ते सुबाहुकुमार पुण्य पापने जाणनार यावत् अंगीकार कर्या प्रमाणे तपनी क्रियावडे (व्रतो पाळवावडे) पोताना आत्माने भावतो सतो विचरवा लाग्यो—रह्यो इत्यादि.

मू०—तते णं से सुबाहुकुमारे अन्नया कयाइं चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जति, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहति, पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं संथरति, संथरित्ता दब्भसंथारं दुरूहइ, दुरूहित्ता अट्ठमभत्तं

पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिते अट्ठमभत्तिए पोसहं पडिजागरमाणे विहरति ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबाहुकुमार एकदा कदाचित् चौदश, आठम, अमास अने पूर्णिमाने दिवसे ज्यां पौषधशाळा हती त्यां ज आव्यो. आवीने तेणे पौषधशाळानुं प्रमार्जन कर्युं. प्रमार्जन करीने तेणे ठल्ला मात्रानी भूमिनुं पडिलेहण कर्युं. पडिलेहण करीने दर्भनो संथारो पाथर्यो. पाथरीने दर्भना संथारापर आरुढ थयो (बेठो). आरूढ थइने (बेसीने) अठमनो तप ग्रहण कर्यो. ग्रहण करीने पौषधशाळामां पौषधवाळो थइने अठमना तप सहित पौषधने पाळतो सतो रह्यो.

मू०—तते णं तस्स सुबाहुकुमारस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्भत्थिए चिंतिए मणोगते संकप्पे (समुप्पज्जित्था)—धन्ना णं ते गामागरनगर जाव (खेडकव्वडदोणमुहपट्टणआसमणिगमसंवाह) सण्णिवेसा जत्थ णं समणे भगवं महावीरे विहरति।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबाहुकुमारने पूर्वरात्रि अने पाछली रात्रिना काळरूप समयने विषे एटले मध्य रात्रिने समये धर्मजागरिका प्रत्ये जागतां एटले धर्मसंबंधी विचार करतां आवा प्रकारनो प्रार्थना करेलो, चिंतवेलो अने मनमां रहेलो संकल्प (विचार) उत्पन्न थयो के—धन्य छे ते गामने, आकरने (खाणने), नगरने, यावत् (एटले खेटने, कर्बटने,

---

१ धूळना किल्लावाळुं गाम. २ नानुं गाम.

द्रोणमुखने[1], पाटणने[2], आश्रमने[3], निर्गमने[4], संबाधने[5]) अने संनिवेशने[6] के जे गाम विगेरेने विषे श्रमण भगवान महावीर-स्वामी विचरता होय (जे ग्रामादिकमां प्रभु विचरता होय ते ग्रामादिकने धन्य छे.)

मू०—धन्ना णं ते राईसरतलवर (माडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभिइओ) जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडा जाव (भवित्ता आगाराओ अणगारियं) पव्वयंति।

अर्थ—धन्य छे ते राजाने, ईश्वरने, तलवरने (माडंबिकने, कौटुंबिकने, इभ्यने, श्रेष्ठीने, सेनापतिने तथा सार्थवाह विगेरेने) के जेओ श्रमण भगवान महावीरस्वामीनी पासे मुंड यावत् (थइने घर थकी नीकळी अनगारपणाने—चारित्रने) अंगीकार करे छे—चारित्र ग्रहण करे छे.

मू०—धन्ना णं ते राईसरतलवर (माडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभिइओ) जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वयाइं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जंति।

अर्थ—वळी धन्य छे ते राजा, ईश्वर, तलारक्ष, (माडंबिक, कौटुंबिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह विगेरेने) के जेओ श्रमण भगवान महावीरस्वामीनी पासे पांच अणुव्रत विगेरेने यावत् गृहीधर्मने अंगीकार करे छे.

---

१ जल अने स्थलना मार्गवाळुं गाम. २ जळ के स्थळ बेमांथी एक मार्गवाळुं गाम. ३ तापसादिकनुं निवासस्थान. ४ वेपारनुं गाम. ५ पर्वतपर किल्लो होय अने वच्चे गाम होय ते. ६ स्थान विशेष.

मू०—धन्ना णं ते राईसर जाव (तलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभिइओ) जे णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सुणेंति ।

अर्थ—वळी धन्य छे ते राजा, ईश्वर यावत् (तलारवक, माडंबिक, कौटुंबिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति अने सार्थवाह विगेरेने) के जेओ श्रमण भगवान महावीरस्वामीनी पासे धर्मनुं श्रवण करे छे. (अने पोताना हृदयमां धारण करे छे.)

मू०—तं जइ णं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छेज्जा जाव विहरिज्जा तते णं अहं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता जाव (अगाराओ अणगारियं) पव्वएज्जा ।

अर्थ—तेथी जो कदाच श्रमण भगवान महावीरस्वामी पूर्वानुपूर्वीए एटले अनुक्रमे चालता एक गामथी बीजे गाम जता सता अहीं आवे (पधारे) यावत् विहार करे तो हुं श्रमण भगवान महावीरस्वामीनी पासे मुंड थइने यावत् (घर थकी नीकळी अनगारपणाने—चारित्रने) अंगीकार करुं.

मू०—तते णं समणे भगवं महावीरे सुबाहुस्स कुमारस्स इमं एयारूवं अब्भत्थियं जाव वियाणित्ता पुव्वाणुपुव्विं जाव (चरमाणे गामाणुगामं) दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिसीसे णगरे

जेणेव पुप्फकरंडगउज्जाणे जेणेव कयवणमालप्पियस्स जक्खस्स जक्खायतणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तहेव परिसा राया निग्गया ।

अर्थ—त्यारपछी श्रमण भगवान महावीरस्वामी सुबाहुकुमारना आ आवा प्रकारना प्रार्थना करेला यावत् विचारने जाणी अनुक्रमे यावत् (चालता तथा एक गामथी बीजे गाम) विचरता सता ज्यां हस्तिशीर्ष नामनुं नगर हतुं, ज्यां पुष्पकरंडक नामनुं उद्यान हतुं, अने ज्यां कृतवनमालप्रिय नामना यक्षनुं यक्षायतन (मंदिर) हतुं, त्यां आव्या. आवीने यथायोग्य वनपाळनी आज्ञावडे अवग्रह (उपाश्रय) ने ग्रहण करी संयम अने तपवडे पोताना आत्माने भावता सता रह्या. ते वखते ते ज प्रमाणे एटले प्रथमनी जेम नगरमांथी लोकोनी पर्षदा तथा राजा भगवानने वांदवा नीकळ्या.

मू०–तते णं से सुबाहुकुमारे तं महया जहा पढमं तहा निग्गओ । धम्मो कहिओ (धम्म-माइक्खइ, तं जहा–सव्वओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वओ मेहुणाओ वेरमणं, सव्वओ परिग्गहाओ वेरमणं । तए णं सा महतिमहालिया मणूसपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा) तहेव

परिसा राया पडिगया ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबाहुकुमार ते मोटा समुदाय सहित जेम प्रथम नीकळ्यो हतो तेम नीकळ्यो. भगवाने धर्म कह्यो. (धर्म कह्यो ते आ प्रमाणे–सर्वथा प्राणातिपातथी विरमवुं, सर्वथा मृषावादथी विरमवुं, सर्वथा अदत्तादानथी विरमवुं, सर्वथा मैथुनथी विरमवुं, तथा सर्वथा परिग्रहथी विरमवुं. इत्यादि. त्यारपछी ते अत्यंत मोटी मनुष्यनी पर्षदा श्रमण भगवान महावीरस्वामीनी पासे धर्म सांभळीने) ते ज प्रमाणे (जेम आव्या हता तेम) पर्षदा तथा राजा पोत-पोताने स्थाने गया.

मू०—तते णं से सुबाहुकुमारे समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जहा मेहे तहा अम्मापियरो आपुच्छति। णिक्खमणाभिसेओ। तहेव जाव अणगारे जाते ईरियासमिए जाव (भासासमिए एवं मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्तिंदिए) गुत्तबंभयारी ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबाहुकुमारे श्रमण भगवान महावीरस्वामीनी पासे धर्म सांभळीने हृदयमां धारीने हृष्टतुष्ट थइ मेघकुमारनी जेम मातापिताने पूछयुं (बहु रीते समजावीने तेमनी रजा लीधी). त्यारपछी तेनो दीक्षाभिषेक करवामां आव्यो. ते ज प्रमाणे यावत् ते संसार छोडीने अनगार (साधु) थयो, ईर्यासमितिवाळो, यावत् (भाषासमिति विगेरे पांच समितिवाळो, मनगुप्तिवाळो, वचनगुप्तिवाळो, कायगुप्तिवाळो, गुप्तइंद्रियोवाळो) तथा गुप्तब्रह्मचारी थयो.

मू०—तते णं से सुबाहू अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जाति, अहिज्जित्ता वहूहिं चउत्थछट्ठट्ठम० तवोविहाणेहिं अप्पाणं भावित्ता वहूइं वासाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झुसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने ।

अर्थ—त्यारपछी ते सुबाहु अनगार (साधु) श्रमण भगवान महावीरस्वामीना तथाप्रकारना स्थविर साधुनी पासे सामायिक विगेरे अग्यार अंग भण्या. भणीने घणा चतुर्थ (उपवास), छठ्ठ (बे उपवास), अट्ठम (त्रण उपवास), विगेरे वधता वधता तपकर्मवडे पोताना आत्माने भावीने घणा वर्षो सुधी चारित्रना पर्यायने पाळीने एक मासनी संलेखनावडे पोताना आत्माने (देहने) शुष्क करीने साठ भक्त (भोजन) ने अनशनवडे छेदीने (एक मासनुं अनशन करीने) आलोचना तथा प्रतिक्रमण करी मननी समाधिपूर्वक मरणसमये मरण पामीने सौधर्मकल्प नामना प्रथम देवलोकने विषे देवपणे उत्पन्न थया.

मू०—से णं ततो देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता

माणुस्सं विग्गहं लभिहिइ, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता तहारूवाणं थेराणं अंतिए मुंडे जाव पव्वइस्सति ।

अर्थ—त्यारपछी ते गुंडानो जीव ते प्रथम देवलोकथी आयुष्यना क्षयवडे एटले आयुःकर्मना दलीयानो क्षय थया-पछी, भवना क्षयवडे एटले देवगतिना बंधनरूप देवगत्यादिक कर्मना दळियानो क्षय थावडे तथा स्थितिना क्षयवडे एटले आयुष्यादिक कर्मनी स्थितिना क्षय थवावडे अनंतर एटले आयुष्यादिकनो क्षय थया पछी आंतरा रहितपणे च्यवनने समये च्यवीने एटले आयु पूर्ण करीने अथवा देवसंबंधी शरीरने तजीने मनुष्यभवने पामशे. मनुष्यभव पामीने बोधिने (जिनधर्मने) जाणशे-एटले समकित पामशे. जिनधर्म जाणीने तथाप्रकारना स्थविर साधुनी पासे मुंड थई यावत् प्रव्रज्या (दीक्षा) ग्रहण करशे.

मू०—से णं तत्थ बहूइं वासाइं सामण्णं पाउणिहिइ, पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगते सणंकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जे । से णं ताओ देवलोयाओ ततो माणुस्सं पव्वज्जा बंभलोए, माणुस्सं ततो महासुक्के ततो माणुस्सं (ततो) आणते देवे ततो माणुस्सं ततो आरणे देवे ततो माणुस्सं (ततो) सव्वट्ठसिद्धे ।

अर्थ—ते (सुबाहुनो जीव) त्यां घणा वर्षो चारित्र पाळशे. पाळीने आलोचना अने प्रतिक्रमण करी समाधिपूर्वक मरण पामी सनत्कुमार कल्प नामना त्रीजा देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यारपछी ते देवलोकथी च्यवीने ते मनुष्य-भव पामशे. त्यां प्रव्रज्या ग्रहण करी तेने पाळी ब्रह्मलोक नामना पांचमा देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थशे, त्यांथी च्यवी मनुष्यभव पामी दीक्षा लइ मरण पामी महाशुक्र नामना सातमा देवलोकमां देव थशे. त्यांथी च्यवी मनुष्यभव पामी चारित्र ग्रहण करी आनत नामना नवमा देवलोकमां देव थशे. त्यांथी च्यवी मनुष्य थइ दीक्षा ग्रहण करी आरण नामना अग्यारमा देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यांथी च्यवी मनुष्यभव पामी दीक्षा ग्रहण करी सर्वार्थसिद्ध विमानमां देव-पणे उत्पन्न थशे.

मू०—से णं तत्तो अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे जाव अड्डाइं जहा दढपइन्ने सिज्झिहिति।

अर्थ—ते सुबाहुनो जीव त्यांथी अनंतर (आंतरा रहित) च्यवीने महाविदेह क्षेत्रने विषे यावत् (जे आवां कुळो छे के जे आढ्य–समृद्धिवाळां, दीप्त–तेजस्वी अने अपरिभूत–कोइथी पराभव न पामे तेवां छे, ते कुळोने विषे उत्पन्न थइ दीक्षा ग्रहण करी) दढप्रतिज्ञनी जेम सिद्ध थशे.[1] विगेरे.

मू०—एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते।

---

१ एमनुं चरित्र ने अधिकार श्री रायपसेणी सूत्रमां छे.

इति पढमं अज्झयणं सम्मत्तं । १

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! श्रमण भगवान यावत् मोक्षने पामेला श्रीमहावीरस्वामीए सुखविपाकना पहेला अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे.

आ प्रमाणे बीजा श्रुतस्कंधना पहेला अध्ययनमां सुबाहु राजर्षिनो वृत्तांत कह्यो. १

अथ द्वितीय अध्ययन. २

मू०—बितियस्स णं उक्खेवो—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं उसभपुरे णगरे थूभकरंडउज्जाणे धन्नो जक्खो, धणावहो राया, सरस्सई देवी, सुमिणदंसणं, कहणं, जम्मणं, बालत्तणं कलाओ य, जुव्वणे पाणिग्गहणं, दाओ पासाद भोगा य जहा सुबाहुस्स, नवरं भद्दनंदी कुमारे सिरिदेवीपामोक्खाणं पंचसया ।

सामीसमोसरणं, सावगधम्मं, पुव्वभवपुच्छा, महाविदेहे वासे पुंडरीकिणी णगरी, विजयते कुमारे, जुगबाहू तित्थयरे पडिलाभिए माणुस्साउए निबद्धे, इहं उप्पन्ने, सेसं जहा सुबाहुयस्स जाव

महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥

। इति बितियं अज्झयणं सम्मत्तं । २

अर्थ—हवे बीजा अध्ययननो उत्क्षेप (प्रस्तावना) करे छे.—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये ऋषभपुर नामनुं नगर हतुं. तेनी बहार स्तूपकरंडक नामनुं उद्यान हतुं. तेमां धन्य नामे यक्ष हतो. ते नगरमां धनावह नामनो राजा हतो. तेने सरस्वती नामनी देवी (राणी) हती. तेणीए एकदा स्वप्न जोयुं. ते राजाने कह्युं. अनुक्रमे पुत्र जन्म्यो. बाल्यावस्थाने पामी कळाओ शीख्यो. यौवन वय पामी ५०० कन्या साथे पाणिग्रहण कर्युं. पिताए दायजो आप्यो. ५०० प्रासाद करावी आप्या. श्रेष्ठ प्रासादनी उपली भूमिपर प्रियाओ साथे भोग भोगववा लाग्यो. विगेरे सर्व पहेला अध्ययनमां कहेला सुबाहुकुमारनी जेम जाणवुं. विशेष ए के-तेनुं नाम भद्रनंदी कुमार हतुं. अने तेने श्रीदेवी विगेरे पांचसो प्रियाओ हती.

एकदा त्यां श्रमण भगवान महावीरस्वामी समवसर्या. ते वखते भद्रनंदी कुमारे प्रभुनी देशना सांभळीने श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. गौतमस्वामीए तेना पूर्वभवनो प्रश्न कर्यो, त्यारे भगवान महावीरस्वामीए कह्युं के-ते पूर्वभवमां महाविदेह क्षेत्रमां पुंडरीकिणी नामनी नगरीमां विजय नामनो कुमार हतो. तेणे युगबाहु नामना तीर्थंकरने पडिलाभ्या हता. तेथी मनुष्यनुं आयुष्य बांधी ते अहीं (ऋषभपुर नगरमां) उत्पन्न थयो छे विगेरे. शेष सर्व वृत्तांत सुबाहु कुमारनी जेम

कहेवो, यावत् आ भवमां चारित्र अंगीकार करी पहेले देवलोके जइ सुबाहुकुमारनी जेम मनुष्यना ने देवना भवो करी अंते महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य थइ चारित्र लइ सिद्ध थशे एटले विशेषे करीने सिद्धिगमननी योग्यताए करीने अथवा मोटी ऋद्धिनी प्राप्तिए करीने सर्व प्रयोजनने समाप्त करशे. बोध पामशे एटले केवलज्ञानवडे सर्व पदार्थोने जाणशे. मुक्त थशे एटले समग्र कर्मना अंशोवडे मूकाशे. परिनिर्वाण पामशे एटले कर्मे करेला सर्व प्रकारना विकार रहित थवाथी स्वस्थ थशे. अर्थात् सर्व दुःखनो अंत करशे. आ प्रमाणे भद्रनंदी नामनुं बीजुं अध्ययन समाप्त. २

अथ तृतीय अध्ययन–३

मू०–तच्चस्स उक्खेवो–वीरपुरं णगरं, मणोरमं उज्जाणं, वीरकण्हमित्ते राया, सिरी देवी, सुजाए कुमारे, बलसिरीपामोक्खा पंचसयकन्ना । सामीसमोसरणं, पुव्वभवपुच्छा, उसुयारे नयरे, उसभदत्ते गाहावई, पुप्फदत्ते अणगारे पडिलाभे मणुस्साउए निबद्धे इह उप्पन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ।

। सुहविवागे तइयं अज्झयणं सम्मत्तं । ३

अर्थ—हवे त्रीजा अध्ययननो उत्क्षेप (प्रस्तावना) कहे छे.–वीरपुर नामनुं नगर हतुं. तेनी बहार मनोरम नामनुं

उद्यान हतुं. (अमुक नामनो यक्ष हतो) ते नगरमां वीरकृष्णमित्र नामनो राजा हतो. तेने श्रीदेवी नामे राणी हती. तेमने सुजात नामनो कुमार थयो. तेने बलश्री विगेरे पांचसो कन्याओ साथे परणाव्यो. तेमनी साथे ते क्रीडा करतो हतो. एकदा श्रमण भगवान महावीरस्वामी त्यां समवसर्या. सुजातकुमारे देशना सांभळी श्रावकना व्रत ग्रहण कर्या. गौतमस्वामीए सुजातकुमारना पूर्वभवनो प्रश्न कर्यो. भगवाने उत्तर आप्यो के–इषुकार नामे नगर हतुं. तेमां ऋषभदत्त नामनो गाथापति हतो. तेणे पुष्पदत्त नामना अनगार (साधु) ने पडिलाभ्या हता. तेथी ते मनुष्यनुं आयुष्य बांधी अहीं (वीरपुर नगरमां) उत्पन्न थयो छे. आ भवमां चारित्र लइ, सौधर्म देवलोके देव थइ सुबाहुकुमारनी जेम एकांतर मनुष्य ने देवना भवो करी अंते महाविदेह क्षेत्रमां (मनुष्यपणे जन्मी चारित्र लइ) सिद्ध थशे, बुद्ध थशे, मुक्त थशे, निर्वाण पामशे अने सर्व दुःखनो अंत करशे. आ प्रमाणे सुजात नामनुं त्रीजुं अध्ययन समाप्त. ३

अथ चतुर्थ अध्ययन. ४

मू०–श्चोत्थस्स उक्खेवो–विजयपुरं णगरं, णंदणवणं [मणोरमं] उज्जाणं, असोगो जक्खो, वासवदत्ते राया, कण्हा देवी, सुवासवे कुमारे. भद्दापामोक्खाणं पंचसया, जाव पुव्वभवे कोसंबी णगरी, धणपाले राया, वेसमणभद्दे अणगारे पडिलाभिते इह जाव सिद्धे ॥

चोत्थं अज्झयणं सम्मत्तं । ४

अथ—हवे चोथा अध्ययननो उत्क्षेप (प्रस्तावना) करे छे-विजयपुर नामनुं नगर हतुं. त्यां नंदनवन [मनोरम] नामनुं उद्यान हतुं. तेमां अशोक नामनो यक्ष हतो (ते नामनुं यक्षायतन हतुं). ते नगरमां वासवदत्त नामे राजा हतो. तेने कृष्णा नामनी राणी हती. तेमने सुवासव नामनो कुमार थयो, तेने भद्रा विगेरे पांचसो राजकन्याओ साथे परणाव्यो. त्यां प्रभु पधार्या. देशना सांभळी श्रावकना व्रत लीधां विगेरे सर्व वृत्तांत कहेवो. यावत् पूर्वभवमां कौशांबी नामनी नगरी हती. तेमां धनपाळ नामे राजा हतो. तेणे वैश्रमणभद्र नामना मुनिने पडिलाभ्या हता. त्यांथी अहीं उत्पन्न थयो छे. यावत् आ भवमां चारित्र लइ प्रथम देवलोकमां देव थइ एकांतर मनुष्य ने देवना भव करी अंते महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्यपणे जन्मी चारित्र लइ सिद्ध थशे विगेरे सर्व कहेवुं. इति सुवासव नामनुं चोथुं अध्ययन समाप्त.

अथ पंचम अध्ययन. ५

मू०—पंचमस्स उक्खेवओ-सोगंधिआ णगरी, नीलासोए उज्जाणे, सुकालो जक्खो, अप्पडिहओ राया, सुकन्ना देवी, महचंदे कुमारे, तस्स अरहदत्ता भारिया, जिणदासो पुत्तो, तित्थयरागमणं, जिणदासपुव्वभवो—मज्झमिया णगरी, मेहरहो राया, सुधम्मे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥

पंचमं अज्झयणं सम्मत्तं. ५ ।

अर्थ—हवे पांचमा अध्ययननो उत्क्षेप कहे छे–सौगंधिका नामनी नगरी हती. ते नगरीनी बहार नीलाशोक नामनुं उद्यान हतुं. तेमां सुकाल नामे यक्ष हतो (यक्षायतन हतुं.) ते नगरीमां अप्रतिहत नामे राजा हतो. तेने सुकन्या नामनी देवी–राणी हती. तेमने महचंद्र नामे कुमार हतो. तेने अरहदत्ता नामनी पत्नी हती. तेमने जिनदास नामे पुत्र थयो. एकदा त्यां तीर्थंकर पधार्या. तेमनी देशना सांभळी जिनदासे श्रावकधर्म स्वीकार्यो. जिनदासनो पूर्वभव (गौतमस्वामीए पूछ्यो त्यारे भगवाने कह्युं)–माध्यमिका नामनी नगरी हती. तेमां मेघरथ नामे राजा हतो. तेणे सुधर्म नामना अनगार (साधु) ने पडिलाभ्या हता. विगेरे सर्व वृत्तांत कहेवो. यावत् ते जिनदासनो जीव आ भवमां चारित्र लइ, देव थइ, एकांतर मनुष्यना ने देवना भवो करी अंते महाविदेहमां मनुष्य थइ चारित्र लइ सिद्ध थशे.

इति जिनदास नामनुं पांचमुं अध्ययन-समाप्त. ५

अथ षष्ठ अध्ययन. ६

मू०—छट्ठस्स उक्खेवो—कणगपुरं णगरं, सेयासायं उज्जाणं, वीरभद्दो जक्खो, पियचंदो राया,

सुभद्दा देवी, वेसमणे कुमारे जुवराया, सिरीदेवीपामोक्खा पंचसया कन्ना पाणिग्गहणं, तित्थयरागमणं, धनवती जुवरायपुत्ते जाव पुव्वभवो—मणिवया नगरी, मित्तो राया, संभूतिविजए अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥

छट्ठं अज्झयणं सम्मत्तं. ६

अर्थ—हवे छठा अध्ययननो उत्क्षेप कहे छे—कनकपुर नामनुं नगर हतुं. त्यां श्वेताशोक नामनुं उद्यान हतुं. तेमां वीरभद्र नामनो यक्ष हतो. ते नगरमां प्रियचंद्र नामे राजा हतो. तेने सुभद्रा नामनी देवी—राणी हती. तेमने वैश्रमण नामनो कुमार हतो ते युवराज थयो. तेणे श्रीदेवी विगेरे पांचसो कन्याओनुं पाणिग्रहण कर्युं. एकदा तीर्थंकर (महावीरस्वामी) त्यां पधार्या. ते वखते धनपति नामनो युवराजनो पुत्र तेमने वांदवा गयो. प्रभुनी देशना सांभळी श्रावकधर्म स्वीकार्यो. गौतमस्वामीए पूर्वभव पूछवाथी भगवाने ते कह्यो—मणिवया नामनी नगरी हती. तेमां मित्र नामे राजा हतो. तेणे संभूतिविजय नामना अनगारने पडिलाभ्या. विगेरे यावत् ते धनपति थयो छे ते आ भवमां चारित्र लइ देव—मनुष्यना भवो करी प्रांते महाविदेहमां मनुष्य थइ, चारित्र लइ सिद्ध थशे. विगेरे.

इति धनपति नामनुं छठ्ठुं अध्ययन समाप्त. ६

अथ सप्तम अध्ययन. ७

मू०—सत्तमस्स उक्खेवो—महापुरं णगरं, रत्तासोगं उज्जाणं, रत्तपाओ जक्खो, बले राया, सुभद्दा देवी, महब्बले कुमारे, रत्तवईपामोक्खाओ पंचसया कन्ना पाणिग्गहणं, तित्थयरागमणं, जाव पुव्वभवो-मणिपुरं णगरं, णागदत्ते गाहावती, इंदपुरे अणगारे पडिलाभिते जाव सिद्धे ॥

सत्तमं अज्झयणं सम्मत्तं. ७

अर्थ—हवे सातमा अध्ययननो उत्क्षेप कहे छे–महापुर नामनुं नगर हतुं. त्यां रक्ताशोक नामनुं उद्यान हतुं. तेमां रक्तपाद नामे यक्ष हतो. ते नगरमां बळ नामनो राजा हतो. तेने सुभद्रा नामनी देवी (राणी) हती. तेमने महाबळ नामनो कुमार थयो. तेणे रक्तवती विगेरे पांचसो कन्याओनुं पाणिग्रहण कर्युं. एकदा त्यां तीर्थंकर (महावीरस्वामी) पधार्या. महाबळकुमारे प्रभुनी देशना सांभळी श्रावकधर्म स्वीकार्यो. गौतमस्वामीए पूछतां प्रभुए तेनो पूर्वभव कह्यो–मणिपुर नामनुं नगर हतुं. तेमां नागदत्त नामनो गाथापति हतो. तेणे इंद्रपुर नामना अनगार (साधु) ने पडिलाभ्या हता. ते महाबळ कुमार थयो. ते आ भवमां चारित्र लइ देव थइ एकांतरे मनुष्य अने देवना भवो करी प्रांते महाविदेहमां मनुष्य थइ, चारित्र लइ सिद्ध थशे.

इति महाबळ नामनुं सातमुं अध्ययन समाप्त. ७

अथ अष्टम अध्ययन. ८

मू०–अट्ठमस्स उक्खेवो–सुघोसं णगरं, देवरमणं उज्जाणं, वीरसेणो जक्खो, अज्जुणो राया, तत्तवती देवी, भद्दनंदी कुमारे, सिरीदेवीपामोक्खा पंचसया जाव पुव्वभवे--महाघोसे णगरे, धम्मघोसे गाहावती, धम्मसीहे अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥

अट्ठमं अज्झयणं सम्मत्तं. ८

अर्थ—हवे आठमा अध्ययननो उत्क्षेप कहे छे–सुघोष नामनुं नगर हतुं. त्यां देवरमण नामनुं उद्यान हतुं. तेमां वीरसेन नामनो यक्ष हतो. ते नगरमां अर्जुन नामे राजा हतो. तेने तत्त्ववती नामनी राणी हती. तेमने भद्रनंदी नामनो कुमार थयो. ते श्रीदेवी विगेरे पांचसो कन्याओने परण्यो, त्यां प्रभु समवसर्या. तेमनी देशना सांभळी भद्रनंदी कुमारे श्रावकधर्म स्वीकार्यो. गौतमस्वामीए पूछतां प्रभुए तेनो पूर्वभव आ प्रमाणे कह्यो–महाघोष नामनुं नगर हतुं. तेमां धर्मघोष नामनो गाथापति हतो. तेणे धर्मसिंह नामना अनगारने पडिलाभ्या हता. तेथी ते अहीं भद्रनंदी कुमार थयो छे. ते आ भवमां चारित्र लइ देव थइ एकांतरे मनुष्य ने देवोना भवो करी प्रांते महाविदेहमां मनुष्य थइ चारित्र लइ यावत् ते सिद्ध थशे.

इति भद्रनंदी नामनुं आठमुं अध्ययन समाप्त.

अथ नवम अध्ययन. ९

मू०—णवमस्स उक्खेवो—चंपा णगरी, पुन्नभद्दे उज्जाणे, पुन्नभद्दो जक्खो, दत्ते राया, रत्तवई देवी, महचंदे कुमारे जुवराया, सिरिकंतापामोक्खाणं पंचसया कन्ना, जाव पुव्वभवो—तिगिच्छी णगरी, जियसत्तू राया, धम्मवीरिए अणगारे पडिलाभिए जाव सिद्धे ॥

नवमं अज्झयणं सम्मत्तं. ९

अर्थ—हवे नवमा अध्ययननो उत्क्षेप कहे छे—चंपा नामनी नगरी हती. त्यां पूर्णभद्र नामनुं उद्यान हतुं. तेमां पूर्णभद्र नामनो यक्ष थयो. ते नगरीमां दत्त नामनो राजा हतो. तेने रक्तवती नामनी देवी हती. तेमने महाचंद्र नामनो कुमार हतो ते युवराज थयो. तेणे श्रीकांता विगेरे पांचसो कन्याओनुं पाणिग्रहण कर्युं. त्यां प्रभु समवसर्या, तेमनी देशना सांभळी महाचंद्रे श्रावकधर्म स्वीकार्यो. गौतमस्वामीए पूछतां भगवाने तेनो पूर्वभव आ प्रमाणे कह्यो.—तिगिंछी नामनी नगरी हती. तेमां जितशत्रु नामनो राजा हतो. तेणे धर्मवीर नामना अनगारने पडिलाभ्या हता. तेथी ते अहीं महाचंद्र कुमार थयो छे. ते आ भवमां चारित्र लइ देव थइ एकांतरे मनुष्यना ने देवना भवो करी अंते महाविदेहमां मनुष्य थइ चारित्र लइ यावत् ते सिद्ध थशे.

इति महाचंद्र नामनुं नवमुं अध्ययन समाप्त.

अथ दशम अध्ययन. १०

मू०—जति णं भंते ! दसमस्स उक्खेवो—एवं खलु जंबू ! ते णं काले णं ते णं समए णं सायेयं नामे नगरे होत्था, उत्तरकुरुउज्जाणे, पासमिओ जक्खो, मित्तनंदी राया, सिरीकंता देवी वरदत्ते कुमारे, वरसेणापामोक्खा णं पंच देवीसया, तित्थयरागमणं, सावगधम्मं, पुव्वभवपुच्छा, सतदुवारे णगरे, विमलवाहणे राया, धम्मरुचिनामं अणगारं एज्जमाणं पासति, पासित्ता पडिलाभिते समाणे, संसार परित्तीकए, मणुस्साउते निबद्धे, इहं उप्पन्ने, सेसं जहा सुबाहुयस्स कुमारस्स पोसहचिंता जाव पव्वज्जा, कप्पंतरिओ जाव सव्वट्ठसिद्धे । ततो महाविदेहे जहा दढपइन्नो जाव सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥

अर्थ—(जंबूस्वामीए सुधर्मास्वामीने पूछ्युं के—) हे भगवन् ! जो नवमा अध्ययननो आ उपर कह्या प्रमाणे अर्थ कह्यो छे, तो दशमा अध्ययननो भगवान श्रीमहावीरस्वामीए शो अर्थ कह्यो छे ? ए रीते आ दशमा अध्ययननो उत्क्षेप कहे छे—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू ! ते काळे ते समये साकेत नामनुं नगर हतुं. तेनी बहार उत्तरकुरु नामनुं उद्यान हतुं.

तेमां पासमिक नामनो यक्ष हतो, ते नगरमां मित्रनंदी नामे राजा हतो. तेने श्रीकांता नामनी देवी (राणी) हती. तेमने वरदत्त नामनो कुमार थयो. ते वरसेना विगेरे पांचसो स्त्रीओने परण्यो. एकदा त्यां तीर्थंकर भगवान (महावीर-स्वामी) पधार्या. तेमनी पासे ते कुमारे देशना सांभळीने श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. गौतमस्वामीए तेना पूर्वभवनो प्रश्न कर्यो. त्यारे भगवाने कह्युं.-शतद्वार नामनुं नगर हतुं. तेमां विमलवाहन नामनो राजा हतो. तेणे एकदा धर्मरुचि नामना अनगारने भिक्षामाटे आवता जोया. जोइने ते मुनिने तेणे पडिलाभ्या-भातपाणी वहोराव्या. तेथी तेणे संसारने परिमित-हलको कर्यो. मनुष्यनुं आयुष्य बांध्युं. तेथी ते अहीं साकेत नगरमां वरदत्त कुमार थयो छे. बाकी सर्व वृत्तांत सुबाहु कुमारनी जेम कहेवो. एकदा तेने पौषधमां आध्यात्मिक विचार थयो. जेथी प्रभु पधार्या यावत् तेणे प्रभु पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी. मरण पामीने सौधर्मे देव थयो. पछी अनुक्रमे एकांतर[1] कल्पमां (देवलोकमां) सुबाहु कुमारनी जेम उत्पन्न थइ यावत् सर्वार्थसिद्ध नामना विमानमां उत्पन्न थशे. त्यारपछी महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ दृढप्रतिज्ञनी जेम यावत् सिद्ध थशे एटले विशेषे करीने सिद्धिगमननी योग्यताए करीने अथवा मोटी ऋद्धिनी प्राप्तिए करीने सर्व प्रयोजनने समाप्त करशे. बोध पामशे एटले केवळज्ञानवडे सर्व पदार्थोने जाणशे. मुक्त थशे एटले समग्र कर्मना अंशोवडे मूकाशे. परिनिर्वाण पामशे एटले कर्मे करेला सर्व प्रकारना विकार रहित थवाथी स्वस्थ थशे. अर्थात् सर्व दुःखनो अंत करशे. (सिद्धिपद पामशे.)

---

१ पहेला, त्रीजा, पांचमा विगेरे.

मू०—एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सुहविवागाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते । सेवं भंते ! सेवं भंते ! सुहविवागा ॥

दसमं अज्झयणं सम्मत्तं. १०

अर्थ—आ प्रमाणे निश्चे हे जंबू! श्रमण भगवान महावीरस्वामी यावत् मोक्षने पामेला छे तेमणे सुखविपाकना दशमा अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे. (ते सांभळी जंबूस्वामी बोल्या.) हे भगवन् ! ते एमज छे. हे भगवन् ! ते एम ज छे. एटले के तमे जे प्रमाणे सुखविपाकनो अर्थ कह्यो ते तेम ज छे.

इति वरदत्त नामनुं दशमुं अध्ययन समाप्त. १०

मू०—नमो सुयदेवयाए, विवागसुयस्स दो सुयक्खंधा—दुहविवागो य सुहविवागो य, तत्थ दुहविवागे दस अज्झयणा एकसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिसिज्जंति, एवं सुहविवागो वि, सेसं जहा आयारस्स ॥

। इति एक्कारसमं अंगं सम्मत्तं. ।

अर्थ—श्रुतदेवताने नमस्कार हो. विपाकश्रुतना बे श्रुतस्कंध छे.—दुःखविपाक अने सुखविपाक. तेमां दुःखविपाकना दश अध्ययनो एक सरखा छे तेथी दश दिवसवडे तेना उद्देशा थाय छे. ए ज प्रमाणे सुखविपाकमां पण जाणवुं. बाकी सर्व आचारांगनी जेम जाणवुं. इति अग्यारमुं अंग समाप्त थयुं.

टीकाकारनी प्रशस्ति—

" इहानुयोगे यदयुक्तमुक्तं, तद्धीधना द्राक् परिशोधयन्तु ।
नोपेक्षणं युक्तिमदत्र येन, जिनागमे भक्तिपरायणानाम् ॥ "

" आ अनुयोग (व्याख्या) ने विषे जे कांइ अयुक्त कहेवायुं होय, ते बुद्धिरूपी धनवाळा उत्तम पुरुषोए शीघ्र शुद्ध करवुं; कारण के जिनागमने विषे भक्तिमां तत्पर एवा उत्तम पुरुषोए आ बाबतमां उपेक्षा करवी योग्य नथी.

संवेगी मुनिजनोमां मुख्य एवा श्रीजिनेश्वर सूरिना चरणकमळमां भ्रमर जेवा श्रीमान् अभयदेवसूरिए आ टीका करी छे. श्रीरस्तु.

श्री विपाक सूत्र समाप्त.